

श्री जैनप्रबोध पुस्तक.

जाग पहेलो. १६३

एमां केटलाएक स्तवनो, प्रजातियां, स
बाउ तथा बोल वगेरेनो संग्रह करीने,
साधर्मिक भाइओनें भणवा वांचवाने अर्थ

-शा० आनंदजी खेतशीयें.

श्रावक भीमसिंह माणकनी मारफत

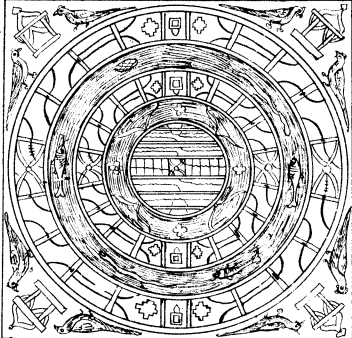
श्री मुंबापुरी मध्ये

“निर्णयसागर” प्रेसमां छपावी प्रसिद्ध करयो छे.

संवत् १९१९ ना वैशाख शुदि २

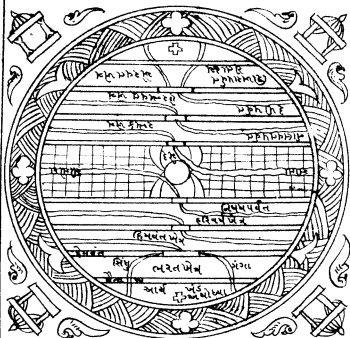


જંબુદ્વીપ, લવણ સમુદ્ર, ધાતકી ખંડ, કાલોદ સમુદ્ર અને પુ
ષ્કરાર્ધ એ રીતે અદ્વીદ્વીપનો નકશો છે.



આમાં જગાની શંકીર્ણતાથી નામ લખાઈ શકાય નથી માટે
અદ્વી દ્વીપનો મહોરો નકશો જોવાથી બરાબર સમજાસે.

નંબુ દ્વીપ તથા લવણ સમુદ્રનો નકશો







મેરની મુલીકા
૪૦ યોજનનું
ઉંચી છે તેના
વિષે જિન
ભવન છે



મેરની મુલિકા કાને વિષે
જિન ભવન છે.

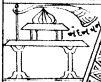


નીચે પાં
દુકુચન
છે તેને સિધે ચા
ર જિન
ભવન છે

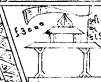
મેરનું (૩૬૦૦૦) યોજનનું
શીલે કાંડ છે



મે શીલ કાંડને નીચે સો મન
સવન છે
તેમાં ચાર
જિન
ભવન છે.



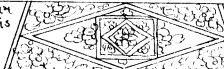
નંદન મન



૬૩૦૦૦

શી-
કાંડ

મધ્યમ
કાંડ
ભદ્રશાલવન



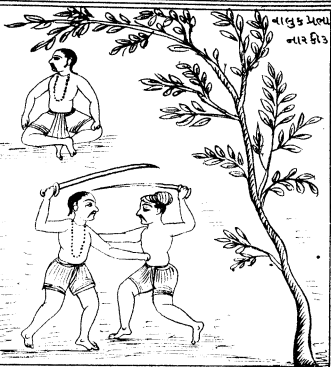
જિન ૨
યોજન
નું

२८०५
 नारकीने
 वेदना १

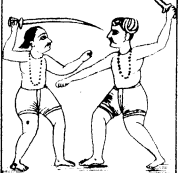
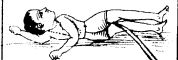
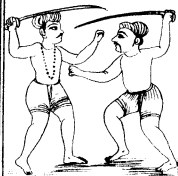


२८०५
 नारकी २

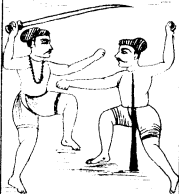
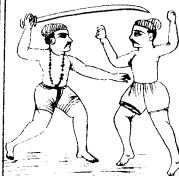




पंकप्रला नारकी ४



धूमप्रला नारकी ५



तमप्रलानारकी. ६



तमस्तमप्रलानारकी. ७



प्रस्तावना.

जैनधर्मावलंबी महान् जनोनां रचेलां कोट्यावधि स्तवन, सद्याउं तथा प्रजातियां वगेरे ठे, तेमांनां जे हालमां घणा सङ्कनो जणवा वांचवाना उपयोगमां लीए ठे, तेवा प्रकारनां स्तवनादिको मांहेला घणाज स्वल्प स्तवनादिकोनो संग्रह, आ पुस्तकमां मुद्रित कखो ठे; कारण के जो घणो महोदो संग्रह कखो होत तो पुस्तकनी किम्मत वधारे थवाने लीधे घणा सङ्कनोथी ते पुस्तक लेवाइ शकात नहीं, माटे तेवा जनोने आवा विचित्र प्रकारनी जूदी जूदी देशीउं अने रागो वगेरेमां गावानी श्रीतीर्थकर जगवान्नी स्तुतियो तथा शांतादि रसनी उत्पन्न करनारी सद्याउं वगेरेने वांचवा जणवानो लाज मली शकत नहीं एवा हेतुथी आ प्रथम जागमां थोडाज स्तवनादिको मुद्रित करीने समाप्त कखो. तेमज वली बीजुं जैनकाव्यप्रकाश एवुं नाम थापीने तेना प्रथम जागनुं पुस्तक हालमां गुजराती लिपिमां ठापी प्रसिद्ध कखुं ठे ते मध्ये आ पुस्तकमां आवेला स्तवनादिकोथी तदन जूदी रीतनां स्तवनादिको सर्व मली आठशोने

सुमारें ठापेलां ठे. महारो एवो विचार ठे के जो आ पुस्तकोने महारा साधार्मि जाइउं सारुं उत्तेजन आप शे, तो हुं आ बन्ने पुस्तकोना द्वितीयादिक जाग क्रमें क्रमें ठापवानो उद्यम चालु राखीश अने ते प्रत्येक जागर्मा अपूर्व अपूर्व स्तवनादिकोनो समावेश करीश.

आ पुस्तकने पठन करनारा समस्त जाइउंने नम्रता पूर्वक हुं विनति करुं हुं के आ पुस्तकना पृष्ठ २६० मां ठापेला श्री संजवनाथजीना स्तवननी ठेहरी गा थामां “मूरतसंजवजिनेश्वर केरी, जोतां हियहुं हटके” ए बे पद जूलथी ठापतां रही गयां ठे बीजे पण के टलेक ठेकाणे जूदी जूदी प्रतमा जूदा जूदा पाठ हो वाथी तेनी त्रांतिने लीधे तथा महारी मंदबुद्धिना प्रयोगथी तेमज कंपाजीटर लोकोनी जूलथी आ पुस्तक मध्ये अक्षर, कानो, मात्रा, वगेरेनी चूको थये ली प्रत्यक्ष दीठामां आवी ठतां जगानी संकोचताने लीधे शुद्धि पत्र थइ शक्युं नथी; तेथी एवा प्रकार ना महाराथी थयेला अपराधने क्षमा करी विद्वज नोयें सुधारी वांचवुं. ए उत्तम प्रकारनो गुण स्वाना विक विवेकी वांचनाराउंमां होयज ठे.

ला० जीमसिंह माणक.

॥ अथ अनुक्रमणिका ॥ प्रारंभः ॥



॥ प्रथम चैत्यवन्दनादिक (१७) नी अनुक्रमणिका ॥

| अंक. | ग्रंथोनां नाम. | पृष्ठ. |
|------|--|--------|
| १ | नवकार पंच मंगलरूप. | १ |
| २ | खमासमण इहामि खमासमणो॥ .. | १ |
| ३ | इहं जयजय महाप्रभु. चैत्य वंदन. .. | १ |
| ४ | उवसग्गहर स्तवनं. | ६ |
| ५ | अरिहंत चेश्याणं. | ६ |
| ६ | नमुत्तुणं वा शक्रस्तव. | ७ |
| ७ | जे अइया तिब्बयरा. | ७ |
| ८ | अष्टापदे श्रीआदिजिनवर, काव्य. .. | ८ |
| ९ | अशोकवृद्ध सुरपुष्पवृष्टी, काव्य. .. | ८ |
| १० | शकल कुशल वल्लि, काव्य. | ९ |
| ११ | अक्काण कोहमयमाण, अरिहंत स्तुति. .. | ९ |
| १२ | जलनरी संपूट पत्रमां, जिनपूजानां दोहा. .. | १३ |
| १३ | जीवडा जिनवर पूजीयें, दोहा. | १४ |
| १४ | मंगलं जगवानवीरो, मंगलिक काव्य. .. | १४ |
| १५ | लोगस्स॥ काउसग्ग करवानो. | १५ |

- १६ केवलनाणी श्रीनिरवाणी, चैत्यवंदन. ... १८३
 १७ अरिहंतजीने स्वमावीये रे, पस्कीखामणा. ३६१

॥ आरति तथा मंगलीक दीपक (७) ॥

- १ पहेली आरति प्रथम जिणंदा. ... ३९
 २ आजघरे नाथ पधाखा कोर्जे मंगल चार. ३०
 ३ दीवोरे दीवो मंगलीक दीवो. ... ३०
 ४ महोटी आरति आदिजिननी. ... ३१
 ५ जयजय आरति देवी तुमारी, चक्रेशरीनी. ३२
 ६ जागजाग नविया धर्म वाहाणु, प्रजाति मंगल. ४९
 ७ सिद्धारथ नूपति सोहे, चार मंगल. ... ७९

॥ श्रीसिद्धचक्रजीनां स्तवनो (१०) ॥

- १ गोयमनाणी हो के कहे सुणो प्राणी माण॥ १९
 २ नवपद महिमा सार, सांजलजो नरनार. २०
 ३ वीरजिणंद वखाणोयो. ... २१
 ४ सेवोरे नवि जावे नवकार, जंपेश्रोण॥ ... २२
 ५ नविया श्रीसिद्धचक्र आराधो. ... २३
 ६ श्री सिद्धचक्र आराधिये. ... २४
 ७ आराहो प्राणी साची नवपद सेवा. ... २५
 ८ गौतमपूठत श्रीजिनजाखत, वचनण॥ ... २५

- ए नवपद महीमा सांजजो, वीरनाखे० ॥ २६
 १० समरी सारदमाय, प्रणमीनिज गुरुपाय. ७५

॥ बूटक प्रजातीआ (३०) नी अनुक्रमणिका ॥

- १ अबतुं चेतन चेतले, कृण लाखीणो जाय. १६
 २ जब जिनराज रुपाकरे. १६
 ३ विषय वासना त्यागो चेतन. १७
 ४ पूरव पुण्य उदय करी चेतन. १७
 ५ जबजगें समकेत रत्नकूं. ४७
 ६ मात पृथिवी सुत प्रात उठोनमो. .. ११ए
 ७ रेजीव जिनधर्म कीजीयें. १६१
 ७ अजब ज्योति भेरे जिनकी, तुमदेखो० ॥ १६३
 ८ जब तुम नाथ निरंजन. १६४
 १० हमजोक निरंजन लालके. १६४
 ११ जागजाग रयणगइ, जोर नयो प्यारे. .. १७ए
 १२ रे मन लोनी तारो कोण पतिआरो. .. २०७
 १३ औरनसुं रंग न्यारा न्यारा, तुमसुं०॥ .. २१३
 १४ वाणी हे विसाल तेरी अगम अगोचरी. २१६
 १५ ऐसे सहेर बिच कौन दीवान हेंवो. .. २१ए
 १६ प्रभुजीको दरिशन पायोरी आजमें०॥ .. २२०

| | |
|---|-----|
| १७ श्री अरिहंत नमीजें चतुरनर. | २२५ |
| १८ परमेष्ठी आराधि सुगुणीजन. | २२५ |
| १९ आचारज पदसेवा चहतमनः | २२६ |
| २० आतम गुण अजिज्ञाख्यो अनुजवी. .. | २२६ |
| २१ मेंहुं मुसाफर आया हो प्यारा, नहीं कोइ .. | २२९ |
| २२ जोबनीयांनी मोजां फोजां, जायें॥ .. | २३० |
| २३ आवीरूढी जगतिमें पहेला न जाणी. .. | २४५ |
| २४ कहारे अज्ञानी जीवकूं, गुरुज्ञान॥ .. | २५९ |
| २५ आजको लाहो लीजियें, कालकोणे॥ .. | २७७ |
| २६ में परदेसी दूरका, प्रभु दरिशनकूं आया. .. | २७७ |
| २७ जागे सो जिनजक्त कहावे, सोवे॥ .. | २८५ |
| २८ देवनिरंजन जवजय जंजन. | २८७ |
| २९ त्रेशठशलाका पुरुषनो प्रजातीयुं. .. | ४५६ |
| ३० जागजाग जीवतुं उठ ययो प्रजातरें. .. | ५११ |

॥ श्रीशत्रुजयनां स्तवनादिक(२४)नी अनुक्रमणिका ॥

| | |
|---|----|
| १ श्रीरेसिद्धाचलजेटवा, मुजमनअधिकाउमाह्यो | ४६ |
| २ तेदिन क्यारें आवसे, श्रीसिद्धाचल जासुं. | ४८ |
| ३ सिद्धाचलगिरिजेटगारे, धन्य नाग्यहमारा. | ६६ |
| ४ महारुं मनमोह्युं रे, श्रीसिद्धाचले रे. .. | ६९ |

- ५ शत्रुजे कृषन समोसखा, जलागुण० ॥ ८१
 ६ आखडीयें रे में आज शत्रुजय दीगो रे. ८२
 ७ सिद्धगिरि ध्यावो नविका सिद्धगिरि ध्यावो. ८३
 ८ श्री सिद्धाचल मंमण स्वामी रे. .. १२०
 ९ जात्रा नवाणु करीयें शत्रुजा गिरि० .. १७०
 १० संवपूढे फूलवाडीयें, शत्रुजानी मालण. १७१
 ११ सिद्धाचल वंदोरे नरनारी. .. १८०
 १२ शत्रुजय जइयेंने पावन थइयें, जात्रा० ॥ २०८
 १३ चालो सखी सिद्धाचल जइयें. .. २०९
 १४ श्री शत्रुजय गिरि तीरथसार, थोइ. .. २११
 १५ गिरिराजकूं सदा मेरीवंदना. .. २१२
 १६ विवेकी विमलाचल वसीयें. .. २१४
 १७ अखीयांसफलजइमें, निरख्यानाजिकुमार. २१६
 १८ एतो शकल तीरथनो राय. .. २४२
 १९ चालोचालो सिद्धाचल जइयें रे.. .. २७९
 २० चालोने प्रीतमजी प्यारा शत्रुजे जइयें. २९४
 २१ विमलाचल विमला प्राणी. .. ३०३.
 २२ सिद्धाचल सिद्धि सुहावे. .. ३०४
 २३ वीरजी आव्या रे विमलाचलके मेदान. ५११
 २४ जेकोइ सिद्धगिरि राजने आराधसे रेजो०॥ ५२२

॥ श्री समेत शिखरादि तीर्थोनां (८) स्तवनो ॥

- १ चालो चालो शिखर गिरि जइयें रे. .. १०७
- २ शिखरजीकी जात्रा क्युं न करे. .. ११८
- ३ तुंहीं नमो नमो समेत शिखरगिरि. .. १६३
- ४ आबु पर्वत रूयडो रे लाल. .. २००
- ५ राणकपुर रलियामणो रे लाल.. .. ८४
- ६ जगपति जयोजयो कृष्णजिणंद. .. २६६
- ७ अष्टापद अरिहंतजी महारा वालाजी रे. ७१
- ८ तीरथ अष्टापद नित्य नमीयें. .. १०१

॥ बूटक न्हाना स्तवनो(१५)नी अनुक्रमणिका ॥

- १ श्रीगौतम पृष्ठा करे, विनय करी॥ .. २६
- २ प्रहसमे जाव धरी घणो.. .. ४३
- ३ सिद्धनी सोजारे सीकहुं. .. ८९
- ४ एकवार बह्व देश आवजो जिणंदजी.. १०२
- ५ पंचमी तप तमे करो रे प्राणी.. .. १०८
- ६ माता त्रिशलायें पुत्ररतन जाइउं, पालणु. १२२
- ७ माता त्रिशला जुजावे पुत्र पारणेहालरीउं. १२५
- ८ सुणजो साजन संत पजूसण, आव्या रे. १७३
- ९ प्रभुजीरे प्रभुजीनाम जपुं मन माहरे... १७७

- १० खतरा दूर करनां दूर करनां. २१५
 ११ अविनाशीनी सेजडीयें रंग लागो ॥ २१६
 १२ समकित द्वार गंजारे पेसतांजी.. .. ४३९
 १३ लाल तेरे नैनोकी गत न्यारी.. .. ४५२
 १४ चोवीशें जिन गाइयें चोवीसीनुं कलश. ४९९
 १५ रिसह जिनेसर प्रणमीपाय, चोवीश तीण ॥ ५२५

॥ महोटा स्तवनो तथा रास अने चोढाली
 या वगैरे (१४) नी अनुक्रमणिका.

- १ श्रीमहावीरनां पंचकव्याणकनुं चोढालीयो. ५०
 २ पुण्य प्रकाशनो आराधनानो स्तवन. .. ९०
 ३ श्रीगौतम स्वामीनो रास.. .. ११०
 ४ सुरनर तिरि जग योनिमे, ज्ञानपञ्चीशी.. १४७
 ५ दान शीयल तप जावनो चोढालीयो.. २४८
 ६ हवे राणी पद्मावती, जीवरास खमावे.. ३१७
 ७ आतम शीक्षा जावनानां दोहा.(१८५).. ३२०
 ८ उत्पत्ति जोजो आपणी, जीवोत्पत्ति.. ३३९
 ९ आदरजीव कृमागुण आदर, कृमा ठत्रीशी. ३४७
 १० वैकुण्ठपंथ बीहामणु, दोहिलुं ठे गाट.. ३५१
 ११ जीव विचारनो तवन नव ढालोनो. .. ३६१

(८)

- १२ नव तत्वनो तवन इगीआर ढालोनो. .. ३७३
 १३ चोवीश दंमकनो तवन ठवीश ढालोनो .. ४०४
 १४ श्रावकने त्रण मनोरथ जाववानां. .. ५०१

॥ ठंद(ए)नी अनुक्रमणिका ॥

- १ प्रभु पासजी ताहेरो नाम मीतुं ११
 २ वीर जिनेसर केरो शिष्य, गौतमजीनो. ७२
 ३ वंछित पुरे विविधपरें, नवकारनो. .. ७३
 ४ आदिनाथआदेजिनवरवंदि, शोलसतिनो. ७६
 ५ सारदमाय नमु शिरनामी शांतिजिननो... १४४
 ६ आपण घर बेठा लील करो, पार्श्वजिननो १४७
 ७ जय जय जगनायक पार्श्वजिनं १५१
 ८ सकल सुखाकर जिनवरराय, पार्श्वजिननो १५७
 ९ श्रीसुमतिदायक ० ॥ चोत्रीश अतिशयनो. ३१४

॥ सद्याउ (४३) नी अनुक्रमणिका ॥

- १ लोन न करीयें प्राणीयां रे. ३३
 २ शीलनी नववाडो उदयरत्नजीकृत. .. ३४
 ३ प्रीतमसेंती वीनवे, तमाकुनी.. .. ४१
 ४ पुण्य संयोगे नरनवलाधो, रात्रीनोजननी. १२६
 ५ निंदामकरजोको इनी पारकीरे, निंद्यावारकनी. १३०

| | |
|--|-----|
| ६ सुण सुण कंतारे शीख सोहामणी. .. | १३१ |
| ७ एक अनोपम शीखामण खरी. .. | १३४ |
| ८ कडवां फलढे क्रोधनां, क्रोधनी .. | १३७ |
| ९ रे जीव मान न कीजीयें, माननी. .. | १३७ |
| १० समकितनुं मूल जाणीयेंजी, मायानी .. | १३८ |
| ११ तुमे लक्ष्मण जोजो लोचनां रे, लोचनी. .. | १३९ |
| १२ श्रावकतुं उठे प्रजात, श्रावकनीकरणीनी .. | १४० |
| १३ पीयुजीरे पीयुजीनाम जपुंदिन रातीयां. .. | १४३ |
| १४ अरणीक मुनिनी सद्याय... .. | १५० |
| १५ मेघ कुमारनी सद्याय, धारणीमनावे रे॥ .. | १५५ |
| १६ समकेतना शडसठ बोलनी. .. | १८८ |
| १७ शामाटे बंधव सुखथी नबोलो, बलनझनी. .. | २०१ |
| १८ सुण चतुर सुजाण, परनारीशुं प्रीत॥ .. | २०४ |
| १९ नूलो मन नमरा तुं क्यां नम्यो, मननमरानी .. | २२३ |
| २० करपडिकमणु जावशुं, प्रतिक्रमण फलनी. .. | २६२ |
| २१ प्रभुसाथें जो प्रीत वंढो तो नारी संग निवा० .. | २६६ |
| २२ चोत्रीश अतिशयवंत, दाननी.. .. | २६८ |
| २३ शीयल समु सुख कोनही, शीलनी. .. | २७० |
| २४ कीधा कर्म निकंदवारे, तपनी.. .. | २७० |
| २५ रे नवि जाव रुदय धरो, जावनी. .. | २७१ |

- २६ श्रीमहावीरे नाखीया, दानादिक चारनी.. २७२
 २७ हकमरना हक जाना यारो, मत को करो० २७२
 २७ हो प्रीतमजी प्रीतकी रीत अनित्य०॥ .. २७६
 २७ या मेवासमें बे मरदो मगन जयामेवासी. २७७
 ३० देवदानव तीर्थकर गणधर, कर्मनी. .. ३०६
 ३१ जीव क्रोध मकरजे, लोच मंधरजे शीखाम० ३०७
 ३२ काउस्तगग थकी रें रहे नेम राजुज०॥ ३०७
 ३३ प्रथम गोवाजीयातणे नवेंजीरे, शालिजडनी३१०
 ३४ देखो बेयारो कूडो कलियुगआयो, कलियु० ४४१
 ३५ सरसत सामण वीनतुं, जंबुस्वामीनी.. ४४३
 ३६ आज मारे एकादशीरे, एकादसीनी.. ४४४
 ३७ उंचा मंदिर मालीया, शोडघवाजीने सूतो. ४४६
 ३७ अमल वर्कन स्वाध्याय.. .. ४४७
 ३७ तुजसाथे नहीबोळुरे कृपजजी, तेंमुंज०॥ ४४७
 ४० श्रीगुरु चरण पसाउले, शीखामणनी .. ४५०
 ४१ पडजो कुमति गढना कांगरां, उपदेशनी.. ४६६
 ४२ महारुं महारुं मकर जीवतुं, उपदेशनी.. ५१७
 ४३ रहनेमी अने राजिमतिजिनी. .. ५७१
 ॥ श्रीआदिजिननां स्तवनो(१७)नी अनुक्रमणिका ॥
 १ आदिजिनं वंदेगुण सदनं.. .. ३

| | | |
|----|---|-----|
| २ | आजतो वधाइ राजा नाजिके दरबाररे.. | ४३ |
| ३ | जीरे सफल दिवस आज माहरो | ४५ |
| ४ | प्रथम जिनेसर प्रणमीयेँ, जाससुंगंधीरेकाय | ५९ |
| ५ | प्रथम जिणंद प्रणमुं पाया. | १६९ |
| ६ | आज उजमढेरे अधिको | १७६ |
| ७ | मोसेँ, नेह धरीमहाराज आज राज॥ .. | १७८ |
| ८ | जागजाग मुकुटमणी नाजीजीकेनंदा. .. | २१० |
| ९ | उठत प्रजात नाम जिनजीको गाइयेँ. .. | २२० |
| १० | उलगडी आदिनाथनी जो. | २३० |
| ११ | जयो जयो नायक जगगुरुरे. | २३७ |
| १२ | अग उमाहो मुजने अतिघणो | २६१ |
| १३ | प्रथम तीर्थकर सेवना. | २७६ |
| १४ | नैना सफल नइ में निरख्या नाजिकुमार .. | ३०२ |
| १५ | रुषन जिनेसर प्रीतम माह्रारे | ४१४ |
| १६ | वृषन लठन दिन एटला | ४६० |
| १७ | रुषन जिणंदसुं प्रीतडी | ४६९ |

॥ केशरीयाजीनां स्तवनो (६) ॥

| | | |
|---|----------------------------------|-----|
| १ | प्रथम तीर्थकर रुषन जिणंदा. | १५८ |
| २ | आज सफल दिन माहरोरे. | १८० |

- ३ केशरीयासैं लागोमेरो ध्यानरे. १९९
 ४ घणुमोंघु नामउरे, महारेतो केशरीया०॥ २००
 ५ केशरीयावाला, जो लज्जा राखसो तो रेसे २०२
 ६ प्रभुनी मूरतमोहन वेजडो, जी तुमारी०॥ ४६५

॥ श्रीअजीतनाथनां स्तवनो (६) ॥

- १ प्रीतलडो बंधाणीरे अजित जिएंदगुं.. ६२
 २ पंथीडो निहालुंरे बीजा जिन तणु रे.. ४१५
 ३ उलग अजित जिएंदनी.. .. ४५९
 ४ अजित जिएंद जुहारीयें.. .. ४६१
 ५ झानादिकगुण संपदा रे.. .. ४७०
 ६ सरसति सामणी वीनवुं.. ४६२ .. ५९१

॥ श्री संजवजिननां स्तवनो (७) ॥

- १ हुंतो जाउंरे जिनदरबार, प्रभुमुखजोवानें. ७०
 २ साहेब सांजलोरे, संजव अरज हमारी. ७७
 ३ मुने संजव जिनगुं प्रीत, अविहड लागीरे. २३१
 ४ मोहन तारा मुखडाने मटके, मोहन०॥ २६७
 ५ समकित दाता समकित आपो.. .. ३०२
 ६ संजव देव ते धुर सेवो सवेरे. .. ४१६
 ७ श्रीसंजवजिन राजजीरे, ताहरुंअकल०॥ ४७१

॥ श्री अजिनंदन जिननां स्तवनो (३) ॥

- १ अजिनंदन नाथजुहारुंजी, तीरथना० ॥ १६४
- २ अजिनंदन जिन दरिशन तरसीर्ये. .. ४१७
- ३ क्युंजाणुं क्युंबनी आवसे. .. ४७२

॥ श्री अथ सुमतिनाथनां स्तवनो (३) ॥

- १ वालासुमति जिनेसर सेवीर्येरे. .. १६७
- २ सुमति चरन कज आतम अरपणा. .. ४१८
- ३ अहोश्री सुमति जिन सुंदता ताहरी. .. ४७३

॥ श्री पद्म प्रजजिननां स्तवनो (३) ॥

- १ कागलीउ किरतार जणी सीपरें लखुरे. १६६
- २ पद्म प्रजजिन तुज मुज आंतरुंरे. .. ४१९
- ३ पद्मप्रज जिन गुणनिधिरेलाल. .. ४७५

॥ श्री सुपार्श्व जिननां स्तवनो (३) ॥

- १ मुजमन जमरो प्रजुगुण फूलडेरें. .. ११७
- २ श्री सुपार्श्व जिनवंदीर्ये. .. ४२०
- ३ श्री सुपास आनंदमे: .. ४७६

॥ श्रीचंडप्रजजिनना स्तवनो (४) ॥

- १ जिनजी चंडप्रज अवधारोके, नाथनिहा० ॥ १३५

- १ चंदा प्रभुजीसैं लालसैं मोरी लागी० ॥ १८१
 २ देखन देरे सखी मुने देखनदे. ४२१
 ४ श्री चंडप्रज जिन पद सेवा, ४७७

॥ श्री सुविधि जिननां स्तवनो (६) ॥

- १ लागो लागोरे प्रभुसुं नेह वसीयो, हीयडामां. १९९
 २ मुजरा साहेब मुजरा साहेब, साहेब० ॥ २६०
 ३ अचो असीं गमण वेंधा, वंदेजे पेर पोंधा. २७३
 ४ सूरत सुविधि जिणंदनीरे लोल. .. २९२
 ५ सुविधि जिनेसर पाय नमीने. ४२२
 ६ दीठो सुविधि जिनंद समाधि रसैं नखो, ४७८

॥ श्री शीतलनाथनां स्तवनो (६) ॥

- १ वारी प्रभु दशमां शीतलनाथ, सुणोएक०॥ ४
 २ शीतल जिननी सेवा कीजें. ६६
 ३ महारे शीतलजिनछुं लागी पूरण प्रीतजो, १६६
 ४ शीतल जिनवर सांजलोरे. २४४
 ५ शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी. .. ४२३
 ६ शीतल जिनपति प्रभुता प्रभुनी. .. ४८०

॥ श्री श्रेयांसजिननां स्तवनो (३) ॥

- १ सहेर बडा संसारकारे, दरवाजा जस चार०॥ ११९

१ श्री श्रेयांसजिन अंतरजामी० ४२४

२ श्री श्रेयांस प्रभुतणो, अतिअद्भूत० ॥ .. ४८३

॥ श्रीवासुपुज्य जिननां स्तवनो (१) ॥

१ वासुपुज्यजिन त्रिभुवनस्वामी. ४२५

२ पूजना तो कीजैरे बारमा जिनतणीरे. .. ४८३

॥ श्री विमलजिननां स्तवनो (२) ॥

१ विमल विमल गुण राजता. ४

२ दुःख दोहग दूरे टव्यारे, सुख संपदसुंजेट. ४२५

३ विमलजिन विमलता ताहरीजी. .. ४८४

॥ श्री अनंतानाथनां स्तवनो (४) ॥

१ चित्तलागो अनंतजिन चरननसैं. .. २७९

२ हारेलाल चतुर शिरोमणी चौदमुं. .. २८३

३ धार तरवारनी सोहेली दोहेली. .. ४२६

४ मूरतिहो प्रभु मूरति अनंत जिणंद. .. ४८५

॥ श्री धर्मजिननां स्तवनो (५) ॥

१ एम करियें रे नेडो एम करीयें, निगुणाहुं० ॥ २२२

२ हारै महारे धर्मजिणंदहुं लागी पूरण० ॥ २९५

३ धर्म जिनेसर गाउं रंगहुं. ४२८

४ धर्मजिनंदाहो में तुज बंदा मारा लाल. ४६७

५ धर्म जगनाथनो धर्मसुची गाइयें. .. ४८६

॥ श्री शांतिनाथनां स्तवनो (१७) ॥

- १ शांतिजीतुं सुखहुं जोवा नणीजी. .. ६३
- २ शांति प्रभु वीनति एक मोरीरे .. ६५
- ३ बेकरजोडी वीनतुं, सुणो जिनवर श्रीशांति. ६८
- ४ तुं मेरे मनमें तुं मेरे दिलमें. .. १७७
- ५ प्रभुजी शांतिजिणंदने जेटीयें. .. २०२
- ६ शांतिकरण प्रभु शांतिजिनेसर .. २१७
- ७ शांतिजिनंद सुखकारी सकलजिन. .. २२२
- ८ सुंदर शांतिजिणंदनी ठबी ठाजेठे. .. २२२
- ९ शांतिजिणंद नजो सदा, नवियण बहुजावे. २२४
- १० शोलमां श्री जिनराज, उलग सुणो ॥ २७४
- ११ सेवो नवि शांति जिनंद सनेहा. .. २८४
- १२ शांतिजिनेसर साहेबारे, शांतितणु ॥ .. २८८
- १३ शकल सुखाकर, शांतिजिनेसरराय. .. २९९
- १४ शांति मिलनकी आशहो जीया मानुवे .. ३०१
- १५ शांतिजिन एक मुज वीनति. .. ४२९
- १६ जगत दिवाकर जगत कृपानिधि. .. ४८८
- १७ शांतिजिनेसर साहेब वंदो, उपशम ॥ ५२६

॥ श्रीकुंथुजिननां स्तवनो १ ॥

- १ कुंथुजिन मनहुं किमही नबाजे ४३१
२ समवसरण बेसी करी रे, बारह पर॥ ४८९

॥ श्री अरनाथजिननां स्तवनो २ ॥

- १ धरम परम अरनाथनो. ४३२
२ प्रणमो श्रीअरनाथ, शिवपुरसाथ खरोरी. ४९०

॥ श्री मल्लिजिननां स्तवनो ६ ॥

- १ को न गमे रे चित्त को न गमे मल्लि॥ १००
२ मोहे कैसे तारोगे दीनदयाल, मोहे० ॥ ११०
३ जीरे महिमा मल्लिजिणंदनी. १८४
४ सेवक किम अवगणीयें हो मल्लिजिन. .. ४३३
५ मनमोहन मल्लिनाथको, जस बोलेंगे. .. ४६८
६ मल्लिनाथ जगनाथ चरण युंग ध्याइयें. ४९२

॥ श्रीमुनिसुव्रतजिननां स्तवनो १ ॥

- १ मुनि सुव्रत जिनराज एक मुऊ विनति॥ ४३४
२ उलंगडी उलंगडी तो कीजें मुनि सुव्रत॥ ४९३

॥ श्रीनमिजिननां स्तवनो १ ॥

- १ षट्दरिसन जिन अंग जणीजें. ४३६
२ श्री नमिजिनवर सेव घनाघन उनम्यो॥ ४९५

॥ श्री अरिष्ट नेमिनाथनां स्तवनो १७ ॥

- १ जइने रहेजो माहारा वालाजी रे. .. १०७
- २ नेमजिणंद जुहारीयें, उजलगढ० ॥ .. १५७
- ३ महारा सम जाउमां रे वाला, चोमासुं... १६०
- ४ घरे आबोने नेम वरणागीया रे. .. १६२
- ५ ना करियें रे नेडो नाकरियें, निगुणाशुं०॥ २२१
- ६ सखीनमीयें ते नेम जिनराज, गढगिरनारें रे. ३६०
- ७ अष्ट जवांतर वालहीरे, तुं मुज आतम० ॥ ४३७
- ८ सुनो मेरे नेमजी प्यारे, इगनसैं मत रहो०॥ ४५२
- ९ मतजाउ रे पीया तुमें पाहाडमां. ४५४
- १० महारा शामलीयानी बात रे, हुं केने पूहुं. ४५४
- ११ तोरण आबी कंत पाढा बलीया रे. ४६४
- १२ संयम लेउंगी साथ, पीया मेंतो संयम०॥ ४६७
- १३ नेमि जिनेसर निज कारज कखो. ४६६
- १४ चइत्र मासैं ते चतुरा चिते रे, बार मास. ५१७
- १५ रविवारें हो रढीयाला रे, साते वार. .. ५२०
- १६ पडवे पीयु प्रीतज पालो रे, पंदरतिथि... ५२१
- १७ घरे आबो तो पुहुं एक बातडी रे. .. ५२७
- १८ तोरण आबी रथ पाढो किम फेरोरे वालाजी ५२८

॥ श्रीपार्श्व जिननां स्तवनो ३६ ॥

- १ चिंतामणि चिंता सवि चूरे, पूरे मनकी॥ ४४
- २ परमात्म परमेसरु, जगजीवन जिनराज. ६०
- ३ जिनपति अविनाशी काशी धणीरे. ६१
- ४ सुगुण सोजागी रे साहेब माहेरा. ६४
- ५ लाखीणो सोहावे जिनजी, फूलांनो गळे हार. ६७
- ६ शामाटे साहेब सामुं न छुट. १५९
- ७ होजिनराया जिनेसर शिववधूना तमें जोगी. १६३
- ८ धृतकल्लोल प्रभु पासजिणंद. १७५
- ९ लयलागीरे लयलागीरे, गोडीपास जिणंद॥ १७६
- १० तुंही नाथ हमारो रे जिनपति, तुंही नाथ० १७९
- ११ पंथीडा पंथ चलेगो, प्रभु नजले दिन चार. २००
- १२ सहस्रफणारे मोरा साहेबा, तेरी शामली॥ २०७
- १३ तुमहीं जाके अश्व खेलावो, राउकी रीत॥ २१८
- १४ को न गमेरे चित्त कोन गमे प्रभु पासजी विना. २२१
- १५ जिनजी गोडी मंमणपास केविनति सांज॥ २२७
- १६ वाहाणलां वाह्यां रे प्रभु, वाहाणलां वाह्यां. २३९
- १७ मेरे ए प्रभु चाहीर्यें, नित्यउठी दरिसणपावं. २४१
- १८ सुघडं पास प्रभु रें, दरिसन वेलडोनीदिङ्गा. २४३
- १९ पास जिणंद सदाशिवगामी, वालोजी॥... २४६

- २० प्रभु तोरी ठकुराइकुं, गढ तीन बीराजे. २६०
 २१ तुम बिना कोन मेरी छुट लेन हार है. २६१
 २२ कृपाकरोरे गोडीपास जिनेसरतुमसाहिब०॥ २६३
 २३ ठेडो नाजी नाजी नाजी नाजी ठेडो नाजी. २७३
 २४ अमां आउं नेहडो कंधी, गोडीचे पेर वेंधी. २७८
 २५ आजरे में मुख देख्यो गोडी पारसको. २७९
 २६ प्रगटघाते पूरण अविनाशीजी रे. २८०
 २७ जीरे आज दिवस जले उगीउं. ... २८७
 २८ सजुरुने चरणे नमी, गायछुं गोडीराय० ॥ २९१
 २९ उगो उगेने मोरा आतमराम. २९४
 ३० राता जेवां फूलडांने, शामल जेवो रंग. २९९
 ३१ लागो मेरो पारस प्रभुजीसें ध्यान. ३०१
 ३२ पास संखेशरा सार कर सेवका, ३५८
 ३३ जिनराज जोवानी तक जाय ठे रे. ४५५
 ३४ श्रीपासजी प्रगट प्रजावी. ४६३
 ३५ साहेबा श्रीसंखेसर पासजी. ४६३
 ३६ सहज गुण आगरो स्वामी सुख सागरो. ४९७

॥ अथ महावीर जिननां स्तवनो (२३) ॥

१ सिद्धारथना रे नंदन वीनबुं. ४६

| | | |
|---|------|-----|
| १ जय जिनवर जग हितकारी रे..... | | ८८ |
| २ मारग देशक मोक्षनो रे, दीवाजीनुं. | ... | १०९ |
| ४ प्रभुजी वीरजिणंदने वंदीयें. | | १५६ |
| ५ माहारी वीर प्रभुजीने वंदनारे. | | १६१ |
| ६ रायरेसिद्धारथघरपटराणीचौदसुपननुंतवन. | १६५ | |
| ७ नारेप्रभुनहींमानुं, नहींमानुरेअवरनी आण. | १६८ | |
| ८ वीरकुमरनी वातडी केने कहीयें. | | १७२ |
| ९ में नवी जाण्योरे नाथजी, मोसे० ॥ | | १८१ |
| १० वंदो महावीर जिनेसर राया. | | २०३ |
| ११ आजमहारे आनंद थयो, प्रेमनां वादल० ॥ | २०५ | |
| १२ रे मनक्युं जिननाम विसाख्यो. | | २०६ |
| १३ आदि अंत जानुं नहीं, तुमहो अविनाशी. | २१९ | |
| १४ चउमासी पारणुं आवे. | | २३६ |
| १५ वीरजिनेसर साहेब मोरा. | | २४० |
| १६ महावीर स्वामी मुक्तें पोहोता, गौतम० ॥ | २४७ | |
| १७ जगपति तारक श्रीजिनदेव. | | २६५ |
| १८ रे वंदन आयो: | | २८९ |
| १९ मुने ते दिननो वीशवास ठे. | | ३५७ |
| २० गिरुआ रे गुण तुम तणा. | | ३५९ |
| २१ श्री सिद्धारथ नंदन देवा. | | ४४० |

३२ त्रिशला नंदनरे देहें. ४५३

३३ तार हो तार प्रभु तार मुण सेवक जणी. ४५८

॥ श्रीसीमंधरप्रमुखशाश्वताजिननां स्तवनो ७ ॥

१ सुणोचंदाजी सीमंधर परमा तम पासें जाजो. ५

२ मनहुं ते महारुं मोकले माहारा वालाजीरे. १०५

३ चित्तहुं संदेशो मोकले महारा वालाजीरे. २३३

४ धनधनखेत्र महाविदेहजी धनपुंमरिक० ॥ २३८

५ पुस्कलवड विजयें जयो रे. .. २५०

६ श्री युगमंधरने केजो. .. १०६

७ हो साहेब बाहु जिनेसर विनवुं... २४६

॥ लावणीउ १८ नी अनुक्रमणिका ॥

१० श्री जिनदासजी कृत घन दश. .. ३९१

११ चल चेतन अब उठकर अपने जिनमंदि०॥ ३९३

१२ तुम जजो जिनेसर देव मुंगतिपद पाइ. ३९५

१३ कब देखुं जिनवर देव जगत गुरु ग्यानी... ३९६

१४ एक जिनवरका निज नाम हैयामें लेना. ३९७

१५ खबर नहीं याजुगमें पलकी रे. .. ३९९

७६ हारे तुम कुमति कलेशन नार लगी क्युं०॥ ४००

१७ तुम तजो जगत्का ख्याल इसका गाना. .. ४०१

१८ सुगुरुकी शीख ह्ये धरनां रे सुगुरुकी॥ ४०३

॥ होरीना वसंत ११ ॥

- १ ए कतु रूडी रूडी माहारा वाला. .. ५०४
- २ सुमति सदा सुखदाई हो, खेजन आए होरी. ५०४
- ३ होरी खेलावत कानईया, नेमीसर संगें॥ ५०५
- ४ नहीरे नाहार नवरंग बनायो. .. ५०६
- ५ वामा नंदन अंतरजामी. .. ५०६
- ६ नयरी वणारसी जाणीयें हो. .. ५०७
- ७ श्री चिंतामणि पास प्रभु तारा मंदिर० ॥ ५०८
- ८ ऐसे होरी ते हो रही चंपा नयरीमें. .. ५०८
- ९ आदिजिनेसर प्रभुजी साहेबहो॥ .. ५०८
- १० नेमी निरंजन ध्यावोरे, वनमें तप कीनो. ५०९
- ११ सोरीपुर नगर सोहामणुंहो० ॥ .. ५०९

बूटाबोलोनी अनुक्रमणिका.

- १ प्रस्ताविक दोहा कवित ५१३-५१८- ६००
- २ आठे कर्मनां उत्तरप्रकृति सहित नाम कह्यां ठे. ५१९
- ३ नवतत्त्वनां उत्तर जेद सहित नाम कह्यां ठे. ५२४
- ४ चौबीश दंमकनां उत्तर जेद सहित नाम. ५४३
- ५ प्रत्येक दंमकें विचारवाना चौबीश धारना
उत्तर जेद सहित नाम कह्यां ठे... .. ५४९

- ૬ ચૌદમાર્ગણાના ઉત્તર જેદ સહિત નામ. ૫૫૪
 ૭ બત્રીશ અનંત કાયનાં નામ. ૫૫૬
 ૮ બાવીશ અજઘ્યનાં નામ. ૫૫૭
 ૯ જુદા જુદા જીવોનાં આયુનું પ્રમાણ કહ્યું છે ૫૫૮
 ૧૦ જિનજીવને યતિચોરાશી આશાતનાનાં નામ. ૫૫૯
 ૧૧ સાત નયાદિક અનેક ટૂટા બોલ કહ્યા છે. ૫૬૨
 ૧૨ જીવોના પ્રકાર અનેક રીતે દર્શાવીને તે
 મનાં આયુ તથા દેહ માનાદિક કહ્યાં છે. ૫૬૭
 ૧૩ સમયાદિક કાલનાં પ્રમાણ સંક્ષેપથી કહ્યાં છે ૫૭૯
 ૧૪ ચૌદનિયમાદિક અનેક ટૂટા બોલ કહ્યા છે. ૫૮૧
 ૧૫ નવપદના તપની ઝંજીનોવિધિ કહ્યો છે. ૫૯૨
 ૧૬ સૂતક વિચારના ટૂટા બોલ સંક્ષેપે કહ્યા છે. ૫૯૬
 પુસ્તક સમાપ્ત કહ્યું છે. ૬૦૦

૯ પુસ્તકમાં બદામલી (૪૬૧) ગ્રંથો આવેલા છે

॥ ઇત્યનુક્રમણિકા સમાપ્તા ॥

॥ अथ नवकार मांगलिकरूप ॥

॥ ॐ नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥
नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ नमो उवप्पायाणं ॥ ४ ॥
नमो लोए सब साहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच नमुक्कारो
॥ ६ ॥ सब पावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मंगलाणं च स
वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं होइ मंगल ॥ ९ ॥ इति पंच प
रमेष्ठि मंगलम् ॥ एमां लघु शाठ अने गुरु सात, सर्व
मली शडशठ अक्षर ठे पद नव ठे, संपदा आठ ठे.

॥ अथ खमासमण ॥

॥ इहामि खमासमणो वंदितं जावणिक्का
ए ॥ निसीहिआए ॥ मळएण वंदामि ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ इहा कारेण संदिसह जगवन् चैत्यवंदन करुं ॥
इहं, जय जय महाप्रभु ॥ देवाधिदेव, सर्वज्ञ श्रीवी
तराग देव ॥ सुह दिठं परमेसर, सुंदर सोम सहाव,
नूरी नवंतर संचित, निष्ठो सो सवि पाव ॥ १ ॥ जे
म पाप किया बाला पणो, अहवा अन्नाणे ॥ अणुन

वंतर सो सो खंम, जयो परमेसर ॥ १ ॥ तुह मुह
 दिठं सिरि पास जिणेसर ॥ पांस पसी पसाउ करि,
 बीनतडी अवधार; संसारडो बिहामणो, सामी आ
 वागमण निवार ॥ २ ॥ हळडा ते सुलस्कणा, जे
 जिनवर पूजंत; एके पुस्से बाहिरा, परघर काम करं
 त ॥ ४ ॥ कवणे वाडी वावीया, कवणे गूंथ्यां फूल;
 कवणे जिनवर चढाविया, जाव सरीसा मूल ॥ ५ ॥
 वाडी वेजो मोहोरीउ, सोवन कूंपली एण; पास
 जिणेसर पूजियें, पंचे अंगुलीएण ॥ ६ ॥ दो धोला
 दो सामला, दो रत्तोपल वन्न; मरगय वन्ना डुन्नि
 जिण, सोलस कंचन वन्न ॥ ७ ॥ नियनियमान क
 राविया, जरहेस नयणानंद; ते में जावें वंदिया, ए
 चउवीसे जिणंद ॥ ८ ॥ वहु ॥ कम्म जूमी, कम्म
 जूमी, पढम संघयणि, उक्कोसोसत्तरिसउ; जिणवरा
 ण विहरंत लप्पइ, नव कोडी केवली, कोडी सहस्स
 नव साहु गमइ ॥ संपइजिणवर वीस मुणे; बिहुं
 कोडीहिं वरणाण, समणह कोडी सहस्स डुथ, शु
 णसुं निच्च विहाण ॥ जयउ सामी जयउ सामी,
 रिसह सिरि सत्तुंज, उखंत पहु नेमिजिण; जयउ
 वीर सचउरिमंण ॥ जरुअत्ते मणि सवय, महर

पास डहडुरीय खंमण, अवर विदेहे तिड्यरा, चिहुं
दिसि विदिसि जंकेवि, तीमणा गयसंपयं, वंडु जिण
सवेवि, सत्ताणवइ सहस्सा, लस्का ठप्पन्न अठ को
डीउं, पंचसयं चउतीसा, तियलोए चेइए वंदे ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तवन ॥

॥ ते तरिआरे जाई ते तरिआ ॥ ए देशी ॥

॥ आदि जिनवंदे गुणसदनं ॥ सदनं तामलबोधं
रे ॥ बोधंता गुण विस्तृतकीर्त्तिं ॥ कीर्त्तिं तपथ मविरो
धं रे ॥ आदिजि० ॥ १ ॥ रोध रहित विस्फुरडुपयो
गं ॥ योगं दधतमजंगं रे ॥ जंगंनय ब्रजपेशलवाचं ॥
वाचं यम सुख संगं रे ॥ आदि० ॥ २ ॥ संगत
पद शुचि वचनतरंगं ॥ रंगं जगति ददानं रे ॥
दान सुरडुम मंजुल हृदयं ॥ हृदयंगम गुणजानं रे
॥ आदि० ॥ ३ ॥ जानंदित सुरवर पुन्नागं, नागर
मानसहंसं रे ॥ हंसगति पंचमगति वासं, वासव
विहिताशंसं रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ शंसंतनयवचनमा
नवमं, नवमंगल दातारं रे ॥ तारस्वरमघघनपव
मानं ॥ मानसुजट जेतारं रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इहं
स्तुतः प्रथमतीर्थपतिः प्रमोदा ह्रीमद्यशोविजयवाच
कपुंगवेन ॥ श्रीपुंमरीकगिरिराज विराजमानो, मा

नोन्मुखानि वितनोतु सतां सुखानि ॥६॥ इति संपूर्ण

॥ अथ शीतलजिन स्तवन ॥

॥ वारि प्रभु दशमा शीतल नाथ, सुणो एक वीन
ति रे लोल ॥ के वारि प्रभु माहरे तुम भुं प्रीत, के
अवरभुं आखडी रे लोल ॥ १ ॥ के वारिप्रभु नदिल
पुर अवतार, के दृढरथ राजियो रे लोल ॥ के वारी
प्रभुनंदा मात मलार, के कुलमां गाजीयो रे लोल
॥ २ ॥ केवारी प्रभु श्रीवह्न लह्नन पाय ॥ के प्रभुजी
ने दीपतुं रे लोल ॥ के वारि प्रभु चंद कहे कर जोड ॥
के अविहडरंगभुं रे लोल ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ विमल जिनस्तवन ॥ पुंखडानी ॥ देशी ॥

॥ विमल विमल गुण राजता, बाह्य अन्यंतर
जेद ॥ जिणंद जुहारीए ॥ सूची पूजा दृष्टांतथी ॥
मन वच काय निवेद ॥ जि० ॥ १ ॥ स्पष्ट बद्ध नि
धत्त ते ॥ निकाचित अतिशेश ॥ जि० ॥ आत्मप्रदे
शमाहे मढ्या, मलते कर्म प्रदेश ॥ जि० ॥ २ ॥
असंख प्रदेशी चिन्मयी, चेतन गुण संनार ॥ जि० ॥
प्रदेशों प्रदेशों रमी रही, वर्गणा कर्म अपार ॥ जि०
॥ ३ ॥ पंच रसायन जावना, जावित आतम तत्त्व
जि० ॥ उपलता बंढी कनकता, पामे उत्तम सत्त्व

॥ जि० ॥ ४ ॥ प्रथम जावना श्रुततणी, बीजी तप
 तिय सत्व ॥ जि० ॥ तुरीय एकता जावना, पंचम
 जाव सुसत्व ॥ जि० ॥ ५ ॥ एम करी सर्व प्रवेशने,
 विमल कल्या जिनराय ॥ जि० ॥ नाम यथार्थ वि
 चारीने, नमे स्वरूप नित्य पाय ॥ जि० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तवन ॥

॥ सुणो चंदाजी, सीमंधर परमात्म पासें जाजो
 ॥ मुज वीनतडी, प्रेम धरीनें एणी परें तुमे संनजा
 वजो ॥ ए आंकणी ॥ जे त्रए सुवननो नायक ठे
 ॥ जस चोशठ इंद पायक ठे ॥ नाण दरिसण जेह
 नें खांयक ठे ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचन वरणी
 काया ठे ॥ जस धोरी लंठन पाया ठे ॥ पुंमरीगिणि
 नगरीनो राया ठे ॥ सुणो० ॥ २ ॥ बार पर्षदा
 मांहि बिराजे ठे ॥ जस चोत्रीश अतिशय ठाजे ठे
 ॥ गुण पांत्रीश वाणीयें गाजे ठे ॥ सुणो० ॥ ३ ॥
 नविजननें ते पढी बोहे ठे ॥ तुम अधिक शितल
 गुण शीहे ठे ॥ रूप देखी नविजन मोहे ठे ॥ सुणो०
 ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसीयो बूं ॥ पण जरतमां
 दूरें वसीउं बूं ॥ माहा मोह राय कर फसीउं बूं
 ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिव चित्तमां धरीयो ठे ॥

(६)

तुम आणा खडग कर ग्रहीयो ठे ॥ पण कांश्क
मुजथी मरीयो ठे ॥ सु० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पुठ
हवे पूरो ॥ कहे पद्मविजय थाउं सूरु ॥ तो वाधे
मुज मन अति नूरो ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ उपसर्ग हरस्तवन ॥

॥ उवसग्ग हरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण
मुक्कं ॥ विसहर विस निन्नासं ॥ मंगल कल्लाण आ
वासं ॥ १ ॥ विसहर फुल्लिग मंतं, कंठे धारेइ जो
सया मणुउं ॥ तस्स गह रोगमारी ॥ डुठ जरा जंति
उवसामं ॥ २ ॥ चिठ्ठ दूरे मंतो, तुळ पणा
मोवि बहु फलो होइ ॥ नर तिरिएसु वि जीवा, पा
वंति न डुक्क दोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लब्धे,
चिंतामणि कप्पपायवप्पहिण ॥ पावंति अविग्गेणं
॥ जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संशुउं महा
जस, नत्तिनर निप्परेण हिअ एण ॥ ता देव दिक्क
बोहिं, जवे जवे पास जिणचंद ॥ ५ ॥ जिंकिंचि ना
म तिळं, सग्गे पायाले तिरियलोगंमि, जाई जिण
बिंबाई, ताई सत्ताई वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ अरिहंत चेइआणं ॥

॥ अरिहंत चेइ आणं ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

वंदण वत्तिआए ॥ पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्ति
 आए ॥ सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिज्जान वत्तिआए
 ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥ सद्धाए मेहाए धिइए ॥
 धारणाए अणुप्पेहाए ॥ वद्धमाणीए ठामी काउस्स
 ग्गं ॥ अन्नड ० ॥ इति ॥

॥ अथ नमुबुणंवा शक्रस्तव ॥

॥ नमुबुणं, अरिहंताणं, जगवंताणं ॥ १ ॥ आइ
 गराणं, तिब्बयराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्त
 माणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर पुंमरीआणं, पुरि
 सवर गंधहब्बीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोग नाहाणं,
 लोग हिआणं, लोग पइवाणं, लोग पक्कोअ गराणं
 ॥ ४ ॥ अजय दयाणं, चकु दयाणं, मग्ग दयाणं,
 सरण दयाणं, बोहि दयाणं ॥ ५ ॥ धम्म दयाणं,
 धम्म देसयाणं, धम्म नायगाणं, धम्म सारहीणं,
 धम्म वर चाउरंत चक्क वट्टीणं ॥ ६ ॥ अण्णडिहय
 वरणाण्णदंसण धराणं, विअट्ट ठकमाणं ॥ ७ ॥ जि
 णाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोद्द
 याणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सब्बूणं सब्बदरिसि
 णं, सिव मयल मरुअ मणंत मस्कय मवावाद्द

(८)

मपुणरावित्ति सिद्धि गइ नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं,
नमो जिणाणं ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ तीर्थस्तुति ॥

॥ जे अइया तिब्बयरा, जे जविसंति अणागए
काले ॥ जेआवि वट्टमाणा, ते सवे जावउ नमिमो
॥ १ ॥ सुरकय मणुयकयं वा, सुवणतिगे सासयं च
जं तिब्बं ॥ तं सयलमिह छिउं विदु, मण वयण त
णुहि पणमामि ॥ २ ॥ जब्बय जिणाणं जम्मो,
दिस्का नाणं च निसहिया जब्ब ॥ जायं च समोसर
णा, ताउ जूमीउ वंदामि ॥ ३ ॥ एवमसासय सास
य, पडिमा शुणिया जिणंद चंदाणं ॥ सिरिमं महिंद
सुवणिंद, चंदमुणि विंद शुअ महिआ ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ काव्य ॥

॥ अष्टापदें श्री आदि जिनवर, वीर पावा पुरिव
रू ॥ वासु पूज्य चंपा नयरसिद्धा, नेम रेवागिरिवरू
॥ १ ॥ समेत शिखरें वीश जिनवर, मोह पद्दोता
मुनिवरू, चोवीश जिनवर नित्य वंडुं, सयल संघ
सुहंकरू ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अशोक वृक्षःसुर पुष्पवृष्टिः, दिव्यध्वनिश्चाम
रमासनं च ॥ नामंमलं कुंडनिरातपत्रं, सत्प्राप्ति

हार्याणि जिनेश्वराणां ॥ १ ॥ सकलकर्मवारी मो
 ह्ममार्गाधिकारी, त्रिभुवन उपगारी केवल ज्ञानधारी
 ॥ नविषण नित्यसेवो देव ए नक्ति नावे, एजिननर्ज
 ता सर्व संपत्ति आवे ॥ २ ॥ इति काव्य संपूर्ण ॥

॥ अथ स्तुति काव्य ॥

॥ सकल कुशल वल्ली पुष्करावर्तमेघो, डुरित
 तिमिर जानुः कल्प वृद्धोपमानः ॥ नवजल निधि
 पोतः सर्व संपत्तिहेतुः, सनवतु नवतांजो, श्रेय
 से पार्श्वनाथः ॥ १ ॥ दशावतारो भुवनैक मल्लो, गो
 पांगना सेवित पादपद्मः ॥ श्रीपार्श्वनाथः पुरुषोत्तमो
 यं, ददातुवः सर्व समीहितानि ॥ २ ॥ श्रीपार्श्व
 नाथो नवपापताप ॥ प्रशांत धाराधर चारुरूपं ॥
 विघ्नोघहंता प्रणतोरगेंडः, समस्त कल्याणकरोजिने
 षः ॥ ३ ॥ वीरः सर्व सुरासुरेण्ड महितो वीरंबुधासं
 श्रिता ॥ वीरेणाजिहृतश्चकर्मनिचयोवीराय नित्यं
 नमः ॥ वीरात्तीर्थ मिदंप्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं त
 पो, वीरश्री धृति कीर्त्ति कांति निचयः श्रीवीरजड
 दिश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअरिहंत स्तुतिः ॥

॥ अज्ज्ञाण क्रोह मयमाण ॥ लोह माया रहिय

अरहिय ॥ निंदासोग अलिय वयण ॥ चोरइया मड्डर
 नयाय ॥ १ ॥ पाणीविह पेम कीला ॥ पसंग हासा
 इ अतय दोसाय ॥ इय अछारस विपणंदा ॥ न
 मामि देवाहि देवंतं ॥ २ ॥ एहवा देवाधिदेव सुरा
 सुर विहितसेव सर्वज्ञ जगवंत, जगन्नाथ जगजीवना
 तारक, कुगति मारग निवारक, निरिहिय निरंकार,
 निसंग निर्मम शांतदांत करुणा समुद्र, विश्व उपका
 रसागर, अनंत गुणना आगर, चोशठ इंदना पूजनि
 क, वज्ररुपजनाराचसंघयण, समचतुरस्र संस्थान,
 एक हजारने आठ वर प्रधान पुरुष लक्षणना धरण
 हार, समुद्रनी परें गंजीर, मेरुपर्वतनी परें धीर,
 शंखनी परें निरंजन, वायुनी परें अप्रति बद्ध विहा
 र, आकाशनी परें निरालंब, पट्टी जीवना संघनी परें
 एक, चारंग पंखीनी परें अप्रमत्त ॥ सिंहनी परे दुर्ध
 र्ष, वृषननी परें अठार सहस्स सीलांगरथना धुरंधर
 धोरी, चंद्रमानी परें सौम्यकांति, सूर्यनी परें समतेज,
 कुह्नी संबल, वसुधरानी परें सर्वसहे, अनंतज्ञान,
 अनंतदर्शन, चोत्रीश अतीशयें करी संयुक्त, पांत्री
 श नाषा गुण परिकलित ॥ अष्टमहा प्रातिहार्यें वि
 राजमान, पादपाठिकासहित सिंहासन, ठत्रत्रय

चामर शोचायमान, पूठ पाठल चामंढल दीपे, तेजें
 करी श्रीसूर्यने जीपे, श्रीअरिहंत उपर अशोक वृद्ध
 ढाया करतो संघाते चाले, धर्मध्वज आगलथी ल
 हलहे, आकाश गतधर्मचक्र जलहले, देवडुंडुनि स्वा
 मीके आगें वाजे, श्री अरिहंतनी वाणी मेघनी परें
 गाजे, जोजन हरणी वाणी अमृत समाणी, सर्व जा
 षानु गामिनी, उह्वाह मुक्ति नगरी प्रतें सार्थवाह,
 एहवा देवाधिदेव अरिहंत गुणवंत, जगवंत, वीतराग,
 वीतस्पृहि परमात्मा परमेश्वर परम निरंजन, तेहोनी
 गुण स्तुति जणुं ॥ इति अरिहंत स्तुति समाप्ता ॥

॥ अथ श्रीअंतरिक पार्श्वनाथ स्तुति ठंड ॥

॥ प्रभुपासजी ताहरुं नाम मीतुं, त्रिहूलोकमां
 एटलुं सार दीतुं ॥ सदा समरतां सेवतां पाप नातुं,
 मन माहरे ताहरुं ध्यान बेतुं ॥ १ ॥ मन तुम्ह पा
 सें वसे रात दिवसें, मुखपंकज निरखवा हंस ही
 से ॥ धन्य ते घडी जे घडी नयणदीसे, जली जक्ति
 जावें 'करी वीनवीसे ॥ २ ॥ अहो एह संसार ठे
 डुःख दोरी, इंडू जालमां चित्त लागी उगोरी ॥ प्रभु
 मानियें वीनति एक मोरी, मुऊ तार तुं तार बलिहा
 रि तोरी ॥ ३ ॥ सही सुपन जंजालमां सब मोह्यो,

घडीआलमां काल रमतो न जोयो ॥ सुधा एम सं
 सारमां जन्मखोयो, अहो धृतं तणें कारणें जल वि
 लोव्यो ॥ ४ ॥ एतो नमरलो केसुआं त्रांति धायो,
 जइ शुकतणी चंचु मांहे नरायो ॥ शूकें जंबू जाणी
 गढ्यें दुःख पायो, प्रभु लालचे जीवडो एम वाह्यो ॥ ५ ॥
 नम्यो नर्म नूलो रम्यो कर्म नारी, दयाधर्मनी श
 र्म में नवि विचारी ॥ तोरी नर्मवाणी परम सुख
 कारी, त्रिहुं लोकना नाथ में नवि संजारी ॥ ६ ॥ वि
 षय वेलडी सेलडी करीय जाणी, नजी मोह तृष्णा
 तजी तुज वाणी ॥ एहवो नलो नूंमो निज दास जाणी,
 प्रभु राखीएं बाहिनी ठांहि प्राणी ॥ ७ ॥ माहरी
 विविध अपराधनी कोडि सह्यें, प्रभु सरण आव्या
 तणी लाज वहीयें ॥ वली घणी घणी वीनति एम
 कहीयें, मुज मानसरे परम हंसरहीयें ॥ ८ ॥ कलश ॥
 कृपा मूरती पास स्वामी मुगतिगामी ध्याईयें, अति
 जगति जावें विपति जावे परम संपद पाईयें ॥ प्रभु
 महिम सागर गुण विरागर पास अंतरिक जे स्तवे,
 तस सकल मंगल जय जयारव आनंद वर्धन वीन
 वे ॥ ९ ॥ इतिपार्श्वनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ जगवंतनी पूजा करवा समये नवे अं ॥

॥ गे तिलक करतां पाठ उचारवो ते कहे ठे ॥

॥ दोहा ॥ जल जरि संपुट पत्रमां, युगलिक
नर पूजंत ॥ कृपन चरण अंगुठडो, दायक नवजल
अंत ॥ १ ॥ जानु बलें काठस्सग रह्या, विचख्यादे
श विदेश ॥ खडां खडां केवल लह्युं, पूजो जानु नरे
श ॥ २ ॥ लोकांतिक वचनें करी, वरस्या वरसी दा
न ॥ करकंमें प्रभु पूजना, पूजो नवि बहु मान ॥ ३ ॥
मान गयुं दोय अंशथी, देखी वीर्य अनंत ॥ जुजा
बलें नवजल तस्या, पूजो खंध महंत ॥ ४ ॥ रत्न
त्रयि गुण ऊजली, सकल सुगुण विशराम ॥ नानि
कमलनी पूजनां, करतां अविचल धाम ॥ ५ ॥ हृ
दय कमल उपशम बलें, बाढ्या रागने रोष ॥ हेम
दहे वन खंमनें, हृदय तिलक संतोष ॥ ६ ॥ शोल
पोहोर देइदेशना, कंठ विवर वर्तुल ॥ मधुर ध्वनि सु
र नर सुणे, तेणे गळे तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तीर्थ
कर पद पुण्यथी, त्रिभुवन जन सेवंत ॥ त्रिभुवन
तिलक समा प्रभु, जालतिलक जयवंत ॥ ८ ॥ सि
ंधिला गुण ऊजली, लोकांतें जगवंत ॥ वसिया
तिणे कारण नवि, शिरशिखा पूजंत ॥ ९ ॥ उपदेश

क नवतत्वना, तेणें नव अंग जिणंद ॥ पूजो बहु
विध जावथी, कहे गुन वीर मुणंद ॥ १० ॥ इति
॥ अथ दोहा ॥

॥ जीवडा जिनवर पूजीयें, पूजाना फल जोय ॥
राजा नमे प्रजानमे, आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंजें
बांध्यो जल रहे, जलविना कुंज न होय ॥ ज्ञाने बांध्यो
मन रहे, गुरुविना ज्ञान न होय ॥ २ ॥ गुरुदीवो गुरुदे
वता, गुरु विना घोर अंधार ॥ जेगुरु वाणी वेगला,
ते रडवडीया संसार ॥ ३ ॥ जावें जावना जावियें,
जावें दीजे दान ॥ जावें जिनवर पूजीयें, जावें केव
ल ज्ञान ॥ ४ ॥ प्रभु नामकी उषधि, खरे मनछुं
खाय ॥ रोग पीडा व्यापे नहीं, महा दोष मिट जा
य ॥ ५ ॥ प्रभु पूजन हुं चढ्यो, केशर चंदन घनसा
र ॥ नवे अंगे पूजा करी, नव सायर पारउतार ॥ ६ ॥
पांच कोडीनें फूलडें, पाय्या देश अढार ॥ कुमार
पाल राजा थयो, वत्त्यों जय जय कार ॥ ७ ॥ इति
॥ अथ मंगलीक काव्य ॥

॥ मंगलं जगवान् वीरो, मंगल गौतमः प्रभुः ॥ मं
गलं स्थूलजडाया, जैनोधर्मोस्तु मंगलः ॥ १ ॥
एक जंबू जगजाणियें, बीजा नेम कुमार ॥ त्रीजा व

यर वखाणियें, चोथा गौतम स्वाम ॥ १ ॥ अंगुठे
 अमृत वसे, लब्धितणो जंमार ॥ जेगुरु गौतम स
 मरियें, मन वंठित फल दातार ॥ ३ ॥ अहिण म
 हानिशिलब्धि, केवल श्रीकरांबुजे ॥ नामलक्ष्मी
 मुखे वाणी, तांश्रीगौतम स्तवे ॥ ४ ॥ इति काव्य ॥

॥ अथ लोगस्स काउस्सग्ग करवानो ॥

॥ लोगस्स उळ्ळोअगरे, धम्म तिळ्ळयरे जिणे ॥
 अरिहंते कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उ
 सजमजिअंच वंदे ॥ संजवमणिणंदणंच सुमइंच
 ॥ पउमप्पहं सुपासं, जिणंच चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥
 सुविहिंच पुप्फदंतं, सीअल सिळ्ळंस वासुपुळ्ळंच ॥
 विमलमणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥
 कुंथु अरंच मल्लिं ॥ वंदे मुणिसुवयं नमिजिणंच ॥ वं
 दामि रिछनेमिं ॥ पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं
 मए अनिद्युआ ॥ विदुय रयमला पहीण जर मर
 णा ॥ 'चउवीसंपि जिणवरा ॥ तिळ्ळयरा मे पसीयंतु
 ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया ॥ जे ए लोगस्स उ
 त्तमासिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलानं ॥ समाहिवर मुत्त
 मं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइस्सेसु अहि

यं पयासयरा ॥ सागर वर गंजीरा, सिद्धा सिद्धि
मम दिसंतु ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रजाति स्तवन ॥

॥ अब तुं चेतन चेतले, कृण जाखिणो जाहिं ॥
या जुगमे तेरो को नहीं, तुं किंनको नाहिं ॥ अब०
॥ १ ॥ जननी कामिनीने पिता, बेटा बेटीने ना
ई ॥ जुं पंखीटोलो मिले, पोढे उनी ते जाइ ॥ अ
ब० ॥ २ ॥ अंजली जल सम आउखो, जरत कह्यो
जग दीसें ॥ सिंघ्यारंग सम यौवनवय, अनित्य ए
विसवा वीसें ॥ अब० ॥ ३ ॥ जिनदास कहे उन
कारणो, ठोढो मोहको संग ॥ अनुजवकुं चित्तआदरी,
करलीयो सय गुरुसंग ॥ अब० ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रजातीस्तवन ॥

॥ जब जिनराज कृपाकरे, तब शिव सुख पावे ॥
अकृय अनोपम संपदा, नव निधि घरे आवे ॥ ज
ब० ॥ १ ॥ ऐसी वस्तु न जगतमें, दिल शाता आ
वे ॥ सुरतरु रवि शशि प्रमुखजे, जिनतेजे ठिपावे
॥ ज० ॥ २ ॥ जनम जरा मरण तणा, दुःख दूर ग
मावे ॥ मन वनमां जिन ध्याननुं, जलधर वरसा
वे ॥ ज० ॥ ३ ॥ चिंतामणि रख्यो करी, कोण का

ग उडावे ॥ तिम मूरख जिन गोडीनें, अवरान्कुं ध्या
 वें ॥ ज० ॥ ४ ॥ ईडी नमरी संगथी, नमरी पद
 पावे ॥ ज्ञानविमल प्रभु ध्यानथी, जिन उपमा आ
 वें ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति प्रजातीउं संपूर्ण ॥

॥ अथ प्रजातीस्तवन ॥

॥ विषय वासना त्यागो चेतन, साचे मारग ला
 गो रे ॥ ए आंकणी ॥ तप जप संजम दानादिक
 सहु, गिनती एक न आवे रे ॥ इंडीय सुखमा जो
 व्यो ए मन, वक्र तुरंग जिम धावे रे ॥ विष० ॥ १ ॥
 एक एकके कारण चेतन, बहुत बहुत दुःखपाये
 रे ॥ तेतो प्रगट पणें जग दीसें, इणिविध जाव ल
 खाये रे ॥ विष० ॥ २ ॥ मनमथ वस मातंग जग
 तमें, परवसता दुःख पावे रे ॥ रसना लुब्ध होय
 जख मूरख, जाल पडयो पठताय रे ॥ विष० ॥ ३ ॥
 घ्राण सुवास काज सुन नमरा, संपुट मांहे बंधावे
 रे ॥ ते सरोज संपुट संजत फून, करटीके सुखजावे
 रे ॥ विष० ॥ ४ ॥ रूप मनोहर देख पतंगा, पडत
 दीपमां जाय रे ॥ देखोयाको दुःख कारनमें, नयन
 नयेहे सहाय रे ॥ विष० ॥ ५ ॥ श्रोतेंडी आसक्त
 मरगला ॥ ठिनमें सीस कटावे रे ॥ एक एक आस

क जीव इम, नानाविध दुःख पावे रे ॥ विष० ॥ ६ ॥
 पंच प्रबल वर्त्ते नित जाकुं, साकुं कहा जुं कहीयें
 रे ॥ चिदानंद ए वचन सुणीनें, निज स्वनावमां र
 हीयें रे ॥ विष० ॥ ७ ॥ इति प्रजातीउं ॥

॥ अथ प्रजातीस्तवन ॥

॥ पुरवपुन्य उदयकरी चेतन, नीका नरनव पा
 या रे ॥ ए आंकणी ॥ दीनानाथ दयाल दयानिधि,
 दुर्जन अधिक बताया रे ॥ दशदृष्टांतें दोहिलो जा
 कुं, उत्तराध्ययनें गाया रे ॥ पु० ॥ १ ॥ अवसर पाय
 विषय रस राचत, तेतो मूढ कहाया रे ॥ काग उ
 मावन काज विप्र जिम, मार मणि पढताया रे ॥
 पु० ॥ २ ॥ नदी घोल पाषाण न्याय कर, अर्धवाट
 तुं आया रे ॥ अर्ध सुगम आगल रही तिनकुं, जि
 न कबुं मोह घटाया रे ॥ पु० ॥ ३ ॥ चेतन चारग
 तिमें निश्चें, मोक्ष द्वार ए काया रे ॥ करत कामना
 सुरपति याकुं जिनकुं अनर्गल माया रे ॥ पु० ॥ ४ ॥
 रोहणगिरि जिम रतन खाण तिम, गुण सद्गु यामें
 समाया रे ॥ महिमा मुखयी वरणत जाकी, सुरप
 ति मन संकायारे ॥ पु० ॥ ५ ॥ कल्पवृक्ष सम सं
 जमकेरी, अति शीतल जिहां ढाया रे ॥ चरण कर

ए गुण धार महा मुनि, मधुकर मन लोनाया रे
 ॥ पु० ॥ ६ ॥ यातन बिन तिहुंकाज कहो किम,
 साचा सुख निपजाया रे ॥ अवसर पाय न चूक
 चिदानंद, सजुरुयों दरसाया रे ॥ पु० ॥ ७ ॥ इति॥
 ॥ अथ आंबिलनी ओलीना नव स्तवन प्रारंभ ॥
 ॥ तत्र प्रथम स्तवनं ॥

॥ केसर वरणो हो केकाढ कसूंबो माराजाल ॥
 ॥ ए देशी ॥ गोयम नाणी हो के कहे सुणो प्राणी
 माराजाल ॥ जिनवर वाणी हो के हीयडे आणी ॥
 मा० ॥ आसोमासे हो के मनने उछासैं ॥ मा० ॥
 नवपद ध्यासैं हो के अंग उछासैं ॥ मा० ॥ १ ॥
 आंबिल कीजें हो के जिन पूजो जैं ॥ मा० ॥ जाप
 जपी जैं हो के देव वांदीजे ॥ मा० ॥ जावनाजावो
 हो के सिद्धचक्र ध्यावो ॥ मा० ॥ जिनगुण गावो
 हो के शिव सुखपावो ॥ मा० ॥ २ ॥ श्रीश्रीपाले
 हो के मयणा बोले ॥ मा० ॥ ध्यान रसाले हो के
 रोगज टाले ॥ मा० ॥ सिद्धचक्र ध्यावो हो के रोग
 गमावो ॥ मा० ॥ मंत्र आराह्यो हो के नवपद पा
 यो ॥ मा० ॥ ३ ॥ नामनी जोली हो के पेहेरि प
 टोली ॥ मा० ॥ सहीयर टोली हो के कुंकम घोली

॥ मा० ॥ थाल कचोली हो के जिनवर खोली ॥
 मा० ॥ पूजी प्रणमी हो के कीजे उली ॥ मा० ॥ ४ ॥
 चैत्री आसो हो के मनने उल्लासैं ॥ मा० ॥ नवपद
 ध्यासैं हो के शिवसुख पासैं ॥ मा० ॥ उत्तम साग
 र हो के पंक्षितरायां ॥ मा० ॥ शेवक कांति हो के
 बहु सुख पायां ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय स्तवनं ॥

॥ आठे लालनी देशी ॥ नवपद महिमा सार,
 सांजलजो नरनार ॥ आठे लाल ॥ हेजधरी आरा
 धीयें ॥ तो पामो नवपार, पुत्रकलत्र परिवार ॥ आ० ॥
 नवपद मंत्र आराही यें ॥ १ ॥ आसोमास विचार,
 नव आंबिल निरधार ॥ आ० ॥ विधिगुं जिनवर पू
 जीयें, अरिहंत सिद्ध पद सार ॥ गणणोजी तेर ह
 जार ॥ आ० ॥ नवपदनो इम कीजीयें ॥ २ ॥ म
 यण सुंदरी श्रीपाल, आराध्यो ततकाल ॥ आ० ॥
 फल दायक तेहने थयो, कंचन वरणी काय ॥ देही
 तेहनी थाय ॥ आ० ॥ श्रीसिद्धचक्र महिमा कह्यो
 ॥ ३ ॥ सांजलि सद्गु नरनार, आराध्यो नवकार ॥
 आ० ॥ हेजधरी हीयडे घणु, चैत्रमासे वली एह ॥
 नवपद गुं धरो नेह ॥ आ० ॥ पूज्यो ये शिवसुख

(११)

घण्टुं ॥ ४ ॥ इणिपरें गौतम स्वाम, नव निधि जेह
ने नाम ॥ आ० ॥ नवपद महिमां वखाणीउ, उत्तम
सागर शीश ॥ प्रणमें ते निस दीस ॥ आ० ॥ नव
पद महिमा जाणीउ ॥ ५ ॥ इति द्वितीय स्तवनं ॥ १ ॥

॥ अथ तृतीय स्तवनं ॥

॥ सीतातो रूपें रूअडी ॥ ए देशी ॥ श्री वीर
जिणंद वखाण्यो, तिहां गौतम गणधर जाण्यो ॥ हो
नवपद ध्याईए ॥ श्री श्रीपाल नरेसें ॥ मयणाने गुं
रु उपदेसे हो ॥ नव० ॥ १ ॥ श्रीसिद्धचक्र आरा
ध्यो, तो सयल पदारथ पायो ॥ हो० ॥ आसो मा
शे कीजें, शुदि सातमें जिन पूजीजें हो ॥ नव० ॥ २ ॥
अष्ट कमल दल थापी, महिमां जस त्रिभुवन व्या
पी हो ॥ न० ॥ मध्यदलें जिन ध्याने, ध्यावो नवि
धवले वाने हो ॥ न० ॥ ३ ॥ पूरव दिसे सिद्ध ठा
जे, राते तनुं तेज विराजे हो ॥ न० ॥ आचारज
पद त्रीजे, जिम सोवन वान कहीजें हो ॥ न० ॥ ४ ॥
पश्चिम दिस उवजाया, नीलें तनु वान सोहाया हो
॥ न० ॥ साधु सकल घनवानें, उत्तरदिसि ध्यावो
ध्यानें हो ॥ न० ॥ ५ ॥ नाण अग्नि कुंणे ध्यावो,
जिम अत्यंत सुख तुमें पावो हो ॥ न० ॥ दंसण

आराहो प्राणी, नैरुत विदसें मन आणी हो ॥ न०
 ॥ ६ ॥ वाव्यकुंणें कहीजे, चारित्र ध्यायी सुखलीजे
 हो ॥ न० ॥ ईशाने तप ध्यावो, उज्जल समकित
 सुखपावो हो ॥ न० ॥ ७ ॥ आसो चैत्रज मासे,
 जपता रुद्रि आवें पासे हो ॥ न० ॥ विधिगुं देव
 वांदीजे, श्रीजिन पूजा रचीजे हो ॥ न० ॥ ८ ॥ न
 व पद जाप जपीजे, आंबिल तप नव दिन कीजे हो
 ॥ न० ॥ श्रीसिद्धचक्र सेवीजे, पंचामृत न्हवण करीजे
 हो ॥ न० ॥ ९ ॥ चउद पूरवनो सार, एमंत्र वडो
 नवकार हो ॥ न० ॥ बुध उत्तम सागर राया, शिष्य
 कांति सागर सुखपाया हो ॥ १० ॥ नव० ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थ स्तवनं ॥

॥ किसके चेले किसके पूत ॥ ए देशी ॥ सेवोरे
 नवि जावें नवकार, जंपे श्रीगौतम गणधार ॥ नवि
 सांनलो ॥ हारे संपद आय ॥ न० ॥ हारे संकट
 जाय ॥ न० ॥ आसोने चैत्रें हरख अपार, आणी
 गणणो तेर हजार ॥ न० ॥ १ ॥ चारवरसनें वली
 षट मास, ध्यान धरो नवी जावें विश्वास ॥ न० ॥
 ध्यायोरे मयण सुंदरी श्रीपाल, तेहनो रोग गयो त
 तकाल ॥ न० ॥ २ ॥ अष्टकमल दल पूजा रसाल,

करीरे न्हवण ठांठ्यो ततकाल ॥ न० ॥ सातर्शें म
 हीपति तेहनैरे ध्यान, देही पामी कंचन वान ॥ न०
 ॥ ३ ॥ एनो महिमां कहेतां नावे पार, समरो ति
 ण कारण नवकार ॥ न० ॥ इह नव परनव ये सु
 खवास, बहु पामे लब्धी लीज विलास ॥ न० ॥ ४ ॥
 जाणी प्राणी जान अनंत, सेवो सुखदायक ए यंत्र
 ॥ न० ॥ उत्तमसागर एंमितिशिष्य, सेवे कांति सागर
 निसदीस ॥ न० ॥ ५ ॥ इति चतुर्थस्तवनं ॥

॥ अथ पंचम स्तवनं ॥

॥ नवियां श्रीसिद्धचक्र आराधो ॥ तुमें मुक्ति मा
 रगनें साधो ॥ एहनरनव दुर्जन लाधो हो लाल
 ॥ १ ॥ नवपद जाप जपीजें ॥ त्रण टंक देव वांदी
 जें ॥ त्रिहुं कालें जिन पूजीजें ॥ आंबिल तप नव
 दिन कीजें हो लाल ॥ न० ॥ २ ॥ शुदि आसु चैत्र
 ज मासें ॥ तप सातमथी अन्यासें ॥ पद सेव्या पा
 तक नासे हो लाल ॥ न० ॥ ३ ॥ मयणानें नृप
 श्रीपालें ॥ आराध्यो मंत्र उजमालें ॥ एह दुख दो
 हगनें टालें हो लाल ॥ न० ॥ ४ ॥ एहनी जे सेवा
 सारे ॥ तसमयगल गाजे बारें ॥ इति नीति अनीति
 निवारें हो लाल ॥ न० ॥ ५ ॥ मिथ्यात विकार अ

निष्ट ॥ क्युं जाए दोषी दुष्ट ॥ इण सेव्या समकित
 पुष्ट हो लाल ॥ न० ॥ ६ ॥ जसवंत जिनेंसु सा
 खें ॥ नवि सिद्धचक्रना गुण जाखे ॥ ते ज्ञान वि
 नोद रस चाखे हो लाल ॥ न० ॥ ७ ॥ इति ॥ ५॥

॥ अथ षष्ठ स्तवनं ॥

॥ जग जीवन जग वालहो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसिद्ध चक्र आराधीयें ॥ शिव सुख फल स
 हकार लालरे ॥ ज्ञानादिक त्रण रत्ननुं ॥ तेज चढा
 वण हार लाल रे ॥ श्रीसि० ॥ १ ॥ गातम पूढे
 तेकह्यो ॥ वीर जिणंद विचार लाल रे ॥ नवपदं मंत्र
 आराधतां ॥ फल लहे नविक अपार लाल रे ॥
 श्रीसि० ॥ २ ॥ धर्मरथना चार चक्रठे ॥ उपशमनें
 सुविवेक लालरे ॥ संवर त्रीजो जाणीयें ॥ चोथो
 सिद्धचक्र ठेक लाल रे ॥ श्रीसि० ॥ ३ ॥ चक्री चक्र
 रथणनें बलें ॥ साधे सयल ठ खंम लाल रे ॥ तिम
 सिद्धचक्र प्रजावथी ॥ तेज प्रताप अखंम लाल रे
 ॥ श्रीसि० ॥ ४ ॥ मयणाने श्रीपाल जी ॥ जपता
 बहु फल लीथ लाल रे ॥ गुण जसवंत जिनेंसु ॥
 ज्ञानविनोद प्रसिद्ध लाल रे ॥ श्रीसिद्ध० ॥ ५ ॥

॥ अथ सप्तम स्तवन ॥

॥ चिंतामण स्वामी साचा साहिब मेरा ॥ एदेशी ॥

॥ आराहो प्राणी साचि नवपद सेवा ॥ ए आंकणी ॥
नव निधि आपे नवपद सेवे ॥ इम जाखें श्रीजिनदे
वा ॥ आ० ॥ १ ॥ श्रीसिद्धचक्र धरो नित दिलमें ॥
जेसें गज मन रेवा ॥ आ० ॥ २ ॥ अरिहंतादिक
एक पद जपतां ॥ हारे लहीयें सुख सदैवा ॥ आ०
॥ ३ ॥ समुदित जपतां किमकरी नकरे ॥ सुरसुख
डुम फल लेवा ॥ आ० ॥ ४ ॥ जिनें ई ज्ञान विनोद
प्रसंगे ॥ हरपितयो नित मेवा ॥ आ० ॥ ५ ॥

॥ अथ अष्टम स्तवन ॥

॥ रागसारंग ॥ गोतम पूठत श्रीजिन जाखत ॥
वचन सुधारस पानकी ॥ बलिहारी नवपद ध्यानकी
॥ १ ॥ नवपद सेवे नवमे स्वर्गे ॥ पावत रुद्रि वि
मानकी ॥ ब० ॥ २ ॥ याके महिमा वद्वज्र हमकुं ॥
जेसें जसोदा कानकी ॥ ब० ॥ ३ ॥ पावे रूप सरू
प मदनसो ॥ देही कंचन वानकी ॥ ब० ॥ ४ ॥
याको ध्यान हृदय जब आवत ॥ उपजत लहेरी
ज्ञानकी ॥ ब० ॥ ५ ॥ समकित ज्योति होवे दिल
नीतर ॥ जेसे लोकनमें जानकी ॥ ब० ॥ ६ ॥

जिनेंइ ज्ञानविनोद प्रसंगे ॥ नक्ति करो जगवानकी
॥ व० ॥ ७ ॥ इति अष्टम स्तवनं ॥ ८ ॥

॥ अथ नवम स्तवनं ॥

॥ पूज्य पधारो मरुदेशे ॥ ए देशी ॥

॥ नवपद महिमा सांजलो ॥ वीरजाखे हो सुणो
परपदा बारके ॥ एसरीखो जग कोनहीं ॥ आराह्यो
हो शिवपद देदारके ॥ न० ॥ १ ॥ नव उली आंबि
ल तणी ॥ नवि करीयें हो मनने उल्लासके ॥ जोमी
सयन ब्रह्म व्रत धरो ॥ नित सुणीयें हो श्रीपालनो
रासके ॥ न० ॥ २ ॥ नव विधि पूर्वक तप करी ॥
ऊजमणुं हो कीजें विस्तारके ॥ साहमी सामंणी
पोषीयें ॥ जिम लहीयें हो नवनो निस्तार के ॥ न०
॥ ३ ॥ नरसुख सुरसुख पामीयें ॥ बली पामें हो
नव नव जिनधर्म के ॥ अनुक्रमें शिवपद पण लहें ॥
जिहां मोटा हो अव्यय सुख शर्मके ॥ न० ॥ ४ ॥
सांजली नवियण दिलधरो ॥ सुखदायी हो नव पद
अधिकार के ॥ वचन विनोद जिनेंइनो ॥ मुऊ हो
जोहो नव नव आधार के ॥ नव० ॥ ५ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवन ॥

॥ श्रीगौतम पृष्ठा करे, विनय करी शीशनमाय

प्रभुजी ॥ अविचल ध्यानक मेंसुण्यो, कृपा करी मोय
 बताय प्रभुजी ॥ शिवपुर नगर सोहामणुं ॥ १ ॥ ए
 आंकणी ॥ आठ करम अलगां करी, साखा आतम
 काम ॥ प्र० ॥ बूटा संसारनां दुख थकी, रेवानो
 किहां ठाम ॥ प्र० ॥ शि० ॥ २ ॥ वीर कहे उर्ध्व
 लोकमां, सिद्ध शिजातणो ठाम हो गौतम ॥ स्वर्ग
 ठवीशने उपरें, तेना बारे नाम हो ॥ गौ० ॥ शि०
 ॥ ३ ॥ लाख पिसतालीश जोजना, लांबी पोहोली
 जाण हो ॥ गौ० ॥ आठ जोजन जाडो विज्ञें, ठेडे
 मंखपंख ज्युं जाणहो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ४ ॥ उज्व
 लहार मोती तणो ॥ गोडुग्धशंख वखाण हो ॥ गौ० ॥ ते
 थकी कजली अति घणी, उलट ठत्र संठाण हो
 ॥ गो० ॥ शि० ॥ ५ ॥ अर्जुन स्वर्णसम दीपती,
 गठारी मठारी जाण हो ॥ गौ० ॥ फटक रत्नथकी
 निर्मेली, सुंआली अत्यंत वखाण हो ॥ गौ० ॥ शि०
 ॥ ६ ॥ सिद्धशिजा उजंधी गया, अधर रह्या सिद्धरा
 ज हो ॥ गौ० ॥ अलोकशुं जाई अड्या, साखा आ
 तम काज हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ७ ॥ जन्म नहीं म
 रण नहीं, नहीं जरा नहीं रोग हो ॥ गौ० ॥ वैरी
 नहीं मित्र नहीं, नहीं संजोग विजोग हो ॥ गौ० ॥

शि० ॥ ८ ॥ चूख नहीं तरषा नहीं, नहीं हरष
 नहीं शोक हो ॥ गौ० ॥ कर्म नहीं काया नहीं, नहीं
 विषयारस योग हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ९ ॥ शब्दरूप
 रसगंध नहीं, नहीं फरस नहीं वेद हो ॥ गौ० ॥
 बोले नहीं चाले नहीं, मौनपणुं नहीं खेद हो ॥
 गौ० ॥ शि० ॥ १० ॥ गाम नगर तिहां कोइ नहीं, नहीं
 वसती न उजाड हो ॥ गौ० ॥ काल तिहां वरते नहीं,
 नहीं रात दिवस तिथिवार हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ११ ॥
 राजा नहीं प्रजा नहीं, नहीं ठाकुर नहीं दास हो
 ॥ गौ० ॥ मुक्तिमां गुरु चेला नहीं ॥ नहीं लघु बडा
 ई तास हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १२ ॥ अनंता सुखमां
 जीतो रह्यां, अरूपी ज्योत प्रकाश हो ॥ गौ० ॥
 सद्गु कोईनें सुख सारीखा ॥ सघजानें अविचल वास
 हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १३ ॥ अनंता सिद्ध मुगतें
 गया, बली अनंता जाय हो ॥ गौ० ॥ अवर जग्या
 रुंधे नहीं, ज्योतमां ज्योत समाय हो ॥ गौ० ॥
 शि० ॥ १४ ॥ केवल ज्ञान सहित ठे, केवल दर्शन
 खास हो ॥ गौ० ॥ स्वायक समकित दीपतुं, कदीय
 न होवे उदास हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १५ ॥ सिद्ध
 स्वरूप जे उलखे ॥ आणीमन वैराग हो ॥ गौ० ॥

शिव सुंदरी वेगें वरे, नय कहे सुख अथाग हो ॥
गौ० ॥ शिव० ॥ १६ ॥ इति श्री सिद्ध स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ पंचतीर्थीनी आरती लिख्यते ॥

॥ पेहेली आरती प्रथम जिणंदा, शत्रुंजय मंमण
रूपन जिणंदा ॥ श्रीसिद्धाचल तीर्थे आव्या ॥ पूरव
नवाणुं नविक मन जाव्या ॥ आरती कीजें श्रीजि
नवरकी ॥ १ ॥ दुसरी आरती शांति जिणंदकी ॥
शांति करे प्रभु शिव मारगकी ॥ पारेवो जिणे शर
णे राख्यो ॥ केवल पामीनें धर्म प्रकास्यो ॥ आ०
॥ २ ॥ तीसरी आरती श्रीनेमनाथ ॥ राज्ञुज नारी
तारी निज हाथ ॥ सहस पुरुषगुं संयमलीधो ॥
करी निज आतम कारज सीधो ॥ आ० ॥ ३ ॥
चोथी आरती चिदुंगति वारी ॥ पारसनाथ नविक
हितकारी ॥ गोडीपास संखेश्वरो पास ॥ नविजन
नी पूरे मन आस ॥ आ० ॥ ४ ॥ पांचमी आरती
श्रीमहावीर ॥ मेरु परेंजिम रक्षां धीर ॥ साढा बार
वरस तप तपीया ॥ कर्म खपावीनें शिव पुर वसि
या ॥ आ० ॥ ५ ॥ इणिपरें प्रभुजीनी आरती कर
शे ॥ गुन परिणामे शिवपुर वरसे ॥ इणिपरें जिनजी
नी आरती गावे ॥ गुन परिणामें शिवपुर जावे ॥

आ० ॥ ६ ॥ करजोडी सेवक एम बोले ॥ नही
कोइ मारा जिनजीने तोले ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति
॥ अथ चार मंगलिकदीपक ॥

॥ आजघरे नाथ पधाखा ॥ कीजे मंगल चार ॥
आ० ॥ पहिले मंगल प्रभुजीने पूजुं ॥ घसी केसर
घनसार ॥ आ० ॥ १ ॥ बीजे मंगल अगर उखेवुं
॥ कंठे ठवुं फूल हार ॥ आ० ॥ त्रीजे मंगल आर
ती उतारुं ॥ घंटवजावुं रणकार ॥ आ० ॥ २ ॥
चोथे मंगल प्रभुगुण गांक ॥ नाटिक थश्यइ कार
॥ आ० ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन ॥ चरण क
मल जाउं वार ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ मंगलिक दीपक ॥

॥ दीवोरे दीवो मंगलिकदीवो ॥ आरती उतारी
ने बहु चिरंजीवो ॥ दी० ॥ सोहामणुं घर पर्वदिवा
ली ॥ अंबर खेले अबलावाली ॥ दी० ॥ देपाल न
णे इणें देव अजुआली ॥ नावें नगतें विघ्न निवारी
॥ दी० ॥ देपाल नणे इणें कली कालें ॥ आरती
कतारी राजा कुंअर पालें ॥ दी० ॥ ते घर भंगलिक
जे घर मंगलिक ॥ चतुर्विध संघ घर मंगलिक दीवो
॥ दी० ॥ इति मंगलिक दीपक संपूर्ण ॥

॥ अथ मोटीआरती ॥

॥ पेहेली रे आरती प्रथम जिणंदा ॥ शत्रुंजा मं
 ऋण रुषन जिणंदा ॥ जय जय आरती आदिजिणं
 दकी ॥ दूसरी आरती मरुदेवी नंदा ॥ जुगला रे धर
 म निवारकरंदा ॥ ज० ॥ १ ॥ तीसरी आरती त्रिचु
 वन मोहे ॥ रत्न सिंहासन मारा प्रभुजीनें सोहे ॥
 ज० ॥ चौथी आरती नित नवी पूजा ॥ देव रुषन
 देव अवर नहिं दूजा ॥ ज० ॥ २ ॥ पांचमी आरती
 प्रभुजीनें जावे ॥ प्रभुजीना गुण सेवक इमगावे ॥
 ज० ॥ ३ ॥ आरती कीजें प्रभु शांति जिणंदकी ॥
 मृगलंठनकी में जाउं बलिहारी ॥ जयजय आरती
 शांति तुमारी ॥ विश्वसेन अचरादेवीको नंदा, शांति
 जिणंद मुख पूनम चंदा ॥ ज० ॥ ४ ॥ आरती की
 जें प्रभु नेम जिणंदकी ॥ शंखलंठनकी में जाउं बलि
 हारी ॥ आ० ॥ समुद्र विजय शिवा देवीको नंदा ॥
 नेमजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ॥ ५ ॥ आरती
 कीजें प्रभु पास जिणंदको ॥ फणिंद लंठनकीमें जा
 उं बलिहारी ॥ आ० ॥ अश्वसेन वामा देवीको नंदा ॥
 पासजिणंद मुख पूनम चंदा ॥ ज० ॥ ६ ॥ आरती
 कीजें महावीर जिणंदकी ॥ सिंह लंठनकीमें जाउं ब

लिहारी ॥ ज० ॥ सिद्धारथराया त्रिसज्ञा देवीको नं
दा ॥ वीरजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ ज० ॥ ७ ॥ आरती
कीजें प्रभु चोवीसि जिणंदकी ॥ चोवीसे जिणंदकी में
जावं बलिहारी ॥ चोवीसे जिणंद मुख पूनमचंदा ॥
ज० ॥ ८ ॥ करजोडी सेवक इम बोले ॥ नही कोइ मा
हारा प्रभुजीने तोले ॥ ज० ॥ इति आरती संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीचक्केसरीमातानी आरती ॥

॥ जय जय आरती देवी तुमारी ॥ नित प्रणमुं
हुं तुम चरणारी ॥ ज० ॥ १ ॥ श्रीसिद्धाचल गिरि
रखवाली ॥ नाम चक्केसरी जग सौख्याली ॥ ज० ॥
॥ २ ॥ विधि पद्मगङ्गनी शासन देवी ॥ सकल श्रीसं
घने सुख करेवी ॥ ज० ॥ ३ ॥ नीलवट टीलडी रत्न
विराजे ॥ काने कुंमल दोय रवि शशि ठाजे ॥ ज०
॥ ४ ॥ बाहे बाजुबंध बेरखा सोहे ॥ नीलवरण सु
चके मनमोहे ॥ ज० ॥ ५ ॥ सोवन मय नित चून
डी खलके ॥ पायें घुवरडा घम घम घमके ॥ ज०
॥ ६ ॥ वाहन गरुड चडयां बहु प्रेमें ॥ तुज गुण
पारन पावं केमें ॥ ज० ॥ ७ ॥ चूनडी जडामां देह
अति दीपे ॥ नवसरा हारें जग सहु जीपे ॥ ज०
॥ ८ ॥ नित नित मानी आरती उतारे ॥ रोग सोग

જય દૂર નિવારે ॥ જ૦ ॥ ૯ ॥ તસ ઘર પુત્ર પૌત્રા
 દિક ઠાજે ॥ મનવંઠિત સુખ સંપદ રાજે ॥ જ૦
 ॥ ૧૦ ॥ દેવચંડા મુનિ આરતી ગાવે, જયો જયો મં
 ગલ નિત્ય વધાવે ॥ જ૦ ॥ ૧૧ ॥ ઇતિ સંપૂર્ણ ॥

॥ અથ લોનનીસચાય ॥

॥ ઇન્દ્ર આંબા આંબલી રે ॥ એ દેશી ॥

॥ લોન નકરીએ પ્રાણીયાં રે, લોન બુરો સંસાર ॥
 લોન સરિખો જગમાં નહી રે ॥ દુરગતિનો દાતાર ॥
 જવિક જન, લોન બુરો રે સંસાર ॥ ૧ ॥ કરજો તુમે
 નિરધાર ॥ જ૦ ॥ જિમ પામો જવપાર ॥ જ૦ ॥
 લોન બુરો રે સંસાર ॥ એ આંકળી ॥ અતિ લોને
 લલ્લમી પતીરે ॥ સાગરનામે શેઠ ॥ પૂર પયોનિ
 થિમાં પડ્યો રે ॥ જઈ બેઠો તસ દેઠ ॥ જ૦ ॥ ૨ ॥
 લો ॥ સોવન મૃગના લોનથી રે ॥ દસરથ સુત
 શ્રીરામ ॥ સીતા નારિ ગમાવીને રે ॥ જમીઠ ઠામો
 ઠામ ॥ જ૦ ॥ ૩ ॥ લો ॥ દશમાં ગુણઠાણા લગે
 રે ॥ લોન તણોઢે જોર ॥ શિવપુર જાતાં જીવને રે ॥
 એહજ મોટો ચોર ॥ જ૦ ॥ ૪ ॥ લો ॥ ક્રોધ માન
 માયા લોનથી રે ॥ દુરગતિ પામે જીવ ॥ પરવસ પ
 ઢીઠ બાપડો રે ॥ અર્દ્ધનિશ પાડે રીવ ॥ જ૦ ॥ ૫ ॥

लो० ॥ परिग्रहना परिहारथी रे ॥ लहीएं शिवसुख
सार ॥ देव दाणव नरपति थई रे ॥ जासे मुक्ति म
जार ॥ ज० ॥ ६ ॥ लो० ॥ जाव सागर पंक्ति
जणे रे ॥ वीर सागर बुधशिष्य ॥ लोज तणे त्यागें
करी रे ॥ पद्मोचे सयल जगीश ॥ ज० ॥ ७ ॥ लो० ॥

॥ अथ शीयलनी नववाड प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ श्रीगुरुनें चरणें नमी, समरी शारद मा
य ॥ नवविध शीयलनी वाडनो, उत्तम कहूं उपाय
॥ १ ॥ ढाल पहेली ॥ वधावानी ॥ पहेलीने पासो
होजी ॥ ए देशी ॥ पहेलीने वाडे होजी वीरजिन वर
कह्यो ॥ सेवो सेवो वस्ति विचारीनें जी ॥ स्त्री पशु
पमंग होजी वास वसे जिहां, तिहां न रहेबुं शील
व्रत धारीनें जी ॥ २ ॥ जिम तरु माले होजी व
सतो वानरो, मनमां बीये रखे जुंयें पडुं जी ॥ मं
जार देखी होजी पंजर मांहेथी, पोपट चिंतेहो र
खे मोटें चडूं जी ॥ ३ ॥ जिम सिंहलंकी होजी सुंदरी
शिर धरी, जलनुं वेडुं हो जुगतिनुं जालवे जी ॥
तिम मुनि मनमें होजी राखे गोपवी, नारीनें निर
खी होजी चित्त नवी चालवे जी ॥ ३ ॥ जिहां होवे
वासो होजी सेहेजे मांजारनो, जोखम लागे हो

सुषकनी जातने जी ॥ तिम ब्रह्मचारी होजी नारी
नी संगते, हारे हो हारे रे शीयल सुधातनें जी ॥ ५ ॥
त्रुटक ॥ इम वाडविघटे विषय प्रगटे, शंका कंखा नी
पजे ॥ तीव्र कामें धातु बीगडे, रोग बहुविध उपजे ॥
मन्न मांहे विषय व्यापें, विषयशुं मन रहे मली ॥ उ
दय रत्न कहे तिणे कारणें, नव वाडी राखो निर्मली ॥ ६ ॥
॥ ढाल बीजी ॥

॥ वदर्नदेश कुंमिन पुर नयरी ॥ ए देशी ॥

॥ सुरपति सेवित त्रिचुवन धणी, अज्ञान तिमि
र हर दिनमणी ॥ शील रत्नना जतन तंते, वाड
जांखी बीजी नगवंतें ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ नगवंत जांखे
संध साखें, शीयल सुरतरु राखवा ॥ मुक्ति महाफल
हेतु अद्भुत, चारित्रनो रस चाखवा ॥ २ ॥ मीठे व
चने माननीशुं ॥ कथा न करे कामनी ॥ वाड वि
धिंशुं जेह पाळे ॥ बलिहारी तस नामनी ॥ ३ ॥
वात व्रतने घात कारी, पवन जिम तरुपातनें ॥
वात करतां विषय जागे ॥ तेमाटें तजो ए वातनें
॥ ४ ॥ लोंबु देखी दूरथी जिम, खटाशे माढागळे ॥
गगने गर्जारव सुणीनें, हडकवा जिम उड्डले ॥ ५ ॥
तिम ब्रह्मचारीनां चित विणसें, वयण सुंदरीनां

सुणी ॥ कथा तजो तिण कारणें, एम प्रकारें
त्रिभुवन धणी ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ त्रट जमुनानुं रे अति रलीयामणुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ त्रीजीनें वाढे रे त्रिभुवन राजीउं रे ॥ इणीपरें
दीए उपदेश ॥ आसन ठंफोरे साधुजी नारीनो रे,
मूढूर्त्तलर्गे सुविशेष ॥ हुं बलिहारी रे जाउं तेहनी
रे ॥ १ ॥ धन्य धन्य तेहनी हो मात ॥ शीज सुरंगी रे
रंगाणी रागछुं रे ॥ जेहनी साते हो धात ॥ हुं०
॥ २ ॥ शयनासयने रे पाटीनें पाटले रे, जिहां
जिहां बेसे हो नार ॥ बेघडी लर्गे रे तिहां बेसे नहों
रे, शीजव्रत राखणहार ॥ हुं० ॥ ३ ॥ कोहलां केरी
रे गंध संजोगथी रे, जिम जाए कणकनो वाक ॥
तिम अबलानुं रे आसण सेवतां रे, विणसें शीज
सुपाक ॥ हुं० ॥ ४ ॥

॥ ढाल चौथी ॥ हुं वारी रंगढोलणां ॥ एदेशी ॥

॥ चौथीनी वाढे चेतजो हो राज, इम नांखे
श्रीजिन नूप रे ॥ संवेगी सूधा साधु जी ॥ नयण
कमल विकासीनें हो राज, रखे निरखो रमणीनो
रूप रे ॥ सं० ॥ १ ॥ रूप जोतां रढ लागसे हो

राज, हेला उल्लससे अन्नंग रे ॥ सं० ॥ मनमांहे जा
गजो मोहनी हो राज, त्यारे होसे व्रतनो जंगरे ॥
सं० ॥१॥ दिनकर साहामुं देखतां हो राज, जगमां
नयण घटे जिम तेज रे ॥ सं० ॥ तिम तरुणी तन
पेखतां हो राज, हीणुं थाए शीलछुं हेज रे ॥ सं० ॥२॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ थांपरवारी मारा साहिबा ॥ ए देशी ॥

॥ पंचमी वाडी परमेसरें, वखाणी हो वारू ॥
सांजलजो श्रोता तुमें, धर्मीव्रत धारू ॥ १ ॥ कूड
अंतरवर कामिनी, रमे जिहां रागें ॥ स्वरकंकणादि
कनो सुणी, तिहां मनमथ जागे ॥ २ ॥ तिहां रहे
वुं ब्रह्मचारीनैं, न कहुं वीतरागें ॥ वाड जांगे शील
रत्ननी, जिहां लांढन लागे ॥ ३ ॥ अग्निपासैं जिम
उंगले, जाजन मांहे जरिया ॥ लाखने मीण जाए
गली, न रहे रस जरिया ॥ ४ ॥ तिम हाव जाव
नारी तणा, बली हासुने रुदन ॥ सांजलतां शील
बिगडे, मन वधे हो मदन ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठछी ॥

॥ सहीयां मारा नयण समारो ए देशी ॥

॥ ठछीने वाडे ठयल ठबीलो, गुण रत्न गाढो

नखो जी, श्रीसिद्धारथ कुल नंद नगीनो, वीरजिणंद
 एम उच्चरें जी ॥ १ ॥ अत्रती पणें जे होये आगें,
 काम क्रीडा बहुविध करी जी ॥ व्रत लेइनें विलसि
 त पेहेलां, रखे संनारो दीज धरीजी ॥ २ ॥ अग्नि
 नखां जिम उपर पुलो, मेले जिम ज्वाला वमे जी
 ॥ वरस दिवसें जिम विषधरनुं, शंकाए विष संक्रमें
 जी ॥ ३ ॥ विषय सुख विजसित पेहनां, तिम शी
 लव्रती संनारतो जी ॥ व्याकुल अइनें शीज विराधे,
 पठें थाय वजि उरतो जी ॥ ४ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ गढबुंदीरा वाला ॥ एदेशी. ॥

॥ सातमी वाडे वीर पयंपे, सुणो सजमना रागी
 हो ॥ शीलरथनां हो धोरी ॥ सूधा साधु वैरागी,
 मुऊ आणा कारी, विषय रसना हो त्यागी ॥ सू० ॥
 ॥ १ ॥ सरस आहार तजजो सेजें, विगय थोडी वा
 वरजो हो ॥ शी० ॥ सू० ॥ २ ॥ मादक आहारें
 मनमथ जागे, ते जाणी परहरजो हो ॥ शी० ॥
 ॥ सू० ॥ ३ ॥ सन्निपातें जिम घृत जोगें, अधिक
 करे उजाला हो ॥ शी० ॥ सू० ॥ ४ ॥ पांचे इंडिय
 तिम रस पोखे, चारित्रमां करे चाला हो ॥ शी० सू० ५

॥ ढाल आठमी ॥

॥ गोठण खोलो कमाड ॥ ए देशी ॥

॥ त्रीशला सुत हो त्रिगडे वेशी एम, आठमी
वाढवखाणी शीलनी जी ॥ अतिमात्रा हो आहा
र तजो अणगार, लालच राखो संजम शीलनी जी
॥ १ ॥ अतिआहारें हो आवे उंघ अपार, सुपनमां
हे हो थाए शील विराधनां जी ॥ वली थाए हो ते
णे मदवंत देह, संजमनी हो नवि थाए आराधना
जी ॥ २ ॥ जिमशोरनां हो मापमां दोढ शेर, उरीने
ऊपर दीजें ढांकणो जी ॥ नांजे तोलडी हो खीचडी
खेरुं थाए, तिम अतिमात्राए व्रत विगडे घणुं जी ॥ ३ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ गरबानी ॥ देशी ॥

॥ नवमी वाडें निवारजो रे, साधुजी शणगार ॥
शरीर शोजाए शोजे नही, अवनीतलें अणगार
॥ १ ॥ एम उपदेशे वीरजी, मुनिवर धरजो रे मन्न
॥ शीखामण ए माहुरी, करजो शील जतन्न ॥ २ ॥
स्नान विलेपन वासना, उत्तम वस्त्र अपार ॥ तेल तें
बोल आर्दे तजो, ए उन्नट वेश सफार ॥ ३ ॥ धोई नें
धरणी धखो, जिम रत्न हाखो कुंजार ॥ तिम
शीलरत्नने हारशो ॥ जो करशो शिणगार ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ जटीयांणी नी देशी ॥

॥ एकली नारी साथें, मारगें नवि जावुं हो ॥
 वली वात विशेष न कीजियें ॥ एक सेजें नर दोय ॥
 शीलवंते नविसुवुं हो वली सेहेजें गाल न दीजीयें
 ॥ १ ॥ साढा ठ वरश उपरांत, पुत्रीने नसुवारे हो
 कांइ पिता पण हेजमां ॥ सात वरस उपरांत सुत
 नें पण न सुवाढे हो कांइ शीलवंति तिम सेजमां
 ॥ २ ॥ स्त्रीसंगे नव लाख, जीव हणायें हो जगवंतें
 जांख्युं इश्युं, अखंख्याता पण जीव ॥ समूर्द्धिम
 पंचेंडि हणायें हो वली घणु कहीएं किश्युं ॥ ३ ॥
 एम जाणी नर नार ॥ शीलनी सदहणा हो सूधी
 दिलमां धारजो, एह दुर्गतिनुं मूल ॥ अब्रह्म सेवा
 मां हो जातां दिलने वार जो ॥ ४ ॥ तपगढ गयण
 दिणंद ॥ वंढित फल दाताहो, श्री हीर रत्नसूरी
 सरू ॥ पामी तास पसाय ॥ वाडवखाणी हो शीय
 लनी मनोहरू ॥ ५ ॥ खंजात रही चोमास ॥ सत्त
 रजें त्रेशठे हो, आवण वदि बीज बुधे नणे, उदय
 रत्न कहे कर जोड ॥ शीयल वंतनरनारी हो, तेहनें
 जाऊं नामणे ॥ ६ ॥ इति श्री नववाड संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीतमाकूनी सजाय लिख्यते ॥

॥ प्रीतम सेंति बीनवे, प्रेमदा गुणनी जाण मेरे
 लाज ॥ मन मोहन एकण चित्तें, सांजलो चतुर सु
 जाण ॥ मे० ॥ १ ॥ कंत तमाकू परिहरो ॥ ए थां
 कणी ॥ मूको एहनो संग ॥ मे० ॥ पंच मांहे जस
 लीजीयें, मीजे वाघे रंग ॥ मे० ॥ २ ॥ कं० ॥ त
 माकूते जाणिएं, खुरासाणी नीआक ॥ मे० ॥ उत
 म जन ते एम कहे, पीवानी तलाक ॥ मे० ॥ कं० ॥ ३ ॥
 दूध दहीते पीजिएं, वलि पीजिएं साकर खांम
 ॥ मे० ॥ घृत पीधे तन उल्लसे, तमाकू परि ठांम
 ॥ मे० ॥ ४ ॥ कं० ॥ मोहोटा सार्थें बोलतां, मन
 मां आवे लाज ॥ मे० ॥ दिनपण एले नीगमे, वि
 णसाडे निज काज ॥ मे० ॥ ५ ॥ कं० ॥ होठ लि
 हाला सारिखा, श्वास गंधाये जेण ॥ मे० ॥ दांत
 ते दीसे शामला, हैयडुं दाजे तेण ॥ मे० ॥ ६ ॥
 ॥ कं० ॥ एठ पियारी आचरे, विटलावे निज जात
 ॥ मे० ॥ व्यसनी वाख्यो नवि रहें, नगणे जात पर
 जात ॥ मे० ॥ ७ ॥ कं० ॥ एके फूंकें जेटला, वा
 यूकाय हणाय ॥ मे० ॥ खसखस सम काया करे,
 तो जंबु द्वीप नमाय ॥ मे० ॥ ८ ॥ कं० ॥ गुडाकू क

रीने जेपीए, ते नर मूढ गमार ॥ मे० ॥ जल
 नाखे जे जिहां कने, माखीनो संहार ॥ मे० ॥
 ॥ ए ॥ कं० ॥ चोमासाना कुंथुआ, ते किम शुद्ध
 ज थाय ॥ मे० ॥ तमाकु पीतां थकां, पापे पिंन न
 राय ॥ मे० ॥ १० ॥ कं० ॥ तलख तमाकु वापखां, परोणा
 ने जाग ॥ मे० ॥ आगें करतां लापसी, ठीकरोने
 आग ॥ मे० ॥ ११ ॥ कं० ॥ पाणी एकने बिडुयें, जीव
 कहा जिनराय ॥ मे० ॥ वडबीज सम काया करे,
 जंबुद्वीप नमाय ॥ मे० ॥ १२ ॥ कं० ॥ अग्नी एक
 ने खोडले, जीव कहा जिनराय ॥ मे० ॥ सरसव
 सम काया करे, तो जंबुद्वीप नमाय ॥ मे० ॥
 ॥ १३ ॥ कं० ॥ थुकें समूर्तिम ऊपजे, नर पचेंडी जीव
 ॥ मे० ॥ एह असंख्याता कहां, श्री जगदीस स
 दैव ॥ मे० ॥ १४ ॥ कं० ॥ जलमां जीव कहा
 घणां, संख्य असंख्य अनंत ॥ मे० ॥ नील फूज
 तिहां उपजे, अग्नि प्रजाले जंत ॥ मे० ॥ १५ ॥
 ॥ कं० ॥ तमाकू पीतां थकां, एठकाय हणाय
 ॥ मे० ॥ जोती घटे नयणा तणी, श्वासें पिंन न
 राय ॥ मे० ॥ १६ ॥ कं० ॥ घडी दोए जे व्रतकरो,
 सेवो श्रीनगवान ॥ मे० ॥ दया धर्म जाणो करी,

सेवो चतुर सुजाण ॥ मे० ॥ १७ ॥ कं० ॥ चतुर
विचारी समजीए, धरीए धर्मनुं ध्यान ॥ मे० ॥ आ
एंद मुनि एम उच्चरे, ते लहे कोड कय्याण ॥ मे०
॥ १८ ॥ कं० ॥ इति श्री तमाकूनी सिजाय संपूर्ण ॥

॥ अथ चोवीसजिन स्तवनं ॥

॥ प्रहसमें जाव धरी घणों, प्रणमु मनरे आणं
दा ॥ धन वेला धन तेघडी, निरखुं प्रभु मुख चंदा
॥ प्र० ॥ १ ॥ कृष्ण अजित संजव जला, अजिनंद
न वंडुं ॥ सुमति पद्मप्रज जिनवरा, श्रीसुपार्श्व जि
एंदा ॥ प्र० ॥ २ ॥ चंडप्रज सुविधि नमु, सीतज
श्रेयांस ॥ वासुपूज्य विमल प्रभु, अनंत धर्म जिणं
दा ॥ प्र० ॥ ३ ॥ शांति कुंथु अर जिनवरा, ए
त्रण चक्री कहीजें ॥ मल्ली मुनिसुव्रत प्रभु, नमि
नेम जिणंदा ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पार्श्व वीर नित वंदिए,
एहवा जिन चोवीश ॥ ज्ञानविमल सूरि प्रणमतां,
नित होए जगीश ॥ प्र० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ कृष्णजिन स्तवन ॥

॥ आजतो वधाई राजा, नानीके दरवार रे ॥ मरु
देवायें बेटो जायो, कृष्ण कुमार रे ॥ आ० ॥ १ ॥
अजोअ्यामें उहव होवे, मुखबोजे जय कार रे ॥

घनन घनन घन घंटा वाजे, देवकरे थईकार रे
 ॥ आ० ॥ १ ॥ इंझाणीमलिं मंगल गावे, लावें
 मोति माल रे ॥ चंदन चरची पाए लागे, प्रभु
 जीवो चिर कालरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ नान्नीराजा दानज
 देवे, वरसे अखंड धार रे ॥ गाम नगर पुर पाटण
 देवे, देवे मणी जंझार रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ हाथी देवे
 साथी देवे, देवे रथ तूखार रे ॥ ह्रीर चीर पीतांबर
 देवे, देवे सवि सिणगार रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ तिन
 लोकमें दिन कर प्रगट्यो, घरघर मंगल मालरे ॥
 केवल कमला रूप निरंजन, आदीसर दर बार रे
 ॥ ६ ॥ इति श्रीकृष्ण जिनस्तवन सपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीचिंतामणी पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ चिंतामणि चिंता सवि चूरे, पूरे मनकी आ
 शारे ॥ नाव नक्तिशुं जे नर ध्यावे, पावे शिव सुख
 वासा रे ॥ १ ॥ चिंतामणि चिंता सवी चूरे ॥ पूरे ॥
 उरदेव सब दूरकीएहें, प्रभु गुनका में प्यासारे ॥
 दिलजर दरिसण द्यो प्रभु प्यारे, दोहग दूर दूला
 सारे ॥ चिं० ॥ १ ॥ प्रभुजीशुं मेरो चित चाहे,
 चकवा दिनकर जैसा रे ॥ चरण कमलकी गंध सुगं
 धें, मुऊ मन भ्रमरा वैसारे ॥ चिं० ॥ ३ ॥ जिन

मुख वाणी गंग तरंगें, पाप पंकका नासा रे ॥ दे
खतहिं मन विकसित होवे, एहि अजब तमासा
रे ॥ चि० ॥ ४ ॥ पास जिनेसर पल न विसारुं, ज
बलग तनमें सासारे ॥ ग्यानमहोदय अरण सरोजें,
करुणोदधी हे दासा रे ॥ चिं० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ रूपनजिन स्तवन ॥

॥ जीरे सफल दिवस आज माहरो, दीगो प्रभु
नो देदार ॥ लयलागी जिनजी थकी, प्रगटयो प्रेम
अपार ॥ घडी एक विसरो नहिं साहिबा, साहिबा
घणो रे सनेह ॥ अंतर जामीगो माहरा, मरुदेवी
ना नंद ॥ घ० ॥ १ ॥ जीरे लघु अशनें मनहुं रही,
प्रभु सेवाने काज ॥ ते दिन क्यारे आवसे, शिव
सुखना दातार ॥ घ० ॥ २ ॥ जीरे प्राणेश्वर प्रभुजी
तुमें, आत्मना आधार ॥ माहारे मन प्रभु तुमे
एकगो, जाणजो जगदाधार ॥ घ० ॥ ३ ॥ जीरे
एक घडी प्रभु तुम विना, जाए वरस समान ॥
प्रेम विरह तुज किम खमुं, जाणो वचन प्रमाण
॥ घ० ॥ ४ ॥ जीरे अंतर गतनी वातडी, कहो केने
कहेवाय ॥ वालेसर बिसवासीनें, कहेतां दुख जाय
॥ घ० ॥ ५ ॥ जीरे देव अनेक जग माहे ठे, तेह

नी नीत अनेक ॥ तुजविना अवरनें नही नमुं,
 एवी मुज मन टेक ॥ घ० ॥ ६ ॥ जीरे पंक्ति विवे
 क विजय तणो, नमे शुन मन जाय ॥ हरष वि
 जय श्रीरुपनना, जुगर्ते गुण गाय ॥ घ० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तवनं ॥

॥ श्रीरे सिद्धाचल जेटवा, मुजमन अधिक उमा
 हो ॥ रुपन जिणंद जुहारीनें, लीजें नवतणों लाहो
 ॥ श्री० ॥ १ ॥ मणिमय मूरति रुपननी, नीपाई
 अनिराम ॥ जुवन कराव्यो कनकमय, राख्यो जरतें
 नाम ॥ श्री० ॥ २ ॥ इणेंगिरि रुपन समोसखां, पू
 रव नवाणुं वार ॥ राम पांढव मुक्तें गया, पांम्या
 नवनो पार ॥ श्री० ॥ ३ ॥ नेमविना त्रेवीश जिना,
 आख्या सिद्ध क्षेत्र जाणी ॥ शत्रुंजा समो तीरथ
 नही, बोढ्या सीमंधरवाणी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पूरव
 पुण्य पसायथी, विमलाचल पायो ॥ कांति विजय
 हरषे करी, विमलाचल गायो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ वीरजिन स्तवन ॥

॥ सिद्धारथना रे नंदन वीनवुं, वीनतडी अवधा
 र ॥ नवमंमपमां रे नाटक नाचिउं, हवे मुज पार
 उत्तार ॥ सिद्धारथ० ॥ १ ॥ त्रण रतन मुज आपो

तातजी, जिमनावे संताप ॥ दान देअंतां रे प्रभुजी
 कसुर किसी, आपो पदवी रे आप ॥ सिद्धारथ ०
 ॥ २ ॥ चरण अंगुठे रे मेरू कंपाविठ, सुरनुंमोडयुं रे
 मान ॥ अष्ट कर्मनुं रे जगडो जीतिठ, दीधुं वरसी दान
 ॥ सिद्धा ० ॥ ३ ॥ शासन नायक शिवसुख दायक,
 त्रिशला कूंखें रतन्न ॥ सिद्धारथनो रे वंश दीपाविठ,
 प्रभुजी तुमें धन्य धन्य ॥ “साहेबजी तुमे धन धन”
 ॥ सिद्धा ० ॥ ४ ॥ वाचक सेखर कीर्त्तिविजय गुरु, पामी
 तास पसाय ॥ धर्म तणाए रे जिन चोवीशना, वि
 नय विजय गुणगाय ॥ सिद्धा ० ॥ ५ ॥ इति वीरजिन ॥
 ॥ अथ प्रजाति रागवेलावल ॥

॥ जबलगें समकित रत्नकुं, पायानही प्राणी ॥
 तबलगें निज गुण नवि वधे, तरुविण जिम पाणी
 ॥ ज ० ॥ १ ॥ तप संयम किरिया करो, चित्तराखो
 ठाम ॥ दर्शन विण निष्फल होए, जिम व्योमें चि
 त्राम ॥ ज ० ॥ २ ॥ समकित विरहित जीवनें, शिव
 सुख होए केम ॥ विणहेतें कार्य न नीपजे, मृडुवि
 ण घट जेम ॥ ज ० ॥ ३ ॥ परंपरा कारण मोहको,
 एठे समकित मूल ॥ श्रेणिक प्रमुख तणी परें, होय
 सिद्धि अनुकूल ॥ ज ० ॥ ४ ॥ चारे अनंतानुं बंधी

आ, त्रिक दर्शन मोह ॥ ज्ञान कहे जे कृत्य करे, वं
डुं तेह जीत कोह ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ श्री सिद्धाचल स्तवनं ॥ राग वेलावल ॥ १ ॥

॥ ते दिन क्यारे आवरो, श्रीसिद्धाचल जागुं ॥
रूपन जिणंद जोहारीनें, सुरज कुंममां नागुं ॥ ते०
॥ १ ॥ समवसरणमां बेसीनें, जिनवरनी वाणी ॥
सांजलगुं साचे मनें, परमारथ जाणी ॥ ते० ॥ २ ॥
समकित व्रत सूधा धरी, सद गुरुने वंदी ॥ पाप स
रवे आलोडनें, निज आतम निंदी ॥ ते० ॥ ३ ॥ प
डिकमणा दोए टंकना, करगुं मन कोडें ॥ विषय क
पाय वीसारीनें, तप करगुं होडें ॥ ते० ॥ ४ ॥ वा
लानें वैरी विचें, नवि करवो वेहेरो ॥ परना अवगुण
देखीनें, नवि करवो चेहेरो ॥ ते० ॥ ५ ॥ धरम था
नक धन वावरी, ठकायनें हेतें ॥ पंच महाव्रत लेइ
नें, पालगुं मन प्रीतें ॥ ते० ॥ ६ ॥ कायानी माया
मेळीने, परीसहने सहेगुं ॥ सुख दुख सघला वीसा
रीनें, समजावें रहेगुं ॥ ते० ॥ ७ ॥ अरिहंत देवनें
उलखी, गुण तेहना गागुं ॥ उदयरतन इम वीनवे,
क्यारे निरमल आगुं ॥ ते० ॥ ८ ॥ इति संपूर्ण ॥

(४९)

॥ अथ प्रजातें मंगल रागनैरव ॥ ३ ॥

॥ जाग जाग नवियां धर्मवाहाणु, साद सदगुरुनो
 सुणी ॥ काज कर जीव पुण्य केरा, मोह निडापरह
 री ॥ जा० ॥ १ ॥ पूरवदिशें जिनतणी वाणी, ज्ञान
 दिनकर उगीयो ॥ हरष हईडा कमल विकस्या, पाप
 तिमिर वहीगयो ॥ जा० ॥ २ ॥ धरम मारग दुठ
 परगट, हृदय नयण निहालीए ॥ ध्यान जल नवका
 र दातण, करी वदन पखालीएं ॥ जा० ॥ ३ ॥ सूर
 जकुंम जई स्नान कीजे, निरमल धोती पेहेरीए ॥
 श्रीआदिनाथ युगादि जाणी, अष्ट कर्म निवारीए
 ॥ जा० ॥ ४ ॥ शीयल समकित धोति पेहेरी, कुसुम
 करणी करधरी ॥ प्रह उठी प्रासाद जइए, श्रीजिन
 पूजा एम करी ॥ जा० ॥ ५ ॥ सत्य वचन तंबोल
 नारंग, शीयल सिणगार पेहेरीए ॥ माय बाप समा
 न देव गुरु तेहना, चरण कमल जोहारिए ॥ जा०
 ॥ ६ ॥ गंजा रे जइ पूजा रचीएं, रंग मंदप रलियाम
 णो ॥ नयणें निरखी नाथ निहालो, जावना एम
 जाविए ॥ जा० ॥ ७ ॥ पहिले मंगल जिनचोवीशें,
 बीजे गोयम गणहूरू ॥ त्रीजे मंगल सहगुरु नामे,
 चोथो जिन शासन वरू ॥ जा० ॥ ८ ॥ मूलगा ए

चार मंगल, सुप्रजातें सोहामणा ॥ जणें नंदीसर स
यल सुख कर, दीउं हरष वधामणा ॥ जा० ॥ ए ॥

॥ अथ श्री महावीर स्वांमीना पांच कव्या ॥

॥ एकनो चोढालीउं प्रारंज ॥

॥ दोहा ॥ प्रेमें प्रणमुं सरसती, मागु अविरल
वाण ॥ वीरतणा गुण गायशुं, पंच कव्याएक जाण
॥ १ ॥ गुण गातां जिनजी तणां, लहीएं नवनोपार ॥
सुख समाधि होए जीवनें, सुणजो सहु नर नार ॥ २ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चालो गरबो रमीएं रुडा ॥

॥ रामशुं जो ॥ ए देशी ॥

॥ जंबू द्वीपना नरतमां जो, रुढूं माहणकुंमठे
गामजो ॥ रुपनदत्त माहण तिहां वसे जो, तस
नारी देवानंदा नामजो ॥ १ ॥ चरित्र सुणो जिनजी
तणा रे जो ॥ ए आंकणी ॥ जिम समकित निरमल
थाय जो ॥ अष्ट माहा सिद्धि संपजे रे जो, वली पाति
क दूर पलाय जो ॥ च० ॥ २ ॥ उजली ठठ आसाढ
नी जो, योगें उत्तरा फालगुनी सारजो ॥ पुष्कोत्तर
सुविमानथी जो, चवी कूखे लीयो अवतार जो ॥ च०
॥ ३ ॥ देवानंदा तिणें रयणीएं जो, सूतां सुपन
लह्यां दशचार जो ॥ फल पूढे निज कंतने रे जो,

कहे ऋषनदत्त मन धारजो ॥ च० ॥ ४ ॥ नोग अरथ
 सुख पामशुं जो, तमें जेहेसो पुत्र रतन जो ॥ देवा
 नंदा ते सांनजी जो, कीधो मनमां तहत्त वचन जो
 ॥ च० ॥ ५ ॥ संसारिक सुख नोगवै जो, सुणो अच
 रिज दुयो तिणि वार जो ॥ सुधर्म इंद तिहां कर्णें
 जो, जोइ अवधि तर्णें अनुसार जो ॥ च० ॥ ६ ॥ च
 रम जिएसर कपनाजो, देखी हरण्यो इंद माहाराज
 जो ॥ सात आव पग साहमो जइजो, एम वंदन करे
 शुन साजजो ॥ च० ॥ ७ ॥ शक्रस्तव विधशुं करी
 जो, फेरी बेगो सिंहासन जामजो ॥ मन विमासण
 मां पड्यो जो, चितचिंतवे सुरपति तामजो ॥ च०
 ॥ ८ ॥ जिन चक्री हरि रामजी जो, अंतपंत माहण
 कुलें जोय जो ॥ आव्या नही नही आवशे जो, एतो
 उग्रनोग राज कुले होय जो ॥ च० ॥ ९ ॥ अंतिम जि
 एसर आविआ जो, एतो माहण कुलमां जेणजो ॥
 एतो अहेरा नूतणे जो ॥ यथुं हुंमाअवसरपिणी तेण
 जो ॥ च० ॥ १० ॥ काल अनंत जाते थके जो, ए
 हवा दश अहेरा आय जो ॥ इणि अवसरपिणीमां
 थया जो, ते कही जे चितलाय जो ॥ च० ॥ ११ ॥
 गर्न हरण उपसर्गनो जो, मूल रूपे आव्या रवी

चंद जो ॥ निष्फल देशना जे थई जो, गयो सौधमें
 चमरेंड जो ॥ च० ॥ १२ ॥ ए श्री वीरनी वारमां
 जो, कृष्ण अमर कंका गया जाएजो, नेम नाथनी
 वारे सही जो, स्त्री तीरथ मल्ली गुण खाण जो ॥ च०
 ॥ १३ ॥ एकशो आठ सिद्धा रूपननां जो, वारे सु
 विधिनें असंजती जो ॥ सीतल नाथ वारे थयुं जो,
 कुल हरिवंसनी उतपत्ती जो ॥ च० ॥ १४ ॥ इम
 विचार करी इंदजो जो, प्रभु नीच कुलें अवतार जो
 ॥ तेहनो कारणहुं अठे जो, एम चिंतवी रुदय
 मजार जो ॥ च० ॥ १५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ आसुमासें सरद पु ॥

॥ नमनी रातजो ॥ ए देशी ॥

॥ नवमोटा कहीए प्रभुनां सत्तावीशजो, मरिच
 त्रिदंभी तेमांहें त्रीजे नवे रे जो ॥ तिहां जरत चक्रीस
 र बांदे आवी जोय जो, कुलनो मदकरी नीच गोत्र
 बांध्युं तेहवे रे जो ॥ १ ॥ एतो माहण कुलमां
 आव्या जिनवर देवजो, अति अणजुगतु एह थयुं
 थासें नही रे जो ॥ जे जिनवर चक्री नीच कुल मांहे
 जो, ठे माहारो आचार धरुं उत्तम कुलें सही रे जो
 ॥ २ ॥ एम चिंतवी तेडयो हरिणगमेषी देव जो, कहे

माहण कुंमैं जइने एकारज करो रे जो ॥ ७ ॥ देवानं
 दानी कुंखे चरम जिणंदजो, हर्ष धरीने प्रचुनें तिहां
 थी संहरो रे जो ॥ ३ ॥ नयर कृत्रीकुंम राय सिद्धा
 रथ गेह जो, त्रिशलाराणी तेहनीठे रूपे नजीरे जो
 ॥ तस कुखें जइ शंक्रमावो प्रचुनें आज जो, त्रिश
 लानो जे गर्न अठे ते माहण कुले रे जो ॥ ४ ॥
 जिम इंदे कहुं तिम कीधुं ततद्विण तेणजो, व्यासी
 रातने अंतरे प्रचुनें संहखो रे जो ॥ माहणी सुपनां
 जाएं त्रिशला हरीनें लीधजो, त्रिशला देखी चौद
 सुपन मनमां धखा रे जो ॥ ५ ॥ गज वृषज अने
 सिंह लक्ष्मी फूलनी मालजो, चंदो सूरज ध्वज कुंन
 पद्मसरोवरु रे जो ॥ सागरने देवविमानज रत्ननी रा
 शिजो, चौदमे सुपनें देखे अग्नि मनोहरुरे जो ॥ ६ ॥
 शुन सुपना देखी हरखी त्रिशला नारजो ॥ परजाते
 उठीने पीवं आगल कहेरे जो ॥ ते सांजजी दिलमा
 राय सिद्धारथ नेहजो ॥ सुपन पाठक तेडीने पूढे
 फल लहे रे जो ॥ ७ ॥ तुम होसे राज अरथनें
 सुत सुख नोगजो, सुणी त्रिशला देवी सुखे गर्न पो
 षण करें रे जो ॥ तव माता हेते प्रचुजी रह्यां सं
 लीन जो, ते जाणीने त्रिशला दुःख दिलमां धरे रे

जो ॥ ७ ॥ में कीधा पाप अधोर नवो नव जेह
 जो, दैव अटारो दैखी नवी संकेरे जो ॥ मुऊ गर्न
 हखो जे किम पामु हवे तेह जो, रांक तणे घर रत्न
 चिंतामणि किम टके रे जो ॥ ८ ॥ प्रभुजीए जाणी
 ततक्षिण दुखनी वात जो, मोह बिटवन जालिम
 जगमां जे लहुं रे जो ॥ जुउ दीगविण पण एवडो
 जागे मोहजो, नजरे बांध्या प्रेमनुं कारण शुं कहुं
 रे जो ॥ ९ ॥ प्रभु गर्न थकी हवे अनियह लीधो
 एहजो, मात पिता जीवता संयम लेखुं नही रे जो
 ॥ एम करुणा आणी तुरत हलाव्युं अगजो, माता
 ने मन ऊपनो हर्ष घणु सही रे जो ॥ १० ॥ अहो
 नाग्य अमारुं जाग्युं सहीअर आजजो, गर्न अमा
 रुं हाव्युं सहु चिंता गई रे जो ॥ एम सुखजर रहे
 ता पूरण दुया नव मासजो, ते ऊपर वली साढी
 सात रयणी थई रे जो ॥ ११ ॥ तव चैत्र तणी
 शुंदि तेरस उत्तरारिस्क जो ॥ जनम्यां श्रीजिन वीर
 दुई वधामणी रे जो ॥ सहु धरणी विकसी जगमां
 थयुं प्रकाश जो, सुर नरपति घर वृष्टी करे सोवन
 तणी रे जो ॥ १२ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ माहरी सहारे समाणी ॥ ए देशी ॥

॥ जनम समय श्रीवीरनो जाणी, आवी ठप्पन
कुमारी रे ॥ जग जीवन जिनजी ॥ जनम मोहव
करी गीतज गावे, प्रभुजीनी जातं बलिहारी रे
॥ ज० ॥ १ ॥ ततद्विण इंद्र सिंहासण हाव्युं, घोष
घंटा बजडावी रे ॥ ज० ॥ मलिआ कोड सुरासुर
देवा, मेरु पर्वतें आवी रे ॥ ज० ॥ २ ॥ इंद्रो पंच
रूपे प्रभुजीनें, सुरगिरी ऊपर लावे रे ॥ ज० ॥ जल
करी ह्रीयडामां राखे, प्रभुने शीश नमावे रे ॥ ज०
॥ ३ ॥ एक कोडी साठ लाख कलशजा, निरमल
नीरें नरीया रे ॥ ज० ॥ नाहनो बालक ए किम स
हसें, इंद्र संसय धरिया रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ अतुली
बल जिन अवधे जोई, मेरु अंगुठे चंप्यो रे ॥ ज० ॥
पृथ्वी हाल कजोल थई तव, धरणीधर तिहां कंप्यो
रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ जिननुं बल देखीनें सुरपति, नक्ति
करीने खमावे रे ॥ ज० ॥ चार वृषजना रूप धरी
नें, जिनवरनें नवरावे रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ अमृत अं
गुठे आपीनें, माता पासें मेले रे ॥ ज० ॥ देव सहु
नंदीसर जाए, आवता पातक ठेले रे ॥ ज०
॥ ७ ॥ हवे प्रजातें सिद्धारथ राजा ॥ अति घणां

उठव मंभावे रे ॥ ज० ॥ चकले चकले नाच करावे,
 जगतना दांण ठंभावे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ बारमे दिव
 सें सजन संतोषी, नाम दीधुं वर्द्धमान रे ॥ ज० ॥
 अनुक्रमें वधता आठ वरपना, दुआ श्रीजगवान रे
 ॥ ज० ॥ ८ ॥ एकदिन प्रभुजी रमवा चाढ्या, तेव
 तेवढा संघाती रे ॥ ज० ॥ ९ ॥ मुखे परसंसा
 निसुणी, आव्यो सुर मिथ्याती रे ॥ ज० ॥ १० ॥
 पन्नगरूपे जाडें विलगो ॥ प्रभुजीएं नाख्यो जाली रे
 ॥ ज० ॥ ताड समान वली रूपज कीधुं, सुठीएं
 नाख्यो उठाली रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ चरणें नमीनें
 खमावे ते सुर, नामधरे महावीर रे ॥ ज० ॥ जेह
 वा तुमनें इडे वखाण्या, तेहवाढो प्रभु धीर रे ॥ ज०
 ॥ १२ ॥ मात पिता नीसालें जणवा, मूके बालक
 जाणी रे ॥ ज० ॥ १३ ॥ आवी तिहां प्रभज पूर्वे,
 प्रभु कहे अरथ वखाणी रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ जोवन
 वय जाणी प्रभु परण्या, नारी जसोदा नामे रे ॥ ज० ॥
 अठवावीशे वरपे प्रभुना, मात पिता स्वर्ग पामे रे
 ॥ ज० ॥ १५ ॥ नाइजीनु आग्रह जाणी, दोय वर
 स घर वाशी रे ॥ ज० ॥ तेहवे लोकांतिक सुर बोले,
 प्रभु कहो धरम प्रकाशी रे ॥ ज० ॥ १६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ तारेमाथे पंचरंगी पाग सोनारो ठोग जो मारुजी एदेशी ॥

॥ प्रभु आपे वरसी दान जलुं रवी कगते ॥ जिन वरजी ॥ एक कोडीने आठ लाख सोनइया दिन प्रते ॥ जि० ॥ मागसरवदि दशमी उत्तरायोगें मन धरी ॥ जि० ॥ जाईनी अनुमति मागीनें दीक्षा वरी ॥ जि० ॥ १ ॥ ते दिवस थकी चउनाणी प्रभुजी थया ॥ जि० ॥ साधिक एक वरसते चीवर धारी प्रभु रह्या ॥ जि० ॥ पढे दीधुं बंजणने बेवार खंमो खंमें करी ॥ जि० ॥ प्रभु विहार करे एकाकी अजिग्रह चित्त धरी ॥ जि० ॥ २ ॥ साढा बार वरपमां घोर परीसहजे सह्या ॥ जि० ॥ सूलपाणिनें संगमदेव गोसालाना कह्या ॥ जि० ॥ चंमको सीने गोवालें खीररांधी पग कपरें ॥ जि० ॥ कांने खीला खोस्या ते डुष्ट सहु प्रभु उदरे ॥ जि० ॥ ३ ॥ लेइ अडदना बाकुला चंदन वाला तारिया ॥ जि० ॥ प्रभु पर उपगारी सुखडुख सम धारिया ॥ जि० ॥ ठमासी बेनें नव चोमासी कहीए रे ॥ जि० ॥ अढीमास त्रिमास मोढमास ए बे बे लहीए रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ पटकीधा बे बे मास प्रभु सोहामणा ॥ जि० ॥ बारमासनें पस्क बहोतर ते रलीयामणा ॥ जि० ॥ ठठ वसैं उंग

एत्रीश बार अठम वखाणीयें ॥ जि० ॥ नझादिक प्र
 तिमां दिन बे चौदश जाणीयें ॥ जि० ॥ ५ ॥ साढाबार
 वरष तप कीधा विण पाणीयें ॥ जि० ॥ पारणा त्रण
 सें उंगणपंचासते जाणीयें ॥ जि० ॥ तवकर्म खपावी
 ध्यान सुकल मन ध्यावता ॥ जि० ॥ वैशाख
 सुदि दशमी उत्तरा जोगे सोहावता ॥ जि० ॥ ६ ॥
 शालि वृद्ध तलें प्रभु पाम्या केवल नाणरे ॥ जि० ॥
 लोकालोक तणां परकाशी थया प्रभु जाणरे ॥ जि० ॥
 इन्द्रूति प्रमुख प्रतिबोधी गणधर कीधरे ॥ जि० ॥ सं
 घ थापना करीनें धर्मनी देशना दीधरे ॥ जि० ॥ ७ ॥
 चौद सहस जला अणगार प्रभुनें शोजता ॥ जि० ॥
 वली साधवी सहस ठत्रीश कही निर लोजता ॥
 जि० ॥ उंगणशाठ सहस एकलाख ते श्रावक संपदा
 ॥ जि० ॥ तीन लाखनें सहस अठारते श्राविका संमु
 दा ॥ जि० ॥ ८ ॥ चौद पूर्वधारी त्रिणसें संख्या जाणी
 यें ॥ जि० ॥ तेरसें उहिनाणी सातसे केवली वखाणी
 यें ॥ जि० ॥ लब्धि धारी सातसें विपुलमति वली पां
 चसें ॥ जि० ॥ वली चारसें वादी ते प्रभुजी पासें वसें
 ॥ जि० ॥ ९ ॥ शिष्य सातसेनें वली चौदसें साध्वी
 सिद्ध थया ॥ जि० ॥ ९ प्रभुजीनो परिवार कहिता

मन गहगह्या ॥ जि० ॥ प्रभुजीयें त्रीशवरष घरवासें
 नोगव्या ॥ जि० ॥ ठढमस्थ पणामां बारवरश ते जो
 गव्या ॥ जि० ॥ १० ॥ त्रीस वरश केवल बेतालीश
 वरश संजम पणुं ॥ जि० ॥ संपूरण बहोत्तर वरश
 आधु श्रीवीरतणुं ॥ जि० ॥ दीवाली दिवसें स्वांती न
 कृत्र सोहंकरु ॥ जि० ॥ मथ्यराते मुक्ति पढोतां प्रभु
 जी मनोहरु ॥ जि० ॥ ११ ॥ ए पंच कल्याणक चोवी
 शमा जिनवर तणा ॥ जि० ॥ ते नणता गुणता हर
 ख होये मनमा घणा ॥ जि० ॥ जिनशासन नायक
 त्रिशजा सुत चित्त रंजणो ॥ जि० ॥ नवियणनें शिव
 सुख कारी नव नय नंजणो ॥ जि० ॥ १२ ॥ कलश ॥
 जय वीरजिनवर संघ सुखकर, थुण्यो अति उत्सुक ध
 री ॥ सवंत सतर एक्याशीयें, सूरत चोमासुं करी ॥ श्री
 सहेज सुंदर तणो सेवक, नक्ति गुं एणी परे कहे ॥ प्र
 भुजीगुं पूरण प्रेम पाभ्यो, नित्यलान वंठितजहे ॥ इति
 ॥ अथ आदिनाथ स्तवनं ॥

॥ प्रथम जिणोसर प्रणमीयें, जास सुगंधीरे काय ॥
 कल्पवृक्ष परे तास इंडाणी नयण जे, जंग परें लंपटा
 य ॥ १ ॥ रोग उरग तुज नवी नडे, अमृत जे आस्वा
 द ॥ तेहथी प्रतिहत तेह मानुं कोईनवि करे, जगमां

तुम छुं वाद ॥ १ ॥ विगर धोई तुऊ निरमली, काया कं
 चन वान ॥ नही प्रस्वेद लिगारं तारे तुं तेहने, जे धरे
 ताहरो ध्यान ॥ ३ ॥ राग गयो तुऊ मन थकी, तेहमां
 चित्त न कोई ॥ रुधिर आमीशथी रोग गयो तुऊ जन्म
 थी, दुध सहोदर होई ॥ ४ ॥ सासोश्वास कमल स
 मो, तुज लोकोत्तर वात ॥ देखेन आहार निहार चर्म
 चक्रुधणी, एहवा तुऊ अवदात ॥ ५ ॥ चार अतिशय
 मूलथी, उंगणीश देवना कीध ॥ कर्म खप्याथी इग्यार
 चौत्रीश एम अतिशय, शमवायंगें प्रसिद्ध ॥ ६ ॥ जि
 न उत्तम गुण गावता, गुण आवे निज अंग ॥ पद्मवि
 जय कहे एम समय प्रभु पालजो, जिम थाउं अंकुश
 अजंग ॥ ७ ॥ इति अदिनाथ स्तवनं संपूर्ण ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ परमात्म परमेशरू, जगदीसर जिनराज ॥ ज
 गबंधव जगनाण बलिहारी तुमतणी, जवजलधीमां
 जिहाज ॥ १ ॥ तारक वारक मोहनु, धारक निज
 गुण रिद्धि ॥ अतिशय वंत नदंत रूपाली शिष वधु,
 परणी लही निज सिद्धि ॥ २ ॥ ज्ञान दर्शन अनंत
 ठे, वली तुऊ चरण अनंत ॥ इमदानादि अनंत ह्याय
 क जावें थया, गुणते अनंता अनंत ॥ ३ ॥ बत्रीश

वर्ण समायते, एक शलोक मऊार ॥ एक वर्ण प्रभु
 तुऊ न माये जगतमां, किम करी शुणीए उदार ॥ ४ ॥
 तुऊ गुण कोण गणी शके, जो पण केवल होय ॥
 आविर्जावें तुज सयल गुण माहरे, प्रबन्त जावथी
 जोय ॥ ५ ॥ श्रीपंचाशरा पासणी, अरज करुं एक
 तुऊ ॥ आवीर्जावथी थाय दयाल कृपा निधि, करु
 णा कीजें जी मुऊ ॥ ६ ॥ श्रीजिन उत्तम ताहरी,
 आस्या अधिक महाराज ॥ पद्मविजय कहे एम लहुं
 शिव नगरीनो, अक्षय अविचल राज ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ जिनपती अविनासी कासी धणी रे, मननी
 आस्या पुरण हारहो ॥ जिनपति चिंतामणी रे ॥ जि
 नपति अश्वसेन कुल चंदलो रे, वालो वामा मात
 मलारहो ॥ जि० ॥ १ ॥ जि० ॥ तिन जुवन शिर सेह
 रो रे, सेवे चोशठ सुरपती पायहो ॥ जि० ॥ जि० ॥
 नाटिक नव नव ठंदथी रे, सुरवधु मधुर स्वरें गुण
 गाय हो ॥ जि० ॥ २ ॥ जि० ॥ तुज रूपे रतिपति धसे
 रे, अंगथी लाजी रह्यो अनंग हो ॥ जि० ॥ जि० ॥
 तुज उपमा कोई जग नही रे, तुंढे गुणरासीनो शंग
 हो ॥ जि० ॥ ३ ॥ जि० ॥ नागपति धरणें इने रे, करु

णा करीने दीधो नवकार हो ॥ जि० ॥ जि० ॥ शोल
 सहस अणगारनां रे, साहुणी अडत्रीश सहस वि
 स्तार हो ॥ जि० ॥ ४ ॥ जि० ॥ जादवनी नाठी जरा
 रे, तो हवें अमने करो सुपसाय हो ॥ जि० ॥ जि० ॥
 धरणीधर पद्मावती रे, सेवे पार्श्वयक्ष बलि पाय हो
 ॥ जि० ॥ ५ ॥ जि० ॥ पाश आस मुज पूरवा रे,
 साचो संखेश्वर महाराज हो ॥ जि० ॥ जि० ॥ श्रीगु
 रु पद्मविजय तणो रे, मागे रूपविजय शिवराज हो
 ॥ जि० ॥ ६ ॥ इति पार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ अथ अजित जिनस्तवनं ॥

॥ प्रीतलडी बंधाणी रे अजित जिणंदशुं, प्रभु
 पाखे कृण एके मनन सुहाय जो ॥ ध्याननी ताली रे
 लागी नेहशुं, जलद घटा जिम शिव सुत वाहन दाय
 जो ॥ प्री० ॥ १ ॥ नेहे वेळो मन माहारो रे प्रभु
 अलजे रहे, तन धन मन ए कारणथी प्रभु मुजजो ॥
 मारेतो आधार रे साहेब रावलो, अंतर गतनो प्रभु
 आगल कहुं गुजजो ॥ प्री० ॥ २ ॥ साहेबते साचो रे
 जगमां जाणीए, शेवकना जे सहेजे सधारे काजजो ॥
 एहवे रे आचरणे किम करीने रहुं, बिरुद तुमारो ता
 रण तरण जिहाज जो ॥ प्री० ॥ ३ ॥ तारकता तुज

मांहे रे श्रवणें सांजली, तेजणी, हुं आब्यो हुं दीन
 दयाल जो ॥ तुज करुणानी जेहरे रे मुज कारज शरे,
 शुंघणु कहीए जाण आगल रुपाल जो ॥ प्री० ॥ ४ ॥
 करुणादिक कीधी रे सेवक उपरें, नव नय जावठ
 नांगी नकी प्रशन्न जो ॥ मनवंछित फलिआ रे जिन
 आलंबने, करजोडीने मोहन कहे मन रंगजो ॥ प्री० ॥ ५ ॥

॥ अथ शान्तिजिन स्तवनं ॥

॥ शान्तिजीनुं मुखहुं जोवा जणी जी, मुज मनडो
 रे लोनाय ॥ भितडो जाणे रे उडी मिलुं जी, पण
 प्रभु किमरे मिताय ॥ शां० ॥ १ ॥ दैव न दीधी मु
 जने पांखडी जी, आबुं हुं किमरे हजूर ॥ पण प्रभु
 जाणजो वंदना जी, आतमराम शनूर ॥ शां० ॥ २ ॥
 गज पुरी नगरीनुं राजीउ जी, अचिरा देवी नंदन एह
 ॥ जिमरे पारेवडो राखीउ जी, तिम प्रभु राखजो
 नेह ॥ शां० ॥ ३ ॥ मस्तके मुगट सोहामणो जी,
 काने कुंमल श्रीकार ॥ बाहें बाजूबंध बेरखाजी, कंठ
 डे नवशरो हार ॥ शां० ॥ ४ ॥ आज जलें रे दिन
 उगीयो जी, दूधडे वूठडा मेह ॥ वाचक सहेज सुंदर
 तणोजी, नित्यज्ञान प्रभु गुण गेह ॥ शां० ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ सुगुण शोभागी रे के साहेब माहेरा, श्रीचिंताम
णि पाश ॥ पूर्व पुण्येरे के दरिण देखीए, पुगी मारा
मनडानी आश ॥ हुं वज्रहारी रे के जावं तोरा ना
मनी ॥ १ ॥ कासी देसैरे के नगरी वणारसी, अश्व
सेन राया कुजचंद ॥ माता वामारे के प्रभुजीने ज
नमीया, दीठडे परमानंद ॥ हुं० ॥ मूरत सूरत रे के
निरखीने हरखिए, सांजल मोरा स्वाम ॥ वान वधा
रणरे के जगमां सुरतरु, तुं मुऊ आतम राम ॥ हुं०
॥ २ ॥ लाज सुरंगी रे के अंगी सोजती, सोहे सोहे
प्रभुजीने अंग ॥ शिखर बनाव्युं रे के सुंदर कौरणी,
दिसे दिसे नव नवा रंग ॥ हुं० ॥ ४ ॥ शिरपर सो
हेरे के मुगट जडावनो, काने कुंमल श्रीकार ॥ केडे
कणदोरो रे के बाहे बेरखा, कंठडे नवसरो हार
॥ हुं० ॥ ५ ॥ विधिपद् देहरे रे के मूल नायक
प्रभु, भुज मंढण जिनराज ॥ जाविक आवक रे के
जावे जावना, साहेब गरीब निवाज ॥ हुं० ॥ ६ ॥
कोय कुमतिआरे के प्रभुने माने नहीं, ते रडवडसे
संसार ॥ नव दंमक माहे रे के गतीगे तेहनें, नहिं
लीए जवनो पार ॥ हुं० ॥ ७ ॥ सूत्र सिद्धांते रे के

जिन प्रतिमा कही, जिन सरखी निरधार ॥ पूजो प्र
 एमो रे के नवियण जावहुं, जिम पामो शिव सुख
 सार ॥ हुं० ॥ ७ ॥ संवत सत्तर रे के वरस चोराणु
 ए, रूडोरूडो जाइव मास ॥ स्तवना कीधी रे के पर
 व पजूसणें, नित्यलाज प्रभुजीनो दास ॥ हुं० ॥ ८ ॥
 ॥ अथ शान्तिजिन स्तवनं ॥

॥ शान्ति प्रभु वीनती एक मोरी रे, तारी आंखडी
 कामण गारी ॥ शान्ति० ॥ विश्वसेन राजा तुज ताय
 रे, राणी अचिरादेवी माय रे ॥ तुंतो गजपुर नगरी
 नो राय ॥ शां० ॥ १ ॥ प्रभु सोवन कांती बिराजे
 रे, मुकुटे हीरा मणी ठाजे रे ॥ तारी वाणी गंगापूर
 गाजे ॥ शां० ॥ २ ॥ प्रभु चालीश धनुषनी काया
 रे, नवि जनना दिलमां जाव्या रे ॥ कांई राज राजे
 सर राया ॥ शां० ॥ ३ ॥ प्रभु माहाराठो अंतर
 जामी रे, करूं वीनती हुं शिर नामी रे ॥ चउद रा
 जनाठो तुमे स्वामी ॥ शां० ॥ ४ ॥ प्रभु परबदा बारे
 मांहे रे, दीए देशना अधिक उठांहे रे ॥ प्रभु अंगी
 एं नेटया उमांहे ॥ शां० ॥ ५ ॥ श्रावक श्राविका
 बहु पुण्यवंता रे, शुन करणी करे महंता रे ॥ शान्ति
 नाथना दरिशन करंता ॥ शां० ॥ ६ ॥ संवत अठा

र अछाणुं सार रे, मास कल्प कस्यो तेणी वार रे ॥
सूरि मुक्तिपदना धार ॥ शां० ॥ ७ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ सिद्धाचल गिरि जेट्या रे, धन्य नाग्य हमारा
॥ विमलाचल गिरि जेट्या रे, धन्य नाग्य हमारा ॥
ए गिरिवरनो महीमा मोटो, कहेंतां नावेपार ॥ राय
ए रूख शमोसखा स्वामी, पुरव नवाणु वार रे ॥ ध० ॥
॥ १ ॥ मूल नायक श्रीआदि जिनेस्वर, चौमुख प्र
तिमा चार ॥ अष्ट इव्यशुं पूजो जावें, समकेत मूल
आधार रे ॥ ध० ॥ २ ॥ नाव जक्तिशुं प्रभुगुण गावे,
आपणा जनम सधाखा ॥ यात्रा करी जवि जन
शुन जावें, निरय तिर्येच गती वाखा रे ॥ ध० ॥ ३ ॥
दूर देशांतरथी हुं आव्यो, श्रवण सुणी गुण तारा ॥
पतीत उद्धारण बिरूद तुमारो, एतीरथ जग सारा
रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ सवंत अठार व्यासीए मास आशा
ढें, वदि आवम जोम वारा ॥ प्रनुजी के चरणे प्रता
पके संघमे, खेम रतन प्रनु प्यारा रे ॥ ध० ॥ ५ ॥

॥ अथ शीतलजिन स्तवनं ॥

॥ शीतल जिननी सेवा कीजें, लीजे संपदा सारी
रे ॥ इव्य नाव जिन पूजा करतां ॥ नासे दूरगति

नारी रे ॥ १ ॥ संसारी प्राणी देव पूजो, देवपूजो
 हित आणी रे ॥ ज्ञान अनंतुं रूप अनंतुं, सक्ति अ
 नंती कहीए रे ॥ लोकालोक तणा प्रकाशी, तेहनी
 आणज वहीए रे ॥ संसा० ॥ २ ॥ नक्ति प्रभुनी ह
 षडे धरतां, जब जब पातिक हरीए रे ॥ एहवो निश्च
 माहरा मनमां, प्रभु तारे तो तरीए रे ॥ संसा०
 ॥ ३ ॥ करजोडी मद महर मूकी, प्रभुजीने शिर
 नामूं रे ॥ अनुभव पदनी लाजव अमनें, ते जिनव
 रथी पामूं रे ॥ संसा० ॥ ४ ॥ सेवक ऊपर करुणा
 करजो, वीनतडी चित्त धारी रे ॥ कहे नित्यलाज प्र
 भुने प्रणमी, देजो सेव तमारी रे ॥ संसा० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ लाखीणो सोहावे जिनजी, फूजांनो गले हार ॥
 आणीने सोहावे जिनजी, अंगीआं जडाव ॥ मोरा
 पासजी हो लाज, संकट ठोडाव स्वामी विघ्न निवा
 र ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पदमणी चाली पूजवाने,
 करी शोल शिणगार ॥ पाए धमके धूवराने, नेउरनो
 ऊण कार ॥ मोरा० ॥ २ ॥ मेघमाली देवताने,
 कीधो धम धोर ॥ गाजे गगन बीजलीने, पाणी वर
 से जोर ॥ मो० ॥ ३ ॥ ध्यान थकी नवी चूका, प्रभु

पास जिणंद ॥ दही कष्ट निवारवाने, आव्याढे धर
 णिंद ॥ मो० ॥ ४ ॥ गोडी पारश पूजो जिम, होए
 रंग रेल ॥ देखी मूरति पासजीनी, जाणीए मोहन
 वेल ॥ मो० ॥ ५ ॥ ठमक ठमक चालतीने, घुघर
 डी घमकार ॥ ताताथेइ ताल वाजे, देवतानी चाल
 ॥ मो० ॥ ६ ॥ केशर चंदन घशी घणाने, कस्तुरी
 घनसार ॥ जे नर जावे पूजणेने, उतारे नवपार
 ॥ मो० ॥ ७ ॥ तुंहीं मारो साहेबोने, तुंहीं जीवन
 प्राण ॥ तुमने माने देवताने, मोटा राणो राण
 ॥ मो० ॥ ८ ॥ पंढित मांहे शिरोमणीने, कनक वि
 मल गुर हीर ॥ चरण कमल सेवे सदाने, केशर क
 वियण धीर ॥ मो० ॥ ९ ॥ इति पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ दोहा ॥ बेकरजोडी वीनबुं, सुणो जिनवर श्री
 शांति ॥ पाप खमाबुं आपणा, जे कीधा एकंत ॥ १ ॥
 ॥ ढाल ॥ एकंत कहुं सुणो स्वामी, हुंतो चरण तु
 मारा पामी ॥ मुज माहें कष्टढे बहुलो, तेतो सुणतां
 मन थाये दोहिलो ॥ २ ॥ परबिइ प्रगट में कीधा,
 कूडा आल में परने दीधा ॥ तेथी ठोडावो मुज ता
 त, शांतिनाथ सुणो मोरी वात ॥ ३ ॥ दोहा ॥

नव अनंत नमी आवियो, चरण तुमारे देव ॥ जि
 म राख्यो पारेवडो, तिम राखो मुज हेव ॥ ४ ॥
 ॥ ढाल ॥ हवे एकेंडियादिक जीव, डुहव्या करता
 अती रीव ॥ तसलाख चौराशी जेद, राग वेष प
 माड्या खेद ॥ ५ ॥ मृषा बोलतां नावी लाज, तो
 किम सरसे आतम काज ॥ चोरी इणजव परजव की
 धी, पररमणी गुं दृष्टिज दीधी ॥ ६ ॥ डुहा ॥ मधु
 बिडुवासम विषय सुख, डुःखतो मेरु समान ॥ मान
 वि मन चिंते नही, करतो क्रोड अज्ञान ॥ ७ ॥
 ॥ ढाल ॥ अज्ञान पणे रुद्धि मेळी, व्रतवाडि जली
 परें जेळी ॥ हवे सार करो प्रभु मोरी, रातदिवस से
 वा करुं तोरी ॥ ८ ॥ बहु गुनही ठवं श्रीशान्ति, मु
 ज टाळो नवनी त्रान्ति ॥ हुंतो मागुंहुं अविचल रा
 ज, एम पणणे श्रीजिनराज ॥ ९ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ मारुं मन मोह्युं रे श्रीसिद्धाचले रे, देखीने ह
 रषित थाय ॥ विधिगुं कीजेरे यात्रा एहनी रे, नव
 नवना डुःख जाय ॥ मा० ॥ १ ॥ पांचमे आरेरे पा
 वन कारणे रे, ए समुं तीरथ न कोय ॥ मोटो म
 हिमा रे महियल एहनो रे, आनरतें इहां जोय ॥

॥ मा० ॥ २ ॥ एणे गिरि आवाये जिनवर गणधरा
 रे, सीढा साधु अनंत ॥ कठिण करम पण एणे
 गिरि फरसतां रे, होए कर्मनी शांत ॥ मा० ॥ ३ ॥
 जैन धर्मनो जाचो जाणीये रे, मानव तीर्थ ए थंज ॥
 सुरनर किन्नर नृप विद्याधरा रे, करता नाटारंज ॥
 ॥ मा० ॥ ४ ॥ धन धन दाहाडोरे धन धन एघडी
 रे, धरीये रुदय मजार ॥ ज्ञानविमल प्रभु एहना
 गुण घणा रे, कहेतां नावेरे पार ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति ॥
 ॥ अथ संजवजिन स्तवनं ॥

॥ हुंतो जावरे जिन दरबार, प्रभु मुख जोवाने ॥
 प्रभु आपेरे समकित सार, शिव सुख होवाने ॥ १ ॥
 साथे लीधारे निरमल नीर, प्रभुने पखालवा रे ॥
 शुद्ध कीधारे प्रभुना शरीर, नव दुःख टालवा रे ॥
 ॥ २ ॥ घसी घसीरे केशर कपूर, नवे अंगे पूजिये ॥
 हसी हसीरे आणंद पूर, शिव सुख लीजिये ॥ ३ ॥
 एहवे आवीरे अमरनी नार, प्रभुजीने वीनवे ॥
 साथे लावीरे फूलडानो हार, प्रभुने कंठें ठवे ॥ ४ ॥
 आगल नाचेरे थड थड कार, सद्गु टोले मलि ॥ दिल
 साचेरे करी सिणगार, प्रणमे लली लली ॥ ५ ॥ हाथ
 जोडीरे प्रभुजीने पास, नक्ति घणीकरे ॥ मान मोडी

रे गावे जास, प्रभु मनमां धरे ॥ ६ ॥ आलो आलो
 रे मुक्तिनो वास, प्रभु करुणा करी ॥ टालो टालोरे न
 वनुं पास, विनंती चित्तधरी ॥ ७ ॥ सेनाराणीना नं
 दन देव, गुणरत्नाकरू ॥ एवो जाणीरे कीधी में सेव,
 जयो जयो जिनवरू ॥ ८ ॥ सोहे सोहेरे सुरत म
 जार, विधिपद्ध देह रे ॥ मोहे मोहेरे बहु नर नार,
 देखी नयणा ठरे ॥ ९ ॥ नामे नामेरे संजव नाथ,
 जिन रजिआमणा ॥ पामे पामेरे सुख नित्य लाज,
 जेहुं नित्य नामणां ॥ १० ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ अष्टापदगिरि स्तवनं ॥

॥ अष्टापद अरिहंत जी ॥ माहारा वालाजी रे,
 आदेशर अवधार ॥ नमीयेँ नेहगुं ॥ मारा० ॥ दश
 हजार मुणिंदगुं ॥ मारा० ॥ वखा शिव वधु सार
 ॥ नमी० ॥ १ ॥ नरतनूप जावें कखा ॥ मारा० ॥
 चिहुं मुख चैत्य उदार ॥ नमी० ॥ जिनवर चोवीशे
 जिहां ॥ मारा० ॥ आप्या अति मनुहार ॥ नमी० ॥
 ॥ २ ॥ वरण प्रमाणे विराजता ॥ मारा० ॥ लह्वन
 नें अलंकार ॥ नमी० ॥ सम नाशाएण शोजता ॥
 ॥ मारा० ॥ चिहुं दिसि चार प्रकार ॥ नमी० ॥ ३ ॥
 मंदोदरी रावण तिहां ॥ मारा० ॥ नाटिक करतां

विचाल ॥ नमी० ॥ त्रूटी तात तिहां कणे ॥ मारा० ॥
 निज कर वीणा ततकाल ॥ नमी० ॥ ४ ॥ करी व
 जावी तिणे समे ॥ मारा० ॥ पण नवी तोडयो ते
 तान ॥ नमी० ॥ तीर्थकर पद बांधीउ ॥ मारा० ॥
 अद्भुत ध्यान सुगान ॥ नमी० ॥ ५ ॥ निज लब्धे गौ
 तम गुरु ॥ मारा० ॥ करवा आख्या ते यात्र ॥ नमी० ॥
 जग चिंतामणि तिणे कस्यो ॥ मारा० ॥ तापस बो
 ध विख्यात ॥ नमी० ॥ ६ ॥ एगिरि महिमा मोटकुं
 ॥ मारा० ॥ तेणे नव पामीजे सिद्धि ॥ नमी० ॥
 निज लब्धे जिनवर नमि ॥ मारा० ॥ पामे साश्व
 ती रिद्धि ॥ नमी० ॥ ७ ॥ पद्मविजय कहे एहना
 ॥ मारा० ॥ केता करुंरे वखाण ॥ नमी० ॥ वीरें
 स्वयंमुख वरणव्यो ॥ मारा० ॥ नमता क्रोड क
 व्याण ॥ नमी० ॥ ८ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री गौतमाष्टक ठंड ॥

॥ वीर जिणेंसर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो
 निशदिश ॥ जो कीजें गौतमनुं ध्यान, तो घर विल
 से नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामें गिरिवर चढे,
 मनवांछित हेला संपजे ॥ गौतम नामें नावे रोग,
 गौतम नामें सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुद्धा वं

कडा, जस नामें नावे हुंकडा ॥ जूत प्रेत नवि मंमे
 प्राण, ते गौतमनांकरुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामें
 निर्मल काय, गौतम नामें वार्धे आय ॥ गौतम जि
 नशासन शणगार, गौतम नामें जय जयकार ॥ ४ ॥
 शाल दाल सुरहा घृत गोल, मनवंडित कापड तंबो
 ल ॥ घरशुं घरणी निर्मल चित्त, गौतम नामें पुत्र
 विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल जाण, गौत
 म नाम जपो जग जाण ॥ मोहोटां मंदिर मेरु स
 मान, गौतम नामें सफल विद्वाण ॥ ६ ॥ घर मय
 गल घोडानी जोड, वारू पोहोंचे वंडित कोड ॥ म
 हीयलं माने मोहोटा राय, जो तूठे गौतमना पाय
 ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातक टले, उत्तम नरनी
 संगत मले ॥ गौतम नामें निर्मल ज्ञान, गौतम ना
 में वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सद्गुरु, गुरु
 गौतमना गुण ठे बहु ॥ कहे लावण्य समय करजो
 ड, गौतम तूठे संपत्ति कोड ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ नवकारनो ठंड ॥

॥ डहा ॥ वंडित पूरे विविध परें, श्री जिन शा
 सन सार ॥ निश्चें श्री नवकार नित्य, जपतां जय
 जयकार ॥ १ ॥ अडशठ अक्षर अधिक फल, नव

पद नवे निधान ॥ वीतराग स्वयं मुख वदे, पंच पर
 मेष्टि प्रधान ॥ १ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समखां
 संपत्ति थाय ॥ संचित सागर सातनां, पातक दूर प
 लाय ॥ २ सकल मंत्र शिर मुकुट मणि, सजुरु ना
 पित सार ॥ सो नवियां मन शुद्ध, नित्य जपीएं
 नवकार ॥ ४ ॥ ठंड हटकी ॥ नवकारथकी श्रीपाल नरेशर,
 पाम्यो राज्य प्रसिद्ध ॥ समशान विषे शिव नाम कु
 मरनें, सोवन पुरि सो सिद्ध ॥ नव लाख जपंता न
 रक निवारें, पामे नवनो पार ॥ सो नवियां नत्तें
 चोखें चित्तें, नित्य जपीयें नवकार ॥ ५ ॥ बांधि बड
 शाखा शिंकें बेसि, हेठल कुंम दुताश ॥ तस्करनें मं
 त्र समर्थो श्रावकें, ऊढयो ते आकाश ॥ विधिरीत
 जप्यो विपथर विष टाले, ढाले अमृत धार ॥ सो०
 ॥ ६ ॥ बीजोरा कारण राय महाबल, व्यंतर डुष्ट
 विरोध ॥ जेणें नवकारें हत्या टाली, पाम्यो यक्ष प्र
 तिबोध ॥ नव लाख जपतां थाए जिनवर, इस्यो ठे
 अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पत्त्रिपति शिख्यो मुनिवर
 पासें, महा मंत्र मन शुद्ध ॥ परनव ते राजसिंह पृ
 थिवीपति, पाम्यो परिगल रिद्ध ॥ ए मंत्रथकी अम
 रापुर पोहोतो, चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥ ८ ॥

संन्यासी काशी तप साधंतो, पंचाग्नि परजाल ॥ दी
 गो श्रीपास कुमारें पन्नग, अधबलतो ते टाल ॥ सं
 जलाव्यो श्री नवकार स्वयंमुख, इंद्रचुवन अवतार
 ॥ सो० ॥ ए ॥ मनशुद्धे जपतां मयणासुंदरी, पा
 मी प्रिय संयोग ॥ इण ध्याने कष्ट टळ्युं उंबर
 नुं, रगत पित्तनो रोग ॥ निश्चेशुं जपतां नवनिध था
 ये, धर्म तणो आधार ॥ सो० ॥ १० ॥ घटमांहि कृ
 ष्ण जुजंगम घाव्यो, घरणी करवा घात ॥ परमेष्टि
 प्रजावे हार फूलनो, वसुधामांहि विख्यात ॥ कमलाव
 तीये पिंगल कीधो, पाप तणो परिहार ॥ सो०
 ॥ ११ ॥ गयणांगण जाति राखी गृहीणी, पाडी बा
 ए प्रहार ॥ पद पंच सुणंतां पांशुपति घर, ते थड
 कुंता नार ॥ ए मंत्र अमूलक महिमा मंदिर, जव
 दुःख जंजणहार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कंबलने संबल का
 दव काढ्यां, शकट पांचशें मान ॥ दीधे नवकारें ग
 या देवलोकें, विलसें अमर विमान ॥ ए मंत्रयकी
 संपत्ति वसुधातले, विलसे जैन विहार ॥ सो०
 ॥ १३ ॥ आगें चोवीशी दुइ अनंती, होशे वार अ
 नंत ॥ नवकार तणी कोइ आदि न जाणे, एम जां
 खे अरिहंत ॥ पूरव दिशि चारे आदि प्रपंचें, समखां

संपत्ति सार ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्टि सुरपद ते पण
 पामे, जे कृत कर्म कठोर ॥ पुंरगिरि उपर प्रत्यक्ष
 पेख्यो, मणिधरने एक मोर ॥ सह गुरुने सन्मुख विधि
 समरंतां, सफल जनम संसार ॥ सो० ॥ १५ ॥ सूनि
 कारोपण तस्कर कीधो, लोहखरो प्रसिद्ध ॥ तिहां शेठे
 नवकार सुणाव्यो, पाम्यो अमरनी रिद्ध ॥ शेठने घर
 आवी विघ्न निवाच्या, सुरे करी मनोहार ॥ १६ ॥ सो० ॥
 पंच परमेष्टि ज्ञानज पंचह, पंच दान चारित्र ॥ पं
 च सदाय महाव्रत पंचह, पंच सुमति समकित ॥
 पंच प्रमादह विषय तजो पंच, पाजो पंचाचार ॥
 सो० ॥ १७ ॥ कलश ॥ ठप्पय ॥ नित्य जपीयें न
 वकार, सारसंपत्ति सुखदायक ॥ शुद्ध मंत्र ए शाश्व
 तो, एम जपे श्री जगनायक ॥ श्री अरिहंत सुसिद्ध,
 शुद्ध आचार्य जणीजें ॥ श्री उवदाय जावें सुसाधु, पंच
 परमेष्टि शुणीजें ॥ नवकार सार संसार ठे, कुशल
 जान वाचक कहे ॥ एक चितें आराधतां, विविध
 रुद्धि वंढित फल लहे ॥ सो० ॥ १८ ॥ .

॥ अथ श्री शोल सतीनो ठंद ॥

॥ आदि नाथ आदें जिनवर वंदी, सफल मनो
 रथ कीजियें ए ॥ प्रजातें उठी मांगलिक कामें, शोल

सतीनां नाम लीजियें ए ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग
 हितकारी, ब्राह्मी नरतंती बेहेनडी ए ॥ घट घट
 व्यापक अक्षर रूपे, शोल सतीमांहि जे वडी ए ॥ २ ॥
 बाहुवल जगिनी सतीय शिरोमणि, सुंदरी नामें रिष
 न सुता ए ॥ अंक स्वरूपी त्रिभुवन मांहे, जेह अनु
 पम गुणजुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला बालपणाथी, शी
 यलवती शुद्ध श्राविका ए ॥ अडदना बाकुला वीर
 प्रतिलान्या, केवल लही व्रत नाविका ए ॥ ४ ॥ उ
 ग्रसेन धुआ धारिणी नंदन, राजिमती नेम वल्लजा
 ए ॥ जोवन वेष्टें कामनें जीत्यो, संजम लेइ देव ड
 वल्लजा ए ॥ ५ ॥ पंच नरतारी पांढव नारी, दुपदत
 नया वखाणीए ए ॥ एक शो आठे चीर पूराणां, शी
 यल महिमा तस जाणीए ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपती
 नारी निरुपम, कौशल्या कुलचंडिका ए ॥ शीयल स
 जुणी राम जनेता, पुण्य तणी प्रनालिका ए ॥ ७ ॥
 कोशंबिक ठामें संतानिक नामें, राज्य करे रंग रा
 जीयो ए ॥ तस घर घरणी मृगावती सती, सुरभुव
 नें जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शीयलेंन
 काची, राची नही विषयारसें ए ॥ मुखडुं जोतां पाप
 पलाए, नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ९ ॥ राम रघुवं

शी तेहनी कामिनी, जनकसुता सीता सती ए ॥ जग
 सद्गु जाणे धीज करंतां, अनल शीतल थयो शीयल
 थी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी बांधी, कूवा
 थकी जल काढीयुं ए ॥ कलंक उतारी सतीय सुन
 डा, चंपा बार उघाडीयुं ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित
 शीयल अखंमित, शीवा शिवपदगामिनी ए ॥ जेहने
 नामें निर्मल थइयें, बलिहारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥
 हस्तीनागपुरें पांमुरायनी, कुंता नामें कामिनी ए ॥
 पांमव माता दसे दसारनी, बेहेन पतिव्रता पद्मनी
 ए ॥ १३ ॥ शीलवती नामें शीलव्रत धारिणी, त्रि
 विधें तेहने वंदीयें ए ॥ नाम जपंतां पातक जाए, द
 रिसण डुरित निकंदीयें ए ॥ १४ ॥ निबिधा नगरी न
 लह नरिंदनी, दमयंती तस गेहिनी ए ॥ संकट पड
 तां शीयलज राख्युं, त्रिस्तुवन कीर्त्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥
 अनंग अजीता जगजन पूजिता, पुण्यचूजाने प्रभाव
 ती ए ॥ विश्वविख्याता कामित दाता, शोभमी सती
 पदमावती ए ॥ १६ ॥ वीरें नांखी शाखें शाखी, उ
 दयरतन नांखे मुदा ए ॥ वाहाणुं वातां जे नर न
 एणो, ते जेणे सुख संपदा ए ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ अथ चार मंगल ॥

॥ सिद्धार्य नूपति शोहे कृत्रियकुंमें, तस घेर त्रि
शला कामिनी ए ॥ गजवर गामिनी पोढीय जामिनी,
चउद सुपन लहे जामिनी ए ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ जामिनी
मध्ये शोजतां रे, सुपन देखे बाल ॥ मयगल रिख
जनें केसरी, कमला कुसुमनी माल ॥ २ ॥ इंडु दिन
कर ध्वजा सुंदर, कलश मंगल रूप ॥ पद्म सर जल
निधि उत्तम, अमर विमान अनूप ॥ ३ ॥ रत्नो
अंबार उज्ज्वल, वह्नि निर्धूम ज्योत ॥ कव्याण मं
गलकारी माहा, करत जग उद्योत ॥ ४ ॥ चउद सु
पन सूचित विश्व पूजित, सकल सुख दातार ॥ मं
गल पेहेलुं बोलीएँ, श्री वीर जगदाधार ॥ ५ ॥ म
गध देशमां नयरी राजगृही, श्रेणिक नामें नरेशरू
ए ॥ धनवर गोवर गाम वसे तिहां, वसुनूति विप्र
मनोहरु ए ॥ त्रुटक ॥ ६ ॥ मनोहरु तस मानिनी,
पृथ्वी नामें नार ॥ इंडूति आदेश ठे, त्रण पुत्र
तेहने स्मर ॥ ७ ॥ यज्ञकर्म तेणें आदखुं, बहु विप्र
ने समुदाय ॥ तेणें समे तिहां समोसखा, चोवीशमा
जिनराय ॥ ८ ॥ उपदेश तेहनो सांजली, लीधो सं
जम नार ॥ अगीयार गणधर थापीया, श्री वीरें

तेणी वार ॥ ९ ॥ इंदूति गुरुजगते थयो, माहा,
 लब्धिनो चंद्रार ॥ मंगल बीजुं बोलीये, श्री गौतम
 प्रथम गणधार ॥ १० ॥ नंद नरिंदनो पामली पुरव
 रें, सकमाल नामें मंत्रीसरू ए ॥ लाठलदे तस नारी
 अनुपम, शीयलवती बहुसुख करू ए ॥ ११ ॥ त्रुटक ॥
 सुखकरू संतान नव दोय, पुत्र पुत्री सात ॥ शीयल
 वंतमां शिरोमणि, थूलीनइ जग विख्यात ॥ १२ ॥
 मोह वशें वेश्या मंदिर, वस्या वर्षज वार ॥ जोग
 नली पेरें जोगव्या, ते जाणे सहु संसार ॥ १३ ॥
 शुद्ध संजम पामी विषय वामि, पामि गुरु आदेश ॥
 कोश्याआवासें रह्यो निश्चल, मग्यो नही लवजेश
 ॥ १४ ॥ शुद्ध शीयल पाले विषय टाले, जगमां जे
 नर नार ॥ मंगल त्रीजुं बोलीएं, श्री थुलिनइ अण
 गार ॥ १५ ॥ हेम मणि रूप मय घडित अनुपम, ज
 डित कोशीसां तेजें जगे ए ॥ सुरपति निर्मित त्रण
 गढ शोजित, मध्ये सिंहासन जगमगे ए ॥ १६ ॥ त्रु
 टक ॥ जगमगे जिन सिंहासने ए, वाजित्र कोडा
 कोड ॥ चार निकायना देवता, ते सेवे बेहु कर जोड
 ॥ १७ ॥ प्रातिहारज आठशुं रे, चोत्रीश अतिशयवंत
 ॥ समवसरणें विश्वनायक, शोजे श्री जगवंत ॥ १८ ॥

• सुर नर किन्नर मानवी, बेगी ते पर्बदा बार ॥ उपदे
श देअरिहंत जी, धर्मना चार प्रकार ॥ १९ ॥ दान
शीयल तप जावना रे, टाळे सघलां कर्म ॥ मंगल
चोथुं बोलीयें, जगमांहे श्री जिनधर्म ॥ २० ॥ ए
चार मंगल गावशे जे, प्रजातें धरी प्रेम ॥ ते कोडि
मंगल पामशे, उदयरत्न जांखे एम ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री तीर्थमाला स्तवन लिख्यते ॥

॥ शत्रुंजे रूपन समोसखा, जला गुण नखा रे ॥
सीधा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ तिन कव्या
एक तिहां थयां, मुगतें गया रे ॥ नेमीसर गिरनार
॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरि सेहरोरे ॥
जरतें जराव्यां विंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अतिज
लो, त्रिचुन तिलो रे ॥ विमज वसहि वस्तुपाल ॥ ती०
॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणों, रत्नीयामणोरे ॥
सीधा तीर्थकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखी
यें, हैये हरखीयें रें ॥ सीधा श्री वासु पूज्य ॥ ती०
॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावा पुरी, रुदें नरी रे ॥ मुक्ति
गया महावीर ॥ ती० ॥ जेशलमेर जुहारीयें, दुःख
वारीयें रे ॥ अरिहंत विंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥
विकानेरज वंदीयें, चिरनंदीयें रे ॥ अरिहंत देहरां

आव ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेश्वरो पंचासरो रे, फ
 लोधो थंनणपास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अजाव
 रो, अमीऊरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रै
 लोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिस
 हेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ तारंगे अजित जुहारियें, दुःख
 वारियें रे ॥ थराधे श्रीमहावीर ॥ ती० ॥ नवारे नग
 रना देहरा, बावन जला रे ॥ शारायसी वर्द्धमान न
 राव्या बिंब ॥ ती० ॥ ७ ॥ श्रीनारुलाइ जादवो, गोडिस्त
 वो रे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां दे
 हरां, बावन जलां रे ॥ रूचक कुंमलें चार चार ॥ ती०
 ॥ ८ ॥ शाश्वती अशाश्वती, प्रतीमा ठति रे ॥ स्वर्ग
 मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां,
 होजो मुज इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ ९ ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ आखडीयें रे में आज शत्रुंजय दीगो रे, सवा
 लाख टकानो दाहाडो रे, लागे मुने मीगो रे ॥ ए
 आंकणी ॥ सफल थयो रे माहारा मननो उमाहो,
 बाहाला मारा नवनो संशय नांग्यो रे ॥ नरक तिर्यच
 गति दूर निवारी, चरणे प्रभुजीने लाग्यो रे, शत्रुंज
 य दीगो रे ॥ १ ॥ मानव नवनो लाहो लीजें

॥ वा० ॥ देहडी पावन कीजें रे ॥ सोना रूपाने फूल
 लडें वधावी, प्रेमें प्रदक्षिणा दीजें रे ॥ शत्रुं० ॥ १ ॥
 डुधडे पखाजीने केशरें घोली ॥ वा० ॥ श्री आदीश्वर
 पूज्या रे ॥ श्री सिद्धाचल नयणें जोतां, पाप मे
 वासी धूज्या रे ॥ शत्रुं० ॥ २ ॥ श्री सुख सौधर्मा
 सुरपति आगें ॥ वा० ॥ वीर जिणंद एम बोले रे ॥
 त्रण्य छुवनमां तीरथ महोदुं, नहिं कोइ शत्रुंजय
 तोले रे ॥ शत्रुं० ॥ ४ ॥ इंसरीखा ए तीरथनी
 ॥ वा० ॥ चाकरी चितमां चाहे रे ॥ कायानी तो
 काह्यर काढी, सूरजकुंममां नाहे रे ॥ शत्रुं० ॥ ५ ॥
 काकरे काकरे श्री सिद्ध क्षेत्रें ॥ वा० ॥ साधु अनंता
 सीधा रे ॥ ते माटे ए तीरथ महोदु, उद्धार अनं
 ता कीधा रें ॥ शत्रुं० ॥ ६ ॥ नानि राया सुत नय
 णें जोतां ॥ वा० ॥ मेह अमीरस वूठा रे ॥ उदय
 रत्न कहे आज म्हारे पोतें, श्री आदेसर तूठा रे
 ॥ शत्रुं० ॥ सवा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

॥ देशी लालननी ॥

॥ सिद्धगिरि ध्यावो नविका, सिद्धगिरि ध्यावो ॥
 घेर बेगं पण बहु फल पावो नविका, बहु फल पावो

॥ए आंकणी॥ नंदीसर जात्रायें जे फल होवे, तेथी
 बमणेरुं फल पुंमरगिरि होवे ॥न०॥पुं०॥१॥ तिगणुं
 रुचकगिरि चोगणुं गजदंता, तेथी बमणेरुं फल जंबु
 महांता ॥ न०॥ जं ० ॥ खटगणुं धातकी चैत्य जुहारे,
 बत्रीश गणेरुं फल पुस्कल विहारे ॥ न० ॥ पु०
 ॥ २ ॥ तेथी तेरशगणुं फल मेरु चैत्य जुहारे, सह
 स गणेरुं फल समेत सिखरे ॥ न० ॥ स०॥ लाख
 गणेरुं फल अंजन गिरि जूहारे, दश लाख गणेरु
 फल अष्टापद गिरनारें ॥ न० ॥ अ० ॥ ३ ॥ कोडि
 गणेरु फल श्री सिद्धाचल जेटें, जेम रे अनादिनां
 डुरित उमेटें ॥ न० ॥ डु० ॥ जाव अनतें अनंत
 फल पावे, ज्ञान विमल सूरि एम गुण गावे ॥न०॥४॥

॥ अथ श्री राणकपूरजीनुं स्तवन ॥

॥ श्री राणकपुर रलीयामणुं रे लाल ॥ श्री आ
 दीसर देव ॥ मन मोह्युं रे ॥ उत्तंग तोरण देहरुं रे
 लाल ॥ नीरखीजें नित्यमेव ॥म०॥१॥श्री०॥ चउविश
 मंमप चिहुं दिशें रे लाल ॥ चउमुख प्रतिमा चार
 ॥ म० ॥ त्रिभुवन दीपक देहरुं रे लाल ॥ समोव
 ड नहीं संसार ॥ म० ॥ श्री० ॥ २ ॥ देहरी चोरा
 शी दीपती रे लाल ॥ मांमयो अष्टापद मेर ॥ म० ॥

नलें जुहाखां नोंयरां रे ला० ॥ सूतां उठी सवेर
 ॥ म० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ देश जाणीतुं देहरूं रे लाल॥
 मोटो देश मेवाड ॥ म० ॥ लस्क नवाणुं लगावीया
 रे लाल ॥ धन्न धरणें पोरवाड ॥ म० ॥ श्री० ॥ ४ ॥
 खरतर वसही खांतगुं रे लाल ॥ निरखंतां सुख थाय
 ॥ म० ॥ पांच प्रासाद बीजां वलीरे ला० ॥ जोतां
 पातक जाय ॥ म० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ आज कृतारथ
 हुं थयो रे लाल ॥ आज थयो आणंद ॥ म० ॥
 यात्रा करी जिनवर तणी रे लाल ॥ दूरें गयुं दुःख
 दंद ॥ म० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ संवत शोलने ठोतरे रे लाल॥
 मागशिर मासमोजार ॥ म० ॥ राणकपुरें यात्रा करी
 रे लाल ॥ समयसुंदर सुखकार ॥ म० ॥ ७ ॥ इति
 ॥ अथ श्रीसिद्धचक्रजीतुं स्तवन आढे लालनी देशी ॥
 ॥ समरी शारदा माय, प्रणमी निजगुरु पाय ॥
 आढे लाल ॥ सिद्धचक्र गुण गायगुं जी ॥ ए सिद्ध
 चक्र आधार, नवि उतरे नव पार ॥ आ० ॥ ते
 नणी नवपद ध्यायगुं जी ॥ १ ॥ सिद्धचक्र गुणगे
 ह, जस गुण अनंत अहेह ॥ आ० ॥ समस्यां संक
 ट उपशमे जी ॥ लहियें वंठित जोग, पामी सवि सं
 जोग ॥ आ० ॥ सुर नर आवी बहु नमेजी ॥ २ ॥

कष्ट निवारे एह, रोगरहित करे देह ॥ आ० ॥ मय
 णा सुंदरी श्रीपालने जी ॥ ए सिद्धचक्र पसाय, आ
 पदा दूरें जाय ॥ आ० ॥ आपे मंगल मालने जी
 ॥ ३ ॥ एसम अवर नही कोय, सेवे ते सुखीउ
 होय ॥ आ० ॥ मन वच काया वश करी जी ॥
 नव आंबिल तप सार, पडिक्कमणुं दोय वार
 ॥ आ० ॥ देववंदन त्रण टकनां जी ॥ ४ ॥
 देव पूजो त्रण वार, गरणुं ते दोय हजार ॥ आ० ॥
 स्नान करी निर्मल पणे जी ॥ आराधे सिद्धचक्र, सा
 न्निध्य करे तेनी शक्र ॥ आ० ॥ जिनवर जन आर्गे
 नणे जी ॥ ५ ॥ ए सेवो निश दीस, कहीयें वीसवा
 वीश ॥ आ० ॥ आज जंजाल सवि परीहरो जी ॥
 ए चिंतामणि रत्न, एहनां कीजें जत्न ॥ आ० ॥
 मंत्र नही एह उपरें जी ॥ ६ ॥ श्री विमलेश्वर जह्नु,
 होजो मुज परतह्नु ॥ आ० ॥ हुं किंकर हुं ताहरो
 जो ॥ पाय्या तुंहीज देव, निरंतर करुं हवे सेव
 ॥ आ० ॥ दिवस वढ्यो हवे माहरो जी ॥ ७ ॥
 विनति करुं हुं एह, धरजो मुजहुं नेह ॥ आ० ॥
 तमनें हुं कहियें वली वली जी ॥ श्रीलक्ष्मीविजय

गुरु राय, शिष्य केसर गुण गाय ॥ आ० ॥ अमर
नमे तुज लली लली जी ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संजवनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ साहिब सांजलो रे, संजव अरज हमारी ॥
जयोनव हुं जम्यो रे, न लहि सेवा तुमारी ॥ नरय
निगोदमां रे, तिहां हुं बहु जव जमीउं ॥ तुम विना
दुःख सहां रे, अहोनिश कोधे धमधमियो ॥ सा०
॥ १ ॥ इंदियवश पडयो रे, पाव्यां व्रत नवि सुसैं ॥
त्रस पण नवि गए्या रे, हणीया थावर हुंशे ॥ व्रत
चित्त नवि धर्यां रे, बीजुं साचु न बोड्युं ॥ पापनी
गोठडी रे, तिहां में हड्डलुं खोड्युं ॥ सा० ॥ २ ॥
चोरी में करी रे, चउविह अदत्त न टाड्युं ॥ श्री जिन
आणखुं रे, में नवि संजम पाड्युं ॥ मधुकर तणी परें
रे, शुद्ध न आहार गवेख्यो ॥ रसना लालचें रे, नी
रसपिंम उवेख्यो ॥ सा० ॥ ३ ॥ नर जव दोहिलो
रे, पामि मोह वश पडियो ॥ परस्त्री देखीने रें, मुऊ
मन तिहां जइ अडिउं ॥ काम न को सखां रे, पापे
पिंम में जरीउं ॥ सुध बुद्ध नवि रही रे, तेणें नवि
आतम तरीउं ॥ सा० ॥ ४ ॥ लक्ष्मीनी लालचें रे,
में बहु दीनता दाखी ॥ तोपण नवि मली रे, मली

तो नवि रही राखी ॥ जे जन अनिलखे रे, ते तो
 तेहथी नासे ॥ तृण सम जे गणें रे, तेहनी नित्य
 रहे पासे ॥ सा० ॥ ५ ॥ धन धन ते नरा रे, एहनो
 मोह विठोडी ॥ विषय निवारीने रे, जेहने धर्ममां
 जोडी ॥ अजह्य ते में जरूयां रे, रात्रिनौजन कीधां
 ॥ व्रत ठ नवि पालियां रे, जेहवां मूलथी लीधां
 ॥ सा० ॥ ६ ॥ अनंत जव हुं जम्यो रे, जमतां सा
 हिव मलियो ॥ तुम विना कोण दिये रे, बोध रय
 ण मुऊ बलियो ॥ संजव आपजो रे, चरण कमल
 तुम सेवा ॥ नय एम वीनवे रे, सुणजो देवाधि
 देवा ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री दीवालीतुं स्तवन ॥

॥ बाह्याजीनी वाटडी अमें जोतां रे ॥ ए देशी ॥

॥ जय जिनवर जग हितकारी रे, करे सेवा सुर
 अवतारी रे, गौतम पमुहा गणधारी ॥ १ ॥ सनेही
 वीरजी जयकारी रे ॥ ए आंकणी ॥ अंतरंग रिपुने त्रासे
 रे, तप कोपाटोपें वासे रे, लह्युं केवल नाण उद्धारसैं
 ॥ २ ॥ सा० ॥ कटिलंकें वाद वदाय रे, पण जिनसार्थें न
 घटाय रे, तेणें हरिलंबन प्रभु पाय ॥ सा० ॥ ३ ॥
 सवि सुरवहू थेइ थेइ कारा रे, जलपंकजनी परें

न्यारा रे, तजी तृष्णा जोग विकारा ॥ स० ॥ ४ ॥
 प्रसुदेशना अमृत धारां रे, जिनधर्म विषे रथकारा रे,
 जेणे ताच्या मेघ कुमारा ॥ स० ॥ ५ ॥ गौतमने
 केवल आली रे, वऱ्या स्वांतियें शिव वरमाजी रे,
 करे उत्तम लोक दीवाजी ॥ स० ॥ ६ ॥ अंतरंग अ
 लह निवारी रे, गुन सङ्कनने उपगारी रे, कहे वीर
 विष्णु हितकारी ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्ध जगवाननुं स्तवन ॥

॥ सिद्धनी शोभा रे शी कहुं ॥ ए आंकणी ॥
 सिद्ध जगत शिर शोभता, रमता आतमराम ॥
 लक्ष्मी लीलानी लेहेरमां, सुखिया ठे शिव ठाम
 ॥ सि० ॥ १ ॥ माहानंद अमृतपद नमो, सिद्धि
 कैवल्य नाम, अपुनर्जव ब्रह्मपद वली, अद्भुत सुख
 विशराम ॥ सि० ॥ २ ॥ संश्रेय निश्रेय अद्भुता,
 दुःख समस्तनी हाण ॥ निवृत्ति अपवर्गता, मोक्ष
 मुक्ति निरवाण ॥ सि० ॥ ३ ॥ अचल महोदय पद
 लघुं, जोतां जगतना ठाठ ॥ निज निज रूपें रे जूजू
 आ, वीत्यां कर्म ते आठ ॥ सि० ॥ ४ ॥ अगुरुलघु
 अवगाहना, नामें विकसे वदन्न ॥ श्री गुनवीरने वंद
 तां, रहियें सुखमां मगन्न ॥ सि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आराधनानुं स्तवन प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥ सकल सिद्धि दायक सदा, चोवीशे
जिनराय ॥ सहगुरु सामिनी सरसती, प्रेमें प्रणमुं
पाय ॥ १ ॥ त्रिभुवनपति त्रिशला तणो, नंदन गुण
गंजीर ॥ शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान बड
वीर ॥ २ ॥ एक दिन वीर जिणंदने, चरणे करि प
रणाम ॥ नविक जीवना हित जणी, पूढे गौतम
स्वामि ॥ ३ ॥ मुक्तिमार्ग आराधियें, कहो किण परें
अरिहंत ॥ सुधा सरस तव वचन रस, जांखे श्री न
गवंत ॥ ४ ॥ अतिचार आलोश्यें, व्रत धरीयें गुरु
साख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोराशी ला
ख ॥ ५ ॥ विधिहुं वली वोसिरावियें, पापस्थान अ
ढार ॥ चार शरण नित्य अनुसरो, निंदो डुरित आ
चार ॥ ६ ॥ गुनकरणी अनुमोदियें, जाव जलो मनआ
ण ॥ अणसण अवसर आदरी, नवपद जपो सुजाण
॥ ७ ॥ गुनगति आराधन तणा, ए ठे दश अधिकार ॥
चित्त आणीने आदरो, जेम पामो नवपार ॥ ८ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ ए ठिंमि किहां राखी ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञान दरिसण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आ

चार ॥ एह तणा इह नव परजवना, आलोइयें अ
 तिचार रे ॥ १ ॥ प्राणी ॥ ज्ञान जणो गुणखाणी ॥ वीर
 वदे एम वाणी रे ॥ प्रा० ॥ ज्ञा० ॥ ए आंकणी ॥ गुरु उ
 लवीयें नहिं गुरु विनयें, कालें धरी बहुमान ॥ सूत्र अर्थ
 तडुनय करी सूधां, जणीयें वही उपधान रे ॥ २ ॥ प्रा० ॥
 ज्ञा० ॥ ज्ञानोपकरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥
 तेह तणी कीधी आशातना, ज्ञान जक्ति न संजाली रे
 ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ ज्ञा० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान
 विराध्युं जेह ॥ आ नव परजव वलिय नवोनवें,
 मिठाडुक्कड तेह रे ॥ ४ ॥ प्राणी ॥ समकित ल्यो
 शुद्ध जाणी ॥ ए आंकणी ॥ जिनवचनें शंका नवि की
 जें, नवि परमत अनिजाख ॥ साधुतणी निंदा परिह
 रजो, फलसंदेह न राख रे ॥ ५ ॥ प्रा० ॥ स० ॥ मूढपणुं
 ठमो परशंसा, गुणवंतने आदरियें ॥ सामीनें धर्म
 करी धिरता, जक्ति प्रजावना करीयें रे ॥ ६ ॥ प्रा०
 ॥ स० ॥ संघचैत्य प्रासादतणो जे, अवर्णवाद मन
 छेख्यो ॥ इव्य देवको जे विणसाडयो, विणसंतां उ
 वेख्यो रे ॥ ७ ॥ प्रा० ॥ स० ॥ इत्यादिक विपरीत
 पणाथी, समकित खंमद्युं जेह ॥ आजव० ॥ मिठा०
 ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ चारित्र्यो चित्त आणी ॥ ए आंकणी ॥ पांच

समिति त्रण गुति विराधि, आठे प्रवचन माय ॥ सा
 धुतणे धर्मे परमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥
 ॥ ए ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ श्रावकने धर्मे सामायिक,
 पोसहमां मन वाली ॥ जे जयणापूर्वक जे आठे,
 प्रवचनमाय न पाली रे ॥ १० ॥ प्रा० ॥ चा० ॥
 इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र मोढ्युं जेह ॥ आ
 जव० ॥ मिह्ता० ॥ ११ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ बारें जे
 दें तप नवि कीधुं, ठते योगें निज शक्ते ॥ धर्मे मन
 वच काया वीरज, नवि फोरविउं जगतें रे ॥ १२ ॥
 ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ तपवीरज आचारें एणी परें, वि
 विध विराध्या जेह ॥ आजव० ॥ मिह्ता० ॥ १३ ॥
 ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ वलीय विशेषें चारित्र केरा, अति
 चार आजोइयें ॥ वीर जिणेसर वयण सुणीने, पाप
 मयल सवि धोइयें रे ॥ १४ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥

॥ ढाल बीजी ॥ पामी सुगुरूपसाय ॥ ए देशी ॥

॥ पृथिवी पाणी तेउ, वाउ वनसपति ॥ ए पांचे
 थावर कहां ए ॥ करि करसण आरंज, खेत्र जे खे
 डीयां ॥ कूवा तलाव खणावीया ए ॥ १ ॥ घर आ
 रंज अनेक, टांकां जोंयरां ॥ मेडी माल चणावीआ
 ए ॥ लिंपण घुंपण काज, एणी परें परपरें ॥ पृथिवी

काय विराधीया ए ॥ २ ॥ धोयण नाहण पाणी,
 जीलण अपकाय ॥ ठोतीधोती करी दूहव्यां ए ॥ जाठी
 गर कुंनार, लोह सोवनगरा ॥ जाडभुंजा लिहालाग
 रा ए ॥ ३ ॥ तापण शेकणकार्जे, वस्त्र निखारण ॥
 रंगण रांधण रसवती ए ॥ एणी परें कर्मादान, परें
 परें केलवी ॥ तेउ वाउ विराधीया ए ॥ ४ ॥ वाडी
 वन आराम, वावी वनस्पति ॥ पान फूल फल चुंटीयां
 ए ॥ पोंहक पापडी शाक, शेक्यां शूकव्यां भुंयां ठेयां ॥
 आथीयां ए ॥ ५ ॥ अलसीनें एरंम, घाणी घालीनें ॥
 घणा तिलादिक पीलीया ए ॥ घाली कोलुं मांदि,
 पीली शेलडी ॥ कंद मूल फल वेचीयां ए ॥ ६ ॥
 एम एकेंद्रिय जीव, हएया हणावीया ॥ हणतां जें
 अनुमोदीया ए ॥ आनव परनव जेह ॥ वलिय नवोना
 वें ॥ ते मुऊ मिळामि डुकडुं ए ॥ ७ ॥ क्रमी सरमीयां की
 डा, गामर गंमोला, इयल पूरा अलसीयां ए ॥ वाला ज
 लो चूडेल, विचलित रसतणा ॥ वली अथाणां प्रमुख
 नां ए ॥ ८ ॥ एम वे इंद्रिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते
 मुऊ ॥ उदेही जू लीख, मांकड मंकोडा ॥ चांच
 ड कीडी कंथुआ ए ॥ ९ ॥ गदहीयां घीमेल, कान
 खजूरडा ॥ गींगोडा धनेडीयां ए ॥ १० ॥ एम ते इंद्रिय

जीव, जे में डूहव्या ॥ ते मुऊ० ॥ १० ॥ माखी मत्सर
 मांस, मसा पतंगीया ॥ कंसारी कोलिया वडाए ॥ ठीं
 कण वींढु तीड, जमरा जमरीयो ॥ कोंता बग खड
 मांकडी ए ॥ ११ ॥ एम चौरिंदिय जीव ॥ जे में ॥
 दूहव्या ॥ ते मुऊ० ॥ जलमां नाखी जाल, जलचर दू
 हव्या ॥ वनमां मृग संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीडया
 पंखी जीव, पाडी पासमां ॥ पोपट घादया पांज रे ए ॥
 एम पंचेंदिय जीव ॥ जे में ॥ डूहव्या ते मुऊ० ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ प्रथम गोवाला तणे नवें जी ॥ ए देशी ॥

॥ क्रोध लोच नय हासथी जी, बोव्यां वचन अ
 सत्य ॥ कूड करी धन पारकां जी, लीधां जेह अदत्त
 रे ॥ जिनजी ॥ १ ॥ मिह्वाडुकड आज, तुम साखें
 महाराज रे ॥ जिनजी ॥ देइ सारूं काज रे ॥ जिनजी ॥
 मि० ॥ ॥ ए आंकणी ॥ देव मनुज तीर्यचनां जी,
 मैथुन सेव्यां जेह ॥ विषयारस लंपटपणे जी, घणुं
 विटंब्यो देह रे ॥ जि० ॥ २ ॥ मि० ॥ परिग्रहनी मम
 ता करी जी, नव नव मेली आय ॥ जेह जिहांनी
 ते तिहां रही जी, कोइ न आवी साथ रे ॥ जि०
 ॥ ३ ॥ मि० ॥ रयणी नोजन जे कखां जी, कीथां न

द्वय अन्नद्वय ॥ रसना रसनी लालचें जी, पाप क
 ह्यां प्रत्यक्ष रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ मि० ॥ व्रत लेइ वि
 सारीयां जी, वली जांग्यां पञ्चस्काण ॥ कपट हेतु
 किरिया करी जी, कीधां आप वखाण रे ॥ जि० ॥ ५ ॥
 मि० ॥ त्रण ढाल आठे डुहे जी, आलोया अतिचा
 र ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पहेलो अधिका
 र रे ॥ जि० ॥ ६ ॥ मि० ॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेलडीनी देशी ॥

॥ पंच महाव्रत आदरो ॥ साहेलडी रे ॥ अथ
 वा द्वयो व्रत बार तो ॥ यथाशक्ति व्रत आदरी ॥ सा० ॥
 पालो निरतिचार तो ॥ १ ॥ व्रत लीधां संनारीयें
 ॥ सा० ॥ हियडे धरीय विचार तो ॥ शिवगति आ
 राधन तणो ॥ सा० ॥ ए बीजो अधिकार तो ॥ २ ॥
 जीव सवे खमावियें ॥ सा० ॥ योनि चोराशी लाख
 तो ॥ मन शुद्धे करो खामणां ॥ सा० ॥ कोइबुं रो
 ष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिंतवो ॥ सा० ॥
 कोइ न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष एम परिहरो ॥
 सा० ॥ कीजें जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ सामी संघ
 खमावियें ॥ सा० ॥ जे उपनी अप्रीति तो ॥ सज्जन
 न कुटुंब करी खामणां ॥ सा० ॥ ए जिनशासन री

ति तो ॥ ५ ॥ स्वमियें अने स्वमावियें ॥ सा० ॥ एह
 ज धर्मनो सार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ॥ सा० ॥
 ए त्रोजो अधिकार तो ॥ ६ ॥ मृपावाद हिंसा चो
 री ॥ सा० ॥ धन मूर्छा मेहुन्न तो ॥ क्रोध मान मा
 या तृष्णा ॥ सा० ॥ प्रेम वेष पैशून्य तो ॥ ७ ॥
 निंदा कलह न किजीयें ॥ सा० ॥ कूडां न दीजे आ
 ल तो ॥ रति अरति मिथ्या तजो ॥ सा० ॥ माया
 मोस जंजाल तो ॥ ८ ॥ त्रिविध त्रिविध वोसिरावि
 यें ॥ सा० ॥ पापस्थान अढार तो ॥ शिवगति आ
 राधन तणो ॥ सा० ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ ९ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ हवे निसुणो इहां आवीया ए ॥ ए देशी ॥

॥ जनम जरा मरणें करी ए, ए संसार असार
 तो ॥ कखां कर्म सहु अनुजवे ए, कोइ न राखणहार
 तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिद्ध न
 गवंत तो ॥ शरण धर्म श्रीजैननो ए, साधु शरण गु
 एवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए, चा
 र शरण चित्त धार तो ॥ शिवगति आराधन तणो
 ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आ नव परनव
 जे कखां ए, पापकर्म केइ लाख तो ॥ आत्मसाखें

ते निंदीयें ए, पडिक्कमीयें गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मि
 थ्यामति वर्त्ताविआं ए, जे जांख्यां उत्सूत्र तो ॥ कुम
 ति कदाग्रहने वशें ए, वली थाप्यां उत्सूत्र तो ॥ ५ ॥
 घड्यां घडाव्यां जे घणां ए, घरटी हल हथीआर
 तो ॥ जव जव मेली मूकीआं ए, करता जीव संहार
 तो ॥ ६ ॥ पाप करीनं पोषिआं ए, जनम जनम परिवार
 तो ॥ जनमांतर पोहोता पढी ए, कोइ न कीथी
 सार तो ॥ ७ ॥ आ जव परजव जे कखां ए, एम
 अधिकरण अनेक तो ॥ त्रिविधे त्रिविधे वोसरावीयें
 ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ डुकृत निंदा ए
 म करी ए, पाप कखां परिहार तो ॥ शिवगति आरा
 न तणो ए, ए ठछो अधिकार तो ॥ ९ ॥

॥ ढाल ठछी ॥

॥ अदि तुं जोइने आपणी ॥ ए देशी ॥

॥ धन्य धन्य ते दिन माहरो, जिहां कीथो धर्म ॥
 दान शीयल तप आदरी, टाढ्यां दुष्कर्म ॥ ध० ॥ १ ॥
 शत्रुंजादिक तीर्थनी, जे कीथी यात्र ॥ युगतें जिनवर
 पूजीया, वली पोख्यां पात्र ॥ ध० ॥ २ ॥ पुस्तक
 ज्ञान लखावीयां, जिणहर जिणचैत्य ॥ संघ चतुर्वि
 ध साचव्या, ए सातेखेत्र ॥ ध० ॥ ३ ॥ पडिक्कमणां

सुपरें कखां, अनुकंपा दान ॥ साधु सूरि उवजायनें,
 दीधां बहुमान ॥ ध० ॥ ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदियें,
 एम वारोवार ॥ शिवगति आराधनतणो, ए सातमो
 अधिकार ॥ ध० ॥ ५ ॥ जाव जज्ञो मन आणीयें,
 चित्त आणो ठाम ॥ समता जावें जावीयें, ए आत
 मराम ॥ ध० ॥ ६ ॥ सुख दुःख कारण जीवने, कोइ
 अवर न होय ॥ कर्म आप जे आचखां, जोगवियें
 सोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी
 पुण्यना काम ॥ ठार उपर ते लीपणुं, जांखर चित्राम
 ॥ ध० ॥ ८ ॥ जाव जज्ञी परें जावीयें, ए धर्मनो सार ॥
 शिवगति आराधनतणो, आठमो अधिकार ॥ ध० ॥ ९ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ रेवतगिरि उपरें ॥ ए देशी ॥

॥ हवे अवसर जाणी, करीयें संक्षेपण सार ॥ अ
 णसण आदरीयें, पञ्चस्कीचार आहार ॥ लज्जुता सवि
 मूकी, ठांफी ममता संग ॥ ए आतम खेजे, समता
 ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति चारें कीधा, आहार अनंत
 निःशंक ॥ पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लालचीउ रंक ॥
 डलहो ए वली वली, अणसणनो परिणाम ॥ एथी
 पामीजें, शिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥ धन धना शा
 लिजइ, खंधो मेघकुमार ॥ अणसण आराधी,

(९९)

पाम्या नवनो पार ॥ शिवमंदिर जाशे, करी एक अ
 वतार ॥ आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥
 दशमे अधिकारें, महामंत्र नवकार ॥ मनथी नवि
 भूको, शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जाए, दु
 र्गति दोष विकार ॥ सुपरें ए समरो, चउद पूरवनो
 सार ॥ ४ ॥ जन्मांतरें जातां, जो पामे नवकार ॥
 तो पातक गाली, पामे सुर अवतार ॥ ए नव पद स
 रिखो, मंत्र न को संसार ॥ इह नवने परनवें, सुख
 संपत्ति दातार ॥ ५ ॥ जुठ नीलने नीलडी, राजा
 राणी थाय ॥ नवपद महिमाथी, राजसिंह महारा
 य ॥ राणी रतनवती बेहु, पाम्या ठे सुरनोग ॥ एक
 नवथी जेरो, सिद्धवधू संयोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने ए व
 ली, मंत्र फढ्यो ततकाल ॥ फणिधर फीटीने, प्रगट
 थइ फूजमाल ॥ शिवकुमरें योगी, सोवनपुरी सो कीध
 ॥ एम एणे मंत्रें, काज घणानां सिद्ध ॥ ७ ॥ ए दश
 अधिकारें, वीर जिणोसर नाख्यो ॥ आराधन केरो,
 विधि जेणें चित्तमां राख्यो ॥ तेणें पाप पखाली, नव
 नय दूरें नाख्यो ॥ जिन विनय करंतां, सुमति अमृ
 तरस चाख्यो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल आवमी ॥ नमो नवि नावशुं ए ॥ एदेशी ॥

॥ सिद्धारथ राय कुलतिजो ए, त्रिशला मात मढ्हार
तो ॥ अवनीतलें तुमें अवतखा ए, करवा अमउपगार
॥ १ ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ ए आंकणी ॥ में अपराध
कखा घणा ए, केहेतां न लहुं पार तो ॥ तुम चरणें
आव्या नणी ए, जो तारे तो तार ॥ २ ॥ ज० ॥
आश करीने आवीउ ए, तुम चरणें महाराज तो ॥
आव्याने उवेखशो ए, तो केम रदेशो लाज ॥ ३ ॥
ज० ॥ कर्म अलुजण आकरां ए, जन्म मरण जंजा
ल तो ॥ हुं हुं एहथी उनग्यो ए, ठोढावो देवदयाल
॥ ४ ॥ ज० ॥ आज मनोरथ सुज फव्या ए, नाठां
डुःख दंदोल तो ॥ तूगे जिन चोवीशमो ए, प्रगटयो
पुण्य कल्लोल ॥ ५ ॥ ज० ॥ नवनव विनय तुमारडो
ए, नाव नक्ति तुम पाय तो ॥ देव दया करी दीजीयें
ए, बोधबीज सुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ कलश ॥ इय तरण तारण सुगति कारण,
डुःखनिवारण जग जयो ॥ श्रीवीर जिनवर चरण
श्रुणतां, अधिक मन उलट थयो ॥ १ ॥ श्री विजय
देव सूरिंद पटधर, तीरथ जंगम एणी जगें ॥ तप
गठपति श्रीविजयप्रन सूरि, सूरितेजें जगमगे ॥ २ ॥

श्रीहीरविजय सूरि शिष्य वाचक, कीर्त्तिविजय सुर
गुरु समो ॥ तस शिष्य वाचक विनयविजयें, शुण्यो
जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ सइ सत्तर संवत उगण
त्रीशें, रही रांदेर चौमास ए ॥ विजय दशमी विजय
कारण, किउ गुणअन्यास ए ॥ ४ ॥ नरनव आरा
धन सिद्धि साधन, सुकृत लीलविलास ए ॥ निर्जरा
हेतें तवन रचिछुं, नामें पुण्य प्रकाश ए ॥ ५ ॥ इति श्री
आराधना रूप पुण्य प्रकाशस्तवन संपूर्ण ॥ श्लोक १ २ ७

॥ अथ अष्टापद तीर्थ स्तवन ॥

॥ तीरथ अष्टापद नित्य नमीयें, ज्यां जिनवर चो
वीश जी ॥ मणिमय बिंबनराव्या जरतें, ते वंदूं
नित्य दीस जी ॥ ती० ॥ १ ॥ निजनिज देह प्रमाणें
मूरति, दीठडे मनडुं मोहे जी ॥ चत्तारि अछ दश
दोय इणी परें, जिनचोवीशे सोहे जी ॥ ती० ॥ २ ॥
बत्रीश कोशनो पर्वत उंचो, आठ तिहां पावडीयो
जी ॥ एकेकी चउकोश प्रमाणे, नवि जाये कोइ च
डीयो जी ॥ ती० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी चडीया लब्धें,
वांद्या जिन चोवीश जी ॥ जगचिंतामणि स्तवन त्यां
कीछुं, पूगी मननी जगीश जी ॥ ती० ॥ ४ ॥ तदन
वमोद्गामी जे मानव, ए तीरथने वांदे जी ॥ जंघा

विद्याचारण वांदे, तेतो जब्धिप्रसादें जी ॥ ती० ॥
 ५ ॥ शाठ सहस सुत सगर चक्रीना, ए तीरथ से
 वंतां जी ॥ बारमा देवलोके ते पोहोता, जेहेशें सुख
 अनंतां जी ॥ ती० ॥ ६ ॥ कंचनमय प्रासाद इहां
 ठे, वंदन करवा योग्य जी ॥ ए अधिकार ठे आव
 श्यकसूत्रें, जो जो दइ उपयोग जी ॥ ती० ॥ ७ ॥
 जिहां आदेसर मुक्तें पोहोता, अविचल तीरथ एह
 जी ॥ जशवंतसागर शिष्य पयंपे, जिनेंइ वधते नेह
 जी ॥ ती० ॥ ८ ॥ इति अष्टापद स्तवनं ॥

॥ अथ समवसरणनुं स्तवन ॥

॥ एक वार गोकुल आवजो गोविंदजी ॥ ए देशी ॥
 ॥ एक वार वल्लभेश आवजो, जिणंद जी, एक वार
 वल्लभेश आवजो ॥ दर्शन नयन ठेरावजो ॥ जिणंदजी,
 एकवार वल्लभ देश आवजो ॥ जयंतीनें पाय नमावजो
 ॥ जि० ॥ एक० ॥ वली समोसरण देखावजो ॥ जि० ॥
 एक० ॥ ए आंकणी ॥ समोसरण शोना जे दीठी,
 कृणकृण सांजरी आवशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ नूतल
 सुगंधि जल वर्षावे, फूजना पगर जरावशे ॥ जि०
 ॥ एक० ॥ १ ॥ कनक रतननो पीठ करीने, त्रिगडा
 नी शोना रचावशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ रूपानो गढने

कनक कोशीशां, विस्त्रें रतन जडावजो ॥ जि० ॥ एक०
 ॥ १ ॥ रतनगठें मणिनां कोशीशां, जगमग ज्योति
 दीपावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ चार डुवारें एंशी हजा
 रा, शिव सोपान चढावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ ३ ॥
 देव चार कर आयुध धारी, द्वारें खडा करे चाकरी
 ॥ जि० ॥ एक० ॥ दूर पासथी एक समयें वंदे, जरं
 तीने लघु ठोकरी ॥ जि० ॥ एक० ॥ ४ ॥ सहस्र योजन
 ध्वज चार ते उंचा, तोरण चउ अठ वावडी ॥ जि०
 ॥ एक० ॥ मंगल आठने धूप घटाडी, फूजमाल कर
 पूतली ॥ जि० ॥ एक० ॥ ५ ॥ आठ सुरी बीजे गढ
 द्वारें, रत्न गठें चउ देवता ॥ जि० ॥ एक० ॥ जाति
 वैर ठंढी पशु पंखी, तुज पद कमजने सेवतां ॥ जि०
 ॥ एक० ॥ ६ ॥ पंचवरणमयी जल थल केरां,
 फूज अमर वरसावतां ॥ जि० ॥ एक० ॥ परखदा
 सात ते उपर बेसे, मुनि नर नारी देवता ॥ जि०
 ॥ एक० ॥ ७ ॥ आवश्यक टीकायें पण उत्तर, थाये
 न कुसुम किलामणी ॥ जि० ॥ एक० ॥ साधवी बेमा
 निकनी देवी, उनी सुणे दोय तुरणी ॥ जि० ॥ एक०
 ॥ ८ ॥ बत्रीश धनुष अशोक ते उंचो, चामर ठत्र थ
 रावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ चउमुख रयण सिंहासन

बेसी, अमृत वषण सुणावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ ए ॥
 धर्मचक्र नामंमल तेजें, मिथ्या तिमिरहरावजो ॥ जि०
 ॥ एक० ॥ गणधर वाणी जब अमें सुणीयें, तव
 देवहंदे सुहावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ १० ॥ देवतासुर
 कवि साचुं बोले, जिहां जाशो तिहां आवशे ॥ जि०
 ॥ एक० ॥ रंजादिक अपहरनी टोली, वंदीनमी गुण
 गावशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ ११ ॥ अंतरजामी दूरें
 विचारो, मुजचित्त नीनुं ज्ञानगुं ॥ जि० ॥ एक० ॥
 हृदयथकी जो दूरें जाउ, तो कौतुक अमें मानगुं
 ॥ जि० ॥ एक० ॥ १२ ॥ सुलसादिक नव जिनपद
 दीधो, अमगुं अंतर एवढो ॥ जि० ॥ एक० ॥ वीत
 राग जो नाम धरावो, सद्गुने सरिखा तेवढो ॥ जि०
 ॥ एक० ॥ १३ ॥ ज्ञाननजरथी वात विचारो, रागद
 शा अम रूअडी ॥ जि० ॥ एक० ॥ सेवक रागें साहेब
 रीजे, धन धन त्रिशला मावडी ॥ जि० ॥ एक०
 ॥ १४ ॥ तुज विण सुरपति सघला तूसे, पण अमें
 आमण दूमणा ॥ जि० ॥ एक० ॥ श्रीगुनवीरहजूरें
 रहेतां, उत्सव रंग वधामणां ॥ जि० ॥ एक० ॥
 ॥ १५ ॥ इति श्रीसमवसरण स्तवनं ॥ संपूर्ण

॥ अथ श्री सीमंधरजिन स्तवनं ॥ रुपैद्योते
 आलुं रोकडो, महारा वालाजी रे ॥ ए देशो ॥

॥ मनहुंते महारुं मोकले, महारा वालाजी रे ॥
 ससिहर साथें संदेश, जइने कहेजो महारा वालाजी
 रे ॥ ए आंकणी ॥ जरतना जकने तारवा ॥ महा० ॥
 एकवार आवोने आदेश ॥ जइ० ॥ १ ॥ प्रभुजी वसो
 पुष्कजावती ॥ महा० ॥ महाविदेह खेत्र मजार
 ॥ जइ० ॥ पुरी राजें पुरुरिगिणी ॥ महा० ॥ जिहां
 प्रभुनो अवतार ॥ जइ० ॥ २ ॥ श्रीसीमंधर साहेबा
 ॥ मा० ॥ विचरंता वीतराग ॥ जइ० ॥ पडिबोहो
 बहु प्राणीने ॥ महा० ॥ तेहनो पामे कुण ताग
 ॥ जइ० ॥ ३ ॥ मन जाण उडी मलुं ॥ महा० ॥
 पण पोतें नही पांख ॥ जइ० ॥ जगवंत तुम जोवा जणी
 ॥ महा० ॥ आलजो धरेढे बेहु आंखा ॥ जइ० ॥ ४ ॥
 दुर्गम महोटा मूंगरा ॥ महा० ॥ नदी नालानो नही पा
 र ॥ जइ० ॥ घाटीनी आंटी घणी ॥ महा० ॥ अटवी पंथ
 अपार ॥ जइ० ॥ ५ ॥ कोडी सोनैयें काशीदी ॥ महा० ॥
 करनारो नही कोय ॥ जइ० ॥ कागलीउ केम मोक
 लुं ॥ महा० ॥ होंश तो नित्य नवली होय ॥ जइ०
 ॥ ६ ॥ लखुं जे जे लेखमां ॥ महा० ॥ लाख गमे अ

निजाष ॥ ज५० ॥ तमें लेजामां ते लहो ॥ महा० ॥
 समय पूरे ठे साख ॥ ज५० ॥ ७ ॥ लोकालोक
 सरूपना ॥ महा० ॥ जगमां तुमें ठो जाए ॥ ज५० ॥
 जाए आगें शुं जणावीयें ॥ महा० ॥ आखर अमें
 अजाण ॥ ज५० ॥ ८ ॥ वाकक उदयनी विनति
 ॥ महा० ॥ ससिहर कहा संदेश ॥ ज५० ॥ मानी
 लेजो माहेरी ॥ महा० ॥ वस्तां दूर विदेश ॥ ज० ॥ ए ॥

॥ अथ श्री युगमंधर जिन स्तवन ॥

॥ मधुकरनी देशीमां ॥

॥ श्रीयुगमंधरने केजो ॥ केदधिसुत विनतडी सुण
 जो रे ॥ श्रीयुग० ॥ एआंकणी ॥ काया पामी अति कूडी,
 पांख नहीं रे आबुं उडी, लब्धि नही कोयेरूडी रे ॥
 श्रीयुग० ॥ १ ॥ तुम सेवामांहे सुर कोडी, ते इहां
 आवे एक दोडी, आश फले पातक मोडी रे ॥ श्री
 युग० ॥ २ ॥ दुखम समयमां एणें जरतें, अतिशय
 नाणी नवि वरते, कहीयें कहो कोण सांजजते रे
 ॥ श्रीयुग० ॥ ३ ॥ अवणें सुखीया तुम नामें, नयणां
 दरिसण नवि पामे, ए तो जगडाने ठामें रे ॥ श्रीयु
 ग० ॥ ४ ॥ चार आंगल अंतर रहेवुं, शोकडलीनी
 परे दुःख सहेवुं, प्रभु विना कोण आगल कहेवुं रे

॥ श्रीयुग० ॥ ५ ॥ महोटा मेज करी आपे, बेहुने
 तोल करी आपे, सक्कन जस जगमां व्यापे रे ॥ श्रीयु
 ग० ॥ ६ ॥ बेहुनो एक मतो आवे, केवल नाण जुग
 ल पावे, तो सविवात बनी आवे रे ॥ श्रीयुग० ॥ ७ ॥
 गजलंघन गजगतिगामी, विचरे विप्रविजय स्वामी,
 नयरी विजया गुणधामी रे ॥ श्रीयुग० ॥ ८ ॥ मात
 सुतारायें जायो, सुदृढ नरपति कुज आयो, पंक्ति
 जिनविजयें गायो रे ॥ श्रीयुग० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमिजिनस्तवन ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ जइने रहेजो माहारा बालाजी रे, श्रीगिरनारने
 गोंख ॥ जइने ॥ ए आंकणी ॥ अमें पण तिहां आवीशुं
 ॥ माहा० ॥ जिहारें पामीशुं जोख ॥ जइ० ॥ १ ॥ जान ले
 इ जूने गढें ॥ माहा० ॥ आवी तोरण आप ॥ जइ० ॥
 पशुआं पेखी पाठा बढ्या ॥ माहा० ॥ जातां न दीधो ज
 बाप ॥ ज० ॥ २ ॥ सुंदर आपण सारिखा ॥ माहा० ॥
 जोतां नहीं मले जोड ॥ जइ० ॥ बोढ्या अणबोढ्या
 करो ॥ माहा० ॥ ए वार्ते तमने खोड ॥ जइ० ॥ ३ ॥
 हुं रागी तुं वैरागीत ॥ माहा० ॥ जगमां जाणे सहु
 कोय ॥ जइ० ॥ रागी तो लागी रहे ॥ माहा० ॥ वैरागी
 रागी न होय ॥ जइ० ॥ ४ ॥ वर बीजो हुं नवि वरुं

॥ माहा० ॥ सघला मेहेली सवाद ॥ ज५० ॥ मोहनी
 याने ज५ मली ॥ माहा० ॥ महोटा साथें श्यो वाद
 ॥ ज५० ॥ ए गढतो एक गिरनार ठे ॥ माहा० ॥ नर
 तो ठे एक श्री नेम ॥ ज५० ॥ रमणी एक राजीमती
 ॥ माहा० ॥ पूरो पाडयो जेणें प्रेम ॥ ज५० ॥ ६ ॥ वा
 चक उदयनी वंदना ॥ माहा० ॥ मानी लेजो माहा
 राज ॥ ज५० ॥ नेम राजुल मुकें मढ्या ॥ माहा० ॥
 साखां आतमकाज ॥ ज५० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचमीनुं लघु स्तवन लिख्यते ॥

॥ पंचमीतप तमें करो रे प्राणी, जेम पामो निर्म
 ल ज्ञान रे ॥ पहेलुं ज्ञानने पढी क्रिया, नहिं कोइ
 ज्ञान समान रे ॥ पंचमी० ॥ १ ॥ नंदीसूत्रमां ज्ञान
 वखाणुं, ज्ञानना पांच प्रकार रे ॥ मति श्रुत अवधिने
 मनःपर्यव, केवल ज्ञान उदार रे ॥ पंचमी० ॥ २ ॥ मति
 अष्टावीश श्रुत चउदह वीश, अवधि ठे असंख्य प्र
 कार रे ॥ दोय जेदें मनः पर्यव दाखुं, केवल एक उ
 दार रे ॥ पंचमी० ॥ ३ ॥ चंड सूर्य ग्रहनक्षत्र तारा,
 ऐसो तेज आकाश रे ॥ केवल ज्ञान उद्योत जयो जब,
 लोकालोक प्रकाश रे ॥ पंचमी० ॥ ४ ॥ पारसनाथ
 प्रसाद करीने, म्हारी पूरो उमेद रे ॥ समय सुंदर कहे

हुं पण पासुं, ज्ञाननो पंचमो जेद रे ॥ पंचमी० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीवीरप्रभुनुं दीवालीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ मारग देसक मोहूनो रे, केवल ज्ञाननिधान ॥

जाव दया सागरप्रभु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥

१ ॥ वीर प्रभु सिद्ध थया ॥ संघ सकल आधारो रे,

हवे इण जरतमा ॥ कोण करशे उपगारो रे ॥ वी०

॥ २ ॥ नाथ विहूणुं सैन्य जुं रे, वीर विहूणा रे

जीव ॥ साधे कोण आधारथी रे, परमानंद अजंगो

रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ माता विहूणो बाल जुं रे, अ

रहो परहो अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडा रे, आ

कुल व्याकुल थाय रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय भेदक

वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख

उपजे रे, ते विण केम रहेवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥

निर्यामक जव समुझनो रे, जवअडवि सज्जवाह ॥

ते परमेश्वर विण मले रे, केम वाधे उत्साहो रे ॥

॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीरथकां पण श्रुत तणो रे, हतो

परम आधार ॥ हवे इहां श्रुत आधार ठे रे, अहो

जिनमुंझा सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ त्रण कालें सवि

जीवनें रे, आगमथी आणंद ॥ सेवो ध्यावो जवि

जना रे, जिनपडिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥

गणधर आचारज मुनि रे, सहूने एणीपरें सिद्धि ॥
 नव नव आगम संगथी रे, देवचंड पद लीध रे ॥ ए ॥

॥ अथ श्री गौतमस्वामीनो रास प्रारंभः ॥

॥ वीर जिणोसर चरणकमल, कमला कय वासो ॥ पणम
 विपजणिसुं सामिसाल, गोयम गुरु रासो ॥ मणु तणु
 वयण एकंत करवि, निसुणो जो नवियां ॥ जिम निवसे
 तुम्हदेह गेह, गुण गण गहगहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सि
 रिजरह खित्त, खोणीतल मंमण ॥ मगधदेस सेणिय
 नरीसर, रिउदल बल खंमण ॥ धणवर गुवर गाम
 नाम, जिहां गुणगणसज्जा ॥ विण्य वसे वसुनूइ त
 ढ, जसु पुहवी नज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरि इंद
 नूइ, नूवल्लय परसिद्धो ॥ चउदह विद्याविविह रूव,
 नारीरस विद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार, गुण
 गणह मनोहर ॥ सात हाथ सुप्रमाण देह, रूपें रं
 जावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जिण, विपं
 कज जल पाडिय ॥ तेजे ताराचंद सूर, आका
 स नमाडिय ॥ रूवें मयण अनंग करवि, मेळ्हि
 उं निरधाडिय ॥ धीरमें मेरु गंजीर सिंधु, चंगम
 चयचाडिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास, जिण
 जपे किंचिय ॥ एकाकी किल नीत इड, गुण मेळ्ह

संचिय ॥ अहवा निश्वें पुव जम्म, जिणवर इण अ
 चिअ ॥ रंजा पउमा गौरी गंगा, रतिहा विधि वंचिय
 ॥ ५ ॥ नहिं बुध नहिं गुरु कवि न कोइ, जसु आ
 गल रहित ॥ पंचसया गुणपात्र ठात्र, हींमे परवरि
 उ ॥ करे निरंतर यज्ञकर्म, मिथ्यामति मोहिय ॥ ६
 ॥ णि ठल दोशे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥
 ॥ वस्तु ॥ जबूदीवह जंबूदीवहनरह वासंमि, खोणीतल
 मंढणो ॥ मगध देस सेणिय नरेसर, धण वरगुब्बर गाम
 तिहां ॥ विष्णवसे वसुनूइ सुंदर, तसु नक्का पुहवी
 सयल, गुण गण रूव निहाण ॥ ताण पुत्त विद्यानि
 लउ, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ जाया ॥ चरम
 जिणेसर केवलनाणी, चउव्विह संघपइछा जाणी ॥
 पावापुर सामी संपत्तो, चउव्विह देवनिकायें जुत्तो
 ॥ ८ ॥ देवें समवसरण तिहां कीजें, जिण दीठे मि
 थ्यामति खीजें ॥ त्रिचुवनगुरु सिंहासण बेछो, तत
 खिण मोह दिगंतें पइछो ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया
 मद पूरा, जाये नाग जिम दिन चोरा ॥ देवडंडहि
 आकाशें वाजी, धर्म नरेसर आव्यां गाजी ॥ १० ॥
 कुसुमवृष्टि विरचे तिहां देवा, चोशछ इंड जसु मागे
 सेवा ॥ चामर ठत्र सिरोवरि सोहे, रूपेते जिणवर

जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उवसम रसनर नरी वरसं
 तां, जोजन वाणी वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमा
 ण जिण पाया, सुर नर किन्नर आवे राया ॥ १२ ॥
 कंतिसमूहें जलजलकंता, गयण विमाणें रण रणकं
 ता ॥ पेखवि इंदनूइ मन चिंते, सुर आवे अम्म ज
 गन होवेंते ॥ १३ ॥ तीर तरंगक जिम ते वहता,
 समवसरण पुहतागह गहता ॥ तो अनिमानें गोय
 मजंपे, इणि अवसरें कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा
 लोक अजाणिउं बोले, सुर जाणंता इम कांइ मोले ॥
 मू आगल कोइ जाण नणीजे, मेरु अवर किम उप
 मा दीजे ॥ १५ ॥ वस्तु ठंद ॥ वीर जिणवर वीर
 जिणवर नाण संपन्न ॥ पावा पुरिसुर महिय, पत्तना
 ह संसार तारण ॥ तिहिं देवेहिं निम्मविय समवस
 रण बहु सुखकारण ॥ जिणवर जग उद्योय करे,
 तेजे करि दिनकार ॥ सिंहासण सामिय ठविउं, दुउं
 सुजय जयकार ॥ १६ ॥ जापा ॥ तो चढिउं घण
 माण गजें, इंदनूइ नूयदेव तो ॥ हुंकारो करी संच
 रिउं, कवण सुजिणवर देव तो ॥ जोजन नूमि स
 मोसरण, पेखवी प्रथमारंन तो ॥ दहदिसि देखे वि
 बुधवधू, आवंती सुररंन तो ॥ १७ ॥ मणिमय तो

रण दंम धजा, कोसीसैं नव घाट तो ॥ वैर विवर्जि
त जंतुगण, प्रातिहारज आव तो ॥ सुर नर किन्नर
असुरवर, इंद्र इंद्राणीराय तो ॥ चित्तें चमकिय चिं
तवे ए, सेवता प्रभुपाय तो ॥ १७ ॥ सहसकिरण सम
वीर जिण, पेखवी रूप विसाल तो ॥ एह असंनव
संनव ए, साचो ए इंद्रजाल तो ॥ तो बोजावे त्रिजग
गुरु, इंद्रजई नामेण तो ॥ श्रीमुख संसय सामिसवे,
फेडे वेदपण तो ॥ १८ ॥ मान मेळिह मद ठेजि
करे, जगते नामे सीस तो ॥ पंचसयाशुं व्रत जिउं
ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंधव संजम सुणवि
करी, अगनिजई आवेइ तो ॥ नाम लेइ आज्ञासकरे,
तं पुण प्रतिबोधेइ तो ॥ १९ ॥ इणि अनुक्रमें गण
हररण, थाप्या वीर इग्यार तो ॥ तो उपदेशे शु
वन गुरु, संजमशुं व्रत बार तो ॥ विदु उपवासें पा
रणुं ए, आपणपें विहरंत तो ॥ गोयम संजम जग
सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २० ॥ वस्तु ठेद ॥
इंद्रजई इंद्रजई चढिय बहुमान ॥ हुंकारो करि संच
रित समवसरण पुहतो तुरंतो ॥ इह संसा सामि
सवे चरमनाह फेडे फुरंतो ॥ बोधबीज सझाय मने
गोयम नवह विरत ॥ दिस्क लेइ सिस्का सहिय, ग

एहर पय संपत्त ॥ २१ ॥ जाषा ॥ आज हुउ सुविहा
 ए, आज पचेलिमां पुसु नरो ॥ दीठा गोयम सामि,
 जो नियनयणें अमिय नरो ॥ सिरिगोयम गणधार,
 पंचसया मुनि परवरिय ॥ छुमिय करय विहार, न
 वियां जन पडिबोह करे ॥ समवसरण मजार, जे जे
 संसा उपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पुढे मुनि
 पवरो ॥ २३ ॥ जिहां जिहां दीजें दिस्क, तिहां तिहां
 केवल उपजे ए ॥ आप कन्हें अण हुंत, गोयम दीजें
 दान इम ॥ गुरु उपर गुरुनत्ति, सामीय गोयम उप
 नीय ॥ इण ठज केवल नाण, रागज राखे रंगनरें
 ॥ २४ ॥ जो अष्टापद शैल, वंदे चढि चउवीस जि
 ण ॥ आतम लब्धि वसेण, चरमसरीरी सोइ मुनि ॥
 इअ देसण નિસુણેइ, गोयम ગણહર સંચલિઉ ॥
 તાપસ પન્નરસ એણ, તો મુનિ દીઠો આવતો એ ॥
 ॥ ૨૫ ॥ તવસોસિય નિય અંગ, અમ્હ સક્તિ નવિ
 ઉપજે એ ॥ કિમ ચઢશે દૃઢકાય, ગજ જિમ દીસે ગા
 જિતો એ ॥ ગિરુઉ એ અજિમાન, તાપસ જો. મન ચિં
 તવે એ ॥ તો મુનિ ચઢિઉ વેગ, આલંબવિ દિનકર
 કિરણ ॥ ૨૬ ॥ કંચણ મણિ નિપ્પન્ન, દંમ કજંલ
 ધ્રજ વડ સહિય ॥ પેશવિ પરમાણંદ, જિણહર નર

हेसर महिअ ॥ निय निय काय प्रमाण, चउदिसि
 संतिअ जिणहबिंब ॥ पणमवि मन उल्लास, गोयम
 गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामोनो जीव,
 तीर्यक जृंनक देव तिहां ॥ प्रतिबोधे पुंमरिक कंमरिक अ
 ध्यय न जणी ॥ वलता गोयम सामि, सवितापस प्रति
 बोध करे ॥ लेइ आपणे साथ, चाले जिम जूयाधिपति
 ॥ २८ ॥ खीर खंम घृत आणि, अमिअ वूठ अंगुठ ठवे ॥
 गोयम एकण पात्र, करावे पारणुं सवे ॥ पंचसया सुन
 नाव, उल्लल जरिउं खीरमीसें ॥ साचा गुरुसंजोग, क
 वल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पंचसया जिणना
 ह, समवसरण प्राकार त्रय ॥ पेखवि केवल नाण,
 उप्पन्नो उल्लोय करे ॥ जाणे जिणह पीयूष, गार्ज
 ती घण मेघ जिम ॥ जिणवाणी निसुणेइ, नाणी
 हूआ पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ठंद ॥ इणे अनुक्रमें
 इणे अनुक्रमें नाण संपन्न ॥ पन्नरह सय परवरिय
 हरिय डुरिय जिणनाह वंदे ॥ जाणवि जगगुरु व
 यण तिह नाण अप्पाण निंदे ॥ चरम जिणेसर
 इम जणे गोयम मकरिस खेउ ॥ ठेह जइ आपण
 सही होसुं तुल्ला बेउ ॥ ३१ ॥ जाया ॥ सामिउं ए
 वीर जिणंद, पूनिम चंद जिम उल्लसिअ ॥ विहरिउं

ए नरहवासम्भि, वरिस बहुत्तर संवसिअ ॥ उवतो
 ए कणय पउमेव, पाय कमल संघे सहिअ ॥ आवि
 उं ए नयणाणंद, नयर पावापुरिसुर महिय ॥ ३२ ॥
 पेखिउं ए गोयम सामी, देवशर्मा प्रतिबोध करे ॥
 आपण ए त्रिशला देवि, नंदन पहतो परम पए ॥
 वलतो ए देव आकास, पेखवि जाणिय जिणसमे
 ए ॥ तो मुनि ए मन विखवाद, नाद जेद जिम उ
 पनो ए ॥ ३३ ॥ कुण समो ए सामिय देखि, आप
 कन्हे हुं टालिउं ए ॥ जाणंतो ए तिहुअण नाह,
 लोक विवहार न पालिउं ए ॥ अति जलुं ए कीधलुं
 सामि, जाणिउं केवल मागशे ए ॥ चिंतविउं ए बा
 लक जेम, अहवा केडे लागशे ए ॥ ३४ ॥ हुं किम
 ए वीर जिणंद, जगतें जोलो जोलविउं ए ॥ आप
 णो ए अविहल नेह, नाह न संपे सूचव्यो ए ॥ सा
 चो ए इह वीतराग, नेह न जेणें लालिउं ए ॥ इण
 समे ए गोयमचित्त, राग वैरागें वालिउं ए ॥ ३५ ॥
 आवतो ए जो कलट, रहेतो रागें साहिउं ए ॥ के
 वलु ए नाण उप्पन्न, गोयम सेहेजें उमाहिउं ए ॥
 तिहुअण ए जय जयकार, केवल महिमा सुर करे
 ए ॥ गणहरु ए करय वखाण, नवियण नव इम

निस्तरु ए ॥ ३६ ॥ वस्तु ठंड ॥ पढम गणहर पढम
 गणहर वरस पंचास, गिह्वासें संवसिय ॥ तीस व
 रिस संजम विनूसिय ॥ सिरिकेवज नाण पुणवार
 वरिस तिहुयण नमंसिय ॥ रायगिहि नयरीहिं ठवि
 थ बाणवइ वरिसाउ ॥ सामी गोयम गुण निजो हो
 जे शिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ जाया ॥ जिम सहकारें
 कोयल टहुके, जिम कुसुम वनें परिमल महके, जिम
 चंदन सुगंधनिधि ॥ जिम गंगाजल लहेंरें लहके,
 जिम कणयाचल तेजें जलके, तिम गोयम सौजाग्य
 निधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे हंसा, जि
 म सुरवर सिरि कणयवतंसा, जिम महुयर राजीवव
 नी ॥ जिम रयणायर रयणे विलसे, जिम अंबर ता
 रागण विकसे, तिम गोयम गुण केजिवनी ॥ ३९ ॥
 पूनिम निसि जिम ससिहर सोहे, सुरतरु महिमा जि
 म जग मोहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन
 जिम गिरिवर राजे, नरवइ घर जिम मयगल गाजे,
 तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम सुरतरु
 वर सोहे शाखा, जिम उत्तम मुख मधुरी जाखा,
 जिम वनकेतकी महमहे ए ॥ जिम जूमिपति चुयब
 ल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, तिम गोयम

लब्धें गहगहे ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढिउ
 आज, सुरतरु सारे वंढित काज, कामकुंन सवि व
 श दुउ ए ॥ कामगवी पूरे मनकामिय, अष्ट महा
 सिद्धि आवे धामिय, सामिय गोयम अणुसरो ए
 ॥ ४२ ॥ पणवस्कर पहेलो पनणीजें, मायाबीज श्र
 वण निसुणीजें, श्रीमती शोना संनवे ए ॥ देवहधु
 रि अरिहंत नमीजें, विनयपद्म उवप्राय शुणीजें, ६
 ए मंत्रें गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ पुर पुर वसतां कां
 ६ करीजें, देश देशांतर कां ६ नमीजें, कवण काज
 आयास करो ॥ प्रह कठी गोयम समरीजें, काज स
 मग्रह ततखण सिजे, नवनिधि विलसे तास घरे
 ॥ ४४ ॥ चउदह सय बारोत्तर वरसें, गोयम गणह
 र केवल दिवसें, किउं कवित उपगार करो ॥ आदे
 हिं मंगल एह पनणीजें, परव महोद्वव पहिलो
 लीजें, रुद्धि वृद्धि कछ्वाण करो ॥ ४५ ॥ धन्य मा
 ता जिणें उदरें धरिया, धन्य पिता जिण कुल अव
 तरिया, धन्य सह गुरु जिणें दस्क्रिया ए ॥ विनय
 वंत विद्याचंमार, जस गुण कोऽन लप्ते पार, वडजिम
 साखा विस्तरो ए ॥ ४६ ॥ गौतम स्वामीनो रास नणीजें,
 चउद्विह संघ रलियायत कीजें, सयल संघ आणंद

करो ॥ कुंकुम चंदन ठडो देवरावो, माणक मोतीना
 चोक पूरावो, रयण सिंहासण बेसणो ए ॥ ४७ ॥
 तिहां बेसी गुरु देसना देसे, नविक जीवना काज
 सरिसे ॥ उदयवंत मुनि इम नणे ए ॥ गौतमस्वामी
 तणो ए रास, नणता सुणतां लीज विलास ॥ सा
 सय सुख निधि संपजे ए ॥ ४८ ॥ एह रासजे नणे
 नणावे, वर मयगल लब्धि घर आवे ॥ मनवंडित
 आस्या फले ए ॥ ४९ ॥ इति श्री गौतम स्वामीनो रास ॥

॥ अथ गौतमाष्टक प्रारंभः ॥

॥ राग प्रजाती ॥ मात पृथ्वीसुत प्रात ऊठी न
 मो, गणधर गौतम नाम गेलें ॥ प्रह समे प्रेमगुं जेह
 ध्यातां सदा, चढती कला होय वंशवेले ॥ मा० ॥ १ ॥
 वसुनूति नंदन विश्वजन वंदन, डुरित निकंदन नाम
 जेहनूं ॥ अजेद बुद्धे करी नावजन जे नजे, पूर्ण
 पोचे सहो जाग्य तेहनूं ॥ मा० ॥ २ ॥ सुरमणि
 जेह चिंतामणि सुरतरु, कामित पूरण काम धेनु ॥
 एहज गौतम तणु ध्यान हृदयें धरो, जेहथकी अधिक
 नहीं माहात्म्य केनूं ॥ मा० ॥ ३ ॥ ज्ञान बज तेज ने
 सकज सुखसंपदा, गौतमनामथी सिद्धि पामे ॥ अखं
 न प्रचंन प्रताप होय अवनिमां, सुर नर जेहनें शीश

नामे ॥ मा० ॥ ४ ॥ प्रणव आदें धरी माया बीजें
 करी, स्वमुखें गौतमनाम ध्याये ॥ कोड मनकामना
 सफल देगें फले, विघन वैरी सवे दूर जाये ॥ मा० ॥
 ॥ ५ ॥ डुष्ट दूरे टले स्वजन मेलो मले, आधि उपाधि
 ने व्याधि नासे ॥ नूतनां प्रेतनां जोर नाजे वली, गौ
 तमनाम जपतां उद्घासें ॥ मा० ॥ ६ ॥ तीर्थ अष्टाप
 दें आप लब्धें जइ, पन्नरसें त्रणने दीस्क दीधी ॥ अठ
 म पारणे तापस कारणें, क्षीरलब्धें करी अखुट की
 धी ॥ मा० ॥ ७ ॥ वरस पञ्चास लगें गृह्वासें वस्या,
 वरस वली त्रीश करी वीरसेवा ॥ बार वरसां लगें के
 वल जोगव्युं, नक्ति जेहनी करे नित्य देवा ॥ मा० ॥ ८ ॥
 महियल गौतम गौत्रमहिमा निधि, गुणनिधि रिद्धिने
 सिद्धि दाई ॥ उदय जस नामथी अधिक लीला लहे,
 सुजस सौनाग्य दोलत सवाई ॥ मा० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवन ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ श्रीसिद्धाचल मंमण स्वामी रे, जगजीवन अं
 तर जामी रे, एतो प्रणमुं हुं शिर नामी ॥ जात्रीडा
 जात्रा नवाणुं करियें रे, करियें तो नवजल तरियें
 ॥ जात्री० ॥ १ ॥ श्रीरूपन जिनेश्वरराया रे, जिहां
 पूर्व नवाणुं आया रे, प्रभु समवसखा सुखदाया ॥

जात्री० ॥ १ ॥ चैत्री पूनम दिन्न वखाणु रे, पांच
 कोडी पुंमरिक जाणुं रे, जे पाम्या पद निरवाणुं ॥
 जात्री० ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख सातें रे,
 वे कोडी साधु संघातें रे, एतो पद्दोता पद लोकां
 तें ॥ जात्री० ॥ ४ ॥ काति पूनिमें करमने तोडी रे,
 जिहां सीधा मुनि दश कोडी रे, तेतो वंदो वे कर
 जोडी ॥ जात्री० ॥ ५ ॥ एम नरतेसरने पाटें रे,
 असंख्याता मुनिवाटें रे, पाम्या मुगति रमणी ए वा
 टें ॥ जात्री० ॥ ६ ॥ दोय सहस मुनि परिवार रे,
 थावच्चा सुत सुखकार रे, सयपंच सैजग अणगार
 ॥ जात्री० ॥ ७ ॥ वली देवकी सुत सुजगीस रे,
 सीधा बहु जादव वंश रे, ते प्रणमो रे मन हंस ॥
 जात्री० ॥ ८ ॥ पांच पांमव एणें गिरि आब्या रे,
 सीधा नव नारद रुपि राया रे, वली सांब प्रद्युम्न
 कहाया ॥ जात्री० ॥ ९ ॥ ए तीरथ महिमावंत रे,
 जिहां सीधा साधु अनंत रे, इम नांखे श्रीनगवं
 त ॥ जात्री० ॥ १० ॥ उज्ज्वलगिरि समो नही को
 य रे, तीरथ सघना में जोय रे, जे फरस्यां पाप न
 होय ॥ जात्री० ॥ ११ ॥ एकल (१) आहारी (२)
 सचित्त परिहारी (३) रे, पद चारीने नूमि संथारी

(४) रे, शुद्ध समकित (५) ने ब्रह्मचारी (६)
 ॥ जात्री० ॥ १२ ॥ एम ठहरी जे नर पाछे रे, ब
 हुदान सुपात्रें आछे रे, ते जनम मरण नय टाछे
 ॥ जात्री० ॥ १३ ॥ धन्य धन्य ते नर नारी रे, जेठे
 विमलाचल एक तारी रे, जाउं तेहनी हुं बलिहा
 री ॥ जात्री० ॥ १४ ॥ श्रीजिनचंडसूरि सुपसायें
 रे, जिनहर्ष होय उछायें रे, इम विमलाचल गुण
 गाये ॥ जात्री० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्वामीनुं पालणुं प्रारंभ ॥

॥ माता त्रिशलायें पुत्र रत्न जाइउं, चोशठ इंद्र
 नां आसन कंपे सार ॥ अवधिज्ञानें जोइ धायो श्री
 जिन वीरने, आवे कृत्रीयकुंभ नयर मजार ॥ माता०
 ॥ १ ॥ वीर प्रतिबिंब मूकी माता कने, अवसरपि
 णी निद्रा दीए सार ॥ एम मेरु शिखरें जिनने ला
 वे नक्तिगुं, हरि पंचरूप करी मनोहार ॥ माता०
 ॥ २ ॥ एम असंख्य कोटा कोटी मली देवता, प्रभु
 ने उछव मंमाणें लइ जाय ॥ पांरुक वन शिलायें
 जिनने लावे नक्तिगुं, हरि अंगें थापे इंद्र घणुं उछा
 य ॥ माता० ॥ ३ ॥ एक कोडी शाठ लाख कलशें क
 री, वीरनो सनात्र महोछव करे सार ॥ अनुक्रमें वी

र कुमरने लावे जननी मंदिरें, दासी प्रियंवदा जाए
 तेणी वार ॥ माता० ॥ ४ ॥ राजा सिद्धारथने दीधी
 वधामणी, दासीने दानने मान दिए मनोहार ॥ कृ
 त्रीयकुंममांहे उडव मंदाविउ, प्रजा लोकने हरख अ
 पार ॥ माता० ॥ ५ ॥ घर घर श्रीफल तोरण त्राटज बां
 धियां, गोरी गावे मंगल गीत रसाल ॥ राजा सिद्धारथें
 जनम महोडव कखो, माता त्रिशला थई उजमाल ॥
 माता० ॥ ६ ॥ माता त्रिशला जूलावे पुत्र पारणें ॥ ए
 आंकणी ॥ जूले लाडकडा प्रभुजी आनंद नैर ॥ हरखी
 निरखिने इंडाणीयों जाए वारणें, आज आनंद श्रीवी
 रकुमरने घेर ॥ माता० ॥ ७ ॥ वीरना मुखडा उपर
 वारुं कोटी चंद्रमा, पंकज लोचन सुंदर विशाल कपो
 ल ॥ शुक चंचू सरखी दीसे निर्मल नासिका, कोम
 ल अधर अरुण रंग रोल ॥ माता० ॥ ८ ॥ उखधि
 सोवन मढी रे सोजे हालरे, नाजुक आनरण सध
 लां कंचन मोतीहार ॥ कर अंगुठो धावे वीरकुमर
 हर्ष करी, कांइ बोलावतां करे किलकार ॥ मा० ॥ ९ ॥
 वीरने निलाडे कीधो ठे कुंकुम चांदलो, शोने जडि
 त मरकत मणिमां दीसे लाल ॥ त्रिशलायें जुगतें
 आंजी अणियाली बेदुआंखडी, सुंदर कस्तूरीनुं टब

कु कीधुं गाल ॥ माता० ॥ १० ॥ कंचन शोले जा
 तनां रत्नें जडीयुं पालणुं, जूलावती वेला थाए घूव
 रनो घमकार ॥ त्रिशला विविध वचनें हरखी गाए
 हालरुं, खेंचे फूमतिआली कंचन दोरी सार ॥ माता०
 ॥ ११ ॥ मारो लाडकवायो सरखा संगें रमवा जशे,
 मनोहर सुखडली हुं आपीश एहने हाथ ॥ नोजन वेला
 रम जम रम जम करतो आवशे, हुं तो थाइने नीडा
 वीश हृदया साथ ॥ माता० ॥ १२ ॥ हंस कारंभव कोकिल
 पोपट पारेवडां, मांही बप्पेयाने सारस चकोर ॥ मेनां
 मोर मेव्यांने रमकडां रमवा तणां, घम घम घूघरा ब
 जावे त्रिशला कीशोर ॥ माता० ॥ १३ ॥ मारो वी
 रकुमर निशालें नणवा जायशे, साथें सज्जन कुटुंब
 परिवार ॥ हाथी रथ घोडा पालायें ननुं शोनतुं, करी
 निशाल गरणुं अति मनोहार ॥ माता० ॥ १४ ॥ मा
 रा वीर समाणी कन्या सारी लावणुं, मारा कुमरने
 परणावीश मोहोटे घेर ॥ मारो लाडकडो वर राजा
 घोडे बेसशे, मारो वीर करशे सदाय लीला लहेर ॥
 ॥ माता० ॥ १५ ॥ माता त्रिशला गावे वीर कुमर
 नुं हालरुं, मारो नंदन जीवजो कोडी वरस ॥ ए तो
 राज राजेसर थाशे जलो दीपतो, मारा मनना मनो

रथ पूरशे जगीश ॥ माता० ॥ १६ ॥ धन्य धन्य कू
 त्रीकुंम गाम मनोहर, जिहां वीर कुमरनो जनम ग
 वाय ॥ राजा सिद्धारथना कुलमांहे दिनमणी, धन्य
 धन्य त्रिशला राणी जेहनी माय ॥ माता० ॥ १७ ॥
 एम सहीयर टोली नोली गावे हालरु, थाशे मनना
 मनोरथ तेहने घेर ॥ अनुक्रमें महोदय पदवी रूपवि
 जय पद पामशे, गाए अमिय विजय कहे थाशे ली
 ला लहेर ॥ माता० ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री महावीर स्वामीतुं हालरिवं प्रारंज ॥

॥ माता त्रिशला जुलावे पुत्र पालणे, गावे
 हालो हालो हालरुवानां गीत ॥ सोना रूपाने
 वली रत्नें जडिवं पालणुं, रेशम दोरी घूघरी वागे बु
 म बुम रीत ॥ हालो हालो हालो हालो मारा नं
 दने ॥ १ ॥ जिनजी पास प्रचुथी वरस अढीशें अं
 तरे, होशे चोवीशमो तीर्थकर जित परमाण ॥ कें
 शी स्वामी मुखथी एवी वाणी सांजली, साची साची
 दुइ ते मारे अमृत वाण ॥ हा० ॥ २ ॥ चौदे स्व
 पनें होवे चक्री के जिनराज, वीता बारे चक्री नहिं
 हवे चक्री राज, जिनजी पास प्रचुना श्री केशी गण

धार, तेहने वचनें जाण्या चोवीशमा जिन राज, मा
 री कुखें आख्या तारण तरण जिहाज, मारी कुखें
 आख्या त्रण्य जुवन शिर ताज, मारी कुखें आख्या
 संघ तीरथनी लाज, हुंतो पुण्य पनोती इंडाणी यइ
 आज ॥ हा० ॥ ३ ॥ मुजने दोहोलो उपन्यो जे बे
 सुं गज अंबाडीयें, सिंहासनपर वेसुं चामर ठत्र ध
 राय ॥ सहु लक्ष्ण मुजने नंदन ताहारा तेजनां, ते
 दिन संजारुं ने आनंद अंग न माय ॥ हा० ॥ ४ ॥
 करतल पगतल लक्ष्ण एक हजारने आठ ठे, तेहथी
 निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन जमणी
 ल लंठन संह बराजतो, में पहेले सुपनें दीठो
 विशवा वीश ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला बंधव नं
 दीवर्द्धनना तमें, नंदन जोजाइयोना देयर ठो सुकु
 माल ॥ हसरो जोजाइयो कही दीयर माहारा लाड
 का, हसरो रमरो ने वली चुंटी खणरो गाल, हसरो
 रमरो ने वली तुंसा देशे गाल ॥ हा० ॥ ६ ॥ नंद
 न नवला चेडा राजाना जाणेज ठो, नंदन नवला
 पांचरो मामीना जाणेज ठो, नंदन मामलीआना जा
 णेजा सुकुमाल ॥ हसरो हाथे उढाली कहीने ना
 हाना जाणेजा, आंख्यो आंजी ने वली टवकुं कररो

गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे
 टोपी आगलां, रतने जडीआं जालर मोती कशबो
 कोर ॥ नीलां पीजां ने वली रातां सरवे जातिनां, प
 हेरावशे मामी माहारा नंद किशोर ॥ हा० ॥ ८ ॥
 नंदन मामा मामी सूखडली सड्डु लावशे, नंदन ग
 जुवे नरशे लाडु मोतीचूर ॥ नंदन मुखडां जोडने
 लेशे मामी नामणां, नंदन मामी केहेशे जीवो सुख
 नरपूर ॥ हा० ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेडा मामानी
 साते सती, मारी जत्रीजीने बेन तमारी नंद ॥ ते
 पण गुंजे नरवा लाखणसाड लावशे, तुमने जोड
 जोड होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रम
 वा काजें लावशें लाख टकानो घूघरो, वली शूडा
 मेनां पोपट ने गजराज ॥ सारस हंस कोयल तीत्त
 रने वली मोर जी, मामी लावशे रमवा नंद तमारे
 काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ ठप्पन कुमरी अमरी जल क
 लशें नवरावीआ, नंदन तमने अमने केजीघरनी मां
 हे ॥ फूलनी वृष्टि कीधी योजन एकने मंमलें, बहु
 चिरंजीवो आशीष दीधि तुमने त्यांहे ॥ हा० ॥ १२ ॥
 ॥ ने मेरुगिरि पर सुरपतियें नवराविआ, निरखी
 निरखी हरखी सुरुत लाज कमाय ॥ मुखडा वर वाहं

कोटी कोटी चंडमा, वली तन पर वारुं ग्रहगणनो स
 मुदाय ॥ हा० ॥ १३ ॥ नंदन नवला जणवा नीशा
 जें पण मूकशुं, गजपर अबाडी बेसाडी मोहोटे सा
 ज ॥ पसली नरशुं श्रीफल फोफल नागरवेलशुं, सु
 खडली लेशुं नीशालीआने काज ॥ हा० ॥ १४ ॥ नंदन
 नवला मोहोटा थशोने परणावशुं, वडूवर सरखी
 जोडी लावशुं राज कुमार ॥ सरखा वेवाइ वेवाणुंने
 पधरावशुं, वरवडू पोंखी लेशुं जोइ जोइने देदार ॥
 ॥ हा० ॥ १५ ॥ पीअर सासर मारा बेहु पडू नंद
 न उजला, माहारी कुखें आब्या तात पनोता नंद ॥
 माहारे आंगण वूठा अमृत दूधें मेहुजा, माहारें
 आंगण फलिआ सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० ॥ १६
 इणि परें गाथुं माता त्रिशला सुतनुं पारणुं, जे कोइ
 गाशे लेजें पुत्र तणा साम्राज ॥ बीजीमोरा नगरें व
 रणव्युं वीरनुं हालरुं, जय जय मंगल होजो दीपवि
 जय कविराज ॥ हा० ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ अथ रात्रिनोजननी सहाय प्रारंभः ॥

॥ पुण्य संजोगें नरनव लाधो, साधो आतम का
 ज ॥ विषया रस जाणो विष सरिखो, एम जांखे
 जिनराज रे प्राणी ॥ रात्रिनोजन वारो ॥ आगम वा

एी साची जाणी, समकित गुण सही नाणी रे प्रा
 णी ॥ रात्रि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अनह्य बावीश
 मां रयणीनोजन, दोष कहा परधान ॥ तेणें कारण
 रातें मत जमजो, जो दुवे द्दडे शान रे ॥ प्रा०
 ॥ २ ॥ दान स्नान आयुधने नोजन, एटलां रातें
 न कीजें ॥ ए करवां सूरजनी साखें, नीतिवचन स
 मजीजें रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ उत्तम पशु पंखी पण रा
 तें, टाले नोजन टाणो ॥ तुमें तो मानवी नाम धरा
 वो, केम संतोष न आणो रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ माखी
 जू कीडी कोलीआवडो, नोजनमां जो आवे ॥ कोठ
 जलोदर वमन विकलता, एवा रोग उपावे रे ॥ प्रा०
 ॥ ५ ॥ ठनुं नव जीवहत्या करतां, पातक जेह उपायुं ॥
 एक तलाव फोडतां तेडलुं, दूषण सुगुरु बतायुं रे ॥
 प्रा० ॥ ६ ॥ एकलोत्तर नव सर फोडया सम, एक द
 व देतां पाप ॥ अठलोत्तर नव दव दीधा जिम, एक
 कुवणिज संताप रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ एक शो चुम्मा
 लीश नव लर्गे कीधां, कुवणिजना जे दोष ॥ कूमुं एक क
 लंक दियतां, तेहवो पापनो पोष रें ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ एक
 शो एकावन नव लर्गे दीधां, कूडां कलंक अपार ॥ ते
 तेवुं रे एक शीयल खंमचामां, दोष कह्यो निरधार रे ॥

प्रा० ॥ ए ॥ एक शो नवाणुं नव लर्गे खंमयां, शीय
 ल विषय संबंध ॥ तेहवो एक रात्रिजिमवामां, कर्म नि
 काचित बंध रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ रात्रिनोजनमां दोष
 घणा ठे, कहेतां नावे पार ॥ केवली केहतां पार न
 पावे, पूरव कोडी मजार रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ एवुं
 जाणीने उत्तम प्राणी, नित्य चोविहार करीजें ॥ मासें
 मासें पासखमणनो, जान एणें विधें लीजें रे ॥ प्रा०
 ॥ १२ ॥ मुनि वसतानी एह शिखामण, जे पाले नर
 नारी ॥ सुर नर सुख विलसीनें होवे, मोक्ष तणा अ
 धिकारी रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ निंदावारक सस्त्राय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां वो
 व्यां महा पाप रे ॥ वयर विरोध बाध घणो रे, निं
 दा करतो न गणो माय बाप रे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर
 बलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमां बलती देखो सहु
 कोय रे ॥ परना मलमां धोयां लुगडां रे, कहो केम
 ऊजलां होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संजालो सहु
 को आपणो रे, निंदानी मूको पडी टेव रे ॥ थोडे
 घणो अवगुणें सहु नखा रे, केहनां नलीयां चुंए के
 हेनां नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नार

की रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो
 करजो आपणी रे, जेम बुटकवारो थाय रे ॥ निं०
 ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहु को तणा रे, जेहमां देखो
 एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो रे, समयसुं
 दर सुखकार रे ॥ नि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शोयलविषे पुरुषने शिखामणनी सक्षाय ॥

॥ चाल ॥ सुण सुण कंता रे, शीख सोहामणी ॥
 प्रीत न कीजें रे, परनारी तणी ॥ उथलो ॥ परना
 री साथें प्रीत पिउडा, कहो किण परें कीजीयें ॥
 उंघ वेंची आपणी, उजागरो केम जीजीयें ॥ काठ
 डीबूटो कहे लंपट, लोकमांहे लाजीयें ॥ कुल विष
 य खंपण रखे लागे, सगामां केम गाजीयें ॥ १ ॥
 ॥ चाल ॥ प्रीति करंतां रे, पेहेलां बीहीजीयें ॥ रखे
 कोइ जाणे रे, मनसुं धूजीयें ॥ उथलो ॥ धूजीयें मन
 सुं जूरीयें पण, जोग मलवो ठे नहीं ॥ रात दिन
 विलपंतां जायें, अवटाइ मरवुं सही ॥ निज नारि
 थी संतोष न वढ्यो, परनारिथी कहो सुं हशे ॥
 जो नरे जाणें तृप्ति न वली, तो एठ चाटे सुं हशें
 ॥ २ ॥ चाल ॥ मृग तृष्णार्थी रे, तृष्णा नवि टले ॥
 वेलु पीढ्यां रे, तेल न नीसरे ॥ उथलो ॥ न नीसरे

पाणी बलोवतां, लव लेश मांखणनो वली ॥ बूडतां
 बाचक जरीयां केणें, ते तख्या वात न सांजली ॥ तेम
 नार रमतां पर तणी, संतोष न वढ्यो एक घडी ॥
 चित्त चटपटी उच्चाट थाये, नयणें नावे निझडी ॥ ३ ॥
 चाल ॥ जेवो खोटो रे, रंग पतंगनो ॥ तेवो चटको
 रे, परखी संगनो ॥ उथलो ॥ परनारी साथें प्रेम पिउ
 डा, रखे तुं जाणे खरो ॥ दिन चार रंग सुरंग रूडो,
 पढी नहीं रहे निर्धरो ॥ जे घणा साथें नेह मांमे,
 ठाम तेहगुं वातडी ॥ एम जाणी म म कर नाहा
 ला, परनारि साथें प्रीतडी ॥ ४ ॥ चाल ॥ जे पति
 वाहालो रे, वंचे पापिणी ॥ परगुं प्रेमें रे, राचे सा
 पिणी ॥ उथलो ॥ सापिणी सरखी वेंण निरखी, रखे
 शीयलथकी चले ॥ आंखने मटके अंग लटके, देव
 दानवने ठले ॥ मन मांहे काली अति रसाली, वाणी
 मीठी शेजडी ॥ सांजली जोला रखे जूलो, जाणजो
 विष वेजडी ॥ ५ ॥ चाल ॥ संग निवारो रे, पररा
 मा तणो ॥ शोक न कीजें रे, मन मिलवा तणो ॥ उ
 थलो ॥ शोक शाने करो फोगट, देखवुं पण दोहिलुं ॥
 क्षिण मेडियें क्षिण सेरीयें, जमतां न लागे सोहिलुं ॥
 उच्चासने निःश्वास थावे, अंग जांजे मन जमे ॥ व

ली कामिनी देखी देह दाजे, अन्न दीतुं नवि गमे
 ॥ ६ ॥ चाल ॥ जाये कलामी रे, मनहुं कल मले ॥
 उन्मत्त अर्धने रे, अलल पलल लवे ॥ उथलो ॥ लवे
 अलल पलल जाणो, मोहवेलो मन रडे ॥ महाम
 दन वेदन कठिन जाणी, मरण वारु त्रेवडे ॥ ए द
 श अवस्था काम केरी, कंत कायाने दहे ॥ एम चित्त
 जाणी तजे राणी, पारकी ते सुख लहे ॥ ७ ॥ चाल ॥
 परनारीना रे, परानव सांजलो ॥ कंता कीजें रे, जा
 व ते निर्मलो ॥ उथलो ॥ निर्मले जावें नाह समजो,
 परवधू रस परिहरो ॥ चापीठ कीचक नीमसेनें, शि
 ला हेठल सांजलो ॥ रण पड्यां रावण दसे मस्तक,
 रडवड्यां ग्रंथें कह्यां ॥ तेम मूंजपति दुःख पुंज पा
 म्यो, अपजश जगमांहे लह्या ॥ ८ ॥ चाल ॥ शीय
 ल सन्नूणा रे, माणस सोहीयें ॥ विण आनरणें रे,
 जग मन मोहीयें ॥ उथलो ॥ मोहीयें सुर नर करे से
 वा, विष अमीय अइ संचरे ॥ केसरी सिंह शीयाल
 थाए, अनल अति शीतल करे ॥ साप थाए फूलमा
 ला, लह्मी घर पाणी नरे ॥ परनारि परि हरी, शीय
 ल मन धरी, मुक्ति वधू हेला वरे ॥ ९ ॥ चाल ॥
 ते माटे हुं रे, वालम वीनवुं ॥ पाए लागीनें रें, म

धुर वयणे स्तवुं ॥ उथलो ॥ वयण माहारुं मानीयें,
 परनारीथी रहो वेगला ॥ अपवाद माथे चढे मोटा,
 नरकें यश्यें दोहिला ॥ धन्य धन्य ते नर नारि जे
 जग, शीयल पाळे कुल तिलो, ते पामरो यश जगत
 मांही, कुमुद चंद सम उजलो ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ शीयलविषे नारीने शिखामणनी सव्वाय ॥

॥ चाल ॥ एक अनोपम, शिखामण खरी ॥ स
 मजी लेजो रे, सघली सुंदरी ॥ उथलो ॥ सुंदरी सेहेजें
 रुदय हेजें, पर सेजें नवि बेसीयें ॥ चित्तथकी चूकी
 लाज मूकी, पर मंदिर नवि पेसीयें ॥ बहु घेर हींमी
 नार निर्लज, शास्त्रें पण तजवी कही ॥ जेम प्रेत दृ
 ष्टें पड्युं जोजन, जमवुं ते जुगतुं नहीं ॥ १ ॥ चाल ॥
 परछुं प्रेमें रे, हसीय न बोलीयें ॥ दांत देखाडी रे,
 गुह्य न खोलीयें ॥ उथलो ॥ गुह्य घरनुं परनी आर्गे,
 कहोने केम प्रकाशीयें ॥ वली वात जे विपरीत जा
 से, तेहथी दूरें नाशीयें ॥ असुर सवारा अने अगो
 चर, एकलां नवि जाश्यें ॥ सहसातकारें काम कर
 तां, सहेजें शीज गमावीयें ॥ २ ॥ चाल ॥ नट वि
 ट नरछुं रे, नयण न जोडीयें ॥ मारग जातां रे,
 आघुं उंढीयें ॥ उथलो ॥ आघुं ते उंढी वात करतां,

घणुंज रुडा शोनीयें ॥ सासू अने माना जण्या वि
 ण, पलक पास न थोनीयें ॥ सुख दुःख सरज्युं पा
 मीयें, पण कुजाचार न मूळीयें ॥ परवस्य वसतां,
 प्राण तजतां, शीयज्यो नवि चूळीयें ॥ ३ ॥ चाल ॥
 असनी साथें रे, वात न कीजीयें ॥ हाथो हाथे रे,
 ताली न लीजीयें ॥ उथलो ॥ ताली न लीजें नजर
 न दीजें, चंचल चाल न चालीयें ॥ एक विषय बुद्धें
 वस्तु केहनी, हाथे पण नवि जालीयें ॥ कोटि कंद
 र्प रूप सुंदर, पुरुष पेखी न मोहियें ॥ तृणखलां तो
 ले गणी तेहने, फरिय सामुं न जोड्यें ॥ ४ ॥ चाल ॥
 पुरुष पीयारो रे, बलि न बखाणीयें ॥ वृद्ध ते पिता
 रे, सरखो जाणीयें ॥ उथलो ॥ जाणीयें पीयु विण
 पुरुष सघला, सहोदर सम वडे ॥ पतिव्रतानो धर्म
 जोतां, नावे कोड तडो वडें ॥ कुरूप कुष्टी कूबडो ने,
 दुष्ट दुर्वल निर्गुणो ॥ जरतार पामी नामिनी ते, इं
 द्रयी अधिको गुणो ॥ ५ ॥ चाल ॥ अमर कुमारें
 रे, तजी सुर सुंदरी ॥ पवनंजयें रे, अंजना परिह
 री ॥ उथलो ॥ परिहरि सीता रामें वनमा, न
 ले दमयंती बली ॥ महा सती माथे कष्ट पडया
 पण, शीयलथी ते नवि चलो ॥ कसोटिनी परें क

सीथ जोतां, कंतशुं विहडे नहीं ॥ तन मन्न वचनें
 शीयलराखे, सती ते जाणो सही ॥ ६ ॥ चाल ॥
 रूप देखाडी रे, पुरुष न पाडीयें ॥ व्याकुल यइने
 रे, मन न बगाडीयें ॥ उथलो ॥ मन न बगाडीयें पर
 पुरुषनुं, जोग जोतां नवि मले ॥ कलंक माथे चढे
 कूडां, सगां सहु दूरें टले ॥ अणसरज्यो उच्चाट था
 ये, प्राण तिहां लागी रहे ॥ इह लोक पामे आप
 दा, परलोक पीडा बहु सहे ॥ ७ ॥ चाल ॥ रामने
 रूपें रे, शूर्पनखा मोही ॥ काज न सीधुं रे, अने इज
 त खोइ ॥ उथलो ॥ इजत खोइ देख अजया, शेठ सु
 दर्शन नवि चळ्यो ॥ नरतार आगल पडी नौंठी, अ
 पवाद सघले उहळ्यो ॥ कामनी बुद्धें कामिनी ए, वं
 कचूल वाह्यो घणुं ॥ पण शीयलथी चूकी नहीं, दृ
 ष्टांत एम केतां नणुं ॥ ८ ॥ चाल ॥ शीयल प्रनावें
 रे, जुवो शोले सती ॥ त्रिभुवनमांहे रे, जे यइ ठती
 ॥ उथलो ॥ ठती यइने शीयल राख्युं, कल्पना की
 धी नहीं ॥ नाम तेहनां जगत जाणे, विश्वमां उगी
 रही ॥ विविध रत्नैं जडित नूपण, रूपसुंदरि किन्नरी
 ॥ एक शीयल विण शोने नहीं, ते सत्य गणजो सुं
 दरी ॥ ९ ॥ चाल ॥ शीयल प्रनावें रे, सहु शेवा क

રે ॥ નવ વાઢે રે, જેહ નિર્મલ ધરે ॥ ઇચ્છા ॥ ધરે નિ
ર્મલ શીયલ ઝઙ્ગલ, તાસ કીર્તિ ઝઙ્ગલ ॥ મનકા
મના સવિ સિદ્ધિ પામે, અષ્ટ નય દૂરેં ટલે ॥ ધન્ય
ધન્ય તે જાણો ધરા, જે શીયલ ચોખું આદરે, આનં
દના તે ઝંધ પામે, ઇદય મહા જસ વિસ્તરે ॥ ૧ ॥ ૭ ॥ ઇતિ ॥

॥ અથ ક્રોધની સસ્રાય ॥

॥ કડુવાં ફલ છે ક્રોધનાં, જ્ઞાની એમ બોલે ॥ રી
શતણો રસ જાણીયેં, હજાહજ તોલેં ॥ ક૦ ॥ ૧ ॥
ક્રોધેં ક્રોડ પૂરવ તણું, સંજમ ફલ જાય ॥ ક્રોધ સ
હિત તપ જે કરે, તે તો લેખેં ન થાય ॥ ક૦ ॥ ૨ ॥
સાધુ ઘણો તપીયો હુતો, ધરતો મન વૈરાગ ॥ શિષ્ય
ને ક્રોધ થકી થયો, ચંદ્રકોશીયો નાગ ॥ ક૦ ॥ ૩ ॥
આગ ઝટે જે ઘરથકી, પહેલું તે ઘર બાલે ॥ જલનો
જોગ જો નવિ મલે, તો પાસેંનું પરજાલે ॥ ક૦ ॥
॥ ૪ ॥ ક્રોધતણી ગતિ એહવી, કહે કેવલનાણી ॥
હાણ કરે જે હેતની, જાલવજો એમ જાણી ॥ ક૦ ॥
॥ ૫ ॥ ઇદયરતન કહે ક્રોધને, કાઢજો ગલે સાહી ॥
કાયા કરજો નિરમજી, ઇપશમ રસ નાહી ॥ ક૦ ॥ ૬ ॥

॥ અથ માનની સસ્રાય ॥

॥ રે જીવ માન ન કીજીયેં, માનેં વિનય ન થાવે

रे ॥ विनय विना विद्या नहीं, तो किम समकित
 पावे रें ॥ रे० ॥ १ ॥ समकित विण चारित्र नहीं,
 चारित्र विण नहीं मुक्ति रे ॥ मुक्तिनां सुख ठे शाश्व
 तां, ते केम लहियें जुक्ति रे ॥ रे० ॥ २ ॥ विनय
 बडो संसारमां, गुणमां अधिकारी रे ॥ मानें गुण
 जाये गजी, प्राणी जो जो विचारी रे ॥ रे० ॥ ३ ॥
 मान कछुं जो रावणें, ते तो रामें माख्यो रे ॥ डुर्यो
 धन गरवें करी, अंतें सवि हाख्यो रे ॥ रे० ॥ ४ ॥
 शूकां लाकडां सारिखो, दुःखदायी ए खोटो रे ॥ उ
 दयरत्न कहे मानने, देजो देशवटो रे ॥ रे० ॥ ५ ॥

॥ अथ मायानी सज्ञाय ॥

॥ समकितनुं मूल जाणीयें जी, सत्य वचन सा
 द्दात ॥ साचामां समकित वसे जी, कूडामां मिथ्या
 त्व रे ॥ प्राणी म करीश माया लगार ॥ १ ॥ ए
 आंकणी ॥ मुख मीठो जूठो मनैं जी, कूड कपटनो
 रे कोट ॥ जीजे तो जी जी करे जी, चित्तमांहे ताकें
 चोट रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ आप गरजें आघो पडे जी,
 पण न धरे विश्वास ॥ मनखुं राखे आंतरो जी, ए
 मायानो पास रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ जेहखुं बांधे प्रीत
 डी जी, तेहखुं रहे प्रतिकूल ॥ मेल न ठंमे मन त

णो जी, ए मायानुं मूल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ तप को
 धुं माया करी जी, मित्रगुं राख्यो रे जेद ॥ मल्ली
 जिनेश्वर जाणजो जी, तो पाम्या स्त्री वेद रे ॥ प्रा०
 ॥ ५ ॥ उदयरत्न कहे सांजजो जी, मेलो मायानी
 बुद्ध ॥ मुक्ति पुरी जावा तणो जी, ए मारग ठे शुद्ध
 रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ लोचनी सञ्ज्ञाय ॥

॥ तुमें लक्षण जो जो लोचनां रे, लोचे जन
 पामे क्षोचना रे ॥ लोचे माह्या मन मोह्या करे रे,
 लोचे डुर्यट पंथेंसंचरे रे ॥ तु० ॥ १ ॥ तजे लोच
 तेहनां जेउं नामणां रे, वली पायें नमी ने करुं खा
 मणां रे ॥ लोचें मरजादा न रहे केहनी रे, तुमें सं
 गत मेलो तेहनी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ लोचें घर मेहेली
 रणमां मरें रे, लोचे उंच ते नीचुं आचरे रे ॥ लोचे
 पाप जणी पगलां जरे रे, लोचे अकारज करतां न
 उंसरे रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ लोचे मनहुं न रहे निर्मलुं
 रे, लोचे सगपण नासे बेगलुं रे ॥ लोचे न रहे प्री
 तिने पावतुं रे, लोचे धन मेले बहु एकतुं रे ॥ तु०
 ॥ ४ ॥ लोचे पुत्र प्रत्यें पिता हणो रे, लोचे हत्या
 पातक नवि गणो रे ॥ ते तो दाम तणो लोचे करी

रे, उपर मणिधर थायें ते मरी रे ॥ तु० ॥ ५ ॥ जो
तां लोचनो थोच दिसे नही रे, एवुं सूत्र सिद्धांतें
कहुं सही रे ॥ लोचने चक्री संजुम नामें जुठ रे, ते
तो समुद्र मांहे मूबी मुवो रे ॥ तु० ॥ ६ ॥ एम जा
णीने लोचने ठंमजो रे, एक धर्मशुं ममता मंमजो
रे ॥ कवि उदयरत्न नांखे मुदा रे, वंदूं लोचन तजे
तेहने सदा रे ॥ तु० ॥ ७ ॥ इति लोचनी सशाय ॥

॥ अथ श्री श्रावक करणीनी सशाय ॥

॥ चोपाई ॥ श्रावक तुं ऊठे परनात, चार घडी
ले पाठली रात ॥ मनमां समरे श्री नवकार, जेम
पामे नव सायर पार ॥ १ ॥ कवण देव कवण गुरु
धर्म, कवण आमारुं ठे कुलकर्म ॥ कवण अमारो
ठे व्यवसाय, एवुं चिंतवजे मन मांय ॥ २ ॥ सामा
यिक लेजे मन शुद्ध, धर्मनी हैडे धरजे बुद्ध ॥ पडि
क्रमणुं करे रयणी तणुं, पातक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥
कायाशक्तें करे पञ्चस्काण, सूधि पाले जिननी आ
ण ॥ नणजे गणजे स्तवन सशाय, जिण हुंति नि
स्तारो थाय ॥ ४ ॥ चितारे नित्य चउदे नीम, पाले
दया जीवतां सीम ॥ देहरे जाइ जुहारे देव, इव्य ना
वथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पूजा करतां लान अपार, प्रभु

जी महोटा मुक्ति दातार ॥ जे उथापे जिनवर देव.
 तेहने नव मंमकनी टेव ॥६॥ पोशालें गुरु वंदजे
 जाय, सुणजे वखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दूषण सु
 जंतो आहार, साधुने देजे सुविचार ॥७॥ सामिवत्स
 ल करजे घणुं, सगपण मोहोदुं सामितणुं ॥ दुःखीया
 हीणा दीनने देख, करजे तास दया सुविशेष ॥८॥
 घर अनुसारें देजे दान, मोहोटागुं म करे अजिमा
 न ॥ गुरुने मुख लेजे आखडी, धर्म न मूकीश एकै
 घडी ॥ ९ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, उठा अधिका
 नो परिहार ॥ म नरजे केनी कूडी साख, कूडा ज
 नगुं कथन म जांख ॥ १० ॥ अनंतकाय कही बत्री
 श, अनह्य बावीशे विश्वावीश ॥ ते नहण नवि
 कीजें किमे, काचां कूणां फल मत जिमे ॥ ११ ॥ रा
 त्रिजोजनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ सा
 जी साबू लोहने गली, मधु धावडी मत वेचो वली
 ॥ १२ ॥ वली म करावे रंगण पास, दूषण घणां
 कह्यां ठे तास ॥ पाणी गलजें बे बे वार, अणगल
 पीतां दोष अपार ॥ १३ ॥ जीवाणीनां करजें यत्न,
 पातक ठंढी करजे पुण्य ॥ ठांणां इंधण चूलो जोय,
 वावरजे जिम पाप न होय ॥ १४ ॥ घृतनी परें वा

वरजे नीर, अणगल नीर म धोश्श चीर ॥ ब्रारेव्रत
 सूधां पालजे, अतिचार सघलां टालजे ॥ १५ ॥ क
 ह्यां पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण ॥ मा
 थे म लेजे अनरथ दंम, मिथ्या मेल म जरजे पिंम
 ॥ १६ ॥ समकित शुद्ध हैडे राखजे, बोल विचारी
 ने जांखजे ॥ पांच तिथि म करो आरंज, पालो
 शोयल तजो मन दंज ॥ १७ ॥ तेल तक्र घृत दूध
 ने दहिं, उघाडां मत मेलो सही ॥ उत्तम ठामें खर
 चो वित्त, पर उपगार करो गुनचित्त ॥ १८ ॥ दिव
 स चरिम करजे चोविहार, चारे आहार तणो परि
 हार ॥ दिवस तणां आलोए पाप, जिम जांजे सघ
 ला संताप ॥ १९ ॥ संध्यायें आवश्यक साचवे, जि
 नवर चरण शरण नवनवे ॥ चारे शरण करी दृढ
 होय, सागारी अणसण ले सोय ॥ २० ॥ करे म
 नोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जायवा ॥ समेत
 शिखर आबू गिरनार, जेटीश हुं धन्य धन्य अवतार
 ॥ २१ ॥ श्रावकनी करणी ठे एह, एहथी थाये न
 वनो ठेह ॥ आठे कर्म पडे पातलां, पाप तणा बूटे
 आमला ॥ २२ ॥ वारु लहियें अमर विमान, अनु

क्रमें पामे शिवपुरगाम ॥ कहे जिनहर्ष घणे ससने
ह, करणी दुखहरणी ठे एह ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ श्री नेम राजकुलनी सशाय ॥

॥ नदी जमुनाके तीर, उमे दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥

॥ पिउजी पिउजी रे नाम, जपु दिन रातियां ॥
पिउजी चाव्या परदेश, तपे मोरी ठातीयां ॥ पग प
ग जोती वाट, वाजेसर कब मिले ॥ नीर विठोयां
मीन, के ते ज्युं टलवले ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज,
साहिब विण नवि गमे ॥ जिहां रे वाजेसर नेम,
तिहां मारुं मन जमे ॥ जो होवे सज्जन दूर, तोही
पासें वसे ॥ किहां पंकज किहां चंद, देखी मन उल्लसे
॥ २ ॥ निःस्नेहीशुं प्रीत, मकरजो को सही ॥ पतंग
जलावे देह, दीपक मनमें नही ॥ बाहाला माणस
नो विजोग, म होजो केहनें ॥ साजे रे साज समा
न, हइआमां तेहने ॥ ३ ॥ विरह वृथानी पीड, जो
बन वय अति दहे ॥ जेनो पीयुं परदेश, ते माणस
दुःख सहे ॥ फुरी फुरी पंजर कीध, काया कमलज
जसी ॥ हजिअ न आब्यो नेम, मलि न नयणें ह
सी ॥ ४ ॥ जेने जेहशुं राग, टाढ्यो ते नवि टले ॥
चकवा रयणी विजोग, ते तो दिवसें मले ॥ आंबा

करो स्वाद, जिंबू ते नवि करे ॥ जे नाह्या गंगा नी
र, ते ठिछर किम तरे ॥ ५ ॥ जे रम्या मालती फू
ल, धतूरे किम रमे ॥ जेहने घृत शुं प्रेम ते, तेले
किम जिमे ॥ जेहने चतुरशुं नेह ते, अवर नें शुं
करे ॥ नव जोवन तजी नेम, वैरागी थड फरे ॥
॥ ६ ॥ राजुल रूप निधान, पोहोती सहसाव
नें ॥ जड वांच्या प्रभु नेम, संजम लेड एकमनें ॥ पा
म्यां केवल ज्ञान के, पोती मननी रुली ॥ रूपविजय
प्रभु नेम, जेठे आशा फली ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शांतिजिन विनति ॥

॥ शारद माय नमुं शिरनामि, हुं गावं त्रिभुवन
को स्वामी ॥ शांति शांति जपे सब कोड, ता घर
शांतिसदा सुख होड ॥ १ ॥ शांति जपी जे कीजें
काम, सोडकाम होवे अनिराम ॥ शांति जपी परदे
श सधावे, ते कुशले कमला लेड आवे ॥ २ ॥ गर्न
थकी प्रभु मारि निवारी, शांतिजी नामदियो हितका
री ॥ जे नर शांति तणा गुण गावे, रुद्धि अचिंति
ते नर पावे ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रभु शांति सहाड, ता
नरकूं क्या आरति जाड ॥ जो कबु वंढे सोड पूरे,
दाजिड दुःख मिथ्या मति चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरं

जन ज्योत प्रकाशी, घट घट अंतरके प्रभु वासी ॥
 स्वामि स्वरूप कह्यो नवि जाय, कहेतां मो मनअचि
 रज थाय ॥ ५ ॥ मार दीए सबहीं हथियारा, जी
 त्यां मोह तणां दल सारां ॥ नारि तजी शिवछं रंग
 राचे, राज तज्यो पण साहेब साचे ॥ ६ ॥ महा
 बलवंत कहीजें देवा, कायर कुंथु न एक हणेवा ॥
 रिद्धि सयल प्रभु पास लहीजें, निह्वा आहारी नाम
 कहीजें ॥ ७ ॥ निंदक पूजककूं सम जायक, पण
 सेवकहीकूं सुख दायक ॥ तजी परिग्रह नयें जगना
 यक, नाम अतिथि सबे सिद्धि लायक ॥ ८ ॥ शत्रु
 मित्र समचित्त गणीजें, नामदेव अरिहंत नणीजें ॥
 सयल जीव हितवंत कहीजें, सेवक जाणी महापद
 दीजें ॥ ९ ॥ सायर जैसा होत गंजीरा, दूषण एक
 न मांहे शरीरा ॥ मेरु अचलजिम अंतरजामी, पण
 न रहे प्रभु एकण ठामी ॥ १० ॥ लोक कहे जिन
 जी सब देखे, पण सुपनांतर कब हुं न पेखे ॥ रीस
 विना बावीश परीसा, सेन्या जीती ते जगदीशा ॥ ११ ॥
 मान विना जग आण मनाइ, माया विना शिवछं
 लय लाइ ॥ लोन विना गुण राशि ग्रहीजें, निष्कु
 नये त्रिगडो सेवीजें ॥ १२ ॥ निग्रंथ पणो शिर ठत्र

धरावे, नाम यति पण चमर ढलावें ॥ अजयदान
 दाता सुख कारण, आगल चक्र चले अरिदारण
 ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल नणीजें, करम सबे
 को मूल खणीजें ॥ चउविह संघह तीरथज आपे,
 लह्मी घणी देखेनवी आपे ॥ १४ ॥ विनयवंत जगवंत
 कहावे, न काहुकूं शिश नमावे ॥ अकिंचनको बिरु
 द धरावे, पण सोवनपद पंकज ठावे ॥ १५ ॥ राग
 नहीं पण सेवक तारे, द्वेष नहीं निगुणा संग वारे ॥
 तजी आरंज निज आतम ध्यावे, शिव रमणीको
 साथ चलावे ॥ १६ ॥ तेरो महिमा अद्भुत कहि
 यें, तोरा गुनको पार न लहीयें ॥ तुं प्रभु समरथ
 साहेब मेरा, हुं मन मोहन सेवक तेरा ॥ १७ ॥
 तूरे त्रिलोक तणो प्रतिपाल, हूरे अनाथी भुरे द
 याल ॥ तुं शरणागत राखणधीरा, तुं प्रभु तारक ठो
 वड वीरा ॥ १८ ॥ तुंहिं समो वडजागज पायो, तो
 मेरो काज चढ्यो रे सवायो ॥ कर जोडी प्रभु वीनहुं
 तोसुं, करो कृपा जिनवरजी मोसुं ॥ १९ ॥ जनम
 मरणना दोष निवारो, नव सागरथी पार उतारो ॥
 श्री हथीणाउर मंमण सोहे, तिहां श्री शांति सदा
 मन मोहे ॥ २० ॥ पद्मसागर गुरुराज पसाया,

श्रीगुणसागरके मन 'जाया ॥ जे नरनारी एक चित्तें
गावे, ते मन वंछित निश्चें पावे ॥ २१ ॥ इति० ॥

॥ अथ पारसनाथनो ठंड प्रारंज ॥

॥ आपण घर बेठा लीज करो, निज पुत्र कलत्र
छुं प्रेम धरो ॥ तुमें देश देशांतर कांइ दोडो, नित्य
पास जपो श्रीजिन रूडो ॥ १ ॥ मन वंछित संघलां
काज सरे, शिर उपर चामर ठत्र धरे ॥ कलमज चा
खे आगल घोडो, नित्य पास जपो श्रीजिन रूडो ॥ २ ॥
चूत प्रेत पिशाच बली, सायणीने दायणी जाय ट
ली ॥ ठल ठिड न कोइ लागे जोडो ॥ नित्य० ॥ ३ ॥
एकांतर तावसीउं दाह, उषय विन जायें खणमांह ॥
नवि दुःखे माथुं पग गूमो ॥ नित्य० ॥ ४ ॥ कंठमा
ला गडगुंबड सबला, तस उदर रोग टले सघला ॥
पीडा न करे फीन गल फोडो ॥ नित्य० ॥ ५ ॥ जा
गतो तीर्थकर पास बहू, एम जाणे सघलो जगत
सहू ॥ ततह्ण अशुच करम तोडो ॥ नित्य० ॥ ६ ॥
पास वणारसि पुरिनगरी, तिहां उदयो जिनवर उद
य करी ॥ समयसुंदर कहे करजोडो ॥ नित्य० ॥ ७ ॥

॥ अथ ज्ञान पञ्चीशी प्रारंज ॥

॥ सुरनर तिरि जग योनिमें, नरक निगोद जमं

त ॥ माहा मोहकी निंदमें, सोवे काल अनंत ॥ १ ॥
 जैसें ज्वरके जोरसें, नोजनकी रुचि जाय ॥ तैसें कुं
 करम के उदय, धरमबचन न सुहाय ॥ २ ॥ लगे
 नूख ज्वरके गये, रुचिगुं छेत आहार ॥ अशुनहीन
 शुनके जगे, सो जाने धर्म बिचार ॥ ३ ॥ जैसें पव
 न जकोलथें, जलमें उठे तुरंग ॥ त्यों मनसा चंचल
 नए, परिग्रह के परसंग ॥ ४ ॥ जिहां पवन नही
 संचरे, तिहां नही जल कछोल ॥ त्यों सब परिग्रह
 त्यागयें, मनसा होए अमोल ॥ ५ ॥ ज्यों काहु वि
 षधर मरो, रुचिगुं नींब चबाय ॥ त्यों तुम ममता
 गुं मढे, मगन विषय सुख थाय ॥ ६ ॥ नींब रस
 फरसे नही, निर्विष तनु जब होय ॥ मोह घटे मम
 ता मिटे, विषय न वंढे कोय ॥ ७ ॥ ज्यों सठिइ नौका
 चढे, बूढे अंध अदेख ॥ त्यों तुम नवजलमें पढे, बि
 नुं विवेक धरी जेख ॥ ८ ॥ जहां अखंनित गुण
 लगें, खेवट शुद्ध विचार ॥ आतम रुचि नौका चढे,
 पावही नवजल पार ॥ ९ ॥ ज्यों अंकुश माने नही, म
 हा मत्तंग गजराज ॥ त्यों मन तृष्णामें फिरे, गिने
 न काज अकाज ॥ १० ॥ ज्यों नर दाय उपाय करि,
 गही आने गजराज ॥ त्यों मन या वस करनकुं, नि

मेल ग्यान समाज ॥ ११ ॥ तिमिर रोगसें नयन
 ज्युं, लखे उरकी उर ॥ त्युं मन संसयमें परे, मिथ्या
 मतकी दोर ॥ १२ ॥ ज्युं औषध अंजन कीए, ति
 मिर रोग मिट जाय ॥ त्युं सदगुरु उपदेशयें, संशय
 वेग पलाय ॥ १३ ॥ जैसें सब जाडु जरे, धारामति
 की आग ॥ त्युं मायामें तुम पडे, कहा जाउंगे जाग
 ॥ १४ ॥ दीपायनसों ते बचे, जे तपसी निग्रंथ ॥
 तजी माया समता ग्रहो, एह मुगतिको पंथ ॥ १५ ॥
 ज्युं कुधातुके जेटशुं, घटवध कंचन कंत ॥ पाप पुण्य
 करतो नवें, मूढमति बहु जंत ॥ १६ ॥ कंचन निज
 गुण नही तजे, वान हीन नही होत ॥ घट घट अं
 तर आतमा, सहेज स्वनाव उद्योत ॥ १७ ॥ पना
 पीठ पक्काइयें, शुद्ध कनक ज्युं होय ॥ त्युं परगट प
 रमातमा, पुण्य पाप मल धोय ॥ १८ ॥ परव राहुके
 गहनशें, सूर सोम ठबि ठीन ॥ संगत पाइ कुसाधुकी,
 सज्जन होत मलीन ॥ १९ ॥ नीबादिक चंदन करे,
 मलयाचलकी बास ॥ दुर्जनयें सज्जन नये, रहत
 साधुके पास ॥ २० ॥ जैसे तलाव सदा जरे, जल
 आवत चिहुं उर ॥ तैसे आश्रव द्वारयें, करम बंधको
 जोर ॥ २१ ॥ ज्युं जल आवत मुंदीयें, शूके सरवर पा

न ॥ तैसें संवरके कीए, करम निरङ्गरा जान ॥ ११ ॥
 जुं बूटी संयोगथें, पारा मूर्ध्नि होय ॥ त्यो पुज्जसुं
 तुम मिले, आतम सक्ति समोय ॥ १२ ॥ मेल खटाइ
 मांजीयें, पारा परगट रूप ॥ शुक्ल ध्यान अन्यासथें,
 दरशन ज्ञान अनूप ॥ १४ ॥ कहे उपदेश बनारसी,
 चेतन अब कहु चेत ॥ आप बुजावत आपकूं, उद
 य करनके हेत ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ अरणीक मुनिनी सञ्ज्ञाय ॥

॥ अरणीक मुनिवर चाव्या गोचरी, तडके दाजे
 शीशोजी ॥ पाय अणवाणे रे वेजु परजले, तनु सुकु
 माल मुनीसो जी ॥ अरणी० ॥ १ ॥ मुख करमाणुं
 रे मालती फूलज्युं, उजो गोंखनी हेगोजी ॥ खरे ब
 पोरें रे दीगो एकलो, मोही माननी दृष्टो जी ॥ अर
 णी० ॥ २ ॥ वयण रंगीलो रे नयणें वेधित, रुखी थं
 न्यो तेणें ठामो जी ॥ दासीने कहे जारे उतावली, ए
 रिखी तेडी आणो जी ॥ अरणी० ॥ ३ ॥ पावन की
 जें रे रिखी घर आगणुं, वोहोरो मोदक सारो जी ॥
 नव यौवन रस काया कां दहो, सफल करो अवतारो
 जी ॥ अरणी० ॥ ४ ॥ चंझा वदनी रे चारित्र चूकव्युं,
 सुख विलसे दिन रातो जी ॥ बेगो गोखें रे रमतो सो

गते, तव दीठी निज मातो जी ॥ अरणी० ॥ ५ ॥ अरणी
 क अरणीक करती मा फिरे, गलियें गलियें तिवारो जी ॥
 कहो केणें दीठो रे महारो अरणी लो, पूर्वे लोक
 हजारो जी ॥ अरणी० ॥ ६ ॥ उतखो तिहांथी रे
 जननीने पाय पड्यो, मनछुं लाज्यो तिवारो जी ॥
 वड तुज न घटे रे चारित्र चूकवुं, जेहथी शिवसुख
 सारो जी ॥ अरणी० ॥ ७ ॥ एम समजावी रे पा
 ठो वालिठ, आण्यो गुरुने पासो जी ॥ सह गुरु दी
 ए रे शीख जली परें, वैरागें मनजाय्यो जी ॥ अर
 णी० ॥ ८ ॥ अगनी धखंती रे शीला उपरें, अर
 णीकें अणशण कीथो जी ॥ रूप विजय कहे धन ते
 मुनि वरू, जिणे शिवपद लीथो जी ॥ अरणी० ॥ ९ ॥
 ॥ अथ पार्श्वनाथनो ठंद ॥

॥ जय जय जगनायक पार्श्वजिनं, प्रणिताखिल
 मानव देवगणं ॥ जिनशासन मंमन स्वामिजयो, तुम
 दरिसन देखी आनंद जयो ॥ १ ॥ अश्वसेन कुलं
 बर जानु निजं, नव हस्तशरीर हरित प्रतिजं ॥ धर
 णें सुसेवित पादयुगं, जर नासुरकांति सदा सुजगं
 ॥ २ ॥ निज रूपं विनिर्जित रंजपति, वदनोद्युति
 शरद सौमतति ॥ नयनांबुज दीप्त विशाल तरा, ति

लकुसुम संनिज नाशा प्रवरा ॥ ३ ॥ रसनामृत कंद
 समान सदा, दशनावलि अनार कलि सुखदा ॥ अ
 धरारुण विडुम रंग घनं, जय शंखपुराजिध पार्श्व
 जिनं ॥ ४ ॥ अतिचारू मुकुट मस्तक दीपे, काने
 कुंमल रवि शशि जीपे ॥ तुज महिमा महि मंमल
 गाजे, नित्य पंच शब्द वाजां वाजे ॥ ५ ॥ सुर किन्नर
 विद्याधर आवे, नरनारी तोरा गुण गावे ॥ तुज सेवे
 चोशठ इंद सदा, तुज नामें नावें कष्ट कदा ॥ ६ ॥
 जे सेवे तुजने जाव घणे, नवनिधि आये घर तेह
 तणे ॥ अडवडियां तुं आधार कह्यो, समरथ साहेब
 में आज लह्यो ॥ ७ ॥ दुःखीयाने सुखदायक तुं दा
 खे, अशरणने शरणे तुं राखे ॥ तुज नामें संकट वि
 कट टले, वीढडीयां वालां आवी मले ॥ ८ ॥ नट
 विट लंपट दूरे नाशे, तुज नामें चोर चरड त्राशे ॥
 रण रावल जय तुज नाम थकी, सघले आगल तुज
 सेव थकी ॥ ९ ॥ यहू राहस किन्नर सविउरगा,
 करी केशरी दावानल विहगा ॥ वध बंधन जय सघ
 लां जाये, जे एक मना तुजनें ध्याये ॥ १० ॥ नूत
 प्रेत पिशाच ठली न शके, जगदीश तवानिधजाप
 थके ॥ महोटा जोटिंग रहे दूरे, दैत्यादिकना तुं मद

चूरे ॥ ११ ॥ मायणी सायणी जाए हटकी, जगवं
 त थाय तुज नजन थकी ॥ कपटी तुज नाम लीया
 कंपे, डुर्जन सुखथी जीजी जंपे ॥ १२ ॥ मानी मठ
 राला मुह मोडे, तेपण आगलथी कर जोडे ॥ डुर
 मुख डुष्टादिक तुंहि दमे, तुज जापें महोटा म्जेह
 नमे ॥ १३ ॥ तुज नामें माने नृप सबला, तुज जश
 उज्ज्वल जेम चंडकला ॥ तुज नामें पामे रिद्धि धणी,
 जय जय जगदीश्वर त्रिजग धणी ॥ १४ ॥ चिंताम
 णि कामगवी पामे, हयगय रथ पायक तुज नामें ॥
 जन पद ठकुराई तुं आपे, डुर्जन जननां दारिद्रकापे
 ॥ १५ ॥ निरधनने तुं धनवंत करे, तूगो कोठार चंदा
 र जरे ॥ घर पुत्र कलत्र परिवार घणो, ते सहु महि
 मा तुम नाम तणो ॥ १६ ॥ मणि माणिक मोति रत्न
 जडया, सोवन नूषण बहु सुघड घडया ॥ बली पेहे
 रण नवरंग वेश घणा, तुम नामें नवी रहे कांइ म
 णा ॥ १७ ॥ वैरी विरुठ नविताकी शके, बली चा
 ड चुगल मनथी चमके ॥ ठल ठिड् कदा केहनो न
 लगे, जिनराज सदा तुज ज्योति जगे ॥ १८ ॥ ठग
 ठाकुर सवि थर हर कंपे, पाखंमी पण को नवि फर
 के ॥ लूंटादिक सहु नाशी जाए, मारग तुज जपतां

जय थाय ॥ १९ ॥ जड मूरख जे मति हीनवली,
 अज्ञान तिमिरतसु जाय टली ॥ तुज समरणथी
 माह्या थाये, पंक्ति पद पामी पूजाए ॥ २० ॥ ख
 श खाश खयन पीडा नाशे, दुर्बल मुख दीन पणुं
 त्रासे ॥ गड गुंबड कुष्ट जिके संबला, तुज जापें रोग
 समे सघला ॥ २१ ॥ घहिला गुगा बहिराय जीके,
 तुज ध्यानै गत दुःख थाय तिके ॥ तनु कांति कला
 सुविशेष वधे, तुज समरणशुं नवनिधि सधे ॥ २२ ॥
 करि केसरी अहि रणबंध सया, जल जलण जलोदर
 अष्ट जया ॥ रांगण पमुहा सविजाय टली, तुज नामें
 पामे रंगरली ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपार्श्व नमो,
 नमिउण जपंता छुष्ट दमो ॥ चिंतामणि मंत्र जिके
 ध्याये, तिण घर दिन दिन दोलत थाये ॥ २४ ॥ त्रि
 करण शुद्धे जे अराधे, तस जस कीर्त्ति जगमां वा
 धे ॥ वली कामित काम सवे साधे, समहित चिंता
 मणि तुज लाधे ॥ २५ ॥ मद मञ्जर मनथी दूर तजे,
 जगवंत जली परें जेह नजे ॥ तस घर कमला कछो
 ल करे, वली राज्य रमणी बहु लील वरे ॥ २६ ॥
 जय वारक तारक तुं त्राता, सङ्गन मन गति मतिनो
 दाता ॥ मात तात सहोदर तुं स्वामी, शिवदायक

नायक हितकामी ॥ २७ ॥ करुणाकर ठाकुर तुं म
 हारो, निशिवासर नाम जपु ताहारो ॥ सेवकछुं पर
 म कृपा करजो, वालेसर वंछित फल देजो ॥ २८ ॥
 जिनराज सदा तुं जयकारी, तुज मूरति अति मोह
 न गारी ॥ गुळार जन पद मांहे राजे, त्रिछुवन ठकु
 राइ तुज ठाजे ॥ २९ ॥ इम जाव नले जिनवर गायो,
 वामा सुत देखी बहु सुख पायो ॥ रवि मुनि शशी
 संवत्तर रंगें, जयदेवसूरि मां सुख संगें ॥ ३० ॥ जय
 शंखपुरानिध पार्श्व प्रनो, सकलार्थ समीहित देहि
 विनो ॥ बुध हर्षरुचि विजयाय मुदा, तप लब्धिरु
 चि सुख दाय सदा ॥ ३१ ॥ कलश ॥ इडं स्तुतः स
 कलकामित सिद्धिदाता, यद्वाधिराजनत शंखपुराधि
 राजः ॥ स्वस्ति श्रीहर्षरुचि पंकजसुप्रसादात्, शि
 ष्येण लब्धरुचिनेति मुदा प्रसन्नः ॥ ३२ ॥ इति पार्श्व ०
 ॥ अथ मेघ कुमारनी सश्राय प्रारंभः ॥

॥ धारणी मनावे रे मेघ कुमारने रे, तुं मुज ए
 कज पुत्त ॥ तुजविण सुना रे मंदिर मालिअं रे,
 राखो राखो घर तणां सूत ॥ धारणी ० ॥ १ ॥ तुज
 ने परणावुं रे आठ कुमारिका रे, सुंदर अति सुकु
 माल ॥ मलपति चाले रे वन जेम हाथणी रे,

नयण वयण सुविशाल ॥ धारणी० ॥ १ ॥ मुज म
 न आश्या रे पुत्र हती घणी रे, रमाडीश वदुनां
 रे बाल ॥ दैव अटारौ रे देखी नवि शक्यो रे,
 उपायो एह जंजाल ॥ धारणी० ॥ ३ ॥ धण कण
 कंचन रिद्धि घणी अढे रे, जोगवो जोग संसार ॥
 ठती रिद्धि विलसो रे जाया घर आपणे रे, पढे
 लेजो संयम नार ॥ धारणी० ॥ ४ ॥ मेघ कुंमारें
 रे, माता प्रत्ये बूजवी रे, दीक्षा लीधी वीरजीने
 पाश ॥ प्रीति विमल रे इणी परें उच्चरे रे ॥ पोहो
 ती महारा मनडानी आश ॥ धारणी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमहावीरस्वामी स्तवन ॥

॥ प्रभुजी वीरजिणंदने वंदियें, चोवीशमां जिनराय
 हो ॥ त्रिशलानाजाया ॥ प्रभुजीने नामेते नवनि
 धि संपजे, नवदुख सवि मिट जायहो ॥ त्रिसला
 नाजाया ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ प्रभुजी कंचन वान
 कर सातनो, जग तातनो एटलो मानहो ॥ त्रि० ॥
 प्रभुजी मृगपती लंठन राजतो, जांजतो मद गज मा
 नहो ॥ त्रि० ॥ २ ॥ प्रभुजी सिद्धारथ जगवंतहो,
 सिद्धारथ कुल चंदहो ॥ त्रि० ॥ प्रभुजी नक्त वत्स
 ल नव दुःख हारू, सुरतरु सम सुख कंदहो ॥ त्रि०

॥ ३ ॥ प्रभुजी गंधार बंदर गुण निलो, जगतातना
जगदीस हो ॥ त्रि० ॥ प्रभुजी दर्शण देखिने चित्त ठ
खुं, सखुं मुऊ वली काजहो ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ प्रभुजी
शिवनगरीनो राजीठ, जगतारण जिन देवहो ॥ त्रि० ॥
प्रभुजी रंगविजयने आपजो, जव जव तुम पाये सेव
हो ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ इति श्रीवीरजिनस्तवनसंपूर्ण ॥

॥ अथ नेमनाथस्तवनं ॥

॥ नेम जिणंद जुहारीणं, उजल गढ गिरनारोजी ॥
बलवंत जिन बावीशमो, जलें जेटयो जगवंतोजी
॥ नेम० ॥ १ ॥ शामल वरण सोहामणो, मुख सो
हे पूनम चंदोजी ॥ यादव वंसी जग जयो, जेहने
सेवे सुरनर इंदोजी ॥ नेम० ॥ २ ॥ पसुअ देखीपा
ठा वट्या, दिल दया बहु आणीजी ॥ जाल विषय
जंपी करी, तजी राजेमति राणीजी ॥ नेम० ॥ ३ ॥
समुद्रविजय सुत सुखकरु, माता शिवादेवी मलारो
जी ॥ दान संवत्सरी देई करी, पोहोता गढ गिरना
रोजी ॥ नेम० ॥ ४ ॥ चोपन दिन चोखे चितें, प्रभु
मौन पणें तपकीधोजी ॥ करम खपावी केवल लही,
जगमां बहु जसलीधोजी ॥ नेम० ॥ ५ ॥ समोवसर
ण सुरपति रच्यो, आणि मन ओणंदोजी ॥ त्रिगढो

तेजें ऊगमगे, तिहां नाटिक नव नव ठंदोजी ॥ नेम०
 ॥ ६ ॥ जोजन चुमी जगत गुरु, उचरे अमृत वा
 णीजी ॥ नवोदधी शोषण जयहरु, जेहना गुण गा
 वे इंझाणीजी ॥ नेम० ॥ ७ ॥ इम महि मंमल विच
 रतां, अनेक जीवउदाखाजी ॥ पोहोता बहु परीवा
 रशुं, मुक्ति मोहोल पथाखाजी ॥ नेम० ॥ ८ ॥ वि
 घ्न हरण नित वंदियें, राणीराजेमति नरतारोजी ॥
 दुख दालिइ दूरेंहरें, उतारे नवपारोजी ॥ नेम०
 ॥ ९ ॥ संवत सत्तर इग्यारोत्तरे, आसो बीज अजु
 आली जी ॥ कहे जिनदास यात्राकरी, नेम हसी
 दियो तालीजी ॥ नेम० ॥ १० ॥ इतिश्रीनेमिनाथ०॥

॥ अथ केसरियाजीनुं स्तवनं ॥

॥ प्रथम तीर्थकर रूपन जिणंदा, नाजिराया मरुदेवीको
 नंदा ॥ सो शामला गुणवंता ॥ लाखबोराशी पूर्वनो
 आयु, धनुष पांचशे सोवनमय काया ॥ सो० ॥
 १ ॥ जुगलारे धर्म निवारण स्वामी, नगर धूलेवो
 वशे घण नामी ॥ सो० ॥ तखतेरे वेठा केसरीउंजी
 सोहे, दरिसण देखीने मनडो मोहे ॥ सो० ॥ २ ॥
 मुखडुं सोहे पुनम केरो चंदा ॥ सुर नर मुनिवर से
 वे वृंदा ॥ सो० ॥ मुकुट कुंमल शिर ठत्र बिराजे,

ठकुराई केशरीआने ठाजे ॥ सो० ॥ ३ ॥ देशदेसना
 संघज आवे, वस्तु अमुजक जेटणुं लावे ॥ सो० ॥
 पूजा जणावे ने अंगीरचावे, केसरकेरा कीच मचा
 वे ॥ सो० ॥ ४ ॥ अग्रबतीना धूप करावे, फूजडा
 केरा मुगुट जरावे ॥ सो० ॥ नाटक नाचेने जावना
 जावे, हरखें केशरीआना गुण गावे ॥ सो० ॥ ५ ॥
 जिहाज तारे वालो बेडीउं कापे, मुह माग्या वंछित
 सुख आपे ॥ सो० ॥ रोग सोग जय दूर निवारे, न
 व सायरथी सेहेजें तारे ॥ सो० ॥ ६ ॥ जे कोई गा
 सेने जे सांजलशे, तेहना मनना मनोरथ फलशे ॥
 ॥ सो० ॥ कपुर कहे तेमे प्रत्यक्ष देवा, जवो जव
 मागुं हूं तुम पायसेवा ॥ सो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ जीमजंजनजिन स्तवन ॥

॥ शामाटे साहेब सामु न जूवो, हुंतो रह्योहुं तु
 मगुण हेरी ॥ प्रभुजी रे ॥ बीजा रे साथे बोल न
 बोलुं, मुने नगमे वात अनेरी ॥ प्रभुजी रे ॥ शा० ॥
 ॥ १ ॥ जोरे पोतानो करीने रे जाणो, तो मुज स
 मकित वासो ॥ प्रभुजी रे ॥ जलो जुंमो पण जक्त
 हुं ताहारो, एवुं जाणीने देउ दीजासो ॥ प्रभुजी रे
 ॥ शा० ॥ २ ॥ ठेल ठबीलोने देव ठोगालो, अलवे

सर अंतर जामी ॥ प्रभुजी रे ॥ रुदयनो वासी प्रभु
 मुऊने मलियो, तेहने नित्य नमुं सिर नामी ॥ प्रभु
 जीरे ॥ शा० ॥ ३ ॥ हजूर सैवानीरे होंश हैयामां,
 हुंतो राखुं बुं गुण रागी ॥ प्रभुजीरे ॥ चीडनंजन
 प्रभु नक्तिने जोरे, जालम वासना जागी ॥ प्रभुजीरे
 ॥शा०॥४॥ आप स्वरूप देखाडोने आडो, पडदो खो
 जीने पाडो ॥ प्रभुजीरे ॥ प्रेमउदय पद पगठीयें चढ
 तां, तिहां न रह्यो लाजनो लाडो ॥ प्रभुजीरे ॥ शा०॥५॥

॥ अथ नेमप्रभुनो चोमासुं ॥

॥ मारा सम जाउमारे वाला, लालच लागी तुम
 हुं लाला, लालच लागी नेम लटकाला ॥ मा० ॥
 श्रावण वरसेरे स्वामी, मेलीम जसो अंतर जामी ॥
 माथे मेढुलारे वरसे, एणी रुतु प्रीतम किम परवसे
 ॥ मा० ॥ १ ॥ जाइवडो जडानडरे गाजे, नदीयें
 नीर खलाखल वाजे ॥ धरती सोहियेंरे नीजा वरणी,
 साहिबा संजम लेजो परणी ॥ मा० ॥ २ ॥ आसो
 यें आश घणोरी अमने, जीवन जावुं न घटे तुमने ॥
 आनूषण पेरीने परवरजो, सलुणा साहिब रंग नर
 रमजो ॥ मा० ॥ ३ ॥ कार्तिके कंतजी कांमूकोडो,
 चतुर अईने हुं चूकोडो ॥ जेठजीने शोलसहसरे रा

णी, तुमथी एक नहि निरवाणी ॥ मा० ॥ ४ ॥ रूप
पचंद गाएठेरें चोमासुं, नेमजी सुं मलवानुं दिलठे
साचुं ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति श्रीचतुरमास संपूण ॥

॥ अथ प्रजातीउ ॥

॥ रे जीव जैन धर्म कीजीयें, धर्मना चार प्रकार ॥
दान शोयल तप जावना, जगमां एटलुं सार ॥ रे
जी० ॥ १ ॥ वरस दिवसने पारणे, आदेशर सुख
कार ॥ शेलडी रस वोलावेयो, श्रीश्रेयांश कुमार ॥
॥ रे जी० ॥ २ ॥ चंपापोल उघाडवा, चारणीयें
काढया नीर ॥ सतीय सुजडा जश थयो, शीयले सु
र नर धीर ॥ रे जी० ॥ ३ ॥ तप करी काया सोस
वी, सरस निरस आहार ॥ वीरजिणंद वखाणिउ,
धन धनो अणगार ॥ रे जी० ॥ ४ ॥ अनित्य जाव
ना जावता, धरतां निरमल ध्यान ॥ जरत आरीसा
छुवनमां, पाम्या केवल ज्ञान ॥ रे जी० ॥ ५ ॥ जैन
धर्म सुरतरु समो, जेहनी शीतल ठाया ॥ समय सुं
दर कहे सेवतां, वंछित फल पाया ॥ रे जी० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री महावीरजिन गीत ॥

॥ माहरी वीर प्रभुजीने वंदनारे, एनी वंदना ते
पाप निकंदनारे ॥ मा० ॥ हारें हूंतो कलस जरुं ते

गंगा नीरना रे, हुंतो नमण करुं महावीरना रे ॥
 ॥ मा० ॥ १ ॥ हुंतो प्याला नरुं केसर घोलना रे,
 माहें मृगमद जेजुं बहु मूलना रे ॥ मा० ॥ हुंतो
 तिलक करुं नवे अंगना रे, हुंतो फूल चढावुं पंच रं
 गनारे ॥ मा० ॥ २ ॥ हुंतो पूजा करीनें थावं पाव
 नारे, हुंतो जावूंतें आगल जावना रे ॥ मा० ॥ एवा
 जाव जला सुंदरा सेहेरना रे, तिहां वीर विराजे जय
 जय कारना रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ तिहां संघ सदा आ
 नंदमां रे, तिहां करे कलोल नित्य वंदना रे ॥ ॥

॥ अथ नेमजिन स्तवनं ॥

॥ घरे आवोने नेम वरणागिया रे, घरे आवोने
 श्याम वरणागिया रे ॥ ए आंकणी ॥ गुं कहीये ते
 मोहोटा नूपने रे, हुंतो मोहीबुं तमारा रूपने रे ॥
 ॥ घ० ॥ १ ॥ वालाना मुखना ते मीठा वेणढे रे,
 वालानी आंखडलीमां चेणढे रे ॥ घ० ॥ २ ॥ वा
 लो चित्ततणोते चोरढे रे, मारा कालजडानो कोरढे
 रे ॥ घ० ॥ ३ ॥ वाहालें पशु उपर करुणा करी रे,
 वाहालें जीवदया मनमां धरी रे ॥ घ० ॥ ४ ॥ वाहा
 लो तोरणथी पाठा वढ्या रे, वाहाला गढगिरना रे
 जई चढ्या रे ॥ घ० ॥ ५ ॥ वाहाला गढगिरनारना

घाटमां रे, मुनें नेमजी मढ्याळे वाटमां रे ॥ घ० ॥
 ॥ ६ ॥ एहवा रूपचंद रंगें मिढ्या रे, माहुरा मनना
 मनोरथ सवि फढ्या रे ॥ घ० ॥ ७ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ हो जिनराया जिनेसर, शिव वधुना तमे जो
 गी ॥ पास जिनेसर अति अलवेसर, संसार सुखना
 त्यागी ॥ हो जिनराया जिनेसर, शिव वधुना तमे
 नोगी ॥ १ ॥ वंढित पुरण चिंता चूरण, मन गुद
 समरे लोगी ॥ राग द्वेष टाली करमने गाली, शिव
 पंथे थया योगी ॥ हो० ॥ २ ॥ नविजन नावें यात्रा
 आवे, प्रणमेलजी पाय लागी ॥ नविपर मेरें करुणा
 जेरें, नाग्य दशा जस जागी ॥ हो० ॥ ३ ॥ सुथ
 री गामे वशे गुन ठामे, तस चरणांबुज रागी ॥ मे
 घलान कहे प्रभु घृत कलोलजीने, नामे नवनिधि
 जागी ॥ हो० ॥ ४ ॥ इति

॥ अथ प्रजाति स्तवनं ॥

॥ राग रामकली ॥ अजब ज्योति मेरे जिनकी, तुम
 देखो ॥ माई अजब ज्योति० ॥ ए टेक० ॥ कोडी सूर
 रज जब एकठा कीजें, होडन आवे मेरे जिनकी ॥
 ॥ तुमदे० ॥ ॥ १ ॥ जगमग ज्योति जलामल जलके,

काया नील वरणकी ॥ तुमदे० ॥ १ ॥ हीर विजय प्रभु
पाश संखे सर, आशा पुरो मेरे मनकी ॥ तुमदे० ॥ ३ ॥

॥ अथ प्रनाति स्तवनं ॥

॥ राग वेलावल ॥ जब तुम नाथ निरंजना, तब
मे नक्त तुमारो ॥ कल्प वृक्ष जब तुम नए, युगला
धर्म हमारो ॥ जबतु० ॥ १ ॥ जब तुम सायर साहिबा,
तब हुं सरिता समाना ॥ तुं दाता हूं याचका, बो
ले बिरुदि वाना ॥ जबतु० ॥ २ ॥ तुं तीरथ महिमा
वडो, तब हुं यात्रेहो आयो ॥ तुं हीरो मेरे करच
डयो, तो हूं ऊबेरि कहायो ॥ जबतु० ॥ ३ ॥ जब
तुं तखत त्रिभुवन तणो, हुं टंकशाली रूपैया ॥ दी
या ठाप रूपचंदशिरें, गया शिक्षा लहिया ॥ जब० ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रनाति स्तवन ॥

॥ राग वेलावल ॥ हमलोक निरंजन लालके, उ
रनके नाही ॥ देस वशुं मेरे नाथकें, नक्ति नगरी
माही ॥ हम० ॥ १ ॥ बनज करुं प्रभु नामको, जि
तनो मुख आवे ॥ सबही नाम सोदा करुं, पाठो
फेर न आवे ॥ हम० ॥ २ ॥ निसिदिन नाम सोदा
करे, साचो सो व्यापारी ॥ रुदय कमल मंजूसमें,
राखे गुण धारी ॥ हम० ॥ ३ ॥ रूपचंद कहे राम

कूं, बनज दूजो न जावे ॥ नाथ निरंजन नामके, ह
रषे गुण गावे ॥ हम ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वीरजिन चउदसुपननो स्तवन ॥

॥ रायरे सिद्धारथ घर पटराणी, नामे त्रिशला सु
लक्ष्णीए ॥ राज जुवन मांहे पलर्गे पोढंता, चउदसु
पन राणीर्ये लह्याए ॥ १ ॥ पहेलेरे सुपनमे गयवर
दीतो, बीजे वृषज सोहामणोए ॥ त्रीजे सिंह सुलक्ष्
णो दीतो, चौथे लखमी देवताए ॥ २ ॥ पांचमे पांच
वरणी माला, ठठे चंड अमीय जरेए ॥ सातमे सू
रज आठमे ध्वजा, नवमें कलस अमीय जखोए ॥ ३ ॥
पद्मसरोवर दशमें दीतो, क्षीर समुद्र दीतो इग्यारमे
ए ॥ देव विमानते बारमे दीतो, रणऊण घंटा वाज
ताए ॥ ४ ॥ रतननीरासुंतेतेरमे दीठयुं, अग्नि शिखा
दीठी चउदमेए ॥ चउद सुपन लइ राणीजी जाग्यां,
राय समोवड पोतलाए ॥ ५ ॥ सुणोरे स्वामी मेतो सु
हणला लाधा, पाठली रात रलीयामणीए ॥ रायरे
सिद्धारथ पंमित तेड्या, कहोरे पंमित फल एहनूं
ए ॥ ६ ॥ अम कुल मंमण तुम कुलदीवो, धनरे म
हावीर स्वामी अवतरयाए ॥ जे नर गावे तेसुखपावे,
आनंद रंग वधामणाए ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शीतल नाथजीनो स्तवन ॥

॥ महारे शीतल जिनछुं लागी पूरण प्रीतजो, सा
हिबजोनी शेवा नव डुख चांजसे रे जो ॥ जिन प्र
तिमा जिन सरखी दिलमां जोय जो, नक्ति करंता
प्रभुजी खूब निवाजसे रे जो ॥ १ ॥ जेणे जोतां
लाधु रत्नचिंतामणि हाथ जो, तेहने रे मूकीने कुण
अहे काचनें रे जो ॥ जेणे मनछुं कीधा जूठानां प
चस्काण जो, ते नर बोले सोवाते पण साचने रे
जो ॥ २ ॥ जे पाम्या परिगल प्रीते अमृत पानजो,
खारू जलते पीवा कहो कुण मन करे रे जो ॥ जे
घरमां बेठां पाम्या लखमी जोर जो, धनने काजे दे
श देशांतर कुण फरे रे जो ॥ ३ ॥ जेणे सेव्या पूर
ण चितें अरिहंत देवजो, तेहना रे मनमांहे किम
बीजा गमेरे जो ॥ एतो दोष रहित निकलंकी गुण
जंमार जो, मनडूं रे अमारुं प्रभुजी साथे रमेरे जो
॥ ४ ॥ मुने मलेया पूरण नागे शीतल नाथजो, दे
खीने हूं हरख्यो तन मन रंजीआरे जो ॥ एतो दो
लते दाई प्रभुजीनो देदार जो, मेतो जोतां प्रभुने क
र्मदल गंजीआ रे जो ॥ ५ ॥ श्रीविधिपहे दहरे मुं
दरा नगर मुजार जो, अंगीरे नवरंगी सिखर शुहा

मणी रे जो ॥ एतो तेजे दीपे जग मग ज्योत विशा
 ल जो, सोढे रे मनमोहन मूरति रत्नीयामणी रे
 जो ॥ ६ ॥ श्रीसत्तर एकाशीए रूढो नाइव मासजो,
 स्तवन रच्युंए प्रेमे परव पंजूसणो रे जो ॥ श्रीसहेज
 सुंदर शिष्य बोले इणी परें वाणिजो, जावेरे नित्यला
 ज कहे हरपे घणोरे जो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनं ॥

॥ वाला सुमति जिणोसर सेवीए रे, वाला सुम
 ति तणाढो दातार रे ॥ वाजारे वाजे धरमना रे, वा
 ला मेघराया सुत सुंदरू रे, वाला मंगला मात म
 ढ्हार रे ॥ वाजारे वाजे धरमना रे ॥ ए आंकणी ॥
 ॥ १ ॥ वाला मंगलवेल वधारवा रे, वाला उनह्यो
 ठे ए जलधार रे ॥ वा० ॥ वाला रूप अनोपम जि
 नतणो रे, वाला मन मोहन सुखकार रे ॥ वा०
 ॥ २ ॥ वाला सोवन वान शरीरनो रे, वाला इहवा
 ग वंस वधाररे ॥ वा० ॥ वाला देई प्रभुदान संवहरी
 रे, वाला लीधो ठे संजम नार रे ॥ वा० ॥ ३ ॥
 वाला आठ करम अरि जीतिने रे, वाला पोहोता ठे
 मुक्ति मजार रे ॥ वा० ॥ वाला पूरव लाख चाली
 नो रे, वाला जीवित जेहनो सार रे ॥ वा० ॥

वाला माणक मुनि मन रंगछुं रे, वाला चाहे ठे सु
मति देदार रे ॥ वा० ॥ वाला एहवा प्रभु गुण गाय
वा रे, वाला उपजे हर्ष अपार रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीवीरजिन स्तवनं ॥

॥ नारे प्रभु नही मानुं, नही मानुरे अवरनी
आण ॥ नारेप्र० ॥ मारे ताहरुं वचन प्रमाण ॥ ना
रेप्रभु० ॥ ए आंकणी ॥ हरी हरादिक देव अनेरा, ते
दीठा जग मांहे रे ॥ नामिनी नरम नृगुटीयें चुट्या,
ते मुजने न सुहाय ॥ नारे० ॥ १ ॥ केइक रागीने
केइक वेषी, केइक लोनी देव रे ॥ केइक मदमाया
मां नरीया, किम करीए तसु सेव ॥ नारे० ॥ २ ॥
मुझापण तेमां नवि दीसे प्रभु, तुजमाहेली तिल मा
त रे ॥ ते देखी दीलडो नवि रीजे, सी करवी तेहनी
वात ॥ नारे० ॥ ३ ॥ तुं गती तुं मती तुं मुऊ प्रीत
म, जीव जीवन आधार रे ॥ रातदिवस स्वपनांतर
तुंहा, तुं माहरे निरधार ॥ नारे० ॥ ४ ॥ अवगुण
सहु उवेखीने प्रभु, सेवक करीने निहाल रे ॥ जग
बंधव ए विनंती मोरी, माहारा सवि डुख दूरें टाल
नारे० ॥ ५ ॥ चोवीशमा प्रभु त्रिनोवन स्वामी, सि
गना नंदरे ॥ त्रिशलाजीनां न्हानडीया प्रभु, तुम

(१६९)

दीठे अती आणंद ॥ नारे० ॥ ६ ॥ सुमति विजय
कवी रायनो रे, रामविजय करजोड रे ॥ उपगारी
अरिहंतजी, माहारा जव जवना बंधोड ॥ नारे० ॥ ७ ॥

॥ अथ कृष्ण देवजीनो बारमासो ॥

॥ प्रथम जिणंद प्रणमुं पाया, जननी मरुदेवीए
जाया ॥ कृष्णदेव धूलेवा नगर राया, जगत गुरु
जिनवर ने जजीए ॥ १ ॥ विषय कषाय कपट तजीए
॥ जगत० ॥ ए आंकणी ॥ कार्तिके केसरीत मलशे,
जनम जनमना दुख हरशे, महारा वंठित सहु फल
शे ॥ जग० ॥ २ ॥ मागसरे मन मोह्युं माहारुं, तुरत द
रिसण थयुं ताहारुं, ताहरी सूरत पर वारुं वारुं ॥ ज
ग० ॥ ३ ॥ पोषे प्रीतलडी पालो, त्रण जुवन माहें
अछुआलो, तुमेठो दीन तणा दयालु ॥ जग० ॥ ४ ॥
माहा सुदि पंचमी दिन आवे, मोरली सहु बंधावे ॥ गु
णी जन राग वसंत गावे ॥ जग० ॥ ५ ॥ फागुणे फा
ग खेलूं तुमहुं ॥ केसर कस्तुरीयें रमहुं ॥ विलेपन
करी सदानमहुं ॥ जग० ॥ ६ ॥ चैत्रे चित्तलागुं चरणे,
फूल गुलाब मुगट नरणे, सेवा तारण ने तरणे ॥ ज
ग० ॥ ७ ॥ वैशाखे फूली वनराई ॥ त्रीजनी आखी
त्रीज आई ॥ महारे केशरीआहुं साची सगाई ॥ जग०

॥ ७ ॥ जेठेंजिन पासे आबुं, सीतल जल लेई नवराबुं,
 पंखो करतां पुन्य पाबुं ॥ जग० ॥ ९ ॥ आषाढे मेघ
 घणा गाजे, ढोल मृदंग तिहां वाजे ॥ एणो दरबारे
 सदा ठाजे ॥ जग० ॥ १० ॥ श्रावणे सरवरियां वरसे ॥
 बपैया मोर दाडुर पीसे ॥ गुणि जन राग मढ्हार
 गासे ॥ जग० ॥ ११ ॥ जाइवे नविक करो नक्ति, परव
 पजूसण करोछुक्ति ॥ पूजाजणाबुंनछे नक्ति ॥ जग०
 ॥ १२ ॥ आश्वयें पूरीजे आसा, घर घर दीपक बहु था
 सा ॥ हरषे गाये रिषनदासा ॥ जग० ॥ १३ ॥ बारे मास
 करुं सेवा ॥ ऋषनदेव मागेतुं मेवा, देजो दीनतणा दे
 वा ॥ जग० ॥ १४ ॥ इति ऋषनदेवनो बारमासोसंपूर्ण
 ॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ जात्रा नवाणु करीए शेत्रुंजा गिरि, जात्रा न
 वाणुं करीए ॥ सहेस कोड नव पातिक बूटे, शेत्रुंजा
 सामो दग नरीए ॥ शे० ॥ जा० ॥ पूरव नवाणु वार
 ॥ शे० ॥ जा० ॥ ऋषन जिणंद समोसरीए, पुमगिरी
 ॥ जा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पुमरिक पद जपो मन हरखे,
 अथ्यवसाय छुन धरीयें ॥ शे० ॥ जा० ॥ सात ठछ
 दोय अछम तपस्या, करी चढीए गिरिवरीयें ॥ शे० ॥
 जा० ॥ २ ॥ पडिकमणा दोय विधिछुं करीए, पाप

पद्मल परिहरीए ॥ शो० ॥ जा० ॥ चुमी संधारो ना
 री तणो संग, दूर थकी परिहरीए ॥ शो० ॥ जा०
 ॥ ३ ॥ एकल आहारीने सचेत परिहारी, गुरु साथें
 पद अनुसरीए ॥ शो० ॥ जा० ॥ कलीकालेए तीर
 थ मोटुं, प्रवहण जिम नर दरीए ॥ शो० ॥ जा०
 ॥ ४ ॥ उत्तम ए गिरिवर सेवंता, पद्म कहे नव त
 रीए ॥ शो० ॥ जा० ॥ ५ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ मालणनोगीत प्रारंभ ॥

॥ संघ पूढे फूल वाढीयें, मालण कवण सो मा
 र्गना फूल ॥ कवण सुगंधा जाणीए, मालण कवण
 सो फूलनो मूल ॥ तुंढे मालण कोण राजनी ॥ १ ॥
 चंपक केतकी केवडो, मालण सेवंत्रीने जाशूल मा
 लती मलकंतो मोगरो, मालण जाई अशोक अ
 मूल ॥ तुंढेमाल ॥ २ ॥ कवणेरे चंपो वावीउं,
 मालण कवणे गुंथ्या एना फूल ॥ नविक मला
 रे लइ मोलव्या, मालण केणे चढाव्या अमूल, सा
 ची मालण जिनराजनी ॥ ए आंकणी ॥ ३ ॥ मा
 लियें चंपो वावीउं, मालण चतुरें गुंथ्या एना फूल ॥
 नविक मलारें लइ मोलव्या, मालण प्रचुने चढाव्या
 अमूल ॥ सा० ॥ ४ ॥ कहेरे मालण सुणो नविजनो

एणी वाडीए ठे बहु फूल ॥ सरस सुगंधा जाणीए,
 तेहमां चंपक कली ठे अमूल ॥ सा० ॥ ५ ॥ शेंत्रुं
 जा गिरिवर जेटवा, मालण आव्यो ठे कहुनो संघा ॥
 देशावडी श्रावक वशें, तेहमां संघमुखी मानसिंघ ॥
 सा० ॥ ६ ॥ नरजव दोहिलो पामीने, मालण पूज
 वा आदिजिणंद ॥ सफल जनम करी सुद्वहो, माल
 ण लेशे परमानंद ॥ सा० ॥ ७ ॥ सत्तरजेद सुविधें
 करी, मालण सामी वडल सोनाय ॥ सौनाग चंड
 सुगुरु लही ॥ मालण स्वरूपचंड गुण गाय ॥ सा० ॥ ८ ॥

॥ अथमहावीरजिनस्तवनं ॥

॥ वीरकुमरनी वातडी केने कहियें ॥ हारे केने कहियें
 रे केने कहियें ॥ नवी मंदिर बेसो रहियें ॥ हारे सु
 कुमाल शरीर ॥ वी० ॥ १ ॥ एआंकणी ॥ बालपणा
 थी लामको नृपनाव्यो, हारे मली चोशठ इंडे मला
 व्यो ॥ इंझाणी मली दुजराव्यो, हारे गयो रमवा
 काज ॥ वी० ॥ २ ॥ ठोरु उठांठलां लोकना केमर
 हियें, हारे एनी मावडीनेशुंकहियें ॥ कहियेंतो अदे
 खां थड्यें ॥ हारे नाशि आव्यांवाल ॥ वी० ॥ ३ ॥
 आमलकी क्रीडा वशें वींटांणो, हारे मोटोनोरींग रो
 बनराणो ॥ वीरे हाथे जालीने ताण्यो, हारे काढी ना

ख्यो दूर ॥ वी० ॥ ४ ॥ रूप पिशाचनु देवता करी
 चलियो, हारे मुऊ पुत्रने छेइ उठलियो ॥ वीर मु
 छि प्रहारे बलियो ॥ हारे सांजलीयेँ एम ॥ वी०
 ॥ ५ ॥ त्रिशला माता मोजमां एम केहेती, हारे
 सखीउने ओलंनो देती ॥ खिणखिण प्रछु नामज छे
 ती ॥ हारे तेडावे बाल ॥ वी० ॥ ६ ॥ वाट जोवंतां
 वीरजी धरे आब्यां, हारे माता त्रिशलाए नवरा
 व्यां ॥ खोले बेसारि दुलराब्यां ॥ हारेआंलिगन दे
 त ॥ वी० ॥ ७ ॥ जोवन वय प्रछु पामतां परणावे,
 हारे पढी संजमछुं दीजलावे ॥ उपसर्गनी फोज ह
 टावे ॥ हारे लीधुं केवल ज्ञान ॥ वी० ॥ ८ ॥ कर्म
 शून्यतप जांखियो जिनराजें, हारे त्रणलोकनी ठ
 कुराई ठाजे ॥ फूल पूजा कही शिव काजें ॥ हारे न
 विने उपगार ॥ वी० ॥ ९ ॥ शाता अशाता वेदनी ह
 य कीधुं, हारे आपे अहय पद लीधुं ॥ गुनवीरनुं
 कारज सीधुं ॥ हारे जांगे सादि अनंत ॥ वी० ॥ १० ॥

॥ अथ श्रीपञ्चसणनो स्तवन ॥

॥ आखडीयेँ अमे आजशत्रु जो दीगो रे ॥ ए दे
 शी ॥ सुणजो साजन संत, पञ्चसण आब्या रे ॥ तुमें
 पुण्य करो पुण्यवंत, नविक मन जाब्या रे ॥ वीरजिणे

सर अति अलवेसर ॥ वालामारा ॥ परमेश्वर एम बोले
 रे ॥ पर्वमांहे पञ्चसण मोटा ॥ अवर नआवे तोले
 रे ॥ पञ्च० ॥ तुमे० ॥ न० ॥ १ ॥ चौपगमांहे जिम
 केशरी मोटो ॥ वा० ॥ खगमां गरुड ते कहिये रे ॥ नदी
 मांहे जिम गंगा मोटी, नगमां मेरु लहिये रे ॥ पञ्च० ॥
 २ ॥ जूपतीमां जरतेसर जांख्यो ॥ वा० ॥ देव मांहे
 सुरेंद्रे ॥ तीरथमां शत्रुंजोदाख्यो ॥ ग्रहगणमां जेम
 चंद्रे ॥ पञ्च० ॥ ३ ॥ दसरा दीवालीने होली ॥ वा० ॥
 आखात्रीज दीवासो रे ॥ बलेव प्रमुख बहुला ठे
 बीजा, पण एमुक्तीनो वासो रे ॥ पञ्च० ॥ ४ ॥ तेमाटे
 अमार पजावो ॥ वा० ॥ अछाई महोदव कीजे रे ॥ अ
 छम तप आधिकाइये करीने ॥ नरनव लाहो लीजे
 रे ॥ पञ्च० ॥ ५ ॥ ढोल ददामा जेरी नफेरी ॥ वा० ॥
 कल्पसूत्रने जगावो रे ॥ जांऊरना ऊमकारकरीने ॥ गो
 रीनी टोली मली आवो रे ॥ पञ्च० ॥ ६ ॥ सोनारूपा
 ने फूलडे वधावो ॥ वा० ॥ कल्पसूत्रने पूजो रे ॥ नव
 वखाण विधिये सांजजतां ॥ पापमेवासी धूजो रे ॥
 पञ्च० ॥ ७ ॥ ए अछाइनो मेहोदव करतां ॥ वा० ॥ बहु
 जिन जग उदखा रे ॥ विबुध विनीत वर सेवक एह
 थी ॥ नवनिधि रुद्रि सिद्धि मढ्या रे ॥ पञ्च० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ घृतकलोल पार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ घृतकलोल प्रभु पासजिणंद, अश्वसेन राया
 कुल उपना दिणंद ॥ मोरा पासजी होलाल, प्रभु
 सुख देखी मारो मन हीसे राज ॥ ए आंकणी ॥
 माता वामादेवी जायो पुत्र रतन, जेणे नाग नागणी
 ना कीधाढे जतन ॥ मोरा० ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ कमठ
 नो मद गाढ्यो वाले कीधा रूडा काज, कलीकाल
 माहें जेनो परतोढे आज ॥ मो० ॥ मारग चुजाने
 वालो आपेढे साद, वली आपे संपदाने टाले विष
 वाद ॥ मो० ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ बेडीवं कापेने वालो
 तारेंढे जिहाज, समरेयां आपे वालो वंछित काज ॥
 ॥ मो० ॥ देस विदेसी आवे संघ अनेक, सुथरीमां
 वास कीधो राखी वाले टेक ॥ मो० ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥
 मोणसी अंचलजीनो जात्रानो मन्न, संघ लइने आ
 व्या सुथरी प्रसन्न ॥ मो० ॥ संवत अढार बेआसी
 रें जाण, फागण वदि चोथे गायो गुण खाण ॥ मो०
 ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ जेटया श्री घृत कलोल जिनरा
 ज, पूजा सत्तर जेदी करे गुन काज ॥ मो० ॥
 मेघ शेखर गुरुना सुपशाय, सिष्य गुलाब शेखर गु
 णगाय ॥ मो० ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ रुषनजिन स्तवन ॥

॥ आज उजमठे रे अधिको, जोवा दरिसण आ
दिसरको ॥ ते मुने लागे रे मीतुं, प्रभुजीतुं दरिसण
ज्यारे दीतुं ॥ केशर चंदन रे लीजे, घसी करी जिन
जीनी पूजा कीजे ॥ आ० ॥ १ ॥ पूजाना फलठे
रे रूढा, तेहथी आठ कर्म थाये चकचूरा ॥ जावें
जावनारे जावो, वली प्रभुजीना गुण हखें गावो ॥
आ० ॥ २ ॥ आजूनी आंगीनो लटको, मारा प्रभुजीना
मुखनो मटको ॥ मटकें मोह्या रे इंड, वदन कमल
जाणु पूनम चंड ॥ आ० ॥ ३ ॥ मीठडी मुरति रे
तारी, ते घणुं मुऊनें लागे ठे प्यारी ॥ नाजीराया
नो रे नीको, महारा प्रभुजीनो सबलो टीको ॥ आ०
॥ ४ ॥ विवेक विजयनो रे शिष्य, हरपे हुं प्रणमुं
निश दीश ॥ पूर्व पुण्ये रें पामी, जेटयो तुं मोरा अं
तरजामी ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिनन स्तवनं ॥

॥ लय लागीरे लयलागीरे, गोडी पासजिणंदखुं लय ला
गी ॥ आतम रूपीने अकल सरूपी, लोकालोक प्रका
शी रे ॥ गो० ॥ १ ॥ चोशठ इंड करे तोरी सेवा, इंडा
णी ललि ललि पाय लागी रे ॥ गो० ॥ २ ॥ ज्ञानवि

मलसूरी एणी परें बोले, प्रभु आवागमण निवारी रे ३

॥ अथ शान्तिजिन स्तवनं ॥

॥ तुं मेरे मनमे तुं मेरे दिलमे, नाम जपू पल पल
में हो ॥ प्रभुजी ॥ तुं० ॥ शान्तिजिणोसर साचो सा
हेव, शान्तिकरण एक पलमें हो प्रभुजी ॥ तुं० ॥ १ ॥
निरमल ज्योति वदन तुज संपद, निकस्यो ज्युं चंद
बादलमें हो प्रभुजी ॥ तुं० ॥ २ ॥ नव नव नमतां
में दरिण पायो, आशा पूरो एक पलमें हो प्रभु
जी ॥ तुं० ॥ ३ ॥ जिनरंग कहे प्रभु शान्तिजिणोसर,
देख्यो ज्युं देव सकलमें हो प्रभुजी ॥ तुं० ॥ ४ ॥

॥ अथ अरिहंत स्तवनं ॥

॥ प्रभुजी रे प्रभुजी नाम जपु मन माहरे, पण
सेवकनी चित्त नही को ताहरे ॥ नीरागी जिनराज
निरागी गुं मले, तुमसेंती एकवार थाए नव दुःख
टले ॥ १ ॥ रूप रहित जिनराज कहो किहां देखी
एं, विण देखे दोय नेत्र सफल केम लेखिएं ॥ जेह
ने रे नेत्र हजार ते पण ताहरो, देखे नही देदार
किस्यो बल माहरो ॥ २ ॥ पंचम ज्ञान प्रकाश शुद्ध होय
जेहने, अरिगंजन अरिहंत प्रगट ठे तेहने ॥ तेहनो
तो लव लेस नहीको ऽणकार्लें, एहवो को न उपाय

जे जिन तुमथी मजे ॥ ३ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म त
 ए वस हूं पड्यो, जग गुरु ताहारो धर्म महारे कर
 नवी चड्यो ॥ आपणपे अहंकार तणे वस वाहियो,
 तेणे करी तुम दरिसण उदय नवी आवियो ॥ ४ ॥ तरण
 तारण जिहाज समो जिनजी मढ्यो, जागीमननी त्रांति
 सहु संशय टव्यो ॥ क्रिया डुकर कार न थाए आज
 ने, सदगती लहीएं ताम प्रसादें राजने ॥ ५ ॥ अ
 मची वीनती एह तमें अवधारजो, कठिनते आठे
 कर्मने दूरें वारजो ॥ वीनती वाचक नक्ति सागर
 नी जाणवी, तिम करो त्रिचुवन स्वामी सेवा तारी
 पामवी ॥ ६ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ रुषजजिन स्तवनं ॥

॥ मोसें नेह धरी महाराज आज राज दर्श दी
 जीए, दर्श दीजीए रे नव दुख ढीजीए ॥ मो० ॥ ए
 टेक ॥ तुम झानी जगत तात चात तुम सरन री
 जीए, शरन रीजीए तो नव दुख ढीजीए ॥ मो०
 ॥ १ ॥ नरप नाजीजीके नंद चाहत इंद चंद विंद,
 जयो जयो जिणंद नित वंद कीजीए ॥ मो० ॥ २ ॥
 तुम धूलेवा नाथ मोक्ष साथ अचल आदब्रह्म, अ
 ही हाथ प्रभु रतनको उधार कीजीए ॥ मो० ॥ ३ ॥

(१७९)

॥ अथ प्रजाति स्तवनं ॥

॥ जाग जाग रयण गई, जोर जयो प्यारे ॥ पंच
कूं प्रपंच कर, वसकर यारे ॥ जागजाग रयण गई,
जोर जयो प्यारे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ तृष्णाना में मी
न मरे, जोगमे मत्तंगा ॥ श्रवणमें कुरंग मरे, नयन
मे पतंगा ॥ जा० ॥ २ ॥ वासनामें जमर मरे, ना
शा रस छेता ॥ एक एक इंडीसंग, मरे जिवं केता ॥
जा० ॥ ३ ॥ पंचके पडयो तुं फंद, क्युं कर वस
आवे ॥ मार तुं मन इह्या जूत, जिवं निरंजन पा
वे ॥ जा० ॥ ४ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथप्रजातिस्तवनं ॥

॥ तूंहि नाथ हमारो रे ॥ जिनपति, तूंहि नाथ हमा
रो ॥ योग खेमंकर जविक सकलके, सेवक दैयामांहे
धारोरे ॥ जि० ॥ तूं० ॥ १ ॥ एटेक ॥ जोगुन पाए
नही सो मिलावत ॥ पाए गुन कूं सुधारो ॥ अननि
राम कलि मज करो दूरें, अब मोहे पार उतारो
रे ॥ जि० ॥ तूं० ॥ २ ॥ त्रिभुवन नाथ सार करो मोरी,
करुणा नजर निहालो ॥ पासचिंतामण जानुचंदकी,
एही विनती अवधारो रे ॥ जि० ॥ तूंहि० ॥ ३ ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ सिद्धाचल वंदोरे नर नारी, हारे नरनारी हो
नर नारी, सिद्धाचल वंदोरे नर नारी ॥ नाजीराया
मरु देवा नंदन, रूपनदेव सुख कारी ॥ सि० ॥ १ ॥
पुंमरिक पमुहा मुनिवर सीधा, आत्म तत्व विचारी
॥ सि० ॥ २ ॥ शिव सुख कारण नवदुःख वारण,
त्रिचुवन जग हितकारी ॥ सि० ॥ ३ ॥ समकित
गुह्य करण ए तीरथ, मोह मिथ्यात निवारी ॥ सि०
॥ ४ ॥ ज्ञान उद्योत प्रभु केवल धारी, नक्ति करुं
एक तारी ॥ सि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ केशरीयाजीनो स्तवनं ॥

॥ नमरो उमरे रंग मोहोलमारे ॥ एदेशी ॥ आज स
फल दिन माहरोरे, बाद्यां श्री धूलेव राय रे ॥ केश
रीयोजी नेटियो रे ॥ मेवाड वागड विसें शोजतो
रे, बावन जिनालो प्रासाद रे ॥ के० ॥ १ ॥ मेरु
सम उत्तंग देहरो रे, कोरणी अतिहि श्रीकार रे
॥ के० ॥ थंजे थंजे शोजे पूतली रे ॥ जाणीयें देव
विमान रे ॥ के० ॥ २ ॥ सुवर्णनो दंम कलस अढे
रे ॥ रूप कपाट जोडि दोय रे ॥ के० ॥ रत्ने जडित
सुवर्ण अंगिका रे, तेजें जलामल जाण रे ॥ के० ॥

॥ ३ ॥ प्रचुजीनी मूरति मोहनी रे, तृप्ति न पामे नय
 ण रे ॥ के० ॥ महिमावंत मोटा तुमे रे, जग सहु
 नमे जस पाय रे ॥ के० ॥ ४ ॥ नित पूजे प्रचु जाव
 गुं रे ॥ वंठित फल जहे ताम रे ॥ के० ॥ आस्या
 धरीने हुं आवीउ रे, द्यो दरिसण माहाराज रे ॥ के०
 ॥ ५ ॥ देसावरी संघ आवे घणा रे, यात्रा करण
 नित मेव रे ॥ के० ॥ केशरनां कीच मची रह्या रे,
 नित होए मंगल माल रे ॥ के० ॥ ६ ॥ गोमुख य
 ह् चकेशरी रे ॥ शासन देवता एह रे ॥ के० ॥ क
 लियुगमां साचो धणी रे, परतापूरण द्वार रे ॥ के०
 ॥ ७ ॥ शैठ नरसिंहनाथाना संघमा रे ॥ वर्तेजे जय
 जय कार रे ॥ के० ॥ संवत उगणीश बारोत्तरेरे,
 वैशाख वदिबीज सार रे ॥ के० ॥ ८ ॥ तिणे दिन प्र
 चुजीने वांदिया रे, संघ सर्वे गह घट रे ॥ के० ॥ पूजा
 साहमी वहुल नित प्रते रे, खरचीने जाहो लोध रे
 ॥ के० ॥ ९ ॥ आठ दिवस करी जातरा रे, संघ स
 हू हरपेण रे ॥ के० ॥ सोनाग्येंडुशिष्य देवचंइने
 रे, यात्रा यई सुख कार रे ॥ के० ॥ १० ॥ इतिसंपूर्ण ॥

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ मेंनही जोण्यो नाथजी, मोसुं दूर पठाया ॥ पीठें सें

वर्द्धमानजी, शिवमेहेल सधाया ॥ में० ॥ १ ॥ वच
 न तुमारो मानके, में दीक्षा लीनी ॥ लोक लाज
 सब त्यागके, घर घर जीक्षा कीनी ॥ में० ॥ २ ॥ दर
 स तुमारो देखतो, रहेतो रंग रातो ॥ वचन तुमारो
 शिर धरी, गुण तोरा गातो ॥ में० ॥ ३ ॥ जिहांजि
 हां संशय उपजे, तोशुं पूछी लीजें ॥ ज्ञान सुधारस
 की कथा, कहो कोणशुं कीजे ॥ में० ॥ ४ ॥ सही स
 ही तूं वीतरागहे, नही रागकी रेखा ॥ शत्रु मित्र ते
 रे सम नए, सोमे नजरें देखा ॥ में० ॥ ५ ॥ शु
 कलध्यान श्रेणे चढ्या, गुरु गौतम राया ॥ अनित्य
 जावना जावता, केवल पद पाया ॥ में० ॥ ६ ॥ पूर
 न ब्रह्म प्रगट नया, नवि जाये ठिपाया ॥ रूपचंद नक्त
 करी, चरणेशिर लाया ॥ में० ॥ ७ ॥ इतिवीरजिनस्तवनं

॥ अथ श्रीवृद्धचैत्यवंदन प्रारंभः ॥

॥ ढाल पेहेली ॥ केवलनाणी श्रीनिरवाणी, सागर म
 हाजस विमल तेजाणी ॥ सर्वानुनूति श्रीधर गुण
 खाणी, दत्त दामोदर वंदूं प्राणी ॥ १ ॥ सुतेज स्वामी
 मुनिसुव्रत जाणी, सुमतिने शिवगति पंचम नाणी ॥
 अस्तांग नेमीसर अनिल तेजाणी, जशोधर सेवो मन
 माहिं आणी ॥ २ ॥ कृतारथ जपतां नवि होए हाणी,

धमीसर पाम्या शिवपुर राणी ॥ शुद्धमति शिवकर
 संदन ठाणी, संप्रतिना गुण गाए इंडाणी ॥ ३ ॥
 वाचक मूला कहे उगते नाणी, तवन नणो जिम
 थाउं नाणी ॥ ए चोवीशी नित्य नित्य गाणी, मुक्ति
 तणां सुख जिम व्यो ताणी ॥ ४ ॥ ढाल बीजी ॥
 आदें अजितज रे, संनव अजिनंदन नणुं ॥ श्री सु
 मतिज रे, पद्मप्रनजीना गुण थुणुं ॥ श्री सुपारस
 रे, चंडप्रन जग जाणीयें ॥ सुविधि शीतल रे, श्रेयां
 स हरखे वखाणीयें ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ वखाणीयें श्री
 वासपूज्य, विमल अनंत धर्म शांति ए ॥ कुंथु अर
 मल्लि मुनि सुव्रत, नमि नेम ध्याउं चित्त ए ॥ सूर
 धीर पार्श्व वीर, वर्तमानें जिनवरा ॥ कर जोडी वाच
 क नणो मूला, स्वामी सेवक सुखकरा ॥ ५ ॥
 ॥ ढाल त्रीजी ॥ पद्मनाभ सूरदेव, सुपार्श्व स्वयंप्रन
 होई ॥ सर्वानुनूति देवसुत, उदय पेढालज जोई ॥
 ॥ १ ॥ पोटिल सत्कीर्ति, मुनिसुव्रत अमम निःक
 षाय ॥ निपुलायक निर्मम, चित्रगुप्ति वंदूं पाय ॥ २ ॥
 समाधि सुसंवर, जशोधर विजय मल्ली देव ॥ अनंत
 वीरज नड्कृत, तेहनी कीजें सेव ॥ ३ ॥ अनागत
 जिनवर, होशे तेहनां नाम ॥ नणो वाचक मूला,

तेहने करुं प्रणाम ॥ ४ ॥ ढाल चोथी ॥ माहाविदे
 ह पंच मजार, प्रत्येकें जिन चार ॥ सीमंधर जुगमं
 धर. बाहु सुबाहु अ सुखकर ॥ १ ॥ सुजात स्वयं
 प्रज स्वामी, उसजानन लेहुं नामी ॥ अनंतवीरज
 देव, सूरप्रभु करुंअ सेव ॥ २ ॥ विशाल वज्रंधर
 साहु, चंझानन चंझबाहु ॥ जुजंग ईश्वर गाउं, नेमी
 प्रभु चित्त ए लाउं ॥ ३ ॥ वीरसेन महानइ वंदूं, देव
 जसा दीठे आनंदूं ॥ अजितवीरिय वंदन, शाश्वता
 रुषजाचंझानन ॥ ४ ॥ वर्द्धमान वारिषेण ईश, ए दु
 आ जिन चोवीश ॥ एवा ठनुं ए जिनवर, वाचक
 मूला कहे सुखकर ॥ ५ ॥ ढाल पांचमी ॥ हवे पा
 यालें लोक मख, जिहां असुर कुमार ॥ लाख चोश
 ठ जिनचुवनअ ठे, तिहां करुं जूहार ॥ १ ॥ नागकु
 मारमांहे कहा, तिहां लाख चोरासी ॥ एता जिन
 हर तिहां नमुं, थाउं समकितवासी ॥ २ ॥ सोवन
 कुमार मख लाख, बढुतेर प्रासाद ॥ ठनुं लाख वायु
 मख, सुणियें सुरनाद ॥ ३ ॥ दीपकुमार दिशाकुमार,
 वली उदधिकुमार ॥ विद्युत स्तनित कुमार अने,
 वली अग्निकुमार ॥ ४ ॥ ए ठए थानक जाणियें,
 प्रत्येकें जिनहर ॥ ठहुंतेर ठहुंतेर लाख तिहां, नवि

अण जिनसुखकर ॥ ५ ॥ एवंकारें सवि मली, बहु
 तेर तिहां लाख ॥ साठ कोडी जिनहर नमुं, श्री जि
 नवर जांख ॥ ६ ॥ लाख साठ निव्यासी कोडी, अने
 तेरसें कोडी ॥ जिन पडिमा श्रीजिन तणी, वंदूं बे
 कर जोडी ॥ ७ ॥ असंख्या व्यंतर जोइसी, असं
 ख्या जिनहर ॥ असंख्य पडिमा जिन तणो, नमिय
 नहिं दुर्गति मर ॥ ८ ॥ वाचकमूला कहे देव, देउ
 सुमति सदा मुज ॥ जिनवचनें हुं लीन थइ, गाउं
 जिनजी तुज ॥ ९ ॥ ढाल ठछी ॥ सोहम ईशान स
 नतकुमार ए, माहिंद बंनरे लांतक सार ए ॥ ब्रुटक ॥
 सार सुक अनें सहसारह, आनत प्राणत आरण ॥
 अचुत नव ग्रैवेयक त्रिक तिहां, पंच अनुत्तर तार
 ए ॥ अनुक्रमें प्रासाद कहीयें, लाख सहस सत सं
 खया ॥ बत्तीस अछावीस बारह, अछ चउ लाख
 अस्कया ॥ १ ॥ पन्नास चालीस ठ सहस जिन हरा,
 दोदो दोढज दोढज सतवरा ॥ ब्रुटक ॥ वरा सत्तवर
 इग्यारोत्तर, सत्तोत्तरसो जाणीयें ॥ एकशो उपर
 पंच अनुत्तर, अनुक्रमें वखाणीयें ॥ सवे मजी जि
 नहर जिनहर, लाख चोरासी साख ए ॥ सहस स
 ताणुं आगला, तिहां वीशने त्रण दाख ए ॥ २ चा

ल ॥ एकसो कोडी रे, बावन कोडीए ॥ लाखचोरा
 णुं रे, संख्या जोडीए ॥ त्रुटक ॥ जोडीए चोशठ स
 हस एकशो, चालीशें तिहां आगली ॥ जिनप्रासाद
 एकशो अशिअ लेखें, वंदूं प्रतिमाऊजली ॥ चैत्यसं
 ख्याउध्वं लोकें, वीर वचनविख्यात ए ॥ वाचक मू
 ला कहे नणजो, स्तवन ए परजात ए ॥ ३ ॥
 ॥ ढाल सातमो ॥ वेयढ गिरि सिंतर सय जिनहर,
 वृषधरना तहां त्रीश जी ॥ कुरुद्रुमना दश जिनहर
 बोल्या, गजदंतें तिहां वीशजी ॥ १ ॥ अशिअ ते
 जिनहर कुरुद्रुम परिधें, अशिअ वखारे जाणुं जी ॥
 मेरुतणा पंचासी जिनहर, अखुकारें चारवखाणुंजी
 ॥ २ ॥ मानुषोत्तर पर्वत तिहां चारज, नंदीसरना वी
 शजी ॥ कुंमल रुचक तिहां चार चार जिनहर, रूप
 नादिक तिहां ईशजी ॥ ३ ॥ पंच सया इग्यारें अ
 धिका, जिनहर तिठें लोकें जी ॥ पडिमा एकशठ स
 हस चारसैं, बोली सघले थोकें जी ॥ ४ ॥ अधो
 उध्वने तिठें लोकें, सवे मली कोडी आठेंजी ॥ ला
 ख ठप्पन्नने सहस सत्ताणुं, पणसय चोत्रीश पाठें
 जी ॥ ५ ॥ जिन पडिमा पन्नर सैं कोडी, बेतालीश
 वली कोडी जी ॥ लाख पंचावन सहस पणवीस, प

एसय चालीश जोडी जी ॥ ६ ॥ एता तवन नणे
 जेनावें, प्रहर उगमते सूरें जी ॥ वाचक मूला कहे
 गुण गाता, दुर्गति नासे दूरें जी ॥ ७ ॥ ढाल आव
 मी ॥ अछावय समेत शिखरगिरि ॥ साजिनजिअ ॥
 रेवत गिरि सेतुंज ॥ गजपद धम्म चक्र कहुं ॥ सा० ॥
 वैजारगिरि उत्तंग ॥ १ ॥ रावते कुंजरावते ॥ सा० ॥
 तिहुंअणगिरि ग्वालेर ॥ काशी अवंती जाणीयें ॥
 सा० ॥ नागोर जेसलमेर ॥ २ ॥ सोरिपुर हड्डिणाउ
 रे ॥ सा० ॥ अवल ईरावण पास ॥ पीरोज पुरें जुअ
 ड जलो ॥ सा० ॥ फलविधि पूरे आश ॥ ३ ॥ वि
 कानेरने मेडते ॥ सा० ॥ सीरोही आबू शृंग ॥ राण
 ग पुरने सादडी ॥ सा० ॥ वरकांणे मनरंग ॥ ४ ॥
 नीलमालने कोटडे ॥ सा० ॥ बाहडमेर मजार ॥
 रायधणपुर रलिआमणुं ॥ सा० ॥ शांतिनाथ दयोड
 जूहार ॥ ५ ॥ साचोर जालोर राडें ॥ सा० ॥ गो
 डीपुरवर पास ॥ पाटण अमदावाद वली ॥ सा० ॥
 संखेसर दीजें नास ॥ ६ ॥ अमीऊरे नवपल्लवे ॥ सा० ॥
 नवरखंम थलाडें ठाम ॥ तारंगे बुरहानपुरें ॥ सा० ॥
 चंदूं माणक शाम ॥ ७ ॥ खंजायतने तारापुरें
 ॥ सा० ॥ मातरने गंधार ॥ लोमण चिंतामणि व

रुं ॥ सा० ॥ सूरत मनोऽ जूहार ॥ ८ ॥ देवक पा
 टण देवगिरि ॥ सा० ॥ नवेनगर वंदी जोय ॥ दीवा
 दिक सवि बंदरे ॥ सा० ॥ अंतरिक सिरि पुर होय ॥
 ए ॥ वडनगरने मुंगरपुरें ॥ सा० ॥ इमर मालव दे
 श ॥ कढ्याणक जिहां जिन तणुं ॥ सा० ॥ मन सूखें
 प्रण मेस ॥ १० ॥ गाम नगर पुर पाटणे ॥ सा० ॥ जिन
 मूरति जिहां होय ॥ वाचक मूला कहे मुऊ ॥ सा० ॥
 वंदतां शिवसुख होय ॥ ११ ॥ कलश ॥ ठनुंए जि
 नवर ठनुंए जिनवर, अधो ऊर्ध्वने लोक तीर्थे जा
 णुं ए ॥ सासय असासय जैनपंडिमा ते सवे वखा
 णुं ए ॥ गच्छविधिपद् पूज्य परगट श्री धर्ममूर्ति सू
 रींहु ए ॥ वाचकमूला कहे नणतां, रुद्रिचि आणं
 हु ए ॥ १ ॥ इति वृक्षचैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ सम्यक्तना सडसठ बोलनी सङ्गाय प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ सुकृत वह्निकादंबिनी, समरी सर
 सति मात ॥ समकित सडसठ बोलनी, कहिशुं मधु
 री वात ॥ १ ॥ समकित दायक गुरुतणो, पञ्चवया
 र न थाय ॥ जब कोडाकोडे करी, करतां सर्व उपा
 य ॥ २ ॥ दानादिक किरिया न दियें, समकित वि
 ण शिवशर्म ॥ तेमाटे समकित वडूं, जाणो प्रवचन

मर्म ॥ ३ ॥ दर्शन मोह विनाशथी, जे निर्मल गुण
 ठाण ॥ ते निश्चय समकित कह्यो, तेहना ए अहि
 ठाण ॥ ४ ॥ ढाल ॥ देइ देइ दरिसण आपणु ॥ ए
 देशी ॥ चउ सदहणा तिलिंग ठे, दशविध विनय
 विचारो रे ॥ त्रिण शुद्धि पण दूषण, आठ प्रनाविक
 धारो रे ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ प्रनाविक अड पंच नूषण,
 पंच लक्ष्ण जाणियें ॥ पट जयण पट आगार जा
 वन, ठविहा मन आणियें ॥ पट ठाण समकित
 तणा सडसर, जेद एह उदार ए ॥ एहनो तत्व
 विचार करतां, लहीजे जवपार ए ॥ ६ ॥ ढाल ॥
 चहु विह सदहणा तिहां, जीवादिक परमढो रे ॥
 प्रवचनमां जे जाषिया, लीजे तेहनो अढो रे ॥ ७ ॥
 ॥ त्रुटक ॥ तेहनो अर्थ विचार करियें, प्रथम सदह
 णा खरी ॥ बीजी सदहणा तेहना जे, जाण मुनि
 गुण जवहरी ॥ संवेग रंग तरंग जीजे, मार्ग शुद्ध कहें
 बुधा ॥ तेहनी सेवा कीजियें जिम, पीजियें समता
 सुधा ॥ ८ ॥ ढाल ॥ समकेत जेणे ग्रही वमिक,
 निन्हव ने अहंदा रे ॥ पासळाने कुशीजिया, वेष
 विमंबक मंदारे ॥ ९ ॥ त्रुटक ॥ मंदा अनाणी दूर
 ठंनो, त्रीजी सदहणा ग्रही ॥ परदर्शनीनो संग त

जियें, चोथी सदहणा कही ॥ हीणातणो जे संग
 न तजे, तेहनो गुण नवि रहे ॥ ज्यूं जलधि जलमां
 नव्यूं गंगा, नीर लुणपणू लहे ॥ १० ॥ ढाल ॥ क
 पूर होवे अति कजलुं रे; ए देशी ॥ त्रण लिंग सम
 कित तणा रे, पहिलो श्रुतअनिजाप ॥ जेहथी श्रो
 ता रस लहे रे, जेवो साकर डाख रे ॥ प्राणी धरियें
 समकित रंग, जिम लहियें सुख अजंग रे, प्राणी०॥
 ए टेक ॥ ११ ॥ तरुण सुखी स्त्री परिवस्यो रे, चतुर
 सुणे सुरगीत ॥ तेहथी रागें अति घणो रे, धर्म
 सुण्यानी रीत रे ॥ प्राणी०॥ १२ ॥ नूख्यो अटवी क
 तस्यो रे, जिम द्विज गेवर चंग ॥ इहे तिम जे धर्म
 ने रे, तेहिज बीजूं लिंग रे ॥ प्राणी० ॥ १३ ॥ वैया
 वच्च गुरु देवनूं रे, त्रीजुं लिंग उदार ॥ विद्या साध
 क तणि परें रे, आलस नविय लगार रे ॥ प्राणी०
 ॥ १४ ॥ ढाल ॥ प्रथम गोवालातणो नवेंजी ॥ एदेशी ॥
 ॥ अरिहंत ते जिन विचरता जी ॥ कर्म खपी दुआ
 सिद्ध ॥ चेइय जिण पडिमा कही जी, सूत्र सिद्धां
 त प्रसिद्ध ॥ चतुर नर समजो विनय प्रकार, जिम
 लहियें समकित सार ॥ चतुर० ॥ १५ ॥ धर्म खि
 मादिक नाखिउं जी, साधु तेहना गेह ॥ आचार्य

आचारना जी, दायक नायक जेह ॥ चतुर० ॥ १६ ॥
 उपाध्याय ते शिष्यने जी, सूत्र जणावण द्वार ॥ प्र
 वचन संघ वखाणियें जी, दरसण समकित सार ॥
 चतुर० ॥ १७ ॥ जगति बाह्य प्रतिपत्तिथी जी, हृद
 य प्रेम बहुमान ॥ गुण शुति अवगुण ठांकवा जी,
 आशातननी हाण ॥ चतुर० ॥ १८ ॥ पांच जेद ए
 दश तणो जी, विनय करे अनुकूल ॥ सीचे तेह सु
 धा रसैं जी, धर्म वृद्धनूं मूल ॥ चतुर० ॥ १९ ॥
 ॥ ढाल ॥ धोबीडा तूं धोए मननूं धोतीयूं रे ॥ ए देशी ॥
 ॥ त्रण शुद्धि समकित तणी रे, तिहाँ पहिली मन
 शुद्धि रे ॥ श्री जिनने जिनमत विना रे, फूठ सकल
 ए बुद्धि रे ॥ चतुर विचारो चित्तमां रे ॥ ए टेक ॥ २० ॥
 जिन जगतें जे नवि थयूं रे, ते बीजाथी नवि थाय
 रे ॥ एवुं जे मुख जाखियें रे, ते वचन शुद्धि कहिवाय
 रे ॥ चतुर० ॥ २१ ॥ ठेद्यो जेद्यो वेदना रे, जे सहतो
 अनेक प्रकार रे ॥ जिण विण पर सुर नवि नमे रे,
 तेहनी काया शुद्ध उदार रे ॥ चतुर० ॥ २२ ॥
 ॥ ढाल ॥ मुनि जन मारगनी ॥ ए देशी ॥ समकित
 दूषण परिहरो, तेमां पहिली ठे शंका रे ॥ ते जिन
 वचनमां मत करो ॥ जेहने समनृप रंका रे, समकित

दूषण परि हरो ॥ ए टेक ॥ २३ ॥ कंखा कुमतनी
 वांठना, बीजुं दूषण तजियें ॥ पामी सुरतरु परगडो
 किमबाऊल नजियें ॥ समकित० ॥ २४ ॥ संशय
 धर्मना फलतणो, वित्तिगिह्या नामे ॥ त्रीजुं दूषण प
 रिहरो, निज गुन परिणामे ॥ समकित० ॥ २५ ॥
 मिथ्यामति गुण वर्णनो, टालो चोथो दोष ॥ उन्मा
 रगि शुणतां दुवे, उनमारग पोष ॥ समकित० ॥ २६ ॥
 पांचमो दोष मिथ्यामती, परिचय नवि कीजे ॥ इम
 गुन मति अरविंदनी, नली वासना लीजे ॥ सम
 कित० ॥ २७ ॥ ढाल ॥ जोलिडा हंसारें विषय न
 राचीयें ॥ ए देशी ॥ आठ प्रजाविक प्रवचनना कहा
 पावयणी धुरि जाण ॥ वर्तमान श्रुतना जे अर्थनो,
 पार लहे गुण खाण ॥ धन धन शासन मंमन मुनि
 वरा, ए टेक० ॥ २८ ॥ धर्म कथी ते बीजो जाणिये,
 नंदिखेण परि जेह ॥ निज उपदेशेरे रंजे लोकने, जं
 जे हृदय संदेह, धन धन० ॥ २९ ॥ वादी त्रीजोरे
 तर्क निपुण जण्यो, मल्लवादी परि जेह ॥ राज द्वारे
 रे जयकमला वरे, गाजंतो जिममेह, धन धन० ॥
 ३० ॥ नड्वाहु परि जेह निमित्त कहे, परमत जी
 पण काज ॥ तेह निमित्तीरे चोथो जाणिये, श्री

जिनशासन राज ॥ धन धन० ॥ ३१ ॥ तप गुण उपर
 रोपे धर्मने, गोपे नवि जिन आण ॥ आश्रव लोपेरे
 नविकोपे कदा, पंचम तपसी जाण ॥ धन धन० ॥ ३२ ॥
 ठगे विद्यारे मंत्र तणो बलि, जिम श्रीवयर मुणिंद ॥
 सिद्ध सातमोरे अंजन योगथी, जिम कालिक मुनिचं
 द ॥ धन धन० ॥ ३३ ॥ काव्य सुधारस मधुर अ
 र्थनखा, धर्म हेतु करे जेह ॥ सिद्धसेनपरें नरपति
 रीऊवे, अष्टम वर कवि तेह ॥ धन धन० ॥ ३४ ॥ ज
 व नवि होवे प्रनाविक एहवा, तव विधि पूरव अने
 क ॥ जात्रा पूजादिक करणी करे, तेह प्रनाविक ठे
 क ॥ धन धन० ॥ ३५ ॥ ढाज ॥ सतीय सुनडानी ॥
 देशी ॥ सोहे समकित जेहथी, सखि जिम आनर
 णे देह ॥ नूपण पांच ते मन वस्थां, सखी मन व
 स्थां, तेमां नही संदेह, मुऊ समकित रंग अचल
 होयो ॥ एटेक० ॥ ३६ ॥ पहिलुं कुशलपणुं तिहां, स
 खी वंदन ने पञ्चखाण ॥ किरियानो विधि अति घ
 णो, सखी आचरे तेह सुजाण ॥ मुऊ० ॥ ३७ ॥ बी
 जूं तीरथ सेवना, सखी तीरथ तारे जेह ॥ ते गोता
 रथ मुनिवरा, सखी तेहसूं कीजे नेह ॥ मुऊ० ॥ ३८ ॥
 जगति करे गुरु देवनी, सखी त्रीजुं नूपण होय ॥

किणहि चलाव्यो नवि चले, सखि चोथुं नूषण जो
 य ॥ सु० ॥ ३९ ॥ जिनशासन अनुमोदना, सखी
 जेहथी बहुजन हुंत ॥ कीजें तेह प्रभावना ॥ सखी
 पांच नूषणनी खंत ॥ सु० ॥ ४० ॥ ढाल ॥ इम
 नवि कीजे हो, ए देशी ॥ लक्षण पांच कहां सम
 कित तणा, धुर उपशम अनुकूल, सुगुण नर ॥ अ
 पराधी सूं पण नवि चितथकी, चितवियें प्रतिकूल,
 सुगुण नर, श्री जिनजाषित वचन विचारियें ॥ ए टेक ॥
 ॥ ४१ ॥ सुरनर सुख जे दुःख करि लेखवे, वंढे शि
 वसुख एक ॥ सु० ॥ बीजुं लक्षण ते अंगीकरे, सा
 र संवेग सुंटेक ॥ सु० ॥ श्रीजिन० ॥ ४२ ॥ नारक चा
 रक समजव ऊनग्यो, तारक जाणिने धर्म ॥ सु० ॥
 चाहे निकलवुं निर्वेद ते, त्रीजुं लक्षण मर्म ॥ सु० ॥
 श्री जिन० ॥ ४३ ॥ इव्यथकी दुःखियानी जे दया,
 धर्महोणानो जाव ॥ सु० ॥ चोथुं लक्षण अनुकंपा
 कही, निज शकते मनव्याव ॥ सु० ॥ श्रीजिन० ॥ ४४ ॥
 जे जिन नारखुं ते नहि अन्यथा, एहवो जे दृढ रं
 ग ॥ सु० ॥ ते आस्तिकता लक्षण पांचमुं, करे कुमति
 नो ए जंग ॥ सु० ॥ श्रीजिन० ॥ ४५ ॥ ढाल ॥ जि
 न जिन प्रति वंदन दिसे, ए देशी ॥ पर तीर्थी परना

सुर तेणे, चैत्य ग्रह्यां वज्रि जेह ॥ वंदन प्रमुख ति
 हां नवि करवुं, ते जयणा षट जेय रे, नविका, सम
 कित यतना कीजें ॥ ए टोक ॥ ४६ ॥ वंदन ते कर
 जोडन कहियें, नमन तेशीस नमाडे ॥ दान इष्ट अ
 न्नादिक देवुं ॥ गौरव जगति देखाडेरे ॥ नविका० ॥
 ४७ ॥ अनुप्रदान ते तेहने कहियें, वारवार जे दा
 न ॥ दोष कुपात्रे पात्रमतिये ॥ नहि अनुकंपा मान
 रे ॥ नविका० ॥ ४८ ॥ अण बोलावे जेह नाखवुं, ते
 कहियें आलाप ॥ वारवार आलाप जे करवुं, ते कहियें
 संलाप रे ॥ नविका० ॥ ४९ ॥ ए जयणाथी समकित
 दीपे, वलि दीपे व्यवहार ॥ एमां पण कारणथी जय
 णा, तेना अनेक प्रकार रे ॥ नविका० ॥ ५० ॥ ढा
 ल ॥ ललना नीदेशी ॥ शुद्ध धरमथी नवि चले, अति
 दृढ गुण आधार ललना ॥ तोपणजे नवि तेहवा, ते
 हने एह आगार ॥ ललना ॥ ५१ ॥ बोदुं तेहवुं
 पालियें ॥ दंति दंत सम बोल, ललना ॥ सज्जनना
 दुर्जन तणा, कळप कोटिने तोल ॥ ललना ॥ बो०
 ॥ ५२ ॥ राजा नगरादिक धणी, तस शासन अनियो
 ग ॥ ललना ॥ तेहथी कार्तिकनी परे, नहि मिथ्या
 त संयोग ॥ ललना ॥ बो० ॥ ५३ ॥ मेलो जननो

घण कहाँ, बल चोरादिक जाण ॥ ललना ॥ खेत्र
 पालादिक देवता, तातादिक गुरु ठाण ॥ ललना ॥
 बो० ॥ ५४ ॥ वृत्ति दुर्लभ आजिविका, ते जीखण
 कंतार ॥ ललना ॥ ते हेते दूषण नही, करतां अ
 न्य आचार ॥ ललना ॥ बो० ॥ ५५ ॥ ढाल ॥ रा
 ग मङ्गहार ॥ जाविजे रे समकित जेहथी रूयडूं, ते
 जावनारे जावो मनकरि परवडूं ॥ जो समकित रे
 ताजुं शाजुं मूल रे, तो व्रत तरु रे दीये शिवपद अ
 नुकूल रे ॥ ५६ ॥ त्रुटक ॥ अनुकूल मूल रसाल
 समकित, तेहविण मति अंध रे ॥ जे करे किरिया
 गर्व जरिया, तेहफूगे धंध रे ॥ ए प्रथम जावना गु
 णो रुअडी, सुणो बीजी जावना ॥ बारणूं समकि
 त धर्मपुरनुं, एहवीते पावना ॥ ५७ ॥ ढाल ॥ त्री
 जी जावना रे समकित पीठ जो दृढ सही, तो मो
 टो रे धर्म प्रासाद मगे नही ॥ पाइये खोटे रे मोटो
 मंमाण न शोनीयें, तेह कारण रे समकितजुं चित
 थोनीयें ॥ ५८ ॥ त्रुटक ॥ थोनीयें चित नित एमजा
 वी, चोथी जावना जावियें ॥ समकित निधान स
 मस्त गुणनुं, एहवुं मन जावियें ॥ तेह विणबूटा र
 त्न सरिखा, मूल उत्तर गुण सवे ॥ किम रहै ताके

जेह हरवा, चोर जोर नवे नवे ॥ ५९ ॥ ढाल ॥ जावो
 पंचमी रे जावना सम दम सार रे, पृथ्वी परे रे समकि
 त तसु आधार रे ॥ ठठी जावना रे जाजन समकित
 जो मले, श्रुत शीलनो रे तो रस तेहमां नवि ढले
 ॥ ६० ॥ त्रुटक ॥ नवि ढले समकित जावना रस, अमिय
 सम संवरतणो ॥ षट जावना एकही एहमां, करो
 आदर अति घणो ॥ इम जावता परमार्थ जलनिधि,
 होय निनु ऊकजोल ए ॥ घन पवनपुण्य प्रमाण प्रगटे ॥
 चिदानंद कलोल ए ॥ ६१ ॥ ढाल ॥ जे मुनिवेष
 सके नवी ठंढी ए देशी ॥ ठरे जिहां समकित ते था
 नक, तेहना षट विध कहियें रे ॥ तिहां पहिलुं था
 नक ठे चेतन, लक्ष्मण आतम लहियें रे ॥ खीर
 नीर परें पुजल मिश्रित, पण एहथी ठेअलगो रे ॥
 अनुनव हंस चंच जो लागे, तो नवि दोसे बलगों रे
 ॥ ६२ ॥ बीजुं थानक नित्य आतमा, जे अनुनूत सं
 नारे रे ॥ बालकने स्तन पान वासना, पूरव नव अ
 नुसारे रे ॥ देव मनुज नरकादिक तेहना, ठे अनि
 त्यपर्याय रे ॥ इव्यथकी अविचलित अखंमित, निज
 गुण आतमराय रे ॥ ६३ ॥ त्रीजुं थानक चेतन
 कर्ता, कर्मतणो ठे योगे रे ॥ कुंनकार जिम कुंनत

णो जे, दंभादिक संयोगे रे ॥ निश्चयथी निज गुण
 नो कर्त्ता, अनुपचरित व्यवहारें रे ॥ इव्यकर्मनो नग
 रादिकनो, ते उपचार प्रकारे रे ॥ ६४ ॥ चोथुं थानक
 ठे ते जोका, पुण्य पाप फल केरो रे ॥ व्यवहारे नि
 श्चय नय दृष्टें, जुजे निज गुण नेरो रे ॥ पंचम थानक
 ठे परम पद, अचल अनंत सुख वासो रे ॥ आधि
 व्याधि तन मनथी लहियें, तसु अजावे सुख खासो रे
 ॥ ६५ ॥ ठठुं थानक मोक्षतणु ठे, संयम ज्ञान उपायो
 रे ॥ जोसहिजे लहियें तो सघजे, कारण निःफलथा
 यो रे ॥ कहे ज्ञान नय ज्ञानज साचुं, ते विण फूठीकि
 रिया रे ॥ न लहे रूपू रूपू जाणी, सीप जणी जे फिरि
 यारे ॥ ६६ ॥ कहे किरियानय किरियाविण जे, ज्ञान
 तेह चुं करशें रे ॥ जल पेसी कर पद न हलावे, तारू
 ते किम तरसे रे ॥ दूषण नूषणठे इहां बहुला, नय ए
 केकने वादे रे ॥ सिद्धांति ते बेहु नय साधे, ज्ञानवंत
 अप्रमादे रे ॥ ६७ ॥ इणिपरे सद्धसठ बोलविचारी, जे
 समकित आराहे रे ॥ राग द्वेष टाली मन वाली, ते स
 मसुख अवगाहे रे ॥ जेहनो मन समकितमां निश्चल,
 कोइ नही तस तोले रे ॥ श्री नय विजय विबुध पय

सेवक, वाचक जस इम बोले रे ॥ ६० ॥ इति ॥
श्री सम्यक्त्वना सडसर बोलनी सदाय संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री सुबुद्धिजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ लागो लागो रे प्रभुछुं नेह, वसीयो हईडामां ॥
महारो साहिबो अतिहि सनेह ॥ वसी० ॥ दर्शन प्र
भुजीनुं देखतां रे, जोतां मुखनी ज्योति रे ॥ डुरित
पमल दूरें कखां रे वारी, प्रगट्यो ज्ञान उद्योत ॥
॥ वसी० ॥ १ ॥ सूरत मनडामां वसी रे, कागल
जिम चित्राम रे ॥ रात दिवस सुतां जागतां रे हुंतो,
नित समरुं प्रभुनाम ॥ वसी० ॥ २ ॥ जेहनां मन
मां जे वस्या रे, तेहने तेहछुं नेह रे ॥ मधुकरने
मन मालती रे जिम, मोरतणे मनमेह ॥ वसी० ॥
॥ ३ ॥ देव अवर देखी घणा रे, किहां न माने म
न्न रे ॥ प्रभुगुण सांकलें सांकल्यो रे तेतो, आलोचे
नही अन्न ॥ वसी० ॥ ४ ॥ साहेब सुबुद्धि जिणं
दनी रे हुं, चाहुं जवोजव सेव रे ॥ हंसरतन कहे
माहरे रे कांइ, लागीं एहिज टेव ॥ वसी० ॥ ५ ॥

॥ अथ केशरियाजीनुं स्तवन ॥

॥ केशरीयासैं लागो मेरो ध्यान रे, बीजुं मुने कांइ
न गमे ठे ॥ के० ॥ नाजि नूप मरु देविको नंदन, तुम

परजीया खुरबान रे ॥ बीजुं० ॥ केश० ॥ १ ॥ ध
 नुष पांचसें मान मनोहर, काया कंचन वान रे ॥
 ॥ बीजुं० ॥ केश० ॥ २ ॥ जुगलारे धर्म निवारण
 साहिव, राजेश्वर राजान रे ॥ बीजुं० ॥ केश० ॥
 ॥ ३ ॥ कृपनदाशकी आशा पूरजो, सेवक अपना
 ज्यानरे ॥ बीजुं० ॥ केश० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमह्वीनाथजिन पद ॥

॥ चित्त को न गमे रे चित्त को न गमे, मह्वी नाथवि
 नाचित को न गमे ॥ माता प्रनावती राणीको जायो, कुं
 ज नृपतिसुत काम दमे ॥ म० ॥ १ ॥ कामकुंज जिम कामि
 त पूरे, कुंज लंठन जिन सौने गमे ॥ म० ॥ २ ॥ मिथिला
 नयरोमें जन्म प्रभुको, दरिशन देखे दुःख समे ॥ म०
 ॥ ३ ॥ पेवर नोजन सरसा पीरसें, बाकस बूकस को
 न जमे ॥ म० ॥ ४ ॥ नीलवरण प्रभु कांति अंगें, मरक
 तमणि ठबी दूर नमे ॥ म० ॥ ५ ॥ न्यायसागर प्रभु
 नक्तनो स्वामी, हरि हर ब्रह्मा कोन नमे ॥ म० ॥ ६ ॥

॥ अथ अवंती पार्श्व स्तवन ॥ राग काफी ॥

॥ पंथीडा पंथ चलेंगे, प्रभु नजले दिन चार ॥
 ॥ पंथी० ॥ क्या ले आया क्या ले जासी, पाप पुण्य
 दोनु साथ ॥ पंथी० ॥ १ ॥ बालपनामें खेल गमा

यो, यौवन माया जाल ॥ पंथी० ॥ ३ ॥ बूढापो
 आयो धर्म न पायो, पीढे करत पुकार ॥ पंथी० ॥
 ॥ ३ ॥ दया मया कर पास अवंती, अब तेरो आ
 धार ॥ पंथी० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ बलिनऽमुनिनी स्वाध्याय ॥

॥ शा माटे बंधव मुखथी न बोलो, आंगुडें आ
 नन धोतां मोरारी रे ॥ पुण्य जोगें पडियो एकपाणो,
 जडयोढे जंगल जोतां मोरारी रे ॥ शा० ॥ १ ॥
 ॥ ए आंकणी ॥ त्रीकम रीश चढीढे तुजने, वनमां
 हे वनमाली मोरारी रे ॥ वडीरे वारनुं मनावुं हुं
 वाला, तुं तो वचन न बोले फरी वाली मोरारी रे
 ॥ शा० ॥ २ ॥ नगरीरे दाधीने शुद्ध न लाधी, महारी
 वाणी निसुण वाला मोरारी रे ॥ आ वेलांमां लीधो
 अबोलो, कानजी कां थया काला मोरारी रे ॥
 शा० ॥ ३ ॥ शी शी वात कहुं शामलीया, वीठल
 जी आ वेला मोरारी रे ॥ शाने काजें मुजने संतापे,
 हरि हसी बोलोने हेला मोरारी रे ॥ शा० ॥ ४ ॥
 प्राण माहारा जासे पाणी विण, अधवडीने अण
 बोले मोरारी रे ॥ आरति सघली जाये अलगी,
 बांधवजो तुं बोले मोरारी रे ॥ शा० ॥ ५ ॥ षटमा

स लगे पाव्यो ठबीजो, हैया उपर अति हेतें मो
रारी रे ॥ सिंधु तटें सुरने संकेतें, हरि दहन करम
छुनरीतें मोरारी रे ॥ शा० ॥ ६ ॥ संयम लइ गयो
सुरलोके, कवि उदयरतन इम बोले मोरारी रे ॥ सं
सार मांहें बलदेव मुनिने, कोइ नव आवे तोले
मोरारी रे ॥ शा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शान्तिजिन स्तवन ॥ प्रभुजी वीरजिणं
दने वंदीयें ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभुजी शान्तिजिणंदने जेटीयें, शान्तिरसनो दा
तार हो ॥ अचिरीना जाया ॥ प्रभुजी शान्ति जलधर
वनह्यो, वरसे नवि वित्त धार हो ॥ अचिरा० ॥
॥ प्रभुजी० ॥ १ ॥ प्रभुजी गजपुर नयर दीपावीयो, प्र
गटयो ज्ञान दिणंद हो ॥ अ० ॥ प्रभुजी कर्म दल
मल चूरवा, समेतगिरि दीपे जिणंद हो ॥ अ० ॥
॥ प्र० ॥ २ ॥ प्रभुजी कर्म कलंक निराकरी, सिद्ध
थया निज नाव हो ॥ अ० ॥ प्रभुजी प्रगटावी
निज रूपने, अचरिज रूपानाव हो ॥ अ० ॥ प्र० ॥
॥ ३ ॥ प्रभुजी सादि अनंतें यिर रह्या, एक तिहां
अ ठे अनेक हो ॥ अ० ॥ प्रभुजी लोकांते आदि अ
लोकने, एहवो तिहां विवेक हो ॥ अ० ॥ प्र० ॥

॥ ४ ॥ प्रभुजी तिहां अपूरव आनंद लहे, वचन
 अगोचर जेह हो ॥ अ० ॥ प्रभुजी सिद्ध स्वरूपनी
 वानगी, सुद्ध श्रद्धाने जाणो तेह हो ॥ अ० ॥ प्र०
 ॥ ५ ॥ प्रभुजी दर्शन लहो जिन देवनो, नावो एही
 ज नाव हो ॥ अ० ॥ प्रभुजी एहिज नाव अनुसरी,
 नवजल तरवा नाव हो ॥ अ० ॥ प्र० ॥ ६ ॥ प्रभु
 जी एहीज ध्यानं नित्य रही, चाहोयें शिव सुख राज
 हो ॥ अ० ॥ प्रभुजी श्रीजय जिनवर ध्यानथी, नाथ
 क अनुभव काज हो ॥ अ० ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ श्रीमहावीरजिन स्तवन गिरवारे गु ॥

॥ ए तुमतणा ॥ ए देशी ॥

॥ वंदो महावीर जिनेसर राया, माता त्रिशला
 राणीना जाया रे ॥ हरिलंठन कंचन वर काया, अ
 मर वधु दुलराया रे ॥ वंदो० ॥ १ ॥ बाल पणे सुं
 रगिरि मोलाया, अहि वेताल हराया रे ॥ इंदु कहे
 व्याकरण नीपाया, पंक्ति विस्मय पाया रे ॥ वंदो०
 ॥ २ ॥ क्लायक रुद्धि अनंति पाया, अतिशय अधि
 क सुहाया रे ॥ चार रूप करी धर्म बताया, चउवि
 द सुर गुण गाया रे ॥ वंदो० ॥ ३ ॥ त्रीश वर्ष गृ
 ह वासे रहीया, संजमछुं दीज लाया रे ॥ बार वर्ष

तपी कर्म खपाया, केवलनाण उपाया रे ॥ वंदो०
 ॥ ४ ॥ तीन जुवनमें आण मनाया, दश दोय ठत्र
 धराया रे ॥ रूप कनक मणी गढ विरचाया, निग्रंथ
 नाम धराया रे ॥ वंदो० ॥ ५ ॥ रयण सिंघासण
 बेसण ठाया, हुंडुनी नाद बजाया रे ॥ दानव मान
 वंदा सुख आया, जके सीस नमाया रे ॥ वंदो०
 ॥ ६ ॥ प्रभु गुण गण गंगाजल नाह्या, पावन तेह
 नी काया रे ॥ पंक्ति खिमाविजय सुपसाया, सेवक
 जिन गुण गाया रे ॥ वंदो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पुरुषने परस्त्रीत्याग आश्रयी सीखामण ॥

॥ सुण चतुर सुजाण, परनारीशुं प्रीत कबु नव
 कीजीये ॥ एआंकणी ॥ जेणे परनारीशुं प्रीत करी, तेने
 हैयडे रुंधण थाय घणी, तेणें कुज मरजादा कांइ
 नगणी ॥ सु० ॥ १ ॥ तारी लाज जासे नात जातमां, तुं
 तो हलुउ पडीस सहु साथमां, ए धुंआडो न आवे
 हाथमां ॥ सु० ॥ २ ॥ हारे सांज पडे रवी आथ
 मे, ताहारो जीव जमरानी परे जमे, तुने घरनो धं
 धो कांइ नगमे ॥ सु० ॥ ३ ॥ हारे तुं जइने मलीश
 दूतीने, ताहारु धन जेशें सर्वे धूतीने, पढे रहीस है
 यहुं कूटीने ॥ सु० ॥ ४ ॥ तुंतो बेगो मूढो मरडीने, ताहा

रुं कालजुं खाशें करडीने, तारुं मांस लेशें उजरडीने
 ॥ सु० ॥ ५ ॥ हारे तुने प्रेमना पायाला पाइने, ता
 हारा वसतर लेशें वाइने, तुने करशे खोखो खाइ
 ने ॥ सु० ॥ ६ ॥ हारे तुं पर मंदिरमां पेसीने, ति
 हां पारकी सेजें बेशीने, तें जोग कखा घणुं हंसीने ॥
 सु० ॥ ७ ॥ हारे जेम छुयंग थकी मरता रेहेवुं,
 तेम परनारीने परिहरवुं, तो नव सायर फेरो नवी कर
 वुं ॥ सु० ॥ ८ ॥ वाजा परणी नारीची प्रीत सारी,
 ए माथु वढावें परनारी, तुमे निश्चें जाणजो निरधा
 री ॥ सु० ॥ ९ ॥ ए सदगुरु कहेते साचुं ठे, ता
 हारी कायानुं सर्वे काचुं ठे, एक नाम प्रभुनुं सा
 चुं ठे ॥ सु० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ महावीर जिन स्तवन ॥

॥ आज महारे आनंद थयो, प्रेमना वादल वर
 स्या रे ॥ दाहाडो सफल थयो ॥ ए आंकणी ॥
 सुणो साहेलो, वीरजिनेसर जनम्या, धन्य दिन आ
 जनो रे ॥ आज० ॥ १ ॥ तमे सिद्धारथ कुलें आ
 या, तमें त्रिशला माताना जाया ॥ ठपन्न दिगकुमरी
 ये हूलराया रे ॥ आज० ॥ २ ॥ चोशठइं मली आ
 वे, मेरु शिखर प्रभुने लावे, एतो सुगंधि जले नव

रावे रे ॥ आज० ॥ ३ ॥ सखी आज महारे घेर दी
वाली, महारा प्रभुजी आब्या पोतें चाली, मेंतो उ
सावी शेवने सुंहाली रे ॥ आज० ॥ ४ ॥ सखी टो
ली मली मंगल गावे, एतो रत्नत्रयीनो सुख पावे ॥
ए तो बार वर्ष जावना जावे रे ॥ आज० ॥ ५ ॥ कर
जोडी सेवक गावे, ए तो अक्षय पदवीने पावे ॥ शु
च वीरप्रभुजीने परजावे रे ॥ आज० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ मन शीकानुं पद ॥

॥ रे मन लोनी तारो कोण पतीआरो ॥ रेमन० ॥
आठ गांठको सांठो मीठो, गांठ गांठ रस न्यारो
॥ रेमन० ॥ १ ॥ ढिनमें और पलकमें दूजो, घडी
घडी दिलसें न्यारो ॥ रेमन० ॥ २ ॥ चंचल मन व
रजो नही माने, प्रभु जव पार उतारो ॥ रेमन० ॥ ३ ॥

॥ अथ वर्द्धमानजिन स्तवन राग वेलावल ॥

॥ रे मन क्युं जिन नाम वीसाख्यो ॥ रेमन० ॥
विषय विकार महामय धाख्यो, जनम जुआ ज्युं हा
ख्यौं ॥ रेमन० ॥ १ ॥ जिने तोकुं नरदेही दीनो, गर्न
की आंच उधाख्यो ॥ ता प्रभुजी कूं तें शठ मूरख,
एक घडी न संजाख्यो ॥ रेमन० ॥ २ ॥ नहीं कबु
दान शीयल तप पूजा, नही जिन नाम उचाख्यो ॥

जैनधर्म चिंतामणि सरिखो, काच जाण कर माखो
 ॥ रेमन० ॥ ३ ॥ करले सुकृत दया उरले, जो
 नव चाहत सुधाखो ॥ हरखचंद वर्द्धमान जिनेसर,
 अक्सर मांहे न संनाखो ॥ रेमन० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवन तुमरीमां ॥

॥ सहस्रफणारे मोरा साहिबा, तेरी सामरी सूर
 तपर वारी जाउंरे ॥ तेरी मधुरी मूरत पर वारी जा
 उं रे ॥ सहस्र० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ तन मन लगन
 लगो इक तोशुं, मेंतो देव अवर नही ध्याउं रे ॥ सह
 स्र० ॥ २ ॥ सफल जइ आज घडीअ हमेरी, मेंतो देखी
 दरश सुख पाउं रे ॥ सहस्र० ॥ ३ ॥ वदन कमल ठ
 बीदेखत सुंदर, मेंतो रोम रोम उलसाउंरे ॥ सहस्र०
 ॥ ४ ॥ तुमगुणको कबू पार न आवे, उपमा क्या
 बताउंरे ॥ सहस्र० ॥ ५ ॥ कीर्तिसागर कहे नव नव तोरी,
 मोज महिर नित्य पाउं रे सहस्र० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ समेतशिखर स्तवन ॥

॥ चालो चालो शिखरगिरि जइयें रे ॥ चा० ॥
 वीश जिणंद मुगते गया ॥ चा० ॥ ए आंकणी ॥
 पालगंजमें सफल बोलाइ, मधुवनमें जइ रहियें रे
 ॥ वीशजिणंद० ॥ १ ॥ सीता नालें निर्मल अर्शनें,

केशर पायाला ग्रहीयें रे ॥ वी० ॥ विषम पाहाड
 की कुंज गलनमें, शीतलता बहु लहियें रे ॥ वी० ॥
 ॥ २ ॥ पढीम आठ पूर्वदिशि वारे, वीश टुंक पद
 पहियें रे ॥ वी० ॥ सामलीयार पासको मंदिर, बिच
 शिखरपर सोहियें रे ॥ वी० ॥ ३ ॥ वीशें टुंके पूजन
 करके, नरनव लाहो लहियें रे ॥ वी० ॥ संघ सहि
 त यात्रा नई सफली, विनय नमत गुण गुण ग्रही
 यें रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तवन घोलनी देशीमां ॥

॥ शत्रुंजे जइयेंने, पावन थइयें, यात्रा नवाणु
 करियें रे ॥ चालो शत्रुंजे जइयें ॥ ए आंकणी ॥ मंगर
 चढताने हरखज धरता, जइने घंजारामां रहियें रे ॥
 चालो ॥ सूरज कुंममां देह पखाली, नाइने निर्मल
 थइयें रे ॥ चालो ॥ १ ॥ नीमज कुंममां कलशज नरी
 यें, शोनानी सिरियें वधावो रे ॥ चालो ॥ पाना मं
 गावोने अंगी रचावो, घणो अबिर ठमावो रे ॥ चा
 लो ॥ २ ॥ फूल मंगावोने द्वार गुंथावो, प्रभुजीना
 कंठे चढावो रे ॥ चा ॥ शूकड केशर चंदन घसावो,
 नवें अंगें पूजा करावो रे ॥ चा ॥ ३ ॥ अंगर
 उखेवोने जावना जावो, नीचो नीचो शिश नमावो

रे ॥ चालो० ॥ ४ ॥ बेठा सिंघासण हुकुम चला
वे, उपर ठत्र धरावे रे ॥ चालो० ॥ खिमाविजय मुनि
गुरु सुपसाया, रिखन तणा गुण गाया रे ॥ चा० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ चालो सखी सिद्धाचल जइयें, चालो सखी
विमला चल जइयें ॥ के गिरिवर देखी सुख जइयें, के
पालीताणे जइ रइयें ॥ चालो० ॥ १ ॥ के ए गिरि यात्रायें
जे आवे, के नव त्रीजे सिद्धि जावे, के अजरामर पदवी
पावे ॥ चालो० ॥ २ ॥ के जात्रा नवाणु करीयें, के
नवकार लाख खरा गणीयें, के नव सागर सहेजें
तरियें ॥ चालो० ॥ ३ ॥ के ठठ अठम काया कसी
यें, के मोह राजा सामें धसीयें, के वेगें शिवपुरमां
वसीयें ॥ चालो० ॥ ४ ॥ के सर्व तीरथनो ठे ए रा
जा, के सूरज कुंममां जल ताजा, के रोगीआ नर
होय ते साजा ॥ चालो० ॥ ५ ॥ के कशर चंदन
घसी गोली, के कस्तूरी बरास जेली, के पूजो सर्व
मली टोली ॥ चालो० ॥ ६ ॥ के पूजीने नावना
नावो, के केवलज्ञान युगल पावो, के जो होये शि
वपुरमां जावो ॥ चालो० ॥ ७ ॥ के अठार इछोतेरा
बोर्षे, के महावदि पांचमीने दिवसें, के जेटया श्री

आदिसर उजटें ॥ चालो० ॥ ८ ॥ के एह उत्तम
पदनी सेवा, के देजो मुने देवाधि देवा, के शिवरूपी
लखमीने सुख मेवा ॥ चालो० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ राग कल्याण ॥

॥ मोहेकैसे तारोगे दीनदयाल ॥ मोहे० ॥ तारो
तोपियानित तुम तारो, बिनतरवे कूंजीयो संजा
ल ॥ मोहे० ॥ १ ॥ कंचनको कहा कंचन करवो,
मलिन कंचन परजाल ॥ मोहे० ॥ कामक्रोध मद
लपट रह्यो नित, महा मोहजंजाल ॥ मोहे० ॥ २ ॥
मोय पापीकूं पावन करवो, बहोत कठिन क्रपाल ॥
मोहे० ॥ मल्लिनाथ प्रभु मोहनी मूरत, रूपचंद गुण
माल ॥ करत निहाल ॥ मोहे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ रिपन स्तवन राग बिजास चरचरीमां ॥

॥ जाग जाग मुगटमणि, नाजिनृपनंदा ॥ जा० ॥
ए टेक ॥ द्वार ठाढे नर अमर सेवा करे, उचरे सुख
जै जै जै नंदा ॥ जा० ॥ १ ॥ कमलदल मुकल
महि, मधुपरणजण करता ॥ पिबत प्रीतिधर सरस
मकरंदा ॥ जा० ॥ २ ॥ तिमरहर सुख करण प्रग
टयो, तरण मागधमधुर धुनी, पढत गुणबंदा ॥
जा० ॥ ३ ॥ जायो मात मरुदेवि अलिअत तुम जा

वना ॥ खेले उडंग ज्युं होत आनंदा ॥ जा० ॥ ४ ॥
 विमलगिरि मंदन दुःखविहंमन, कवि महिमराज
 के, काटी दुःखफंदा ॥ जा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुजय स्तुति ॥

॥ श्रीशत्रुजय गिरि तीरथ सार, गिरिवर मांहे
 जेम मेरु उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमांहे नव
 कारज जाणुं, तारा मांहे जेम चंड वखाणुं, जलधर
 मांहे जल जाणुं ॥ पंखीमांहे जेम उत्तम हंस, कुल
 मांहे जेम रूपननो वंश, नाजि तणो जे अंश ॥ हू
 मावंत मांहे जेम अरिहंता, तपसूरा मुनिवर महंता,
 शत्रुजय गिरि गुणवंता ॥ १ ॥ रूपन अजित संन
 व अजिनंदा, सुमतिनाथ मुख पूनमचंदा, पद्म प्रन
 सुख कंदा ॥ श्रीसुपार्श्व चंड प्रन सुविधि, शीतल
 श्रेयांस सेवो बहुबुद्धि, वासु पूज्य मति सुद्धि ॥ वि
 मल अनंत जिन धर्म ए शांति, कुंथु अर मद्धि नमुं
 एकांति, मुनिसुव्रत सुद्ध पंथि ॥ नमी पासने वीर
 चोवीश, नेम विना ए जिन त्रेवीश, सिद्धगिरि आव्या
 इश ॥ २ ॥ नरतराय जिन साथे बोले, स्वामी शत्रुजय
 गिरि कुण तोले, जिननुं वचन अमोले ॥ रूपन कहे
 सुणो नरतराय, बहरी पालता जे नर जाय, पातिक

नूको थाय ॥ पशु पंखी जे इणगिरि आवे, नवत्रीजे
 ते सिद्धज आवे, अजरामर पद पावे ॥ जिनमतमें
 शत्रुंजो बखाण्यो, ते में आगम दिल मांहे आय्यो,
 सुणतां सुख उर आय्यो ॥ ३ ॥ संघ पति जरत न
 रेसर आवे, सोवन तणां प्रासाद करावे, मणिमय
 मूरति ठावे ॥ नानिराया मरु देवी माता, ब्राह्मी सुं
 दरी बेहेन विख्याता, मूर्ति नवाणुं चाता ॥ गोमुख
 ने चक्केसरी देवी, शत्रुंजय सार करे नित्य मेवी, तप
 गह्वर उपर हेवी ॥ श्रीविजयसेन सूरेश्वर राया, श्रीवि
 जयदेवसूरि प्रणमी पाया, रिपनदास गुण गाया ॥४॥

॥ अथ सिद्धगिरिराज स्तवन ॥

॥ गिरिराजकुं सदा मेरी वंदना, जिनको दर्शन दू
 र्जन देखी, कीर्धी कर्म निकंदना रे ॥ गिरि० ॥ आंकणी ॥
 विषय कषाय ताप उपसमीठ, जिम मजे बावन चंद
 ना रे ॥ गिरि० ॥ १ ॥ धन धन ते दिन कबहीरे
 होसे, थासे तुम सुख दर्शना रे ॥ गिरि० ॥ तिहां
 विशाल जाव पण होवे, जिहां तुज पद कज फर
 सना रे ॥ गिरि० ॥ २ ॥ बली बली दर्शन बेहेलुं
 लहीयें, एह विरह नित्य जावना रे ॥ गिरि० ॥ चि
 त्त मांहेथी कबही न विसारू, तुम गुण गणनी ध्याव

ना रे ॥ गिरि० ॥ ३ ॥ जब जब एहिज चित्तमां
चाहूं, मेरे उर नही विचारणा रे ॥ गिरि० ॥ चित्त
रमे दिन मावतनी परे, बहोरी न होय उतारणा
रे ॥ गिरि० ॥ ४ ॥ ज्ञान विमल प्रभु पूरण कृपाथी,
सुसेणीक बोध सुवासना रे ॥ गिरि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ कल्याणरागनो पद ॥

॥ उरनसुं रंग न्यारा न्यारा, तुंमसुं रंग करारी हे ॥
तुं मनमोहन नाथ हमारा, अब तो प्रीत तुमारी
हे ॥ उ० ॥ १ ॥ योगी होय के कान फडाय, मोटी
मुझ मारी हे ॥ गोरख कहे तृष्णा नही मारी, घर
घर नमत जीखारी हे ॥ उ० ॥ २ ॥ जंगम आवे ना
द बजावे, आठें तान मिलावे हे ॥ सबका राम स
रिखा नबूज्या, काहेकूं नेख लजावे हे ॥ उ० ॥ ३ ॥
जती दुआ इंडी नही जीतो, पंचनूत नही जीना हे ॥
जीव अजीवकूं बूज्या नाही, नेख लेहीके हीना
हे ॥ उ० ॥ ४ ॥ वेद पढया ब्राह्मण कहलावे, ब्र
ह्मदशा नही पाया हे ॥ आतमतत्व को अर्थ न जा
न्यो, फोकट जन्म गुमाया हे ॥ उ० ॥ ५ ॥ जंगल
जाये नस्म चढाये, जटा वधारी केशा हे ॥ परजव
की आशा नही मारी, फिरि जैसा का तैसा हे ॥ उ०

॥ ६ ॥ काजी किताब खोल कर बेठा, क्या किताब
 में देख्या हे ॥ बकरीके गले तूरी चलावे, क्या देवें
 गा लेखा हे ॥ उ० ॥ ७ ॥ जिने कंचनका महेज ब
 नाया, उनकुं पीतल कैसाहे ॥ माखा गलमें हार हीरे
 का, सब जुग काच सरिसाहे ॥ उ० ॥ ८ ॥ रूपचंद रंग
 मगन जयाहे, नाथनिरंजन प्याराहे ॥ जनम मरनका
 मर नहीं याकूं, चरण सरण तिहाराहे ॥ उ० ॥ ९ ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ विवेकी विमलाचल वसीयें, तप जप करी का
 या कसीयें ॥ खोटी मायाथी खसीयें ॥ वि० ॥ वसी
 उनमारगथी खसीयें ॥ वि० ॥ १ ॥ माया मोहनी
 यें मोह्यो, कुण राखे रणमां रोयो ॥ आ नरजव ए
 लें खोयो ॥ वि० ॥ २ ॥ बाल लीलायें दुलरायो,
 जोवन यूवतियें गायो, तोहे तृप्ति नवि पायो ॥
 वि० ॥ ३ ॥ रमणी गीत विषय राच्यो, मोहनी
 मदिरायें माच्यो, नव नव वेश करी नाच्यो ॥ वि०
 ॥ ४ ॥ आगमवाणी समी आसी, जवजलधि मांहे
 वासी, रोहित महु समो आसी ॥ वि० ॥ ५ ॥ मो
 हनी जालने संहारे, आप कुटुंब सकल तारे; वरण
 वीयें ते संसारे ॥ वि० ॥ ६ ॥ संसारे कूडी माया,

पंथसीरें पंथी आया ॥ मृग तृष्णा जलने धाया ॥
 वि० ॥ ७ ॥ जवदव ताप लही आया, पांमव परि
 कर मुनिराया, सीतल सिद्धाचल ठाया ॥ वि०
 ॥ ८ ॥ गुरु उपदेश सुणी नावें, संघ दिसो दिस
 थी आवे, गिरिवर देखी गुण गावे ॥ वि० ॥ ९ ॥
 वरस अठार चोरासीयें, माथ उज्ज्वल एकादसीयें, वं
 द्या प्रचुजी विमल वसीयें ॥ वि० ॥ १० ॥ जात्रा
 नवाणुं अमें करीयें, नव नव पातकडां हरियें, तीर
 थ विना कहो केम तरीयें ॥ वि० ॥ ११ ॥ हंस म
 यूरा इणें ठामें, चकवा शुक्र पीक परिणामें ॥ दर्शने
 देवगति पामे ॥ वि० ॥ १२ ॥ शत्रुंजा नदियें नाइ,
 कष्टे सुर सान्निध्य दाइ, पणसय चाप गुहा ठाइ ॥
 ॥ वि० ॥ १३ ॥ रयणमय पडिमा पूजे, तेना पातक
 डाधूजे, ते नर सीजे नवें तीजे ॥ वि० ॥ १४ ॥ सा
 सय गिरि रायण पगलां, चउमुख आदे चैत्य जलां
 श्रीशुज वीर नमे सघलां ॥ वि० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ राग पंजाबी ॥

॥ खतरा दूर करना दूर करना, एक ध्यान धरम
 का धरना ॥ खतरा ० ॥ जब लगेँ आतम निरमल कर
 ना, तबलग जिन अनुसरना ॥ खतरा ० ॥ धन कण

(११६)

कंचनकूं क्या करना, आखर एक दिन मरना ॥ खतरा० ॥ १ ॥ मद माया मिथ्या मत हरना, सुमति गुपति चित्त वरना ॥ खतरा० ॥ २ ॥ संवर जाव सदा मन धरना, आतम डुरगत हरना ॥ खतरा० ॥ ३ ॥ ग्यान उद्योत प्रभु पायें परना, शिव सुंदरी सुख वरना ॥ खतरा० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रजातिउ ॥

॥ वाणीहे विसाल तेरी, अगम अगोचरी ॥ दसमे द्वार ऐसे, उँकारध्वनी उच्चरी ॥ वा० ॥ १ ॥ शब्द एक अनेक अर्थ, बुजतहे अक्षरी ॥ चउदराज लोक मांहे, धौरधार विस्तरी ॥ वा० ॥ २ ॥ नगर मध्ये नदी बहे, जरीलीयो जल घघरी ॥ मत मतां तर ऐसे जये, एक अंग अनुसरी ॥ वा० ॥ ३ ॥ बीज तैसो वृद्ध जयो, बरखा बरखत जुरी ॥ रुपचंद आत्म बुद्धि, तैसी समजण पडी ॥ वा० ॥ ४ ॥

॥ अथ शत्रुजय पद ॥

॥ में जेटया नानिकुमार, अखीआं सफल जइ ॥ में जेटया० ॥ नेना सफल जइ ॥ में जेटया० ॥ तीरथ जगमां ठे घणा रे, तेहमां ए ठे सार ॥ शत्रुजा

समो तीरथ नही रे, तुरत तरत जवपार ॥ अखी
 आं० ॥ १ ॥ जुगला धर्म निवारिओ रे, तीन जुवन
 तुं सार ॥ सोवन वरणी देह ठे रे, वृषज लांठन
 मनोहार ॥ अखीआं० ॥ २ ॥ ॥ सोरठ मंमण तुं
 प्रभु रे, शकल करम करे दूर, केवल लखमी पामवा
 रे, वंढीत लीला पूर ॥ अखीआं० ॥ ३ ॥ गिरिवर
 फरस्यो जावहुं रे, सफल कीउं अवतार ॥ श्रीजिन
 हरख पसायथी रे, ॥ संघ सदा सुख कार ॥ अ
 खीआं० ॥ ४ ॥ घणा दिवशनी चाह हती रे, देख
 न प्रभु दीदार ॥ रत्न सुंदर पाठक कहे रे, अविचल
 लीला पूर ॥ अखीयां० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशान्तिजिन स्तवनं ॥

॥ शान्तिकरण प्रभु शान्तिजिनेश्वर, शान्तिकरण इ
 न कुलमें होजिनजी, तुंमेरा मनमे, तुंमेरा दिलमे ॥
 ध्यानधरुं पलपलमें हो जिनजी ॥ तुं० ॥ १ ॥
 तुं० ॥ निर्मल ज्योति वदनपर सोनत, निकस्योज्युं
 चंद बादलमें ॥ होजि० ॥ तुं० ॥ तुं० ॥ जिनरंग
 कहे प्रभु शान्तिजिनेश्वर, देख्या देव खलकमें हो ॥
 जिन० ॥ तुं० ॥ तुं० ॥ २ ॥

॥ अथ श्रीसमेतशिखरनुं स्तवन ॥

॥ शिखरजीकी जात्रा क्युन करे ॥ जाके बंधे
करमकी रेख ॥ शिखर० ॥ १ ॥ पाल गंजमें सफल हो
तहे, मधुवन पाप टरे ॥ शीतानाल अनोपम सोहे,
निरमल नीर नरे ॥ शिखर० ॥ २ ॥ वीसटुंक पर वी
श जिनेसर, मुनिजिन ध्यान धरे ॥ कर्म खपावी मु
गतिकुं पोचे, शिव रमणकुं वरे ॥ शिखर० ॥ ३ ॥
इंझादिक सुर नृत्य करतहे, नाना जाव धरे ॥ इंझा
णी मली मंगल गावे, मोतीअना थाल नरे ॥ शि
खर० ॥ ४ ॥ मन बच तन करी प्रभुजीकुं ध्यावे,
दूरगति दूर हरे ॥ लक्ष्मीशेन जो जात्रा करियें, ता
के काजसरे ॥ शिखर० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवन रागकाफी ॥

॥ तुमहीं जाके अश्वखेजावो, राउकेरीत चलावो
रे ॥ तु० ॥ हम जोगीसर जे तपसाधे, ते तुम जेद न जा
नो रे ॥ तु० ॥ १ ॥ सुणरे कमठ तुं महा तपसा
धे, तपको जेद न जान्यो रे ॥ तन तापे मन तापे
नाहीं, कहा तापे अज्ञानो रे ॥ तु० ॥ २ ॥ पन्नग काहे
कुं अगनीजजावे, हित चित दया नआवे रे ॥ पासप्रभु
नवकार सुणावे, धरणी धर पदपावे रे ॥ तु० ॥ ३ ॥

॥ अथ प्रनाती ॥

॥ ऐसे सेरबिच कौनदिवान हैवो ॥ ऐसे० ॥ ॥
 पानीके कोट पवनके कांगरे, दशदरवाजे को मंमाण
 हैवो ॥ ऐसे० ॥ १ ॥ पाचैँड़ी त्रेवीश तस्कर, नगरी
 कूं करत हेरान हैवो ॥ ऐसे० ॥ २ ॥ प्रजापोकार
 सुनी तबजाग्यो, बडेचेतन राय सुग्यान हैवो ॥ ऐ
 से० ॥ ३ ॥ नाथ निरंजननक्ति तेरी, हाथमां लाल
 कबान हैवो ॥ ऐसे० ॥ ४ ॥ रूपचंद कहे तेहने
 वारो, पेलो डुसमन मान गुमान हैवो ॥ ऐसे० ॥ ५ ॥

॥ अथ वीरजिन आमलक्रीडानुं स्तवन ॥

॥ राग प्रनाती तथा वेलावज ॥ आदि अंत जानुं
 नही, तुम हो अविनासी ॥ रामत आमली पीपली,
 खेल करे विलासी ॥ आदि० ॥ १ ॥ इंड सनामें
 बेठके, मुख युं जस बोले ॥ तीन जुवनमें कोनही,
 प्रभु धीरज तोले ॥ आदि० ॥ २ ॥ वात न मानत
 देव एक, सर्पको वेस बनावे ॥ प्रभु पकर के मार दे,
 चित्त नाहीं मरावे ॥ आदि० ॥ ३ ॥ बालक होइ
 प्रभुगुं रमे, हास्यो खंध चडावे ॥ बिनत्स होइ कें
 बढयो, गगने लेइ जावे ॥ आदि० ॥ ४ ॥ हसत
 दयालु देख के, मुख युं जस कहावे ॥ धन्य धन्य महा

वीरजी, रूपचंद मन जावे ॥ आदि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ कृष्णजिन स्तवन राग जैरव ॥

॥ उठत प्रजात नाम जिनजीको गाइयें ॥ उठ० ॥
 नानिजीके नंदके चरण चित्त लाइयें ॥ उठ० ॥ १ ॥
 आनंदके कंद जाकुं पूजत सुरिंद वृंद ॥ एसो जिनरा
 ज ठोड उरकुं न ध्याइयें ॥ उठ० ॥ २ ॥ जनम
 अयोध्या ठाम, मात मरुदेवा नाम ॥ लंठन वृषज
 जाके चरण सोहाइयें ॥ उठ० ॥ ३ ॥ पांचशों धनु
 षमान, दीपत कनक वान ॥ चोराशी पूरव लाख आ
 यु स्थिति पाइयें ॥ उठ० ॥ ४ ॥ आदिनाथ आदि
 देव, सुर नर सारे सेव ॥ देवनको देव प्रभु छुन सु
 ख दाइयें ॥ उठ० ॥ ५ ॥ प्रभुको पादार विंद, पूज
 त हरखचंद ॥ मेढो दुःखदंद सुख संपद बधाइयें ॥ ६ ॥

॥ राग विजास ॥

॥ प्रभुजीको दरिशन पायोरी आज में ॥ प्रभु० ॥
 वंछित पूरण पाश चिंतामणि, देखत दुरित गमायो
 री ॥ आजमें ॥ १ ॥ मोहिनी मूरत महिमा सा
 गर, तीरथ सब जग ठायोरी ॥ आ० ॥ जाणचंद प्रभु
 शकल संघकूं, जय जयकार कहायो री ॥ आ० ॥ ३ ॥

(३२१)

॥ अथ पार्श्वनाथ गीतं ॥ राग काफ़ी ॥

॥ को न गमे चित्त को न गमें, प्रभु पासजी वि
ना चित्त को न गमें ॥ परम निरंजन देवने मूको,
दूषण सहितने कोण नमे ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ सुंदर ख
टरस जोजन ठांमी, कुष्ठित असनने कोण जमे ॥
॥ प्रभु० ॥ २ ॥ जे तुज आण विहूणा मानव, मो
ह नृपतिने केम दमे ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ जे तुज पद
पंकजने न सेवे, तेह अनंत संसार जमे ॥ प्रभु०
॥ ४ ॥ जे तुज पूजे जाव धरी तस, नव नव संचि
त डुरित समे ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ करूणासागर तुज
विण दूजो, मुज अपराधने कोण खमे ॥ प्रभु० ॥
॥ ६ ॥ ध्याने ध्यावे जे कोइ तुजने, अमृत पदमां
ते रंगें रमे ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमिजिन स्तवन राग काफ़ी ॥

॥ नां करीयें रे नेडो नां करीयें, निगुणा गुंरे नेडो
नां करीयें ॥ अमे रोइ रोइ आंखडीयामां नीर
जरीयें जी ॥ निगुणा० ॥ प्रेम निरवहि वाल्हा
प्रेमी जननो, अविचाखुं नवि मग जरीयें जी ॥
॥ निगुणा० ॥ १ ॥ जादव जान सजीने यडुपति,
तोरण आवीने केम फरियें जी ॥ निगुणा० ॥ २ ॥

संयम नारी बाढहे कीथी प्यारी, राजुल मूकी जर
 दरीयें जी ॥ निगुणा० ॥ ३ ॥ अम अबलानी सा
 हामुं निरखो, विरह जलधिथी केम तरीयें जी ॥
 निगुणा० ॥ ४ ॥ यौवन वय किम करी निर्गमियें,
 लोकलाजथी घणुं मरियें जी ॥ निगुणा० ॥ ५ ॥
 दीनरंजन प्रभु दीलमां धरीयें, निशदिन अवटाइ म
 रीयें जी ॥ निगुणा० ॥ ६ ॥ चतुर थइ अवसरशुं
 चूको, अमृतसुख रंगें वरीयें जी ॥ निगुणा० ॥ ७ ॥

॥ अथ धर्मजिननुं स्तवन ॥

॥ एम करीयें रें नेहेडो एम करीयें रे, सुगुणाशुं
 नेहेडो एम करीयें ॥ हारें चित्त अटक्युं प्रभुनी चाकरी
 यें, जेम नवसायर सुखथी तरियें रे ॥ जिनजीशुं
 नेहेडो एम करीये ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ एकने मूकी
 बेने खंमी, त्रणनो संगते परहरियें रे ॥ सु० ॥ चार
 जणा शिर चोट करीने, पांचनी सेवा अनुशरीयें रे
 ॥ सु० ॥ २ ॥ ढ सत अठ नव दशने ठंमी, एकाद
 श दिलमां धरीयें रे ॥ सु० ॥ बारनो आदर करीयें
 अहो निस, तेरथी मनमां घणुं मरियें रे ॥ सु० ॥
 ॥ ३ ॥ पांच आठ नव दश तेरने, बांधी नाखीयें
 जर दरीयें रे ॥ सु० ॥ सत्तावीशनो संग करीनें, पंच

वीशनी प्रीतें ठरीयें रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ बत्रीश तेंत्रीश
 चोराशी उंगणीश, टाली चारथी नवी फरीए रे ॥
 ॥ सु० ॥ सडतालीशथी दूरें रहीयें, एकावन मन
 मां जरीयें रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ वीशने सेवी बावीश
 बांधी, त्रेवीशथी निसदिन जरीयें रे ॥ सु० ॥ धर्म
 प्रभुछुं स्नेह करतां, अमृत सुख रंगें वरीयें रे ॥ सु० ॥ ६ ॥

॥ अथ मन जमरानी वैराग सव्वाय ॥

॥ जूलो मन जमरा तुं किहां जम्यो, जमियो दि
 वसने रात ॥ मायानो बांध्यो प्राणीयो, जूज्यो प्रेम
 लगात ॥ जूज्यो भ्रम जाल ॥ जू० ॥ १ ॥ कुंन का
 चो रे काया कारमी, तेहना करो रे जतन्न ॥ विण
 संता वार लागे नहीं, निर्मल राखो रे मन्न ॥ जू०
 ॥ २ ॥ केहनां ठोरू केहनां बाठोरू, केहनां मायने
 बाप ॥ प्राणी जीव जासे एकजो, साथें पुण्यने पा
 प ॥ जू० ॥ ३ ॥ आश्या तो अंबर जेवडी, मरवुं
 पगला रे हेठ ॥ धन संची संची कांइ करो, करो दै
 वनी वेंठ ॥ जू० ॥ ४ ॥ धंधो करी धन जोडिउं,
 लाखां उपर क्रोड ॥ मरणनी वेला मानवी, लीयो
 कणदोरो ठोड ॥ जू० ॥ ५ ॥ मूरख कहे धन माह
 रुं, धोंखें धान्य न खाय ॥ वस्त्र विना जइ पोढवुं, ल

खपति लाकडा मांय ॥ नू० ॥ ६ ॥ जवसागर दुःख
 जल नखो, तरवो ठे रे तेह ॥ विचमां जय सबलो
 थयो, कर्म वायरोने मेह ॥ नू० ॥ ७ ॥ लखपति
 ठत्रपति सब गया, गया लाख बे लाख ॥ गर्व करी
 गोखें वेसतां, सर्व थया बली राख ॥ नू० ॥ ८ ॥
 धमण धूखंती रे रहे गइ, बुज गइ लाल अंगार ॥
 एरणको ठबको मट्यो, उठ चव्यो रे लोहार ॥ नू०
 ॥ ९ ॥ उलट मारग चालवुं, जावुं पहेले रे पार ॥
 आगल हाट न वाणीयो, संबल लेजो रे सार ॥
 नू० ॥ १० ॥ परदेशी परदेशमें, कुणसुं करो रे स
 नेह ॥ आया कागल उठ चव्या, न गणे आंधीने मे
 ह ॥ नू० ॥ ११ ॥ केइ चाल्या रे केइ चालशे, केइ
 चालण हार ॥ केइ बेठा रे बुढा बापडा, जाणे नर
 क मजार ॥ नू० ॥ १२ ॥ जेणे घर नोबत वाजती,
 हुंता ठत्रीशे राग ॥ ते मंदिर खाली पड्यां, बैठण
 लागा ठे काग ॥ नू० ॥ १३ ॥ नमरो आव्यो रे कम
 लमां, लेवा कमलनुं फूल ॥ कमलनी वांढायें मांहे
 रह्यो, जिम आयमते सूर ॥ नू० ॥ १४ ॥ सहगुरु
 कहे वस्तु वोरियें, जे कोइ आवे रे साथ ॥ आपणो
 लान उगारीयें, लेखो साहिब हाथ ॥ नू० ॥ १५ ॥

(११५)

॥ अथ अरिहंत स्तुति प्रारंभः ॥

॥ श्री अरिहंत नमीजें. चतुरनर ! श्री अरिहंत नमीजें ॥ ए आंकणी ॥ बारस गुणशोभित जगमो हित, सुर नर नमित कहिजें ॥ अतिशय चार प्रथम वाली आठें, प्रातिहार जस लहीजें ॥ च० ॥ श्री० ॥ १ ॥ चार सहज एकादश स्वाधिक, उगणी श दैव्य ग्रहीजें ॥ उत्तर अतिशय चोत्रीश पांत्रीश, वाणी समीप रहीजें ॥ च० ॥ श्री० ॥ २ ॥ तीर्थकर पद जोगी सयोगी, गुणगणे प्रणमीजें ॥ नावस्वरूप रमण अजिजाप्यो, तेहनी आण बहोजें ॥ च० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इत्यर्हतां स्तुतिः समाप्ता ॥

॥ अथ अतीन्द्रियस्वरूपसिद्धस्तुति प्रारंभः ॥

॥ परमेष्ठी आराधी सुगुणजन ! परमेष्ठी आराधी ॥ शिव अविचल अरु जानत पदवी, अद्भुत अ व्याबाधी ॥ अपुनर्नव सिद्धि गति सुख पूरण, ठाण संपत्ति अबाधी ॥ सुगु० ॥ पर० ॥ १ ॥ दर्शनज्ञान वीरिय सुख संपद, अनंत चतुष्ट निरुपाधि ॥ तस नावादि निखेप जजनथी, आए स्वरूपसमाधि ॥ सुगु० ॥ पर० ॥ २ ॥ इत्यतीन्द्रियस्वरूपस्तुति समाप्त ॥

॥ अथ अचार्योपाध्यायाऽनगाराणां ॥

॥ युगपत्स्तुति प्रारंभः ॥

॥ आचारिज पदसेवा, चहत मन ! आचारिज प
दसेवा ॥ सुरपति सेवित त्रिपदीश्रन्यासें, शीश धरे
वा सखेवा ॥ तीर्थकर देवठंड विराजित, गणधर दे
शना देवा ॥ च० ॥ आ० ॥ १ ॥ अंग दुवादस च
उदस पूरव, मुहूर्त्तमांहे करेवा ॥ उपगारी उवजाय
मुनिने, अंग उपांग धरेवा ॥ च० ॥ आ० ॥ २ ॥
निजगुण अधिक उपासक चारो, सिद्धि अनीह क
हेवा ॥ नाव स्वरूपचंड जिम उल्लासे, सिद्धिरमण
सुख मेवा ॥ च० ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ आत्मगुणस्तवन प्रारंभः ॥

॥ आत्मगुण अजिलाख्यो, अनुजवी ! आत्मगु
ण अजिलाख्यो ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र तपोगुण, वी
रज उपयोग दाख्यो ॥ पुजल गंधादिकथी अलंगो,
श्री जिनराजें नाख्यो ॥ अनुजवी० ॥ आ० ॥ १ ॥
तेहनुं लक्ष्ण मूलचेतनता, पुजल जड गुण आख्यो ॥
जिनमत शुद्धस्वरूप उल्लासे, स्वगुणरमण रस चा
ख्यो ॥ अनुजवी० ॥ आ० ॥ २ ॥ इत्यात्मस्तुति ॥

॥ अथ सुपार्श्वजिनस्तवन प्रारंभः ॥

॥ रातडी आ रमीने रे किहांथकी आविया ॥

॥ रे ॥ ए देशी ठे ॥

॥ मुऊ मन नमरो प्रभुगुण फूजडे रे ॥ रमणकरे दि
नरात रे ॥ सुणजो स्वामि सुपास शोहामणा रे ॥ क
र जोडी कहुं वात रे ॥ १ ॥ मनहुं ते चाहे रे ॥ प्र
भु मजवा जणी रे ॥ पण दीसे ठे अंतराय रे ॥ जी
व प्रमादी रे कर्म तणे वशें रे ॥ ते केम मजवुं थाय
रे ॥ म० ॥ २ ॥ लाख चोराशी जीवा योनिमां रे ॥
जव अटवी गति चार रे ॥ काल अनंदि अनंत नमतां
थकां रे ॥ किमहीं न आवे पार रे ॥ म० ॥ ३ ॥
मारग बतावो रे साहेब माहेरा रे ॥ जिम आवुं तु
म पाय रे ॥ लाज वधारो रे सेवक जाणीनें रे ॥ द्यो
दरिसण जिनराय रे ॥ म० ॥ ४ ॥ मूर्ति ताहरी रूपें
रूअडी रे ॥ अनुनवपद दातार रे ॥ नित्यलान प्रभुं
चुं प्रेमें वीनवे रे ॥ तुमथी लहुं सुखसार रे ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ रायजी अमे तो हिंडुयाणी के, राज गराशी ॥

॥ या रें लो के ॥ ए देशी ठे ॥

॥ जिनजी गोडोमंण पास के, वीनति सांनजो

रे लो ॥ जिनजी अरज करुं सुविलास के, मूकी आ
 मलो रे लो ॥ जिनजी तुम दर्शनने काज के, जीव
 डो टलवले रे लो ॥ जिनजी महेर करो माहाराज के,
 आशा सवि फले रे लो ॥ १ ॥ जिनजी मननमरो
 ललचाय के, प्रभुनी उलगें रे लो ॥ जिनजी जेम ते
 म मेलो आयके, तेकरजो वगें रे लो ॥ जिनजी दूरथ
 कांपण नेह के, साचो मानजो रे लो ॥ जिनजी तुम
 थी लहुं गुणगेह के, अमृत पानजो रे लो ॥ २ ॥ जि
 नजी प्रभुं वांथ्यो प्रेम के, ते केम वीसरे रे लो ॥
 जिनजी बीजे जावा नियमके, प्रभुथी दिल ठरे रे लो ॥
 जिनजी जोतां ताहरुं रूप के, अनुभव सांनरे रे
 लो ॥ जिनजी ताहरी ज्योति अनूप के, चिंताडुःख ह
 रे रे लो ॥ ३ ॥ जिनजी एतुं नोजन खाय, मिठाइने
 ललाचें रे लो ॥ जिनजी आत्मने हित आय के, प्रभु
 ना गुण रुचे रे लो ॥ जिनजी कर्म तणां बल जोर
 के, तेहथी तारियें रे लो ॥ जिनजी समकेतना जे चो
 र के, तेहने वारियें रे लो ॥ ४ ॥ जिनजी निज सेव
 क जाणीने, मुक्ति बतावीयें रे लो ॥ जिनजी करुणा
 रस आणीने, मनमां लावीयें रे लो ॥ जिनजी वाच
 क सहेज सुंदरनो, सेवक इम कहे रे लो ॥ जिनजी

पंक्ति श्रीनित्यज्ञान के, प्रभुथी सुख लहे रे लो ॥५॥

॥ अथ श्री श्रेयांस जिनस्तवनं ॥

॥ रंगिली आतमा ए देशी ॥ सहेर बडा संसारका,
दरवाजा जस चार ॥ रंगिली आतमा ॥ चोराशी
लाख घर बसे रे, अति महोटे विस्तार ॥ रं० ॥ १ ॥
घरघरमें नाटक बने रे, मोह नचावण हार ॥ रं० ॥
वेश बने केई जातके रे, देखत देखनहार ॥ रं० ॥
२ ॥ चउद राजके चोकमें रे, नाटिक विविध प्रका
र ॥ रं० ॥ नमरीदेत करत थेई रे, फिर फिर एअधि
कार ॥ रं० ॥ ३ ॥ नाचत नाच अनादिको रे, हुं हा
खो निरधार ॥ रं० ॥ श्रीश्रेयांस कृपा करो रे, आनं
दके आधार ॥ रंगो० ॥ ४ ॥ इति श्रेयांसजिन स्तवनं ॥

॥ अथ प्रजाती ॥

॥ में हुं मुसाफर आया हो प्यारा, नहिं कोइ
मेरा ॥ नहिं० ॥ जनम हुवा तब आपणा कहावे,
नहिं रहेणका मेरा हो प्यारा ॥ नहिं० ॥ १ ॥ स
गा संबंधी सहु कुटुंबी कहावे, ज्युं तीरथका मेला
हो प्यारा ॥ नहिं० ॥ २ ॥ धन कण कंचन स्थिर
नहिं रेणा, दजवादजका घेरा हो प्यारा ॥ नहिं० ॥

॥ ३ ॥ रूपचंद करे प्रेमकी बातां, ज्युं घाणीका फे
रा हो प्यारा ॥ नहिं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रजाती रागमापद ॥

॥ जोबनीयांनी मोजां फोजां, जाए नगरां देती
रे ॥ घडी घडीनां घडियालां वागे, तोय न जागे ते
थी रे ॥ जो० ॥ १ ॥ जराराहसी जोर करे ठे, फे
लावी फजेती रे ॥ आवी अवधें उजशे, जाशे लख
पतिने लेती रे ॥ जो० ॥ २ ॥ माले बेगो मोज करे
ठे, खातें जूवे खेती रे ॥ जमरो जमरो ताणी लेशे,
गोफण गोला सेंती रे ॥ जो० ॥ ३ ॥ जम राजाने
शरणे जावुं, जोरालो कोइ जेहथी रे ॥ डुनियां दूजो
दीसे नाहिं, आखर तरशे तेहथी रे ॥ जो०॥४॥ दां
त पडयाने मोशो थयो, काज न सखुं कहेथी रे ॥ उदय
रत्न कहे आपे समजो, कहियें वातो केती रे ॥ जो०॥५॥

॥ श्री कृष्णदेवजिन स्तवन ॥

॥ योग माया गरबे रमे जो ॥ ए देशी ॥

॥ उलगडी आदिनाथनी जो ॥ कांइ कीजी
यें मनने कोम जो ॥ होड करे कोण नाथनी जो ॥
जेना पाय नमे सुर कोड जो ॥ उल० ॥ १ ॥ वा
हाला मरुदेविनी नानलो जो, राणी सुनंदाना

हइडानो हार जो ॥ त्रण्य जुवननो नाहालो जो, म
 हारा प्राण तणो आधार जो ॥ उल० ॥ १ ॥ वाह
 ले वीश पूरव लख जोगव्युं जो, रूढुं कुंवरपणुं रंग
 रेल जो ॥ मनहुं मोह्युं रे जिन रूपव्युं जो, जाणे ज
 गमां मोहन वेज जो ॥ उल० ॥ ४ ॥ प्रभुनी पांच
 रौं धनुषनी देहडी जो, लख पूरव त्रेशठ राज जो ॥
 लाख पूरव समता वरी जो, थया शिव सुंदरीवर रा
 ज जो ॥ उल० ॥ ३ ॥ एना नामथी नव निधि सं
 पजे जो, बली अलिय विघन सवि जाय जो ॥ श्री
 सुमतिविजय कवि राजनो जो, एम राम विजय गु
 ण गायजो ॥ उल० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री संजवजिन स्तवन ॥

॥ तुने गोकुल बोलावे कहान, गोविंद गोरी रे ॥
 आलोने महीनां दाण, न करो चोरी रे ॥ ए देशी ॥
 ॥ मने संजवजिनचुं प्रीत, अविहड लागी रे ॥
 कांइ देखत प्रभु मुखचंद, जावठ जांगी रे ॥ १ ॥
 जिन सेनानंदन देव, दिलडे वसीया रे ॥ प्रभु चरण
 नमे कर जोड, अनुभव रसीया रे ॥ २ ॥ तोरीधनु
 शय चार प्रमाण, उंची काया रे ॥ मन मोहन कंच
 न वान, लागी तोरी माया रे ॥ ३ ॥ प्रभु राय जि

तारी नंद, नयणें दीगो रे ॥ सावन्नी पुरी शणगार,
 लागे मुने मीगो रे ॥ ४ ॥ प्रभु ब्रह्मचारी जगवान,
 नाम सुणावे रे ॥ पण मुक्तिवधू वशीमंत्र, पाठ न
 णावे रे ॥ ५ ॥ मुळ रढ लागी मन मांहे, तुळ गुण
 केरी रे ॥ नहीं तुळ मूर्तिने तोल, सुरत नजेरी रे
 ॥ ६ ॥ जिन महेर करी जगवान, वान वधारो रे ॥
 श्री सुमति विजय गुरु शिष्य, दिलमां धारो रे ॥ ७ ॥

॥ अथ शान्तिनाथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ शान्ति जिणंद सुखकारी, सकलजन ! शान्ति
 जिणंद सुखकारी ॥ स्वस्तिश्री कृदि वृदि जयंकर,
 मंगलान्युदयविहारी ॥ स० ॥ शां० ॥ १ ॥ सुरपूजि
 त गढ तीन मनोहर, प्रातिहारज सहचारी ॥ वृद्ध
 अशोक परम मुददाता, कुसुमवृष्टि वरधारी ॥ स० ॥
 ॥ शां० ॥ २ ॥ दिव्यध्वनि चउविध वाजित्रसुर, यो
 जनमान उदारी ॥ चिहुं दिशि चमर ठत्र त्रिहुं शो
 नित, सिंहासनपदसारी ॥ स० ॥ शां० ॥ ३ ॥ ना
 मंमल रवि कोटि विजंता, डुंडुनिध्वनि बलिहारी ॥
 ऐसी सजामें श्री जिनसेवा, स्वरूपचंद मन प्यारी
 ॥ स० ॥ शां० ॥ ४ ॥ इति शान्तिनाथ स्तवनम् ॥

(૨૩૩)

॥ અથ શ્રી શાંતિનાથ સ્તવનં ॥

॥ સુંદર શાંતિજિણંદની, ઠબિ ઠાજે છે ॥ પ્રહુ ગં
ગાજલગંજીર, કીર્તિ ગાજે છે ॥ ગજપુર નથર શોહા
મણું, ઘણું દીપે છે ॥ વિશ્વસેન નરિંદનો નંદ, કંદર્પ
જીપે છે ॥ અચિરા માતાયેં ઝર ધસ્યો, મન રંજે છે ॥
મૃગલંઠન કંચન વાન, જાવઠ જંજે છે ॥ ૧ ॥ પ્રહુ
લાલ વરસ ચોથે જાગેં, વ્રત લીધું છે ॥ પ્રહુ પામ્યા
કેવલ જ્ઞાન, કારજ સીધું છે ॥ ૨ ॥ ધનુષ ચાલીશ
નું ઈશનું, તનું સોહે છે ॥ પ્રહુ દેશના ધ્વનિ વરસંત,
જવિ પડિબોહે છે ॥ ૪ ॥ જક્તવત્સલ પ્રહુતા જળી,
જન તારે છે ॥ બૂઢંતાં જવજલમાંહિ, પાર ઝતારે છે
॥ ૫ ॥ શ્રી સુમતિ વિજય ગુરુનામથી, હુઃસ્વ નાસે
છે ॥ કહે રામવિજય જિનથ્યાન, નવનિધિ પાસેં છે ॥ ૬ ॥

॥ અથ સીમંધર સ્તવન પ્રારંજઃ ॥

॥ ચિત્તહું સંદેશો મોકલે, મહારા વાલ્હા જીરે ॥
મનડા સારથે રે નેહ, જડને કહેજો મહારા સ્વામી
જીરે ॥ સીમંધર નિત્ય હું જપું, મહારા સ્વામી જીરે,
જેમ બાપઈડો રે મેહ ॥ જ૦ ॥ મ૦ ॥ ૧ ॥ દૂર દે
શાંતર જડ રહ્યા ॥ મ૦ ॥ માયા લગાડીને હેવ ॥
॥ જ૦ ॥ મ૦ ॥ પાંચડી જો મહારે હોવે ॥ મ૦ ॥

कमी आबुं ततखेव ॥ ज० ॥ म० ॥ १ ॥ प्रीत ते
 अधिकी होइ गई ॥ म० ॥ हवे केम ठांमी रे जाय
 ॥ ज० ॥ म० ॥ उत्तम जनहुं प्रीतही ॥ म० ॥ क
 दीय न उठोरे थायं ॥ ज० ॥ म० ॥ ३ ॥ निःस्नेही
 तुम सारखा ॥ म० ॥ मेंतो कोई न दीठ ॥ ज० ॥ म० ॥
 हड्डामां चाहे नहिं ॥ म० ॥ मोठे बोले ते मीठ
 ॥ ज० ॥ म० ॥ ४ ॥ आशा तो तम उपरें ॥ म० ॥
 मेरु समान में कीथ ॥ ज० ॥ म० ॥ जो कृण एक
 कृपा करो ॥ म० ॥ तो सहु होवे रे सिद्ध ॥ ज० ॥
 ॥ म० ॥ ५ ॥ जे अकृय सुख शाश्वतां ॥ म० ॥
 जे सहु चाहे रे लोक ॥ ज० ॥ म० ॥ नहिं आपो
 माग्युं थकुं ॥ म० ॥ जाणपणुं सहु फोक ॥ ज० ॥
 ॥ म० ॥ ६ ॥ घणुं गुं कहियें जाणने ॥ म० ॥
 देजो स्वामीरे सेव ॥ ज० ॥ म० ॥ कवि ते रूप प
 सायथी ॥ म० ॥ रिद्धि कहे नित्यमेव ॥ ज० ॥ म० ॥ ७ ॥

॥ अथ शान्तिजिन स्तवन ॥

॥ शान्ति जिणंद नजो सदा, नवियण बहु जावें ॥
 जगत शिरोमणि जेहना, गुण ज्ञानी गावे ॥ शां० ॥
 ॥ १ ॥ दूषण कांई न देखियें, मूरती अतिसारी ॥
 मोहनगारी मुऊ मनैं, प्रभु लागे प्यारी ॥ शां० ॥

(३३५)

॥ १ ॥ गर्नथकां पण गजपुरें, करुणा जिणे कीधी॥
जनमसमय त्रण जगतमें, दीलशाता दीधी ॥ शां० ॥
॥ ३ ॥ नाम जपे मुख निरखीनें, होए खुशियाली ॥
मंगलमाला मंदिरें, दिन दिन दीवाली ॥ शां० ॥ ४ ॥
समकितधारी समजीने, साचे दिल सेवे ॥ कहे ला
वण्य रुपा करी, बहु दोलत घर देवे ॥ शां० ॥ ५ ॥

॥ श्री चंडप्रनजिन स्तवनं ॥

॥ रायजी अमें तो हिंडुआणी के, राय गरा
शीआ रे लोल ॥ ए देशी ॥

॥ जिनजी चंडप्रन अवधारो के, नाथ नीहाल
जो रे लोल ॥ के बमणी बिरुद गरीब नीवाजनी,
वाचा पालजो रे लोल ॥ १ ॥ हरखें हुं तुम शरणें
आयो के, मुऊने राखजो रे लोल के ॥ चोरटा चार
बुगल जे जूमा, ते दूरें नाखजो रे लोल के ॥ २ ॥
प्रभुजी पंचतणी परशंसा के, रूढी आपजो रे लो
ल ॥ मोहन महेर करीने दरिशन, मुऊने आपजो रे
लोल ॥ ३ ॥ तारक तुम पालवमें जाव्यो के, हवे
मुने तारजो रे लोल ॥ कुतरी कुमति थइ ठे केडें के,
तेहने वारजो रे लोल ॥ ४ ॥ सुंदरी सुमति शोहागण
सारी के, प्यारी ठे घणुं रे लोल ॥ तातजी ते विण

जीव चउद, जुवन कहुं आंगणुं रे लोल ॥ ५ ॥ ल
खगुण लखमणा राणीए जाया के, मुऊ मन आव
जो रे लोल ॥ अनुपम अनुनव अमृत मीठी के,
सुखडी लावजो रे लोल ॥ ६ ॥ दीपती दोढशो धनु
ष प्रमाण के, प्रजुजीनी देहडी रे लोल ॥ देवनी द
श पूरव लख मान के, आयुष्य बेलडी रे लोल
॥ ७ ॥ निर्गुण नीरागी पण रागी के, मनमांहे रह्युं
रे लोल ॥ गुन गुरु सुमतिविजय सुपसाय के,
रामें सुख लहुं रे लोल ॥ ८ ॥ इति समाप्त ॥

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ विमलाचल वेगें वधावो ॥ ए देशी ॥

॥ चउमासी पारणुं आवे, करिवीनति निज घर
जावे ॥ प्रियापुत्रने वात जाणावे, पटकुल ऊरी पय
रावे रे ॥ महावीर प्रजु घरआवे, जीरण शेरजी ना
वना जावे रे ॥ महा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ उनी
शेरीयें जल ठटकावे, जाय केतकी फूल बिठावे ॥
निजघर तोरण बंधावे, मेवां मिठाइ थाल नरावे
रे ॥ महा० ॥ २ ॥ अरिहाने दानज दीजें, देतां जे
देखीने रीजे ॥ षटमासी रोग हरिजें, सीजे दायक
नव बीजे रे ॥ महा० ॥ ३ ॥ जिनवरनें सनमुख

जावुं, मुज मंदिरीयें पधरावुं ॥ पारणुं नली जांतें क
 रावुं, युगतें जिन पूजा रचावुं रे ॥ महा० ॥ ४ ॥
 पढी प्रभुने वोलावा जइयुं, करजोडीने सन्मुख रहि
 युं ॥ नमी वंदीने पावन थइयुं, वीरति अतिरंगें व
 हिउं रे ॥ महा० ॥ ५ ॥ दयादान कृमा शीलधर
 युं, उपदेश सज्जनने करयुं ॥ सत्य ज्ञानदिसा अनु
 सरयुं, अनुकंपा लक्षण वरयुं रे ॥ महा० ॥ ६ ॥
 एम जीरणशेठ वदंता, परिणामनी धारें चढंता ॥ आ
 वकनी सीमें ठरंतां, देव डुंडुनि नाद सुणंता रे ॥
 महा० ॥ ७ ॥ करी आयु पूरण गुननावें, सुरलोकें
 अच्युतें जावें ॥ शाता वेदनी सुखपावे ॥ गुन वीर
 वचन रस गावे रे ॥ महा० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ कृष्णजिन ॥ स्तवनं ॥

॥ जयो जयो नायक जग गुरुरे, आदेसर जिन
 राय ॥ तुज मुख देखी साहेबा, मुज आनंद अंग
 न माय ॥ कृष्णदेव तुं मोरो महाराज, ताहारो द
 र्शन दीगो में आज, प्रभु मुज सीधा वंछित काज ॥
 कृ० ॥ १ ॥ आंखडी कमलनी पांखडी रे, जाणीयें
 अमीरस कंद ॥ दिन दिन मुखडूं दीपतो, जाणे न
 यन चकोरा चंद ॥ कृ० ॥ २ ॥ मूरति जिनजीनी

मोहनी रे, साची मोहन वेल ॥ मनना मनोरथ पू
रती, जाणे कल्पतरुनी वेल ॥ ॠ० ॥ ३ ॥ एकण
जीजे ताहेरा रे, गुणकेतां न कहेवाय ॥ जिम गंगा
रज कण तणी, कहो केणी परे संख्या थाय ॥ ॠ०
॥ ४ ॥ शेत्रुंजा गिरिनो राजियो रे, नाजीराया कुल
चंद ॥ केसरविमल इम वीनवे, प्रभु द्यो दर्शण सु
खकंद ॥ ॠ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तवन ॥

॥ धन धन खेत्र माहाविदेहजी, धन पुंमरिगिणि
गाम ॥ धन तेहना मानवी जी, नित्य उठी करे रे
प्रणाम ॥ सीमंधर स्वामी कश्ये रे हुं महाविदेह आ
वीश, जयवंता जिनवर कश्ये रे हुं तुमने वांदीश ॥ १ ॥
चांदलीआ संदेसडो जी, केहेजो सीमंधर स्वाम ॥
जरत क्षेत्रना मानवी जी, नित्य उठी करे रे प्रणा
म ॥ सी० ॥ १ ॥ समोवसरण देवें रच्यो तिहां, चो
शठ इंद्र नरेश ॥ सोनातणे सिंहासण बेठा, चामर
ठत्र धरेस ॥ सी० ॥ २ ॥ इंद्राणी काढे गुंढली जी,
मोतीना चोक पूरेश ॥ लली लली लीये लुंढणाजी,
जिनवर दीए उपदेश ॥ सी० ॥ ४ ॥ एहवे समे में
सांजल्यो जी, हवे करवा पञ्चस्काण ॥ पोथी ठवणी

तिहां कणे जी, अमृत वाणी वखाण ॥ सी० ॥ ५ ॥
 रायने वाला घोडला जी, वेपारीने वाला ठे दाम ॥
 अमने वाला सीमंधर स्वामी, जिम सीताने श्रीरा
 म ॥ सी० ॥ ६ ॥ नही मागुं प्रभु राज रुद्रि जी,
 नही मागुं ग्रंथ चंद्रार ॥ हुं मागुं प्रभु एटलो जी,
 तुम पासें अवतार ॥ सी० ॥ ७ ॥ दैव न दीधी पांख
 डी जी, किम करी आबुं रे हजूर ॥ मुजरो मारो मा
 नजो जी, प्रह उगमते सूर ॥ सी० ॥ ८ ॥ समय
 सुंदरनी विनति जी, मानजो वारंवार ॥ बेकर जोडी
 वीनबुं जी, वीनतडी अवधार ॥ सी० ॥ ९ ॥ इति ॥
 ॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं प्रजाति रागमां ॥

॥ वाहाणला वाह्यारे प्रभु, वाहाणला वाह्यां ॥ जु
 थोने जागोरे प्रभु, वाहाणला वाह्यां ॥ माता वामा
 देवी इम, बोलेरे वाणी ॥ तमारो मुख जोवा आ
 व्या, इंद्र इंद्राणी ॥ वाहाणला ० ॥ १ ॥ तान मान
 पंच शब्द, वाजारे वाजे ॥ गीत गायन थाता प्रभु,
 अंबर गाजे ॥ वा० ॥ २ ॥ देव गायने द्वारे उजा,
 बिरुद बोले ॥ कोई अमारा प्रभुजीने, नावेरे तोले ॥
 वा० ॥ ३ ॥ माताजीना वचन सुणी, पास कुमर जा
 गया ॥ जविक जीवना वंछित फट्या, मुहना मांग्या ॥

वा० ॥ ४ ॥ प्रभु मुख जोयाना रंग, कहा न
जाए ॥ देखंतारे नयणे उलट, अंग न माए ॥ वा०
॥ ५ ॥ नित्यलाजनो स्वामी, अंतरजांमी ॥ नल्लेरेमें जे
टघो आज, गोडीचो स्वामी वा० ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥
॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ वीरजिणेसर साहिव मेरा, पारन जहुं तेरा ॥ मे
हेर करी टालो महाराजजी, जनम मरणना फेराहो
जिनजी ॥ अबहुं सरणें आयो ॥ १ ॥ गरजावास
तणा दुखःमोटा, उंधे मस्तक रहियो ॥ मज सुतर
मांहे लपटाणों, एहवो दुःख में सहियोहो ॥ जि० ॥
॥ २ ॥ नरक निगोदमां उपनोने चविउं, सुक्य बादर
थइउं ॥ वेचणो सुझे अग्र जागें, मान तिहां किहां
रहिउंहो ॥ जि० ॥ ३ ॥ नरकतणी वेदना अति उ
ल्लासी, सही ते जीवें बहू ॥ परमाधामीनें वस पडी
उं, तेजोणो तमे सहूहो ॥ जि० ॥ ४ ॥ तिर्यंच तणा
जव कीधा घणोरा, विवेक नहीय जगार ॥ निसि
दिननो व्यवहार न जाण्यो ॥ किम उतराए पारहो
॥ जि० ॥ ५ ॥ देवतणी गति पुण्ये हूं पाम्यो, विष
या रसमां जीनो व्रत पञ्चस्काण उदय नवि आब्या,
तान मानमांहे जीनोहो ॥ जि० ॥ ६ ॥ मानुष ज

न्मने धर्म सामग्री, पोम्बोबुं बहु पुण्ये ॥ राग द्वेष
 माहें बहु नलिउं, न टली ममता बुद्धिहो ॥ जि०
 ॥ ७ ॥ एक कंचनने बीजी कामनी, तेहचुं मनहुं बा
 धुं ॥ तेना जोग लेवाने हुंसूरो, किम करी जिनधर्म
 साधुहो ॥ जि० ॥ ८ ॥ मननी झोड कीधी अति
 जाजी, हुं ठुं कोकजड जेहवो ॥ कलीकली कल्प
 में जन्म गमायो, पुनरपि पुनरपि तेहवो हो ॥ जि
 ० ॥ ९ ॥ गुरु उपदेश मां हुं नथी नीनो, नावि स
 द्दहणा स्वामि ॥ हवे वडाइ जोश्यें तमारी, खिजम
 त मांहिठे खामीहो ॥ जि० ॥ १० ॥ चारगति मां
 हें रड वडीउं ॥ तोए न सिद्धा काज, कृपन कहे ता
 रो सेवकने, बाहें ग्रह्यानी लाजहो ॥ जि० ॥ ११ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन प्रजाति स्तवन ॥

॥ मेरे ए प्रभु चाश्यें, नित उठी दरिण पाउं ॥
 चरण कमल सेवा करूं, चरणे चित लाउं ॥ मेरेए
 प्र० ॥ १ ॥ मन पंकजके मेहेलमें, प्रभु पास बेठा
 उं ॥ निपट नजिक में दुश्द्रुं, मेरो जीव रमाउं ॥
 ॥ मे० ॥ २ ॥ अंतर जामी एकतुं, अंतरीक गुण
 गाउं ॥ आनंद कहे प्रभु पासजी, कबु उरन चाहुं ॥
 मेतो अवर न ध्याउं ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवन ॥

॥ एतो सकल तीरथनो राय, मोटो गिरवर कहे
 वाय ॥ एनी जात्रा पुण्ये थाय ॥ मनोहर मित्र ए
 गिरि सेवो, दुनियामां देव नही एवो ॥ म० ॥ ए
 आंकणी ॥ १ ॥ सुर नर विद्याधर आवे, एतो जात्रा
 करे मन जावे ॥ हारे एहनो समकित निरमल थावे
 ॥ म० ॥ २ ॥ सोना रूपाना फूल, मोती माणक
 रत्न अमूल ॥ गिरि वधावो बहु मूल ॥ म० ॥ ३ ॥
 केसर सुखडने कपूर, गिरि पूजो उगमते सूर ॥ तेना
 कर्मथाय चकचूर ॥ म० ॥ ४ ॥ सूरज कुंममांजे
 नाहे, जवोनवना पातक जाये ॥ एनी देही कनक
 मय थाये ॥ म० ॥ ५ ॥ मेंतो पूज्या श्रीरूपज जि
 एंदा, मुळ ह्मडे अतिही आणंदा ॥ मुख सोहे पून
 म केरो चंदा ॥ म० ॥ ६ ॥ मन जाणीनें लाज अ
 नंत, आख्या त्रेवीश जगवंत ॥ कीधो सकल कर्मनो
 अंत ॥ म० ॥ ७ ॥ शैत्रुंजो जे नयणें निहाले, नर
 क तिर्यंच गति निवारे ॥ तेने शिव रमणी कर जाले
 ॥ म० ॥ ८ ॥ संघवी ताराचंदनो संघ, नूषणदास
 मळ्या मन रंग ॥ एतो जात्रा करे सर्व संघ ॥ म० ॥
 ॥ ९ ॥ श्रीविधिपट्ट गणपति राया, उदय सागर सु

री सुपसाया ॥ शिष्य तिलकचंदें गुण गाया ॥ म० ॥ १०

॥ पार्श्वजिन स्तवन कठी नाषामां ॥

॥ सुवड पास प्रभु रे, दरिसण वेलढोनी दळ्ळ ॥
 दरिसण तोजो लाखटकनजो लाखटकनजो लाखट
 कनजो रे, कामणगारा तोजा नेण ॥ सु० ॥ सांही
 असांजो तुं अंश्यें तुं अंश्यें तुं अंश्यें रे, मिठडा ल
 गेंता तोजा वेण ॥ सु० ॥ द० ॥ १ ॥ अंधा थकी
 अंसी आविया अविआ आविया रे, सफल जनम
 थैयो अळ्ळ ॥ सु० ॥ द० ॥ मेहेरकज फजी मुंमथे
 मुंमथे मुंमथे रे, बाहें ग्रहेजी लळ्ळ ॥ सु० ॥ द० ॥
 ॥ २ ॥ दिल लगों मुंजो तोमथे तोमथे तोमथे रे,
 थ्योसे वेंधो कींह ॥ सु० ॥ द० ॥ सजोदीं तोके सं
 नारीयां संनारीयां संनारीया रे, मींह बापीयडा जींह
 ॥ सु० ॥ द० ॥ ३ ॥ जगमे देव दठा जजा दठा
 जजा दठा जजा रे, तेंमें तुं वमो पीर ॥ सु० ॥ द० ॥
 असीं वामाजीजे नंदके नंदके नंदके रे, दरशणें थें
 याचुं खली खीर ॥ सु० ॥ द० ॥ ४ ॥ घोरजी वं
 ञा तोजे नामथा नामथा नामथा रे, सुगतीजो दा
 तार ॥ सु० ॥ द० ॥ थरजो ठाकुर जेठेयो जेठेयो
 जेठेयो रे, नित्य लाजजो आधार ॥ सु० ॥ द० ॥ ५ ॥

॥ अथ शीतलजिन स्तवन ॥

॥ शीतल जिनवर सांजलो रे, गुणनिधि गरीब
निवाज ॥ देखी दरिसण ताहेरो रे, सफल थयो दि
न आज ॥ शी० ॥ १ ॥ सूरत ताहरी सोहामणीरे,
लाल अमूलक नंग ॥ जाणीये कल्पद्रुम सारखी रे,
कीधी प्रीत अजंग ॥ शी० ॥ २ ॥ हेजाळे नयणे क
री रे, मलजो मुजने स्वाम ॥ अंतर जामीढो माहे
रा रे, जव दुःख जंजण ठाम ॥ शी० ॥ ३ ॥ साचो
साजन तुं मळ्यो रे, प्रीत कीधी परमाण ॥ हीअडे
जीतर तुं वस्यो रे, जावे जाण मजाण ॥ शी० ॥
॥ ४ ॥ धरणी तलमां जोवतां रे, अवर मळ्या मुज
लाख ॥ पणते हुं नहीं आदरुं रे, श्रीपरमेश्वर साख
॥ शी० ॥ ५ ॥ सीताने मन रामजी रे, राधाने मन
कान ॥ जमरो मालती फूलडे रे, तेम प्रहृष्टं मुज
तान ॥ शी० ॥ ६ ॥ रोयणीने मन चंदलो रे, जिम
मोरा मन मेह ॥ इंझाणीने मन इंदलो रे, तिम प्र
हृष्टं मुज नेह ॥ शी० ॥ ७ ॥ अमने तमारोडे आ
सरोरे, नइ कोई बीजाचुं वाद ॥ साचो सेवक जा
णसो रे, तो सवि पूरसो लाभ ॥ शी० ॥ ८ ॥ अं
चल गह्वने देहरे रे, सुंदरा नगर मजार ॥ महीमा

वंत मया करो रे, नव दुःख जंजण द्वार ॥ शी० ॥
 ॥ ए ॥ सानिध करीढो साहेबा रे, प्रणम्या पातिक
 जाय ॥ सेहेज सुंदर गुरु रायनुं रे, नित्य लान प्रभु
 गुण गाय ॥ शी० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ प्रजातो रागमा स्तवन ॥

॥ प्रजातें उठीने माता मुखडुं जोवे ॥ ए देशी ॥
 ॥ आवी रूढी जगतिमें, पेहेलां न जाणी ॥ पेहे
 लां न जाणीरे प्रभु, पेहेलां न जाणी ॥ संसारनी
 मायामां में, विलोव्युं पाणी ॥ आ० ॥ ए आंकणी ॥
 कल्प तरुना फल लावीनें, जे जिनवर पूजे ॥ काल
 अनादि कर्मते संचित, सत्ताथीधूजे ॥ आ० ॥ १ ॥
 आवर तिरि निरयालय डग, इगविगला लीजें ॥ सा
 धारण नवमें गुणठाणे, धुरजागें ठीजें ॥ आ० ॥ २ ॥
 केवल पामीने शिवगति गामी, शैलशी टाणे ॥ चर
 म समय दोए माहें स्वामी, अंतिम गुणठाणे ॥
 ॥ आ० ॥ ३ ॥ बाकी नाम करमनी पयडी, सघली
 तिहां जावे ॥ अजर अमर निकलंक स्वरूपें, निःक
 र्मां थावे ॥ आ० ॥ ४ ॥ जे सिद्ध केरी पडिमापूजे,
 ते सिद्धमयी होवे ॥ नाई धोई निरमल चित्तें, आरि
 सो जोवे ॥ आ० ॥ ५ ॥ कर्म सूरुण तप केरी पूजा,

फल ते नर पावे ॥ श्रीगुज वीर स्वरूप विलोकी,
शिव बटु घर आवे ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ वर्तमान श्रीबाहुजिन स्तवन ॥

॥ हो साहिब बाहु जिणसर वीनबुं, वीनतडी
अवधार हो ॥ साहिब नव नयथी हुं उजग्यो, हवे
मुज पार उतारहो ॥ सा० ॥ १ ॥ सा० ॥ तुम स
रिखा मुज शिरढते, कर्म करे केम जोरहो ॥ सा० ॥
छुरंग तणो जय तिहां नहीं, जिहां वन विचरे मोर
हो ॥ सा० ॥ २ ॥ सा० ॥ जिहां रवी तेजें ऊल
हल्ले, तिहां किम रहे अंधकार हो ॥ सा० ॥ केसरी जिहां
रे क्रीडा करे ॥ तिहां नहीं गजनो प्रचार हो ॥ सा०
॥ ३ ॥ सा० ॥ तिमजो तुमें मुज मन रमो, तो नासे
दूरित संसार हो ॥ सा० ॥ बह्विजय सुसिमा पुरी,
राय सुग्रीव मढ्हार हो ॥ सा० ॥ ४ ॥ हरण जंङ्ग
न इम में स्तव्यो, मोहना राणीनो कंतहो ॥ सा० ॥
विजया नंदन मुज दीउ, जस कहे सुख अनंतहो ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ पासजिणंद सदाशिव गामी, वालोजी अंतर
जामी रे ॥ जगजीवन जिनजी, मूढुरत ताहेरी मो
हन गारी, नवियणने हित कारी रे ॥ ज० ॥ १ ॥

वामारे नंदन सांजलो स्वामी, अरज करुं सिर ना
 मी रे ॥ ज० ॥ देव घणा मेंतो नयणें रे दीठा, तुमे
 घणु लागोढो मीठा रे ॥ ज० ॥ १ ॥ मेंतो मनमां
 तुंहींज ध्यायो, रत्नचिंतामणि पायो रे ॥ ज० ॥ रा
 त दिवस मुज मनमांहे वसियो, हुं हुं तुम गुण र
 सियो रे ॥ ज० ॥ २ ॥ मेहेर करीने साहेबा नजरे
 निहालो, तमे ढो परम कृपालु रे ॥ ज० ॥ गोडी रे
 गाममां तुंहींज सोहियें, सुर नरनां मन मोहियें रे ॥
 ज० ॥ ४ ॥ बे करजोडीने प्रभु पाये लागुं, नित नि
 त दरिण मायुं रे ॥ ज० ॥ देव नही कोये ताहे
 री तोळे, नित्यजान इणपरें बोळे रे ॥ ज० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीमहावीरजिन स्तवनं ॥

॥ माहावीर स्वामी मुक्ति पोहोता, गौतम केवल
 ज्ञान रे ॥ धन दिवाली धन अमावास्था, वीरतणुं नि
 रवाण ॥ प्रभु मुख जोवाने, महारे दिवाली थई
 आज ॥ प्र० ॥ मोहि मोहिरे मीठडा लाल ॥ जिन
 मुख जोवाने ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ चारित्र पाली निरम
 जुनें, टाली विषय कषाय रे ॥ एवा मुनिनें बांदीए तो,
 ठतारे जवपार ॥ प्र० ॥ मा० ॥ २ ॥ बाकुला वढो
 आ वीरजीने, तारी चंदन बाला रे ॥ केवल जहीने मु

कैं पोहोता, पाम्या जवनोपार ॥ प्र० ॥ मा० ॥ ३॥
 एवा देवनें वांदीयें, जे पंचम ज्ञानने धरतारे ॥ समो
 सरणो दइ देशना, प्रभु ताखा नरने नार ॥ प्र० ॥
 मा० ॥ ४ ॥ चोवीशमो जिन जिनेसरुने, मुक्तितणो
 दातार रे ॥ करजोडी कविअण इमजणो, मारे जव
 ने फेरो टाल ॥ प्र० ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ दानशीलतप अने जावनो चोढालियो प्रारंज ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रथम जिणोसर पायनमी, पामी सगुरु प्रसा
 द ॥ दान शीयल तप जावना, बोलीस बहु संवा
 द ॥ १ ॥ वीरजिणंद समोसखा, राजग्रही उद्यान ॥
 समवसरण देवें रच्छुं, बेग श्रीवर्द्धमान ॥ २ ॥ बेठी
 धारे परखदा, सुणवा जिनवर वाण ॥ दान कहें प्र
 भु हूंवडो, मुजने प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ सांजलजो
 सहुको तुमे, कोण ठे मुळ समान ॥ अरिहंत दी
 द्हा अवसरें, आपे पहिलुं दान ॥ ४ ॥ प्रथम पहो
 र दातारनुं, लीए सहुकोइ नाम ॥ दीदारी देखल च
 ढै, सीजे वंढित काम ॥ ५ ॥ तीर्थकरने पारणो, कुण
 करसे मुज होड ॥ वृष्टीकरुं सोवन तणी, साढी बा
 रह कोड ॥ ६ ॥ हुं जग सघलो वस करुं, मुज मो

टी ठे वात ॥ कुण कुण दान थकी तस्या, ते सुण
जो थवदात ॥ ७ ॥

॥ ढाल पेहेली ॥ ललनानी देशी ॥

॥ धन सारथवाह साधुने, दीधुं घृतनुं दान ॥
ललना ॥ तीर्थकर पद मेंदीउं, तेणे मुज्जने अजिमा
न ॥ ललना ॥ १ ॥ दान कहे जग हुं वडो, मुज
सरिखो नही कोय ॥ ल० ॥ रिदि समृद्धि सुख सं
पदा, दाने दौलत होय ॥ ललना ॥ दा० ॥ २ ॥
सुमुख नामे गाथापति, पडिलान्यो अणगार ॥ ल० ॥
कुमर सुबाहु सुख लह्यो, तेतो मुज उपगार ॥ लल
ना ॥ दा० ॥ ३ ॥ पांचसें मुनीने पारणे, देतो वो
होरी आण ॥ ललना ॥ जरत थयो चक्रवर्त्ति जलो,
तेपण मुज फल जाण ॥ ललना ॥ दा० ॥ ४ ॥
मासखमणने पारणे, पडिलान्यो कृषिराय ॥ लल
ना ॥ शालिजड सुख जोगवे, दान तणे सुपसाय ॥
ललना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या अडदना बाकूला,
उत्तम पात्र विशेष ॥ ललना ॥ मूलदेव राजा थयो,
दानतणा फल देख ॥ ललना ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रथम
जिणेसर पारणे, श्री श्रेयांस कुमार ॥ ललना ॥ से
जडीरस.वोहोरावीउं, पाम्या जवनो पार ॥ ललना ॥

दा० ॥ ७ ॥ चंदनबाला बाकूला, पढी लाज्या महा
 वीर ॥ ललना ॥ पंचदीव्य प्रगट थया, सुंदर रूप
 शरीर ॥ ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूरव नव पारेवहुं,
 सरणो राख्यो सूर ॥ ललना ॥ तीर्थकर चक्रवर्ति प
 णे, प्रगट्यो पुण्य पमूर ॥ ललना ॥ दा० ॥ ९ ॥
 गजजर्वे ससलो राखीउ, करुणा कीधी सार ॥ लल
 ना ॥ श्रेणीकने घरे अवतख्यो, अंगज मेघ कुमार ॥
 ललना ॥ दा० ॥ १० ॥ एम अनेकमें उदखां, कहे
 तां नावे पार ॥ ललना ॥ समय सुंदर प्रभु वीरजी,
 मुज पहिलुं अधिकार ॥ ललना ॥ दा० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शीयल कहे सुण दानतुं, किस्थो करे अहंकार ॥
 आमंवर आते पट्टर, जाचक छुं व्यवहार ॥ १ ॥ अं
 तराय वली ताहरे, जोग करम संसार ॥ जिनवर
 कर नीचा करे, तुजने पड्यो धिकार ॥ २ ॥ गर्व
 मकररे दानतुं, मुज पूतें सद्गु कोय ॥ चाकर चाळे
 आगळे, तोछुं राजा होय ॥ ३ ॥ जन मंदिर सोना
 तणु, नवो निपावे कोय ॥ सोवन कोडी दानदीये,
 शीयल समो नही कोय ॥ ४ ॥ शीयले संकट सवि
 टले, शीयले जस सोजाग ॥ शीयले सुरसा निधकरे,

शीयल वडो वैराग ॥ ५ ॥ शीयलें सर्प न आजडे,
 शीयलें सीतल आग ॥ शीले अरि करी केशरी, जय
 जाए सवि जाग ॥ ६ ॥ जनम मरणना जय थकी,
 में ठोडाव्या अनेक ॥ नाम कहुं हवे तेहना, सांज
 लजो सुविवेक ॥ ७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ पास जिणंद जोहारीयें ॥ एदेशी ॥

॥ शीयल कहें जगं हुंवडो, मुजवात सुणो अत्ति
 मीठीरे ॥ लालच लावे लाकने, में दानतणी वात दी
 ठीरे ॥ शी० ॥ १ ॥ कलह कारण जग जाणीयें, वली
 विरति नही पण कांशरे ॥ ते नारदमें सीजव्यो, मुज
 छुउं ए अधिकाशरे ॥ शी० ॥ २ ॥ बाहे पेहेखा बेर
 खा, संखराजायें दूषण दीधोरे ॥ काप्यो हाथ कला
 बती, तेमें नवपद्मव कीधोरे ॥ शी० ॥ ३ ॥ रावण
 घर सीता रही, तो रामचंडें घर आणीरे ॥ सीतारे
 कलंक उतारीउं, में पावक कीधो पाणीरे ॥ शी० ॥
 ४ ॥ चंपा बार उघाडवा, वली चारणीयें काढ्यो
 नीसेरे ॥ सतीय गुजडा जसथयो, में तस कीधी
 जीरोरे ॥ शी० ॥ ५ ॥ राजा मारण मांमीउं, राणी
 अजयार्यें दूषण दाख्योरे ॥ सूली सींघासण में की
 ठ, मेंडोठ छुदर्शन राख्योरे ॥ शी० ॥ ६ ॥ शीज

(१५३)

सनाह मंत्रीसरे, आवतां अरिदल थंन्योरे ॥ तिहा
पण सानिध्य में करी ॥ वली धरम कारज आरंन्यो
रे ॥ शी० ॥ ७ ॥ पेहरण चीर प्रगट कीया, में अ
छेत्तरसो वारोरे ॥ पांनव नारी डौपदी, में राखी मा
म उदारोरे ॥ शी० ॥ ८ ॥ ब्राह्मी चंदनबालिका, व
ली शीलवंती दमयंतीरे ॥ चेढानी साते सुता, राजी
मती सुंदरी कुंतोरे ॥ शी० ॥ ९ ॥ इत्यादिक में उ
हरया, नर नारीना वृंदोरें ॥ समय सुंदर प्रभु वीर
जी, पहिलो मुळ आणंदोरे ॥ शी० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ तप बोख्यो ब्रटकी करी, दानने तुं अवहीन ॥
पण मुळ आगल तुं किस्यो, सांजलरे तुं शील ॥
१ ॥ सरसा जोजनमें तज्या, नगमे मीठानाद ॥ वे
हतणी शोना तजी, तुजमें किस्यो सवाद ॥ २ ॥
नारी थकी मरतो रहे ॥ कायर किस्युं वखाण ॥ कू
ड कपट बद्धु केलवी ॥ जिम तिम राखे प्राण ॥ ३ ॥
को विरलो तुज आदरे, ठंमी सद्धु संसार ॥ आप ए
क तूं जांजतो, बीजा जांजे चार ॥ ४ ॥ करम निका
चित त्रोटवा, जाळुं जव जय जीम ॥ अरिहंत मुज
ने आदरें, वरस ठमासी सीम ॥ ५ ॥ रुचक नंदी

सर कपरें, मुज लब्धें मुनि जाय ॥ चैत्य जोहारे
 साश्वता, आनंद अंग नमाय ॥ ६ ॥ मोटा जोयण
 लाखना, लघु कंथु आकार ॥ हय गय रथ पायक
 तणा, रूप करे अणगार ॥ ७ ॥ मुज कर फरसे उ
 पशमे, कुष्टादिकना रोग ॥ लब्धि अछावीश कपजे,
 उत्तम तप संजोग ॥ ८ ॥ जेमें ताखा ते कहूं ॥ सु
 एजो मन उद्भास ॥ चमत्कार चित्त पामसों, देसो
 मुज ठाबास ॥ ९ ॥

॥ ढाल त्रीजी निणदलनी देशी ॥

॥ इहप्रहार अति पापीउ, हत्या कीधी चारहो ॥
 सुंदर ॥ तेपण तेणो जव उद्दखो ॥ मुफ्यो मुक्ति म
 जारहो ॥ सुंदर ॥ १ ॥ तप सरिखो जग कोए नही,
 तप करे करमनो सूडहो ॥ सुंदर ॥ तपकरतां अति
 दोहेंलो ॥ तपमां नहीं को कूडहो ॥ सुंदर ॥ तप०
 ॥ २ ॥ सात माणस नित मारतो, करतो पाप अधो
 रहो ॥ सुंदर ॥ अरजणमालीमें उद्दखो, ठेद्याकर्म
 कठोरहो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ३ ॥ नंदीषेणने में कि
 यो, स्त्री वल्लन वसुदेवहो ॥ सुंदर ॥ बहुत्तेर सहस
 अंतेउरी, सुख जोगवे नित मेवहो ॥ सुंदर ॥ तप०
 ॥ ४ ॥ रूप कुरूप कालो घणु ॥ हरिकेसी चंमाल

हो ॥ सुंदर ॥ सुर नर कोडी सेवा करें, ते में कीधी
 चालहो ॥ सुंदर ॥ ५ ॥ विष्णुकुमर लब्धे कीर्त ॥
 लाख जोयणनुं रूपहो ॥ सुंदर ॥ श्रीसंघ केरे का
 रणे ॥ ए मुज सक्ति अनूपहो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥
 ॥ ६ ॥ अष्टापद गौतम चढ्या, वांढ्या जिन चोवीश
 हो ॥ सुंदर ॥ तापस पण प्रति बूजव्या, तेणे मुज अ
 धिक जगीसहो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ७ ॥ चौद सह
 स अणगारमां ॥ श्रीधनु अणगारहो ॥ सुंदर ॥ वीर
 जिणंद वखाणीउं, ए पण मुज अधिकार हो ॥ सुंद
 र ॥ तप० ॥ ८ ॥ कृष्ण नरेसर आगर्जे, दुःकर कार
 कहेयहो ॥ सुंदर ॥ ढंढण नेमी प्रसंसीउं, मुज महि
 मा सवि तेहहो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ९ ॥ नदीषेण वो
 होरण गयो, गणिकार्ये कीधी हांसहो ॥ सुंदर ॥ वृ
 ष्ठी करी सोवन तणी ॥ में तसु पुरी आसहो ॥ सुंद
 र ॥ तप० ॥ १० ॥ एम बलजइ प्रमुख बहु, ता
 रघा तपसी जीवहो ॥ सुंदर ॥ समयसुंदर प्रभु बीर
 जी, पहेजो मुज प्रस्तावहो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ११ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ जावकहे तपतुं कित्यो, ठेडयो करे कषाय ॥ पूर्व
 कोडजो तप तपे, तो क्षिणमां खेरुषाय ॥ १ ॥ ख

धक आचारज प्रते, ते बाढ्यो सवि देस ॥ अछुन
 नियाणुं तुं करे ॥ कृमा नही लव लेस ॥ १ ॥ वीषा
 यन रुषि दूहव्या, सांब प्रद्युमनसाह ॥ ते तप क्रोध
 करी तिहां ॥ दीधो वारीका दाह ॥ ३ ॥ दान शीयल त
 प सांजलो, मकरो जूठ गुमान ॥ लोक सहुको सांख
 दे, धरमे जाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपुंसकहो त्रणो,
 ये व्याकरणी साख ॥ काम सरे नही को तुमें ॥ जाव
 नणो मुंपाख ॥ ५ ॥ रस विण कनक न नीपजे, जल वि
 ण तरुअर वृद्धि ॥ रसवती रस नही लवण विण ॥
 तिम मुज विण नही सिद्धि ॥ ६ ॥ मंत्र जंत्र मणि औष
 धि, देव धर्म गुरु सेव ॥ जाव विना सर्वे वृथा, जा
 व फले नित मेव ॥ ७ ॥ दानसीयल तप जे तुमें,
 निज निज कह्यां वृत्तत ॥ तिहां जो जाव न हुंततो,
 किसी सिद्धि न हुंत ॥ ८ ॥ जाव कहे में एकले,
 ताख्या बहु नरनार ॥ सावधान थइ सांजलो, नाम
 कहुं निरधार ॥ ९ ॥

॥ ढालचोथी ॥ कपूरहोयेअतिउजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ वनमांहे काउस्सग रह्यो रे, प्रश्नचंद रुषि
 राय ॥ ते में कीधो केवली रे. ततकृण करम स्वपा
 य ॥ १ ॥ सोजागी सुंदर, जाववडो संसार ॥ ए आकणी ॥

एतो बीजो मुज परिवार ॥ सो० ॥ दानादिक
 विण एकलो रे, पोचाहुं नवपार ॥ सो० ॥ १ ॥
 वंस उपर चढी खेलतो रे, एला पुत्र अपार ॥ के
 वल ज्ञानीमें कीयो रे, प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो०
 ॥ ३ ॥ नूख तृषा खमे अतिघणी रे, करतो कूर आ
 हार ॥ केवल महिमा सुर करे रे, कूरगडू अणगा
 र ॥ सो० ॥ ४ ॥ लाजथी लोच वाधे घणुं रे, आय्यो म
 न वैराग ॥ कपील थयो मुनि केवली रे, ते मुजने
 सोजाग ॥ सो० ॥ ५ ॥ अन्निका सुत गह्वनो धणी
 रे, क्षीण जंघा बलीजाण ॥ कीधो अंतगड केवली
 रे, गंगाजल गुणखाण ॥ सो० ॥ ६ ॥ पनरसें ताप
 स नणी रे, दीधी गौतम दीस्क ॥ ततक्षिण कीधा
 केवली रे, जो मुज मानी सीख ॥ सो० ॥ ७ ॥ पा
 लक पापीये पीर्जेयां रे, स्वंधक सूरिना शिष्य ॥ ज
 नम मरणथी ढोडव्यां रे, आपे मुज आशीष ॥ सो०
 ॥ ८ ॥ चंद्रुडने चालतां रे, दीधो दंम प्रहार ॥
 नव दीक्षित थयो केवली रे, ते गुरु पण तेणिवार ॥
 सो० ॥ ९ ॥ धन्य रथकारक साधुने रे, पडी जान्यो
 वल्लास ॥ मृगलो जावना जावतो रे, पोहतो स्वर्ग
 आवास ॥ सो० ॥ १० ॥ निज अपराध स्वमावती

रे, मूक्यो मनथी मान ॥ मृगावतीने में दीठ रे, नि
 रमल केवल ज्ञान ॥ सो० ॥ ११ ॥ मरुदेवी गज
 ऊपरेंरे, देखी पुत्रनी रुद्धि ॥ मुऊने मन मांहेँ ध
 रयो रे ॥ ततद्विण पामी सिद्धि ॥ सो० ॥ १२ ॥
 वीर वंदण चाव्यो मारगेंरे, चांप्यो चपल तुरंग ॥ द
 र्दूरनामे देवतारे, तेह थयो मुऊ संग ॥ सो० ॥
 १३ ॥ प्रभुपाय पूजण नीसरीरे, डुर्गला नामे नार ॥
 कालधर्म वच्चमां करीरे, पोहती स्वर्ग मजार ॥ सो०
 ॥ १४ ॥ कायानी सोजा कारमीरे, रूप किस्यो अजि
 मान, जरत आरीशा जुवनमांरे, पाम्यो केवल ज्ञान
 ॥ सो० ॥ १५ ॥ आषाढनूति कला निलोरे, प्रगटयो
 जरत सरूप ॥ नाटक करतां पामीउरे, केवलज्ञान अ
 नूप ॥ सो० ॥ १६ ॥ दीक्षा दिन काउसग्ग रह्योरे, ग
 जसुकमार मसाण ॥ सोमल सीस प्रजालिउरे, सिद्धि
 गयो जुन जाण ॥ सो० ॥ १७ ॥ गुणसागर थयो के
 वलीरे, सांजली पृथिवीचंद ॥ पोते केवल पामीउरे, से
 व करे सुरइंद ॥ सो० ॥ १८ ॥ एम अनेक में उह
 रयारे, मूक्या शिवपुर वास ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी
 रे, मुऊनेँ प्रथम प्रकाश ॥ सो० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥ वीरकहे तुमें सांजलो, दान शीयल तप

जाव ॥ निंदाढे अति पापणी, धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥
 पर निंदा करतां थकां, पापे पिंम जराय, वेढ राढ
 बाधे घणी, दुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक सरखो
 पापीउ, जूंमो कोइ न दीठ ॥ बली चंमाल समो कह्यो,
 निंदक मुख अदित ॥ ३ ॥ आप प्रशंसा आपणी, करतो
 इंद नरिंद ॥ लघुतापामे लोकमें, नासे निज गुण
 वृंद ॥ ४ ॥ को केहनी मकरो तुमें, निंदा ने अर्द्ध
 कार ॥ आप आपणे ठामे रहो ॥ सद्दुको जलो सं
 सार ॥ ५ ॥ तोपण अधिको जावढे, एकेको समर
 ढ ॥ दान शीयल तप त्रणे जला ॥ पण जावविना
 अकयढ ॥ ६ ॥ अंजन आंखें आंजतां, अधिको आ
 णी रेख ॥ रजमांहि तज काढतां, अधिको जाव विशे
 ष ॥ ७ ॥ जगवंत हठ जंजण जणी, चारे सरिखा
 मृणंति ॥ चारे करी मुख आपणा ॥ चतुर्विध धर्म
 जणंति ॥ ८ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ वीरजिणेसर इम जणेरे, बेठी
 परखदा बार ॥ धरमकरो तुमे प्राणीया रे, जिम
 पोमो जव पाररे ॥ धरम ह्ये धरो ॥ १ ॥ धर्मना
 चार प्रकारो रे, जवियण सांजलो ॥ धर्म मुक्ति सुख
 कारोरे ॥ धर्म ० ॥ २ ॥ धर्म थकी धन संपजे रे,

धर्म थकी सुख होय ॥ धर्म थकी आरती टले रे,
 धर्म समो नही कोयरे ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ दुर्गति प
 डतां प्राणीआरे, राखे श्रीजिनधर्म ॥ कुटुंब सढूको
 कारमोरे, मत नूलो नवि नर्मरे ॥ धर्म० ॥ ४ ॥ जी
 व जीके सुखीया थयारे, बली होसे ठे जेह ॥ ते जि
 नवरना धर्मथीरे, मतकोइ करो संदेहरे ॥ धर्म० ॥
 ॥ ५ ॥ सोलसें बाससछसमें रे, सांगानेर मजार ॥ प
 ष प्रभु सुपसाजले रे, एहनण्यो अधिकाररे ॥ धर्म०
 ॥ ६ ॥ सोहम सामी परंपरारे ॥ खरतर गह्व कुज
 चंद ॥ युगप्रधान जग परगडोरे, श्रीजिनचंद सुरिंदरे
 ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ तास शिष्य अति दीपतोरे, विनयवं
 त जसवंत ॥ आचारज चढती कलारे, जिनसिंह सु
 रि महंतरे ॥ धर्म० ॥ ८ ॥ प्रथम शिष्य श्रीपुज्यना
 रे, सकलचंद तसशिष्य ॥ समयसुंदर वाचक जणोरे,
 संघ सदा सुजगीसोरे ॥ धर्म० ॥ ९ ॥ दान शीयल त
 प जावनारे, सरस रच्यो संवाद ॥ जणतां गुणतां
 जावछुरे, रुदि समृदि सुप्रसादोरे ॥ धर्म० ॥ १० ॥
 इति दानशीयल तप जावनो चोढालीउ संपूर्ण ॥

॥ अथ प्रजाती रागमां स्तवनं ॥

॥ काहारे अज्ञानी जीवकूं, गुरु ज्ञान बतावे ॥ कबहुं

न विषधर विष तजे, काहा दूध पीजावे ॥ काहा०
 ॥१॥ उखर इख न नीपजे, काहा बोवन जावे ॥ रास
 न ठार न ठांमहीं, काहा गंग जिजावे ॥ का० ॥ २॥
 कालीउंन कुमाणसा, रंग दूजो नआवे ॥ श्रीजिन रा
 ज कहुंकहा ॥ वाको सहेज नजावे ॥ का० ॥ ३ ॥

॥ अथ सुविधिजिन स्तवन राग प्रजाती ॥

॥ मुजरा साहेब मुजरा साहेब, साहेब मुजरामेरा
 रे ॥ साहेब सुविधि जिनेसर प्यारा, चरण पखावुं प्रभु
 तोरा रे ॥ मु० ॥ १ ॥ केशर चंदन चरचूं अंगे, फू
 ल चडावुं शेरा रे ॥ घंट बजावुंने अगर उखेवुं, क
 रुं प्रदक्ष्ण फेरा रे ॥ मु० ॥ २ ॥ पंच शब्द वाजा
 वजडावुं ॥ नृत्य करुं अधिकेरा रे ॥ रूपचंद गुन गा
 वत हरखित ॥ दास निरंजन तेरा रे ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रजाती रागमां स्तवन ॥

॥ प्रभुतोरी ठकुराइकूं, गढ तीन बिराजे ॥ रतन रचित
 मानु देहकी, डुती मंमल ठाजे ॥ प्र० ॥ १ ॥ जल
 कत दहो दिसि तेजमें, बिच कंचन कोटा ॥ तेरे प्र
 बल प्रतापका, मानु मंमल मोटा ॥ प्र० ॥ २ ॥ अ
 तीवज्जल रूपें बन्या, तीजा गढ तेरा ॥ तीन खुवन
 में विस्तरया ॥ जस सुजस घणोरा ॥ प्र० ॥ ३ ॥ वा

मा नंद जिनंदकी, काहा कटुंरे वडाइ ॥ आनंद व
दत लघु बुद्धिपें, ठबी बरनी नजाई ॥ प्र० ॥ ४ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवन प्रजाती रागमां ॥

॥ ॥ तुंमविना कौन मेरी शुद्ध छेनहारहे ॥ तुंम० ॥
निसिदिन ध्यानधरुं, कीजे क्युं अवारहे ॥ पारसनाथ
साहेबजीको, नाम साचो सारहे ॥ तुं० ॥ १ ॥ प्रा
त ताहीं सेवा करुं, पुष्पनके हारहे ॥ अगर सुवास
वास, खेवत सवारहे ॥ तुं० ॥ २ ॥ दरपतहुं सेवा
करुं, नूल चूक माफहे ॥ मेंतो हुं अजान प्रभु, आ
पही सफारहे ॥ तुं० ॥ ३ ॥ मेरेतो प्रभु एक तुंज,
सेवक हजारहे ॥ अश्वसेन नंदनजीशुं, मेरो पूरण
प्यारहे ॥ तुं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ आदिजिन स्तवनं ॥

॥ अंग उमाहो मुजने अतिघणो, अलबेला जिनवर
जी ॥ जेटवा कृषन जिणंद, मारा वाला श्रीजिनवर
जी ॥ १ ॥ पालीताणो नगर सोहामणुं ॥ अ० ॥ रुडी
लजितासरनी पाल ॥ मा० ॥ जिहारे आंबा वडला घ
णा ॥ अ० ॥ छुकी रइ चंपा केरी माल ॥ मा० ॥ २ ॥
धनते पंखीरे पारेवडा ॥ अ० ॥ शेत्रुंजे वसीरह्या मोर
॥ मा० ॥ उमाहो करीने जे घरें रह्या ॥ अ० ॥ ते मा

एस नहीं ढोर ॥ मा० ॥ ३ ॥ शेरुंजा मारग चालतां,
 अ० ॥ उमेढे जीणी जीणी खेह ॥ मा० ॥ मेला थासेरें
 मारा कापडा ॥ अ० ॥ निरमल थासे मारी देह ॥
 मा० ॥ ४ ॥ उंचो देरोरे आदिनाथ नो ॥ अ० ॥ आ
 गल चोक विशाल ॥ मा० ॥ जिहां मेले मेले घणा
 मानवी ॥ अ० ॥ गावे प्रभु गुण माल ॥ मा० ॥
 ॥ ५ ॥ केशर घसी नरयां वाटका ॥ अ० ॥ पूजवा
 आदि जिणंद ॥ मा० ॥ फूलडानुं हार कंठे सोहीरें
 ॥ अ० ॥ दीवडानी ज्योति अखंम ॥ मा० ॥ ६ ॥
 गिरिवर दीठे माहरे ॥ अ० ॥ दिलमां उपजे आणंद ॥
 मा० ॥ जेटवानुंरे मुजने कोम घणो ॥ अ० ॥ प्रेम
 घणो जिनचंद ॥ मा० ॥ ७ ॥ इतिसंपूर्ण ॥

॥ अथ सामायकलाज सङ्गाय ॥

॥ कर पडिकमाणुं नावहुं, दोय घडी गुन ध्या
 न ॥ लालरे ॥ परनव जातां जीवने, संबल साचो
 जाण ॥ लालरे ॥ कर० ॥ १ ॥ श्रीमुख वीर इम
 कच्च रे, श्रेणीक राय प्रते जाण ॥ ला० ॥ लाख
 खांमी सोनातणी, दीए दिन प्रत्ये दान ॥ लालरे ॥
 क० ॥ २ ॥ लाख वरस लगे तेहनो, एमदीए इब्ब
 अपार ॥ ला० ॥ एक सामायकने तोर्जे, नावे तेह

लिगार ॥ ला० ॥ क० ॥ ३ ॥ श्री सामायक प्रसा
दधी, लहीएं देव विमान ॥ लालरे ॥ धरमसिंह मु
निश्म नणो, मुक्ति तणो ए ध्यान ॥ लालरे ॥ क० ॥ ४ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ कृपाकरोनी गोडी पास जिनेसर, [तुम साहिब
अंतर जामी ॥ क० ॥ उंचे उंचे गिरि पर प्रचुजी
बिराजे, आस पास ग्यानी ध्यानी ॥ क० ॥ १ ॥
नील वरण प्रचु अंगीयां बिराजे, सूरतकी जाउं ब
लिहारी ॥ क० ॥ बांहे बाजुबंध बेहिरखा बिराजे,
कुंमलकी ठब है न्यारी ॥ क० ॥ २ ॥ दुंदुत दुंदुत
प्रचुजी पायो, पूरण पदवी अब आई ॥ क० ॥ ना
अनिरंजन नाम तुमारो, रूपचंद पदवी पाई ॥ क० ॥ ३ ॥

॥ अथ समेतसिखर गिरि स्तवन ॥

॥ तुंही नमो नमो समेत शिखर गिरि, आदिसर
अष्टापद सिद्धा, वासुपुज्य चंपापुरी ॥ तुं० ॥ नेम गया
गिरनारें मुक्तें, वीरपावन पावा पुरी ॥ तुं० ॥ १ ॥
बीशे टूंकें बीश जिनेसर, सिद्धा अणसण आदरी ॥
॥ तुं० ॥ ज्योति स्वरूपें दुआ जगदीश्वर, अष्ट कर
मनो क्यकरी ॥ तुं० ॥ २ ॥ पश्चिम दिश शत्रुंजो
सीरथ, पुरव समेत सिखर गिरि ॥ तुं० ॥ मोह न

गरना दोये दरवाजा, नविक जीव रह्या संचरी ॥
 ॥ तुं० ॥ ३ ॥ जग व्यापक जे अह्मर साहेब, पाप
 संताप काटन गिरि ॥ तुं० ॥ मोटो तीरथ मोटो म
 हिमा, गुण गावत सुरासुरी ॥ तुं० ॥ ४ ॥ विषम
 पाहाड उजाडमे चिहुं दिसि, चोर चरड रह्या संचरी
 ॥ तुं० ॥ नयंकर मूंगर नूमी मरावण, देखत मूंगर
 शर हरी ॥ तुं० ॥ ५ ॥ संवत सत्तरशौं चुम्माजे,
 चैत्र शुदि चोथें धरी ॥ तुं० ॥ कहे जिनहरष वीशैं
 टूंकें, जाव छुं चैत्य वंदन करी ॥ तुं० ॥ ६ ॥ इति

॥ अजिनंदन जिनस्तवन प्रारंभः ॥

॥ अजिनंदन नाथ छुहारुं जी, तीरथना रसि
 या ॥ प्रभु आवतां पाप निवारुं जी, मुज हड्डे व
 सिया ॥ १ ॥ प्रभु आगल पाप प्रकाशुं जी ॥ ती० ॥
 प्रभु पुण्यथी पाम्या आसुं जी ॥ मु० ॥ २ ॥ में तो
 रसमां बहुरस जेढ्यो जी ॥ ती० ॥ आरंभ करी
 परिग्रह मेढ्यो जी ॥ मु० ॥ ३ ॥ मेंतो क्रोधछुं मधुर
 स पीधा जी ॥ ती० ॥ रागद्वेष करी कूडां आल
 दीधां जी ॥ मु० ॥ ४ ॥ मेंतो कूड कपट घणां कीधां
 जी ॥ ती० ॥ मेंतो लोनछुं परधन लीधां जी ॥ मु०
 ॥ ५ ॥ हुंतो परनारी छुं रंगें रम्यो जी ॥ ती० ॥ व्रत

जांगीने रातें जम्यो जी ॥ मु० ॥ ६ ॥ ज्यारे लेशे प्र
 च्छुजी लेखुं जी ॥ ती० ॥ पग मांमघानी जग्या न देखुं
 जी ॥ मु० ॥ ७ ॥ प्रच्छु दीठी अणदीठी करजो जी
 ॥ ती० ॥ मारी विनतडी चित्त धरजो जी ॥ मु० ॥
 ॥ ८ ॥ एवी रूपनदासनी वाणीजी ॥ ती० ॥ स्त
 वन जोड्यु ठे अमृत वाणी जी ॥ मु० ॥ ९ ॥

॥ अथ श्रीवीरजिन स्तवन फतमलनी देशी ॥

॥ जगपति तारक श्रीजिनदेव, दासनुं दासबुं ता
 हरो ॥ जगपति तारक तुं किरतार, मन मोहन प्रच्छु
 महारो ॥ १ ॥ जगपति ताहारे तो नक्त अनेक, मा
 हारे तो एकज तुं धणी ॥ जगपति वीरांमां तुं महा
 वीर, सूरत ताहारी सोहामणी ॥ २ ॥ जगपति
 त्रिशला राणीनुं तुं तन, गंधार बंदर गाजीयो ॥ जग
 पति सिद्धार्थ कुल सणगार, राज राजेसर राजी
 यो ॥ ३ ॥ जगपति जगतांनी जांगे ठे जीड, जीड
 पडे रे प्रच्छु पारखी ॥ जगपति तुंही प्रच्छु अगम अ
 पार, समज्यो न जाये मुज सारिखे ॥ ४ ॥ जगपति
 उदय नमे करजोड, सत्तर नेव्यासी समें कह्यो ॥ जग
 पति खंबायत जंबूसर संघ, जगवंत जावसुं जेटियो ॥ ५ ॥

॥ अथ राणगपुरानु स्तवन फतमलनी देशी ॥

॥ जगपति जयो जयो कृषन जिणंद, धरणासाहें
 धन खरचीउं ॥ जगपति प्रोढ कराव्यो प्रासाद, उलट
 नर सुरनर अरिचिउं ॥ १ ॥ जगपति आजगुं मांमे
 वाद, सोवन कलशें जल हल्ले ॥ जगपति चोबारो
 चोशाल, पेखंतां पातिक गल्ले ॥ २ ॥ जगपति अति
 सुंदर उदाम, नलिनी गुल्म विमानश्यो ॥ जगपति
 उत्तम पुण्य अंबार, निरूपम धनद निधानश्यो ॥ ३ ॥
 जगपति उल्लें उल्लें थंन, कीधी अनोपम कोरणी ॥
 जगपति करति नाटारंन, पुतलीउं चित्त चोरणी ॥ ४ ॥
 जगपति नानो नरेसर नंद, राणक पुरनो राजीउं ॥
 जगपति सहु रायां सिरदार, जगमांहे जस गाजी
 उं ॥ ५ ॥ जगपति देवतुं दीन दयाल, नक्त वत्सल
 नल्लें जेटीउं ॥ जगपति देखतां तुज देदार, मोह त
 णो मद मेटीउं ॥ ६ ॥ जगपति उदय रतन उवळ्ळा
 य, संवत सत्तर त्राणु समें ॥ जगपति फागणवदि
 पढवेरे दिन, सादडी संघ सहीत नमे ॥ ७ ॥ इति॥

॥ अथ शीयल विषे शीखामणनी सव्वाय ॥

॥ प्रभु सार्यें जो प्रीत वंगो तो, नारी संग निवा
 रूं रे ॥ कपटनी पेटी कामण गारी, निभेय नरक

डुवारु रे ॥ १ ॥ एहनी गति एहज जाणे, रखे
 कोइ संदेह आणे रे ॥ ए० ॥ ए आंकणी ॥ अबला
 एवं नाम धरावे, सबलाने समजावे रे ॥ हरिहर ब्र
 ह्म पुरंदर सरखा, ते पण दास कहावे रे ॥ ए० ॥ १ ॥
 एक नरने आंखें समजावे, बीजाचुं बोले करारी रे ॥
 त्रीजाचुं कर्म करे तक जोइ, चोथो धरे चित्त मजा
 रि रे ॥ ए० ॥ २ ॥ व्यसन विलुधि नजुये विमासी,
 घटता घटती वार्ते रे ॥ मूंज परदेसीनी परे जोइ,
 मलजो एह संघाते रे ॥ ए० ॥ ४ ॥ जांघ चीरीने
 मांस खवाडचुं, तो पण न थइ तेहनी रे ॥ मोहनी
 मीठी दीलनी छुठी, कामिनी न होये केहनी रे ॥
 ए० ॥ ५ ॥ पगले पगले मन ललचावे, श्वासोश्वा
 सथी जूदी रे ॥ गरज देखीने घहेली थाये, काजस
 रे जाये कूदी रे ॥ ए० ॥ ६ ॥ करणी एहनी कली
 न जाये, नयण तणी गत न्यारी रे ॥ गावुं एहनुं
 जेणें गावुं, तेणें सदगति हारी रे ॥ ए० ॥ ७ ॥
 लाख जांतें ललचावे लंघट, विरुझे विषनी क्यारी रे ॥
 एहना पासमां जे नर पडिया, ते हाखा जम वारी
 रे ॥ ए० ॥ ८ ॥ कोड जतन करी कोई राखे, मान
 नी महोल मजारी रे ॥ तो पण तेहने सूतां वेंचे,

धडे नरहे धूतारी रे ॥ ए० ॥ ९ ॥ जोलागीतो सर्व
स्व जुंटे, रुठी राक्षसी तोलें रे ॥ इम जाणीने अल
गा रहेजो, उदयरतन इम बोले रे ॥ ए० ॥ १० ॥

॥ अथ संजवजिन स्तवन ॥

॥ मोहन तारा मुखडाने मटके ॥ मोहन० ॥
ए आंकणी ॥ नयण रसालाने वयण सुखाला ॥ चि
तडुं लीधुं चटके ॥ मोह० ॥ १ ॥ प्रभुजी केरी न
क्ति करंतां, कर्मनी कष्ट कटके ॥ मोह० ॥ मुजमन
लोनी नमर तणीपरें, जिनगुण रमण अटके ॥ मो
ह० ॥ २ ॥ रत्नचिंतामणी मूकीने राचे, कहो कोण काच
तणे कटके ॥ मोह० ॥ एजिन शुणतां क्रोधादिक सद्गु,
आस पासथी पटके ॥ मोह० ॥ ३ ॥ केवलनाणी बहु
सुख दानी, कुमतिकूं दूर पटके ॥ मोह० ॥ ए जिनने
जे दिलमां नाणे, ते नूल्या नटके ॥ मोह० ॥ ४ ॥ नाव
नक्तिगुं उलंग करतां, वंछित सुख सटके ॥ मोह० ॥
नित्यलान कहे ए जिन साचो, गुण गावं हुं
लटके ॥ मोह० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ दानविषे स्वाध्याय ॥

॥ चोत्रीश अतिशयवंत, समवसरणें हो बेसी
जग गुरु ॥ उपदेशे अरिहंत, दानतणा गुण हो पहेजे

सुख करु ॥ १ ॥ दान दोलत दातार, दाने जाजे हो
नवनुं आमलो ॥ दानना पांच प्रकार, उलट आणी
हो नवियण सांजलो ॥ २ ॥ पहेलुं अजय सुदान,
दया हेतें हो निज तनुं दीजीयें ॥ जिम मेघरथ रा
जन्न, जीव सहुने हो निर्जय कीजीयें ॥ ३ ॥ बीजुं दान
सुपात्र, तृण मणि कंचण हो, अदत्त जे परिहरे ॥
निर्मल व्रत गुण गात्र, सत्तर जेवे हो, संयम जे धरे
॥ ४ ॥ आहारादिक सुविचार, तेहने दीजें हो, हाजर
जे होवे, जिम शालिजइ कुमार, सुपात्र दानें हो महा
सुख नोगवे ॥ ५ ॥ अनुकंपादान विशेष, त्रीजुं देता
हो, पात्र न जोड्यें ॥ अन्ननो अर्थी देखी, तेहने
आपी हो, पुण्यवंत होड्यें ॥ ६ ॥ धन पामी ससनेह,
कारण पांखे हो, नात जे पोषीयें ॥ उचित्त चोथुं ए स्व
जन, कुंटुंब सहेजें हो, जे संतोषीयें ॥ ७ ॥ पांचमुं
कीर्त्तिदान, जाचक जनने हो, जे कांइ आपीयें ॥ ते
एँ वाधे जस वान, जगमां सघले हो, नलपण था
पीयें ॥ ८ ॥ पामें चिंतवित पात्र, जेहथी प्राणी
हो निर्मल सुख लहे ॥ दान देतां ह्मण मात्र, वि
लंब न कीजें हो, उदयरतन कहे ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ शीयल स्वाध्याय ॥

॥ धन्य धन्य ते दिन माहारो ॥ ए देशी ॥

॥ शीयल समुं व्रत को नहीं, श्रीजिनवर नाखे रे ॥
 सुख आपे जे शाश्वतां, दुर्गति पडताने राखे रे ॥ शी०
 ॥१॥ व्रत पञ्चस्काण विना छुठ, नव नारद जेह रे ॥
 एकज शीयल तणे बलें, गया मुक्तें तेह रे ॥ शी०॥२॥
 साधु अने श्रावक तणा, व्रत ठे सुखदाइ रे ॥ शीयल
 विना व्रत जाणजो, कुसका सम नाइ रे ॥ शी०॥३॥
 तरुवर मूल विना जिश्यो, गुणविण लाल कमान रे ॥
 शीयल विना व्रत एहबुं, कहे वीर जगवान रे ॥ शी०
 ॥४॥ नवे वाडें निर्मलुं, पहेलुं शीलज धरजो रे ॥ उद
 यरत्न कहे ते पढी, व्रतनो खप करजो रे ॥ शी०॥५॥

॥ अथ तपः स्वाध्याय ॥

॥ इमरस्थावा आबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ कीधां कर्म निकंदवा रे, छेवा मुक्ति निदान ॥
 हत्या पातक बूटवा रे, नहीं कोइ तप समान ॥ ज
 विक जन, तप सरिखुं नहीं कोय ॥ १ ॥ उत्तम
 तपना योगथी रे, सुर नर सेवे पाय ॥ लब्धि अछा
 वीश उपजे रे, मन वंढित फल थाय ॥ जवि० ॥
 ॥ तप० ॥ २ ॥ तीर्थकर पद पामीर्ये रे, नासे सघ

ला रोग ॥ रूप लीला सुख साहेबी रे, लहीयें तप
 संयोग ॥ जवि० ॥ तप० ॥ ३ ॥ अष्ट करमना उंघ
 ने रे, तप टाले ततकाल ॥ अवसर लहीने तेहनो रे,
 स्वप करजो उजमाल ॥ जवि० ॥ तप० ॥ ४ ॥
 ते छुं ठे संसारमां रें, तपथी न होवें जेह ॥ मनमां
 जे जे कामियें रे, सफल फले सही तेह ॥ जवि०
 ॥ तप० ॥ ५ ॥ बाह्य अन्तर जे कह्यो रे, तपना
 बार प्रकार ॥ होजो तेहनी चालमां रे, जिम धनो
 अणगार ॥ जवि० ॥ तप० ॥ ६ ॥ उदयरत्न कहे
 तप थकी रे, वार्धे सुजस सनूर ॥ स्वर्ग होये घर
 आंगणुं रे, डुर्गति नासे दूर ॥ जवि० ॥ तप० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ जाव स्वाध्याय ॥

॥ धन धन ते दिन माहरो ॥ ए देखी ॥

॥ रे जवि जाव हृदय धरो, जे ठे धर्मनो धोरी ॥
 एकल मल्ल अखंन जे, कापे कर्मनी दोरी ॥ रे जवि०
 ॥ १ ॥ दान शीयल तप त्रण ए, पातक मल धोवे ॥
 जाव जो चोथो नवि जले, तो ते निष्फल होवे ॥
 रे जवि० ॥ २ ॥ वेद पुराण सिद्धांतमां, षटदशीन
 जांखे ॥ जाव विना जव संतति, पडतां कोण राखे
 ॥ रे जवि० ॥ ३ ॥ तारक रूप ए विश्वमां, जंपे जग

जाण ॥ जरतादिक गुण जावथी, पाम्या पद निरवा
 ण ॥ रे नवि० ॥ ४ ॥ औषध आय उपाय जे,
 मंत्र यंत्रने मूली ॥ जावें सिद्ध होवे सदा, जाववि
 ण सद्गु धूनी ॥ रे नवि० ॥ ५ ॥ उदयरत्न कहे
 जावथी, कुण कुण नर तरिया ॥ शोधी जो जो सू
 त्रमां, सज्जन गुण दरिया ॥ रे नवि० ॥ ६ ॥ इति॥

॥ अथ दान शील तप जाव स्वाध्याय ॥

॥ श्रीमहावीरें जाखीया, सखी दानना चार प्र
 कार रे ॥ दान शीयल तप जावना, सखी पंचम ग
 तिदातार रे ॥ श्रीमहावीरें० ॥ १ ॥ दानें दोलत पा
 मीयें, सखि दाने कोड कल्याणो रे ॥ दान सुपात्र प्र
 जावथी, सखी कयवन्नो शालिनइ जाणो रे ॥ श्रीमहा०
 ॥ २ ॥ शीयलें संकट सवि टले, सखी शीलें वंढित
 सिद्ध रे ॥ शीयलें सुर सेवा करे, सखी शोल सति
 प्रसिद्ध रे ॥ श्रीमहा० ॥ ३ ॥ तप तपो नवि जाव
 गुं, तपें निर्मल तनू रे ॥ वर्षोपवासी रिषनजी,
 सखी धन्नादिक धन्य धन्य रे ॥ श्रीमहा० ॥ ४ ॥
 जरतादिक गुणजावथी, सखी पाम्या पंचम ठाम
 रे ॥ उदय रतनमुनि तेहने, सखी नित्य करे प्रणा
 म रे ॥ श्रीमहा० ॥ ५ ॥ इति स्वाध्याय ॥

॥ अथ सखेश्वर पार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ ठेडोनाजी ठेडोनाजी ठेडोनाजी ॥ तें मुज
मोह महा मद पायो, तेणे हुं थयो मत वालो ॥
तृष्णा तरुणी आणी मिजावी, विच्चमां करीअ दला
ली ॥ अलगी रहेने रहेने रहेने रहेने अलगी० ॥
हारे कांइ कुमति पडीठे केडें ॥ अलगी० ॥ तुजड
तीने कोणज तेडे ॥ अल० ॥ १ ॥ कर्म नटावो तुं
तेडी आवी, तेणे पण मांफी बाजी ॥ मिथ्या गीत
तणे नणकारे, मुजने कीधो राजी ॥ अ० ॥ २ ॥
नरक निगोद तणा मंदिरमें, पातिक पलंग बिढायो ॥
मुजने जोलवी तिहां बेसाडयो, पण सुमर्ते समजा
व्यो ॥ अ० ॥ ३ ॥ जेंब मदिरा ठाक निवारी, सम
कित सुखडी चाखी ॥ उपशम रस सुधारस पीयो,
चित्त चेतनने दाखी ॥ अ० ॥ ४ ॥ श्री संखेश्वर च
रण सरोरुह, लागी ध्याननी ताली ॥ रूपविबुद्धनो
मोहन पणणे, जिनमत स्तुत लटकाली ॥ अ० ॥ ५ ॥

॥ अथ सुविधिजिन स्तवन कढी जाषामां ॥

॥ अच्चो असीं गरुण वेंधा, वरुंजे पेर पोंधा ॥
केशरजो घोर घोरिंधा, वनी वनी पूजा कंधा ॥
अच्चो० ॥ १ ॥ दीवबंदरमें दळो साहेब, सच्चो सुबु

द्विदेवा ॥ नांश्यां अह्ना पाणजो अना, जजी कजा
 सेव ॥ अ० ॥ १ कोचे अह्ना कोचे कंथड कोचे जे
 सर पीर, कोचे पतो कोचे दावल कोचे बावो धीर ॥
 अ० ॥ ३ ॥ एडा देव में दिछा जजा, विठा ठामो
 ठाम ॥ मूँके साहेब तुंहीज गम्यो, आशाजो विसरा
 म ॥ अ० ॥ ४ ॥ सर्ग मृत्यु पातालमें एडो, बेउ नाए
 कोए नाथ ॥ मिणी माहुंयेंजी आश्या पूरे, सच्चो
 सिद्धजो साथ ॥ अ० ॥ ५ ॥ तोजी अंगी चंगी दि
 छी, सोवनमें जर पूर ॥ मथे मोड जलामल दीपें,
 जरकें उगेउ सूर ॥ अ० ॥ ६ ॥ तोजे देवलमें दीआ
 जजा, जजा फूलेंजा ढग ॥ तोजो देवल दते नांयो,
 हेडो हुंधो सर्ग ॥ अ० ॥ ७ ॥ मुंजी आश्या पूरज
 हांणे, सच्चा सुबुधिनाथ ॥ जिनविजय चे साहेब मुं
 जा, तुंही तुंही जग नाथ ॥ अ० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ सोलमां श्रीजिनराज उलंग सुणो अमतणी,
 ललना ॥ नक्तथी एवढी केम करोठो नोलामणी
 ॥ ल० ॥ चरणे विलगो जेह आवीने थई खरो ॥
 ॥ ल० ॥ निपट तेहथी कोण राखे रस अंतरो ॥ ल०
 ॥ १ ॥ में तुज कारण स्वामि उवेख्या सुर घणा ॥

ल० ॥ माहरो दिशाथी मेंतो न राखी काई मणा ॥
 ॥ ल० ॥ तो तुंमे मुजथी केम अपूठा थई रहो ॥
 ॥ ल० ॥ चूक होवेजो कोई सुखे सुखथी कहो ॥
 ॥ ल० ॥ ३ ॥ तुजथी अवरन कोय अधिक जगती
 तजे ॥ ल० ॥ जेहथी चित्तनी वृत्ति एकांगी जई मजे
 ॥ ल० ॥ दीजे दरिण वार घणी न लगावीयें ॥ ल० ॥
 वातडी अति मीठीयें किम विरमावीयें ॥ ल०
 ॥ ३ ॥ तुं जो जलतो हुं कमल कमल तो हूं वासना
 ॥ ल० ॥ वासनातो हुं नमर न मूकूं आसना ॥ ल० ॥
 तुंमे ठोडो पण किम ठोडुं हुं तुमनणी ॥ ल० ॥ लो
 कोत्तर कोई प्रीत आवी तुजथी बनी ॥ ल० ॥ ४ ॥
 धुरथी स्याने समकित देई जोलव्यो ॥ ल० ॥ हवे
 किम जाउं खोटें दिलासैं ठेलव्यो ॥ ल० ॥ जाणी खा
 सो दास विमासो ठो किछुं ॥ ल० ॥ अमे पण खि
 जमत माहीं के खोटा किम थसुं ॥ ल० ॥ ५ ॥ बी
 जी खोटीवातें अमें राखुं नही ॥ ल० ॥ में तुम आ
 गल माहरा मन वाली कही ॥ ल० ॥ राखो पूरण
 प्रेम विमासोसुं तुमे ॥ ल० ॥ अवसर पामी एकांतें
 विनवीयेंठे अमें ॥ ल० ॥ ६ ॥ अंतर जामी स्वामी
 अचिरा नंदना ॥ ल० ॥ शांति करण श्रीशांतिजी

मानजो वंदना ॥ ल० ॥ तुम स्तवनाथी तन मन
 आनंद उपनो ॥ ल० ॥ कहे मोहन मन रंग सुप
 नित रूपनो ॥ ल० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ कृष्णजिन स्तवनं ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर सेवना, साहिबा उदित रुदय स
 सनेह ॥ जिणंदमोराहे ॥ प्रीत पुरातन सांजरे, सा
 हिबा रोमाचित सुचि देह ॥ जिणंद मोराहे ॥ आदि
 जिणंद जुहारीये ॥ साहिबा कृष्ण जिणंद जुहारी
 ये ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ अगम अलोकीक पंथडो,
 साहिबा कागल पण न लखाय ॥ जि० ॥ अंतर
 गतनी वातडी ॥ सा० ॥ जण जणने नकहाय ॥
 जि० ॥ आदि० ॥ २ ॥ कोडी टकानी चाकरी ॥
 सा० ॥ प्रापति विण नलहाय ॥ जि० ॥ मनडोजी
 मलवाने उंमहे ॥ सा० ॥ किमकरी मेलो थाय ॥
 जि० ॥ आदि० ॥ ३ ॥ दूरथका पण साजना ॥
 सा० ॥ सांजरे नवरंग रीत ॥ जि० ॥ पूरव पुण्ये पा
 मीये ॥ सा० ॥ परम पुरुषसुं प्रीत ॥ जि० ॥ आ
 दि० ॥ ४ ॥ मत मत नय नय कल्पना ॥ सा० ॥
 इतरेतर परिमाण ॥ जि० ॥ रूप अगोचर नवी
 लहे ॥ सा० ॥ विवाद एमहिं आण ॥ जि० ॥ आ

दि० ॥ ५ ॥ शम दम शुद्ध स्वभावमां ॥ सा० ॥ प्र
 शु तुम रूप अस्वमं ॥ जि० ॥ नक्ति वदित संजीन
 ता ॥ सा० ॥ एहथी प्रगट प्रचमं ॥ जि० ॥ आ
 दि० ॥ ६ ॥ करुणा रस संयोगथी ॥ सा० ॥ दीठो
 नवल देदार ॥ जि० ॥ रूपविबुध कवि राजनो ॥
 सा० ॥ मोहन जय जय कार ॥ जि० ॥ आदि० ॥ ७ ॥

॥ अथ स्तवन रागप्रजाती ॥

॥ आजको लाहो लीजीयें, काल केणरे दीठी ॥ रेहेण
 न पावें पाघडी ॥ जब आवे चीठी ॥ आ० ॥ १ ॥
 मनसा वाचा कर्मना, आलस सब ठंमी ॥ ध्यान धरुं
 अरिहंतनो, थानक शिर मंमी ॥ आ० ॥ २ ॥ विनय
 मूलजे पालीयें, श्रीजिनवर धर्म ॥ जावें सुद्ध आरा
 धतां, बूटे निज कृत कर्म ॥ आ० ॥ ३ ॥ दान शी
 यल तप जावना, ए चार प्रकार ॥ दया सुद्ध आरा
 धीयें, पामीयें नव पार ॥ आ० ॥ ४ ॥ धर्मनो म
 र्मए जाणजो, राग द्वेषने वारो ॥ केवल ज्ञान नीपा
 इने, देवचंइ पद सारो ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रजातीरागमां स्तवन ॥

॥ में परदेसी दूरका, प्रशु दरिसण कूं आया ॥
 लाख चोराशी देश फखा, तेरा दरशन पाया ॥ में०

॥ १ ॥ सुक्क बादर निगोदमां, वनसपती बसाया ॥
 अप तेउ वाउ कायमां, काल अनंत गमाया ॥
 में० ॥ २ ॥ स्वर्ग नरक तिर्यचमें, केतो जन्म गमा
 या ॥ मनुष्य अनार्यमें जम्या, तिहां नही दरसन
 पाया ॥ में० ॥ ३ ॥ तेरो मेरे दरसण अबजयो, पू
 रण पुण्य पसाया ॥ रूपचंद कहे जाग्यखुले, निरंज
 न गुण गाया ॥ में० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ कठीजाषानो स्तवन लिख्यते ॥

॥ अमां आंठं नेहडो कंधी, गोडीचे पेर वेंधी ॥
 केसरजो घोर घोरिंधी, वंजिआंठ पूजा कंधी ॥ अन
 वामाजी जो नीगरो एडो, बेयो नाए छुगमें तेडो ॥
 अमां० ॥ १ ॥ सरग मरत पातालजा माडुं, जजा
 सेवी पाय ॥ कामण गारो पासजी आयल, मुजे दि
 लमे जाय ॥ अमां० ॥ २ ॥ सर्पिं शर्पां जेरे बरंधा,
 दनो जे नवकार ॥ पासजीजो नालो गिनी दुआ,
 ईंइ ईंडाणी सार ॥ अमां० ॥ ३ ॥ बेआ देव दिठा
 जजा, देव न केडेकम्म ॥ तुंनिरागी गति निवारण,
 अष्ट कर्मजो दम्म ॥ अमां० ॥ ४ ॥ जेमां वंज्रा ते
 मां ईनके नजियां, जगमें वमो पीर ॥ जे हर्षजो सां
 मी मल्यो, खील्ली दुआ खीर ॥ अमां० ॥ ५ ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवन ॥

॥ चालो चलो सिद्धाचल जईए रे, रुषनदेव
सुखकारीयां ॥ चालो चलो सिद्धा ॥ ए आंकणी ॥
नानीरायां मारुदेवीको नंदन, हारे जुगल धर्म नि
वारियां रे ॥ कृ० ॥ १ ॥ आदिजिन चेटयां सवि
सुख मेठयां, हारे मेतो पाप करम सब टालियां रे ॥
कृ० ॥ २ ॥ रायण रूख समोसखा स्वामी, हारे ए
तो देखी जविक मन मोहियां रे ॥ कृ० ॥ ३ ॥ के
शर घोली नरीरे कचोली, हारे मेतो विधसुं अंगियां
रचावियां रे ॥ कृ० ॥ ४ ॥ करजोडी दलचंद गुण गावे,
हारे में तो नवोनव शरण तुमारियां रे ॥ कृ० ॥ ५ ॥

॥ अथ अनंतजिन स्तवन ॥

॥ चित्त लागो अनंतजिन चरननसें, चरननसें
जिन चरननसें ॥ चि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अनंत
नाथजिको दरिसन करके, मग्न जयो हम मनननसें
॥ चि० ॥ २ ॥ प्रभु दरिसनसें पाप कटतहे, तिमर
कटे जैसे अरुणनसें ॥ चि० ॥ ३ ॥ आस करी दा
स सरणो आयो, घेलचंद पाये परननसें ॥ चि० ॥ ४ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ आजरेमें मुख देख्यो गोडी पारसको, मेरो स

फल जयो दिन आज ॥ जलाजी मेरो सफल जयो०
 ॥ ए आंकणी ॥ अश्वसेन राजाजीको नंदन ॥ माता
 वामाजीको लाल ॥ आ० ॥ १ ॥ कमठ हटावन
 नागकूं तारन, संजलाव्यो नवकार ॥ आ० ॥ २ ॥
 जवो जव जटकत सरणे हुं आयो, अबतो राखोजी
 मोरी लाज ॥ आ० ॥ ३ ॥ उर देवकूं बोहोतमें
 ध्याया, किनसें नसख्यो मेरो काज ॥ आ० ॥ ४ ॥
 रूपचंद कहे नाथनिरंजन, उतारो जव पार ॥ आ० ॥ ५ ॥

॥ अथ कृष्णजिन स्तवनं ॥

॥ घणु मोधुं नाम ठेरे ॥ मारेतो केसरीया वाला
 नुं घणु मोधुं नामढे ॥ ए आंकणी ॥ कोई सेवे ब्रह्मा
 वाला कोई सेवे शंकर, कोईने विष्णु कोईने रामढे
 रे ॥ मारेतो० ॥ १ ॥ काल कंटक करूर जय टाल
 ए, सबल एसरणनो ठामढे रे ॥ मा० ॥ २ ॥ मू
 लचंद कहे प्रभु जे जगतारण, धुल्लेवा मंमण मोढुं
 धामढे रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवन लिख्यते ॥

॥ प्रगट्याते पूरण अविनासी, जीरे काम क्रोध
 सर्वे गयां नासी ॥ सुख दायकनां ठो स्वामी, जीरे
 पल पल रूपी प्रभु अंतर जामी ॥ १ ॥ कहुदेश प

श्चिम धाम, जीरे पावन कीधांढे सुथरी गाम ॥ धन
 धन नाग्य उदय कीधां, जीरे पार्श्व प्रभुजीर्ये दर्शन
 दीधां ॥ १ ॥ घृत कलोल प्रभु प्रताधारी, जीरे देरो
 चणाव्यो अती नारी ॥ देश परदेशना संघ आवे, जी
 रे पूजा रचावे प्रभुजीने नावे ॥ ३ ॥ आंगी रचावे
 उर धरी माला, जीरे रत्न करेढे रुडा ऊणकारा ॥
 मुकुट कुंमल सिर ठत्रधारी, जीरे चंद्रकला गुन ५
 छितारी ॥ ४ ॥ नावी नावनाने प्रभु पूजो, जीरेनाथ
 विना देव नहिं दूजो ॥ प्रभु पूजेथी नवजल तरिये,
 जीरे नाम लेतां नव निधि वरिये ॥ ५ ॥ अठार ठ्यासी
 चैत्रमास, जीरे पूनमे प्रभुजी पूज्या पास ॥ प्रेमचंद
 गुरुज्ञानी नावे, जीरे घृतकलोलजीना गुण गावे ॥ ६ ॥

॥ अथ चंदप्रज्जिन स्तवन ॥

॥ चंदा प्रभुजीसें लालरे मोरी लागी लगनवा ॥
 चंदा प्रभुजीसें ॥ ए आंकणी ॥ लागी लगनवा ठो
 डी न बूटे ॥ जब लगे घटमें सासरे ॥ मोरी ० ॥ १ ॥
 दान शीयल तप नावना नावो, जैन धर्म प्रतिपाल
 रे ॥ मोरी ० ॥ २ ॥ हाथ जोडकर अरज करतहे ॥
 वंदत सेठ खुशाल रे ॥ मोरी ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ कृष्णजिन स्तवन ॥

॥ केशरिया वाला जो लज्जा राखसो तो रेसे ॥
॥ केश० ॥ साहेब कलछुग केरा कूड कपटमें ॥ सा
च नही नवजेसे ॥ केश० ॥ १ ॥ जूठा बोला कुण
धारसे ॥ गिरूआ ना गुण गासे ॥ केश० ॥ २ ॥ सा
हेब तमे हमारे हमे तमारे, प्रीत सदा निरवेहेसे ॥
आसंगाते देह हसेतो, फिरि फरिने केसे ॥ केश० ॥
॥ ३ ॥ साहेब ठेल भोगाला देवदयाला, धुलेवा ध
एनि ध्यासे ॥ कृष्णदासनी आशा फलसे, नवनव
नां दुःख टलसे ॥ केस० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग गीत ॥

॥ हक मरना हक जाना यारो, मतको करो गु
माना ॥ उठण माटी पेरण माटी ॥ माटीका सरा
ना, वसती में सें बार निकाला, जंगल कीया सराना
॥ ह० ॥ १ ॥ हाथी चडते घोडे चडते, उर आगे
नीसाना ॥ नीली पीली बेरख चलती, उत्तर की
या पयाना ॥ ह० ॥ २ ॥ नरपती होके तखत
पर बेठे, साथें नारे खजाना ॥ सांऊ सवारे मुजरा
खेते ॥ ऊपर हाथ वेकाना ॥ ह० ॥ ३ ॥ पोथी पढ
पढ हिंडू नूजे, मुसलमान कुराना ॥ रूपचंद कहे अ

रे जाइ संतो, हरदम प्रबु गुण गाना ॥ ह० ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री अनंतजिन स्तवन ॥

॥ हारे लाल राम पूरा बाजारमां ॥ ए देशी ॥

॥ हारे लाल चतुरशिरोमणि चौदमो, जिनपति
नाम अनंत मेरे लाल ॥ गुण अनंत प्रगट कखां,
कखो विजावनो अंत ॥ मेरे लाल ॥ चतुर सिरोम
णी चित्तधरो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ हारे लाल चार
अनंता जेहनां, आतम गुण अनिराम ॥ मे० ॥
ज्ञान दर्शन सुख वीर्यता, कर्मै रुंध्या ठाम ॥ मे० ॥
॥ च० ॥ २ ॥ हारे लाल चतुर धरो निजचित्तमां,
ए जिनवरनो ध्यान ॥ मे० ॥ अरथी अरथ निवास
नै, सेवे धरी बहु मान ॥ मे० ॥ च० ॥ ३ ॥ हारे
लाल ज्ञानावरणी कृप करी ॥ लखुं अनंतो ज्ञान
॥ मे० ॥ दर्शनावरण निवारतां, दर्शन अनंत विधा
न ॥ मे० ॥ च० ॥ ४ ॥ हारे लाल वेदनीय विगमै
अयुं, सुख अनंत विस्तार ॥ मे० ॥ अंतराय उलंघ
तां, वीर्य अनंत उदार ॥ मे० ॥ च० ॥ ५ ॥ हारे
लाल इम अनंत निज नामनी, थिरता थापी देव
॥ मे० ॥ जिम तरस्यां सरवर जजे, तिम स्वरूप जि
न सेव ॥ मे० ॥ च० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवन ॥

॥ सेवो नवि शांतिजिणंद सनेहा, शांतरस गेहा ॥
 ॥ समामृत गेहा ॥ सेवो शांति जिणंद सनेहा ॥ ए
 आंकणी ॥ राग द्वेष नव पाप संतापित, त्रिविध ताप
 हर मेहा ॥ माया लोन राग करी जानो, द्वेष क्रोध
 मद रेहा ॥ से० ॥ १ ॥ अनंतानुबंधी अप्रत्याख्या
 नी, पञ्चस्काण संजल बेहा ॥ निज अन्योन्य सदृस
 थी चउसर, संख्या वासीत देहा ॥ से० ॥ २ ॥ नो
 कषाय नव हास्य अरति रति ॥ शोक छुगुप्ता नय वे
 हा ॥ मन वच काय तपावत तार्थे ॥ कहिये ताप
 अवेहा ॥ से० ॥ ३ ॥ जैसे वनदव तरु गण बाळे,
 त्यो अंतरगत एहा ॥ खम सम दम उपशम सीत
 लता, करि जल लहेरी लेहा ॥ से० ॥ ४ ॥ आतमरा
 य राज्य अजि संच्यो, पूजित त्रिभुवन गेहा ॥ तुम सिर
 ठत्रकी ठाह अमासिर, द्यो स्वरूप अनुपेहा ॥ से० ॥ ५ ॥

॥ अथ मद्भिजिन स्तवनं ॥

॥ जीरे सफल दिवस थयो आजनो ॥ एदेशी ॥

॥ जीरे महिमा मद्भि जिणंदनी, मानी माहरे म
 न्न ॥ मोह महिपति जीतिउ, वली तस पुत्र मद
 न्न ॥ १ ॥ नित नमीए निरागता, नमतां होए नव

वेद ॥ दुःख दोहग दूरें टले ॥ एहमां नहिं संदेह ॥
 जाणोंनिसंदेह ॥ नि० ॥ १ ॥ जीरे मल्लि जिणंद
 नी साहेबी, देखीनें रति प्रीति ॥ वचन कहे निज
 कंतने, पति प्रेमदानी रीति ॥ नि० ॥ ३ ॥ जीरे ना
 थ कहो एकुंणअठे, कहे ए जिनदेव, जिनते किम तुम
 वस नहिं ॥ कहे इम सत्य मेव ॥ नि० ॥ ४ ॥ जीरे न
 हिं प्रताप इहां माहरो ॥ तो वृथा पौरुष तुझ ॥
 हरव्यो मोह माहरो पिता ॥ तो स्यो आसरो मुझ
 ॥ नि० ॥ ५ ॥ जीरे ते सांजलि रति प्रीतिवे, त्रीजो
 काम सबाण ॥ मलीने मल्लि जिणंदनी, शिर धारीठे
 आण ॥ नि० ॥ ६ ॥ जीरे तेमाटे तुम वीनबुं, वा
 रो तेह अशेष ॥ द्यो सौजाग्य स्वरूपनें ॥ सुख ज
 ष्ठि विशेष ॥ नि० ॥ ७ ॥ इतिसंपूर्ण ॥

॥ अथ स्तवन राग प्रजातीमां ॥

॥ जागेशो जिन नक्त कहावे, सोवे सो संसारी
 हे ॥ त्रस जीवका हत्या नकरे, थावर करुणा कारी
 हे ॥ जा० ॥ १ ॥ थापण मोसो अदत्त नलेवे, चो
 री मारी वारीहे ॥ पंचनी साखे पाणी ग्रहण कर
 ता, अवर स्त्रीया ब्रह्मचारीहे ॥ जा० ॥ २ ॥ स्नानप्र
 मित जल जिनकी सेवा, परिग्रह संख्या धारीहे ॥ रूपचं

द समकितके लहन, ताकूँवंदना हमारी हो ॥ जा० ॥ ३ ॥

॥ अथ जीवने समता शिखामण ॥

॥ हो प्रीतमजी प्रीतकी रीत अनीत तजी चित्त
धारीयें, हो वालमजी वचन तणो अती उंमो मरम
विचारीयें ॥ हारें तुमे कुमतीके घर जावोढो, तुमे
कुलमा खोट लगावोढो ॥ धिग एठ जगतनी खावो
ढो ॥ हो० ॥ १ ॥ अमृत त्यागी विष पिउंढो, कुमा
तीनो मारग लीयोढो ॥ एतो काज अयुक्तो कीयो
ढो ॥ हो० ॥ २ ॥ एतो मोह रायकी चेटीढे ॥ शिव
संपत्ति एहथी ठेटीढे ॥ एतो साकर गलती पेटीढे
॥ हो० ॥ ३ ॥ एक संका मेरे मन आवीढे ॥ कि
सि विध ए चित्त जावीढे ॥ एतो दाहण जगमां चा
वीढे ॥ हो० ॥ ४ ॥ सद्गुरु कृदि तमारी खाएढे ॥ क
री कामण चित्त जरमाए ढे ॥ तुम पुण्य योगे ए पा
एढे ॥ हो० ॥ ५ ॥ मत आंब काज बाउल वो
लो ॥ अनोपम जव विरथा नवी खोवो ॥ अब खो
ल नयण प्रगट जोवो ॥ हो० ॥ ६ ॥ इणविध स
मता बहु समजाए ॥ गुण अवगुण कइ सद्गुरु दरसा
ए ॥ सुणी चिदानंद निज घर आए ॥ हो० ॥ ७ ॥

॥ अथ प्रजातीरागमां स्तवन ॥

॥ देव निरंजन नव नय जंजण, तत्व ज्ञानका
वरीआरे ॥ मति श्रुत अवधिने मनपर्यव, केवल ज्ञा
ने नरीआरे ॥ देव० ॥ १ ॥ काम क्रोध लोह मञ्जर
मारण, अष्ट करमकुं हणीआरे ॥ चारे नारी दूर
निवारी ॥ पंचम सुंदरी वरीयारे ॥ देव० ॥ २ ॥ द
रसन ज्ञान एक रस जाकुं, खीरोदधी ज्युं नरीयारे ॥
रूपचंद प्रभु नामकी नावा, जो बेठासो तरीयारे
॥ देव० ॥ ३ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ जीरे आज दिवस जलें उगीयो, जीरे आज
थयो सुविहाण ॥ पासजिणेसर जेटीआ, थयो आ
नंद कुशल कव्याणहो साजन ॥ सुखदायक जाणी स
दा, नवि पूजो पास जिणंद ॥ १ ॥ एआंकणी ॥
जीरे त्रिकरण सुद्धियें त्रिहुं समे, जीरे निसिही त्र
ण संजार, त्रिहुं दिशि निरखण वरजीनें ॥ दीजें ख
मासमण त्रणवार हो ॥ साजन ॥ २ ॥ जीरे चैत्य
वंदन चोवीसनो, जीरे स्वरपद वर्ण विस्तार ॥ अर्थ
चिंतन त्रिहुं कालना, जिन नाथ निहेपा चारहो ॥
॥ साजन० ॥ ३ ॥ जीरे श्रीजिन पद फरसे जहे,

कलि मलीनतें पदकल्याण ॥ तेवलि अजर अमर दु
वे, अपुनर्जव छुज निर्वाणहो ॥ सा० ॥ ४ ॥ जीरे
जोह जाव मूकी परो ॥ जीरे पारश फरस पसाय ॥
थाए कल्याण कुधातुथी, तिम जिनपद मोह उपाय
हो ॥ सा० ॥ ५ ॥ जीरे उत्तम नारी नर घणा, जी
रे मनधरी नक्ति उदार ॥ आराधी जिनपद नजो,
थाए जिन करे जग उपगार हो ॥ सा० ॥ ६ ॥ जी
रे एहवो मन निश्चल करी, जीरे निसिदिन प्रभुने थ्या
य ॥ पामें सौजाग्य स्वरूपनें, निवृत्ति कमलावर था
य हो ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शान्तिजिन स्तवन ॥

॥ शान्ति जिनेसर साहिबा रे, शान्तितणो दातार ॥
सज्जुणा ॥ अंतर जामी ठो माहरा रे, आतमना
आधार ॥ स० ॥ शान्ति० ॥ १ ॥ चित चाहे प्रभु
चाकरी रे, मनचाहे मलवाने काज ॥ स० ॥ नयण
चाहे प्रभु निरखवा रे, द्यो दरिसेण महाराज ॥ स०
॥ शान्ति० ॥ २ ॥ पलक न वीसरो मन थकी रे,
जिम मोरा मन मेह ॥ स० ॥ एक पखो किम रा
खीर्ये रे, राज कपटनो नेह ॥ स० ॥ शान्ति० ॥ ३ ॥
नेह नजर निहाजतां रे, बाधे बिमणो वान ॥ स० ॥

अखूट खजानो प्रभु ताहरो रे, दीजीयें वंढित दा
 न ॥ स० ॥ सांति० ॥ ४ ॥ आस करे जे कोई आ
 पणी रे, नही मुकीयें नीरास ॥ स० ॥ सेवक जा
 णोने आपणो रे, दीजीयें तास दिजास ॥ स० ॥
 सांति० ॥ ५ ॥ दायकने देता थकां रे, कृण नवी
 लागे वार ॥ स० ॥ काजसरे निज दासना रे, ए मो
 टो उपगार ॥ स० ॥ सांति० ॥ ६ ॥ एहुं जाणीने ज
 ग धणी रे, दिलमांही धरजो प्यार ॥ स० ॥ रूपविजय
 कविरायनो रे, मोहन जय जय कार ॥ स० ॥ सांति० ॥ ७ ॥

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ रे बंदन आयो ॥ ए आंकणी ॥ बाजत चेरी
 नूंगल सुर डुंडनी, नाद सुरपति जायो रे ॥ बंदन
 आयो० ॥ १ ॥ ऐरावण गज सप्तसूँढ सिर, कमल
 हि ठायो ॥ कमल कमल जिन जुवन जुवन, नाट
 क बनायो रे ॥ बं० ॥ २ ॥ सुधर्म ईसान सनत म
 हेंड, आदेश सवायो ॥ वीस जुवनपति त्रीसदोय,
 व्यंतर बनायो रे ॥ बं० ॥ ३ ॥ चंड सूरज दोय
 ज्योतिषि चोसठ, आय वीर वधायो ॥ बंदत सुरप
 ति विधलेई, जावना जायो रे ॥ बं० ॥ ४ ॥ समो
 वसरण श्रीवीरजिणंद, त्रिहुं कोट रचायो ॥ देसना

सरस सुधारस देइ, नविक मन लोनायो रे ॥ बं० ॥ ५ ॥
 इत नरपति दसाएजइ नड, तेजसवायो ॥ देखत
 सुर रिद्धि मान ठोडी, संजम पायो रे ॥ बं० ॥ ६ ॥
 धनधन शासन जैनधर्म, धनवीरजिन रायो ॥ संघ
 सकल सुखदाय पाय, जयरामे गायो रे ॥ बं० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीमंधरजिन स्तवन ॥

॥ पुस्कलवई विजयें जयो रे, नयरी पुंरि गिणि
 सार ॥ श्रीसीमंधर साहेबा रे, राय श्रेयांस कुमार ॥
 जिणंदराय ॥ धरजो धर्म सनेह ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥
 मोटा नाहाना अंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत ॥ स
 सि दरिसण सायर वधे रे, कैरव वन विकसंत ॥
 जि० ॥ २ ॥ ठाम कुठाम न लेखवे रे, जग वरसंत
 जलधार ॥ कर दोय कुसुमें वासीयें रे, ठाया सवि
 आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ राय रंक सरीखा गणे रे,
 उद्योतें ससि सूर ॥ गंगाजल ते बिहु तणो रे, ताप
 करे सविदूर ॥ जि० ॥ ४ ॥ सरिखा सहुने तारवा
 रे, तिम तुमे ठो महाराज ॥ मुजसुं अंतर किम क
 रो रे, बाहि ग्रह्यानी लाज ॥ जि० ॥ ५ ॥ मुख
 देखी टीजुं करे रे, ते नवी होय प्रमाण ॥ मुजरो
 माने सवी तणो रे, साहिव तेह सुजाण ॥ जि०

॥ ६ ॥ वृषज लंठन माता सत्यकी रे, नंदन रुक
मणी कंत ॥ वाचकजस एम वीनवे रे, नय नंजन
नगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ सदगुरुने चरणे नमी, गायकुं गोडी राय ॥ मारा
वाजा ॥ एकल मल्ल थलरो धणी, देखतां सुख थाय
॥ मारा० ॥ १ ॥ वामाजीनो कुंअर लाडलो, जोवा
सुज मन थाय ॥ मा० ॥ ए आंकणी ॥ देव घणा धरणी
तले, ते दीठा न सुहाय ॥ मा० ॥ वा० ॥ २ ॥ अ
खीयां प्यासी थई रही, देखण प्रचु मुख लाल ॥
मा० ॥ अंतरजामी माहेरा, महिर नजर कुं निहा
ल ॥ मा० ॥ वा० ॥ ३ ॥ यात्रा करणनी होंस ठे,
बहु दिननी मनमाहें ॥ मा० ॥ दुकम करो प्रचुजी
हवे, आकुं धरीय उह्वाहें ॥ मा० ॥ वा० ॥ ४ ॥ दूर
देशांतर जई रह्या, तेना दरिसण सरज्या थाय ॥
मा० ॥ आस विलुधा मानवी, रात दिवस गुण गा
य ॥ मा० ॥ वा० ॥ ५ ॥ समरथ साहिबजी हवे,
उलंग कीजे तास ॥ मा० ॥ प्राप्ति होयतो पामीयें,
नाम्य फळे सुविलास ॥ मा० ॥ वा० ॥ ६ ॥ तुम वि
ए कहो कुण सांजले, सेवकनी अरदास ॥ मा० ॥

जाणुं सही आपसो, मनवंडित सुख वास ॥ मा०
 ॥ वा० ॥ ७ ॥ कूडा कलियुगमां प्रभु, परता पूरण
 हार ॥ मा० ॥ मारगमां सानिध करो, आप थई अ
 सवार ॥ मा० ॥ वा० ॥ ८ ॥ नकिना रंग अनेकळे,
 साहिब सुगुण सुजाण ॥ मा० ॥ मन मोहन जगजी
 वना, प्रभुजी मुंज महेराण ॥ मा० वा० ॥ ९ ॥ प्रत्य
 ह गोडी पासजी, अरि दल जंजण हार ॥ मा० ॥
 वाचक सहेज सुंदर तणो, नित्यलाज जय जय
 कार ॥ मा० ॥ वा० ॥ १० ॥ इति संपूर्णम् ॥

॥ अथ सुविधिजिन स्तवन ॥

॥ सुरत सुविधि जिणंदनी रें लो, महिमावंत प
 रधान ॥ मारा वालाजी रे, तुमनें अमारी वंदना रे
 लो ॥ नयण पावन थया देखतां रे लो, गुण अनंत
 जगवंत ॥ मा० ॥ हवे न ठोडुं ताहरी चाकरी रे लो ॥ १ ॥
 वामाराणीना नंदनारे लो, सांजल दीनना नाथ ॥
 मा० ॥ तुम० ॥ प्रेम धरी सेवाकरूं रे लो, हवे न ठो
 डुं तारो साथ ॥ मा० ॥ हवे० ॥ २ ॥ सोना रूपाना
 फूलनीरे लो, आंगी बनावुं सार ॥ मा० ॥ तु० ॥
 नाच करुं प्रभु आगळे रे लो, मावजना द्यौकार ॥
 ॥ मा० ॥ हवे० ॥ ३ ॥ अमने ते शिव सुख आपजोरे

जो, सुं कहुं वारोवार ॥ मा० ॥ तु० ॥ आतम अ
 नुजव ध्यानथीरे जो, लहीर्यें वंछित सार ॥ मा० ॥
 ॥ ह्वे० ॥ ४ ॥ मनना मनोरथ माहेरारे जो, सफल
 थयां सद्गु आज ॥ मा० ॥ तु० ॥ नित्यलान प्रभु पद
 सेवतां रेजो, सीधा सघला काज ॥ मा० ॥ ह्वे० ॥ ५ ॥
 ॥ अथ सिद्धस्वरूप परिकर विपद्भृत्याग स्तवन ॥

॥ अविनाशीनी सेजडीर्यें, रंग लागो मोरी सज
 नी ॥ ए आंकणी ॥ केली करंतां गई नवजाणी, आ
 जूनी रजनी जी ॥ अवि० ॥ १ ॥ मान सरोवर हंस
 तणी परें, मुक्ति तणा गुण चुगताता ॥ ज्ञान वन
 की कुंज गलनमें, आतमराम रमताता ॥ अवि० ॥
 ॥ २ ॥ सासु दुर्मति कामण गारी, ससरो लोन धू
 तारो जी ॥ पिता मोहवे महा पापीउं, माया मात
 ठगारी जी ॥ अ० ॥ ३ ॥ क्रोध पाडोसण केड न
 मेले, कंदर्प देवर मीठाजी ॥ विषय वासना गइ दे
 राणी, तिहां अविनासी दीठाजी ॥ अवि० ॥ ४ ॥
 एटलाने अलगाज करीने, कंत तणा कर जाढ्या
 जी ॥ अविनासी वालाशुं रमतां, मोह मळर मद
 गाढ्या जी ॥ अवि० ॥ ५ ॥ बावना चंदनथी अति
 शीतल, नाथ निरंजन वाणीजी ॥ रूपचंद रस प्रेमें

पीतां, तिहांथी प्रीत बंधाणीजी ॥ अवि० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वजिन प्रजाती स्तवन ॥

॥ उठो उठोरे मोरा आतराम, जिन मुख जोवा
जईयें रे ॥ उथलो ॥ प्रभुजीनो दरिसणढे अति दो
हेलो, ते किम सोहेलो जाणोरे ॥ वार वार मानव
नव जेहवो, मलवो मुसकील टाणोरे ॥ उठो० ॥ १ ॥
चार दिवसनो चटको मटको, देखीने मत राचोरे ॥
विणसी जातां वार न लागे, काया घढढे काचो रे
॥ उठो० ॥ २ ॥ हीरो हाथ अमूलक पायो, मूढ
पणे मत गमजोरे ॥ सहेज सजूणा पास जिणंद
छुं, राजी थइ चित्त रमजो रे ॥ उठो० ॥ ३ ॥ अ
नंतगुणें करी जरिआ जिनवर, पुरव पुण्ये पायोरे ॥
ते देखीने महारा मनमां, आनंद अधिक सोहायो रे
॥ उठो० ॥ ४ ॥ मन गत मोरा आतम राम, करजो
सुकुत कमाइ रे ॥ लान उदय जिणचंद जईने, वरते
सिद्धसवाई रे ॥ वर्ते आनंद वधाई रे ॥ उ०॥ ५ ॥

॥ अथ शत्रुजय स्तवन राग प्रजाती ॥

॥ चालोने प्रीतमजी प्यारा शेंत्रुंजे जईयें, शेंत्रुंजे
जईयेंरे स्वामी, शेंत्रुंजे जईयें ॥ चालो० ॥ ए आंक
णी ॥ सुं संसारे रह्याढो मुजी, दिन दिन तन ठीजें॥

आथ आननी ठाया सरखी, पोतानी कीजें ॥ चा०
 ॥ १ ॥ जे करवुं ते पेहेजां कीजे, काजे सीवातुं ॥
 अणचिंतवी आवी पडसे, सबजानी लातुं ॥ चा० ॥
 ॥ २ ॥ चतुराईकुं चित्तमां चेती, हाथें ते साथें ॥ म
 रणतणा नीसाणा मोटा, गाजेढे माथे ॥ चा० ॥
 ॥ ३ ॥ माता मरुदेवानंदन निरखी, जवसफजो कीजे ॥
 दानविजय साहेबनी सेवा, ए संबल लीजे ॥ चा० ॥ ४ ॥

॥ अथ धर्मजिन स्तवन ॥ हारे महारे योव

॥ नीयांनो लटको दाहाडा चार जो ॥ ए देशी ॥

॥ हारे मारे धर्मजिणंदकुं लागी पूरण प्रीतजो,
 जीवडलो ललचाणो जिनजीने उजगे रेलो ॥ हारे
 मुने यासे कोईक समयें प्रभुजो प्रसन्न जो, वातड
 ली तव मारी सहु यासे वर्गेरेजो ॥ १ ॥ हारे कोई ड
 ऊननो जंजेखो माहारो नाथजो, उजवजो नही क्या
 रे कीथी चाकरीरे लो ॥ हारे माहरा स्वामी सरखो
 कुणढे डुनीयां माहेजो, जईयेंरे जे तेहने घर आस्या
 करीरे लो ॥ २ ॥ हारे जस सेव्या सेंती स्वार्थ न
 होवे सिद्धजो, ठालीरे शीकरवी तेहथी गोवडीरेलो ॥
 हारे कोई जुव खाए ते मीठाईने माट जो, कोई रे
 परमारथ विण नही प्रतडीरे लो ॥ ३ ॥ हारे प्रभु

अंतरजामी जीवन प्राणाधारजो, वायुंरे नवी जाणे
 कलियुग वायरो रेलो ॥ हारे मारा नायक लायक
 नक्ति वल्लल जगवानजो, वारुरे गुणकेरो साहेब सा
 गरुरेलो ॥ ४ ॥ हारे प्रभु लागी मुजने ताहरी माया
 जोरजो, अलगारे रह्याथी होवे उंसिंगलोरे लो ॥ हारें
 कुण जाणे अंतर गतनी विण माहाराजजो, हेजणुं
 हसीहसी बोलुबुं दयामणोरे लो ॥ ५ ॥ हारे तारे
 मुखने मटके अटक्यो मारो मन्नजो, आखडंलीवं
 अणीआलीवं कामण गारीवंरे लो ॥ हारे मारा न
 यणा लंपट क्षिण क्षिण जोवे तुजजो, रातीरे प्रभु
 रूपें न रहे वारीवं रेलो ॥ ६ ॥ हारे प्रभु अलगा
 तोपण जाणजो करीने हजूरजो, ताहरीरे बलिहारी
 जावं वारणे रेलो, हारे कवी रूपविबुधनो मोहन
 करे अरदासजो, गिरुआथी मन आणें कलट अति
 घणो रेलो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पदमप्रजजिन स्तवन ॥

॥ रिषन जिनेसर प्रीतम माहारा रे ॥ ए देशी ॥

॥ कागलीउं किरतार नणी सीपरें लिखुं रे, कवी
 पूढे करजोड ॥ जिम तिम लिखता हाथ वहे नहीं
 रे, लखवानो पण कौम ॥ का० ॥ १ ॥ सैगुं माण

स शिवपुर चालतो रे, न मले इणो कली काल, प्रभु
 लगे सपगो पोची सके नही रे, निपगानो जंजाल
 ॥ का० ॥ १ ॥ हाथ नफाजे कागल केहनो रे, कहो
 किम बाधे नेह ॥ अलवे ते पाठो उत्तर नवो लखे रे,
 साहेबीउ निसनेह ॥ का० ॥ २ ॥ एह निरंजन ते
 किम रंजीये रे, जो लिखुं विनती लाख ॥ दूर थकी
 सेवक हुं थइ रहुं रे, छेइ सहुनी साख ॥ का० ॥
 एक पखो जो जाणो पालखुं रे, पदम प्रभु छुं प्री
 त ॥ तो कागल जिनराजमां मूकजो रे, इण घर ए
 हीज रीत ॥ का० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन ठंद ॥

॥ सकल सुखाकर जिनवरराय, नवियण वंदो
 पासजीना पाय ॥ नामे नवनिधि होए वली, पूज्या
 पातिक जाये टली ॥ १ ॥ नयरी वणारसी अश्वसे
 न राय, वामादेवी जेहनी माय ॥ सतीय सीरोमणी
 रूपनिधान, जेणे जनम्या प्रभु पार्श्व प्रधान ॥ २ ॥
 अंगे आंगी दीपे अती सार, रत्न जडीत शिर मुकुट
 छदार ॥ काने कुंमल बाहें बैरखा, हार हीये सोहे
 नवलखा ॥ ३ ॥ इइ नील सम तनु दीपंत, तेजें
 ससिहर रवी जीपंत ॥ वदन कमल जस पूनम चं

द, नयन कमल दीठे आनंद ॥ ४ ॥ बाघ सिंह ग
ज नय सवि टले, नूत प्रेत व्यंतर नवी ठले ॥ रोग
शोग दुःख वारणहार, पासजीने नामे नित्य जय
जय कार ॥ ५ ॥ अंचल गह्वें उदयो जाण, धर्म मू
र्ति सूरि जग जाण ॥ तास तणा वाचक वरशिष्य,
वंडु राज मुर्ति गणी मुख्य ॥ ६ ॥ तास शिष्यपंढित
कलट धरी, स्तवन रच्युं मे खंते करी ॥ विजयसागर
मुनि पजणे मुदा, स्तवन जणे तस घर संपदा ॥ ७ ॥

॥ अथ वैरागसिद्धाय ॥

॥ ईश्वर मेवासमें बे, मरदो मगन नया मेवासी ॥
कायारूप मेवास बन्योहे, माता ज्युं मे वासी ॥ साहे
बकी सिर आण नमाने, आखर क्या लेजासी ॥
॥ ई० ॥ १ ॥ खाई अति डुरगंध खजाना, कोटमां
बहुत्तर कोठा ॥ वणसी जातां वार न लागे, जैसा
जल पंपोटा ॥ ई० ॥ २ ॥ नव दरवाजा वहे निरंत
र, दुःख दाई डुरगंधा ॥ क्या उसमें तल्लीन नयाहे,
रेरे आतम अंधा ॥ ई० ॥ ३ ॥ बिनमें ठोटा बिनमें
मोटा, बिनमें ठेह देखासी ॥ जब जमरेकी नजर ल
गेगी, तब बिनमें उड जासी ॥ ई० ॥ ४ ॥ मूलक मुलक
की मलि लोगाई, बोहोत करि फरी आदी, पण मुजरो

माने नही पापी, अति ठाक्यो उनमादी ॥ ई० ॥
 ॥ ५ ॥ सारा मुजक मेव्या संतापी, काम करोडी
 कौटो ॥ जोन तलाटी लोचा वाले, तो किम नावे
 त्रोटो ॥ ई० ॥ ६ ॥ उदयरत्न कहे आतम मेरा,
 मेवासी पणु मेजो ॥ जगवंत ने जेटो जलीजांते, मु
 क्ति पुरीमें खेलो ॥ ई० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्थ्व जिन स्तवनं ॥

॥ राताजेवां फूलडाने, सामल जेवोरंग ॥ आज
 तारी अंगीनो कांइ रूडो बन्यो रंग ॥ प्यारा पासजी
 होलाल, दीन दयाल, मुने नयणे निहाल ॥ १ ॥
 एआंकणी ॥ जोगीवाड़े जागतोने, मातो धिंगड म
 छ ॥ शामजो सोहामणोने, जीत्या आठेमछ ॥
 ॥ प्या० ॥ २ ॥ तुंढे मोरो साहिबोने, हुंहुं तारो
 दास ॥ आस पूरो दासनीकांइ, सांजली अरदास ॥
 प्या० ॥ ३ ॥ देव सघला दीठा तेमां, एक तुं अवछ ॥
 लाखेणोढे लटको तारो, देखी रिऊ दिछ ॥ प्या० ॥
 ॥ ४ ॥ कोइ नमे पीरनेने, कोइ नमे राम ॥ उदयर
 त्न कहेरे प्रभु ॥ मारे तुमहुं काम ॥ प्या० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शांति जिन स्तवनं ॥

॥ सकल सुखाकर, शांति जिनेस्वर राय ॥ हरषे

गुण गाइस, बांदीस प्रभुजीना पाय ॥ १ ॥ हथिणा
 ठर नयरी, विश्वसेन नूपाल ॥ राणी अचिरा देवी,
 शीयल गुणे सुविसाल ॥ २ ॥ तस कुंखे उपना,
 स्वामीते शांति जिणंद ॥ जनमहोष्ठव आव्या, सुर
 नर चोसठ इंद ॥ ३ ॥ जर जोवन पाम्या, रायनी
 रुद्धि अनंत ॥ दइ दान सवंधरी, दीक्षाजे जगवंत ॥
 ॥ ४ ॥ बली केवल पाम्या, लाख वरषनी आय ॥
 अणसणसुं पोहोता, समेत शिखर सिद्ध थाय ॥
 ॥ ५ ॥ नमो शांति जिनेश्वर, नविक जीव हितका
 री ॥ जणे वाचक संकर, देजो सेव तुमारी ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीआबुजीनो स्तवन लिख्यते ॥

॥ आबु परवत रुअडोरे लाल ॥ उंचोते गाउडा
 वार रे ॥ आदेशरदेव ॥ पाए चढतां दोहेलोरे ला
 ल ॥ जिहां नथी पुण्यनो पार रे ॥ आ० ॥ आबु० ॥
 ॥ १ ॥ एआंकणी ॥ पेला आदिसर जुहारीयेरे ला
 ल ॥ पळे सद्ध परिवार रे ॥ आ० ॥ बलता नेमीस
 र जुहारीयेरे लाल ॥ मुक्तितणो दातार रे ॥ आ० ॥
 आबु० ॥ २ ॥ देरा सामां दोय जोडलारे लाल ॥
 विमल मेतो चळ्या तुरंग रे ॥ आ० ॥ वस्तुपाल तेज
 पालना जोडलारे लाल, चामर ढळे दोय अंग रे ॥

॥ आ० आबु० ॥ ३ ॥ देराणी जेठाणीना आरीआ
 रे लाल, खरच्याते लाख अठार रे ॥आ०॥ रूपा ब
 रोबर कोरणीरे लाल, सोनु घडे सोनार रे ॥ आ०
 ॥ आबु० ॥ ४ ॥ एकावन उरसीआ जलारे लाल,
 सुखड केशर चंग रे ॥ आ० ॥ चंपा सेवंत्रीना जा
 हुवारे लाल ॥ जाणे प्रीयछुं प्रीतम रंग रे ॥आ०॥
 ॥आबु०॥५॥ अचल गिरि वधामणारे लाल ॥ चौमु
 ख प्रतिमा चार रे ॥आ०॥ वलि वलि सेवक बीनवेरे
 लाल ॥ आवा गमण निवार रे ॥आ०॥आबु०॥६॥

॥ अथ पार्श्व जिन स्तवन ॥

॥ लागो मेरो पारस प्रभुजीसैं ध्यान ॥ लागो ०॥
 मुगता गिरि पर आप बिराजे, फरकत जरीय नीसा
 न ॥ ला० ॥ १ ॥ बारा व्रत तप बाह्य अन्यंतर,
 समकेत जाव धरान ॥ ला० ॥ २ ॥ नेमीचंद कहे
 सुनो जाई सावको ॥आपही आप पीठान ॥ला०॥३॥

॥ अथ शांति जिन स्तवनं ॥

॥ शांती मिलनकी आसहो जीया मानुबे ॥
 शांति० ॥ शांति मेरा वारी में शांतिको, ज्युरे फूलन
 बिच बासहो ॥ जीयामा० ॥ १ ॥ निसि दिन प्रभु
 जीको ध्यान धरतहुं ॥ जबलग घटमे सासहो ॥

जी० ॥ २ ॥ शांतिजिणंदजीके चरनकी सेवा, गावे
गुलाब चंद दासहो ॥ जी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ कृष्ण स्तवन ॥

॥ नैना सफलजई में निरख्या नाजी कुमार, अ
खीयां सफल जई ॥ में० ॥ नवो नव नटकत सर
नहुं आयो, अबतो राखोने मोरी लाज ॥ नैना० ॥
॥ १ ॥ रोम रोम आनंद जयो मे रे, अशुन करम
गये जग ॥ नैना० ॥ २ ॥ और चाहन कबु रह्यो
नहीं मेरे ॥ पायक गजरथ वाज ॥ नैना० ॥ ३ ॥
रामचंद प्रभु एह मागतहे, लोक सिखरको राज ॥
॥ नैना० ॥ में० ॥ ॥ ४ इति ॥

॥ अथ संजवजिन स्तवनं ॥

॥ बेडले नार घणोठे राज, वातां केम करोठो ॥
एदेशी ॥ समकित दाता समकित आपो, मन मागे
थइ मीठो ॥ ठती वस्तु देतांसुं सोचो ॥ मीठोजे
सहुयें दीठो ॥ प्यारा प्राण थकीठो राज, संजव जि
नवर मुकने ॥ १ ॥ एआंकणी ॥ एम मतजाणो जे आ
पे लहीयें ॥ ते लाधुं सुं छेवुं ॥ पण परमारथ
पीठी आपे, तेहीज कहीयें देवुं ॥ प्या० ॥ २ ॥ अर
थीहुं तुंअरथ समपक, एम मत करजो हासुं ॥ प्रगट

नहंतुं तुमने पण पेहेला, एहांसानुं पाशुं ॥ प्या० ॥
 ॥ ३ ॥ परम पुरुष तुमे प्रथम नजीने, पाम्या ए
 प्रचुताई ॥ तेणे रूपें तुमने ए नजीयें ॥ तेणे तुम
 हाथे वडाई ॥ प्या० ॥ ४ ॥ तुमे स्वामी हुं सेवा का
 मी, मुजरे स्वामी निवाजे ॥ नहीतो हठ मांमी मा
 गंता, सेवक केणीविध लाजे ॥ प्या० ॥ ५ ॥ ज्योते
 ज्योति मिले मत प्रीढो, कुण जेसे कोण नजसे ॥
 साची नक्ति ते हंस तणी परे ॥ खीर नीर मय कर
 से ॥ प्या० ॥ ६ ॥ उलंग कीधी जेखे आवी, चरण
 जेट प्रचुदीधी ॥ रूपविजयनो मोहन पणणे, रसना
 पावन कीधी ॥ प्या० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवन ॥

॥ विमलाचल विमला प्राणी, शीतल तरू ठाया
 ठेराणी, रस वेधक कंचन खाणी, कहे इंड सुणो
 इंडाणी ॥ स्नेही संत एगिरि सेवो, चौद खेत्रमां ति
 रथ न एहवो ॥ स्नेही संत एगिरि सेवो ॥ ए आंक
 णी ॥ ठरी पालीने उल्लसीयें, ठठ अठम काया क
 सीयें, मोह मछने सामा धसीयें, विमलाचल वेहेला
 वसिये ॥ स्नेही० ॥ १ ॥ अन्य थानक कर्मजे
 करीयें, ते हेमगिरि हेठा हरीयें, बे पोजें प्रदहणा

फरीयें, नवजलधि हेलीं तरीयें ॥ स्नेही० ॥ ३ ॥
 शिवमंदिर साधवा काजे, सोपाननी पंक्ति बिराजे,
 चढंता समकित ठाजे, दूर्नव्य अनव्य ते लाजे ॥
 स्नेही० ॥ ४ ॥ पांमव पमुहा केई संता, आदिसर
 ध्यान धरंता, परमात्म जावें नर्जंता, सिद्धाचल सी
 धा अनंता ॥ स्नेही० ॥ ५ ॥ षट् मासी ध्यान धरा
 वे, शुकराजा राज्यते पावे, देहांतर शत्रु हरावे, शत्रु
 जय नाम धरावे ॥ स्नेही० ॥ ६ ॥ प्रणीधान धरो
 ए गिरि साचो, तीर्थकर नाम निकाचो, मोहरायने
 लागे तमाचो, शुन वीर विमलगिरि साचो ॥ स्नेही० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवन ॥

॥ सिद्धाचल सिद्ध सुहावे, अनंत अनंत कहावे,
 जेव पंदरशी शिव जावे, गुण अगुरु लघु नीपजावे रे ॥
 विमलाचल वेगें वधावो ॥ गिरिराज तणा गुण गावोरे,
 जो होवे शिवपुर जावो रे ॥ विम० ॥ १ ॥ ए आं
 कणी ॥ जीतारी अनिग्रह लीधो, दिन सातमें जोजन
 कीधो, शुक्र राजायें राजते लीधो, शत्रुजय नामते
 दीधो रे ॥ वि० ॥ २ ॥ दैव दानव ईणे गिरि आवे,
 जिनराजने शीश नमावे, सूत्र मांहे नांच नचावे,
 जोगावंचक फल पावे रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ विद्याचार

ए मुनिवरिया, मरकट फल जल संचरिया, आका
 शें पवनसें चलिया, देखी हेमगिरि हेठा उतरिया रे
 ॥ वि० ॥ ४ ॥ प्रभु देखीने आनंद पावे, जिनराजने
 शीश नमावे, देव साथें जावना जावे, पढी इच्छित
 थानकें जावे रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ ग्यान दर्शन जेहथी
 लहियें, नवमो श्रावकगुण वहियें, संसारने रीतें र
 हियें, जिन शासन तीरथ कहियें रे ॥ वि० ॥ ६ ॥
 सद्गु तीरथनो ए राजा, सूर्यकुंभमां जल ताजा, ना
 हातां जिन आनंद नाजा, दुर्ग कूकडो ते चंदराजा
 रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ ए तीरथ जेटण काजे, गुजरात
 नो संघ समार्जे, पंथें पंथें विसोमो ठाजे, गिरि दे
 खी वधावो उछासैं रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ अठार तिहुंते
 रा वरसैं, मार्गशिरवदि तरेस दिवसैं, जेटया आदेस
 र उछासैं. जाणु नवजल पार उतरसे रे ॥ वि० ॥
 ॥ ९ ॥ गिरिदेखी लोचन ठरियां, चक्केसरी वोर केश
 रीयां, जाय केतकी वृद्ध लहेरीयां, शेत्रुजे नदी जल
 जरीयां रे ॥ वि० ॥ १० ॥ राय जरत रतन बिंब ठा
 वे, चक्केशरी यात्रा करावे, ते त्रीजे नवें शिव जावे,
 छुन वीर वचन रस गावे रे ॥ वि० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ कर्म उपर सङ्काय प्रारंजः ॥

॥ देवदाणव तीर्थंकर गणधर, हरिहर नरवर सबला ॥
 करम संयोगें ते सुख दुःख पाम्या, सबल दुश्चा म
 हा निबला रे ॥ प्राणी ॥ कर्मसमोनही कोय ॥ १ ॥
 कीधां कर्म विना जोगवीयां, बूटक बारो नहोय रे ॥
 प्राणी ॥ कर्म० ॥ ए आंकणी ॥ आदिसरने अंतरा
 य विटंब्यो, वर्ष दिवस रह्या नूखें ॥ वीरने बार
 वर्ष दुःख दीधो, उपना ब्राह्मणी कुखें रे ॥ प्राणी
 ॥ कर्म० ॥ १ ॥ शाठ सहस सुत मूआ एकदिन, सामत
 सूरुा जैसा ॥ सगर दूठ महा पुत्रें दुःखीठ, करम त
 णा फल एसा रे ॥ प्राणी० ॥ ३ ॥ बत्रीश सह
 स देसारी साहेब, चक्री सनतकुमार ॥ शोल रोग
 शरीरें उपना, करमे कीठ तस खुवाररे ॥ प्राणी० ॥
 ॥ ४ ॥ सुनुम नामे आठमो चक्री, करमें सायर ना
 ख्यो ॥ पच्चीस सहस यदें उजा दीठो, पण किए
 हें नवि राख्यो रे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥ ब्रह्मदत्त नामे
 बारमो चक्री, करमें कीधो अंधो ॥ ईम जाणी प्राणी
 विण कामें, कर्म कोई मत बंधो रे ॥ प्राणी० ॥ ६ ॥
 वीश जुजा दश मस्तक दूता, लखमणे रावण मा
 ख्यो ॥ एक लडे जग सहुने जीत्यो, करमथी तेप

ए हाथो रे ॥ प्राणी० ॥ ७ ॥ लखमण राम म
 हा बलवंता, बली सतवंती सीता ॥ बार वरस लगे
 वनमांहे नमिया, वीतक तस बहु वीता रे ॥ प्रा
 णी० ॥ ८ ॥ ठपन्नकोड यादवरो साहेब, कृष्ण म
 हाबल जाणी ॥ अटवी मांहे एकलडो मूठ, विल वि
 लतो विण पाणी रे ॥ प्राणी० ॥ ९ ॥ पांढव पांच म
 हा जूजारा, हारी झोपदी नारी ॥ बार वरस लगे व
 न दुःख दीठा, नमिया जेम जीखारी रे ॥ प्राणी० ॥
 ॥ १० ॥ सतीय सिरोमणी झोपदी कहिये, ए सम
 अवर नकोय ॥ पंच पुरुषनी थई ते नारी, पूरव क
 रमशुं होय रे ॥ प्राणी० ॥ ११ ॥ करमें हलको
 कीधो हरिचंदने, वेंची तारा राणी ॥ बार वरस ल
 गें माथे आय्यो, नीच तणे घर पाणी रे ॥ प्राणी० ॥
 ॥ १२ ॥ दधीवाहान राजानी बेटी, चावी चंदन बा
 ला ॥ चोपदनी परें चोटे वेंचाणी, करम तणा ए
 चाला रे ॥ प्राणी० ॥ १३ ॥ समकेत धारी श्रेणीक
 राजा, बेटे बांध्यो मुसकें ॥ धरमी नरपती करमें द
 बाया, करमथी जोर न कीसका रे ॥ प्राणी० ॥
 ॥ १४ ॥ ईश्वरदेवने पार्वती राणी, करता पुरुष कहे
 वाय ॥ अह्निसि समसाणमांहे वासो, नीक्षा जो

जन खाय रे ॥ प्राणी० ॥ १५ ॥ सहस किरण स्र
रज परतापी, रातदिवस रहे नमतो ॥ शोलकला
ससिहर जग जाचो, दिनदिन जाये घटतो रे ॥
॥ प्राणी० ॥ १६ ॥ एम अनेक नर खंम्या करमें,
नज नजेरा जे साज, रिद्धि हरख करजोडीने कहे,
नमो करम महाराज रे ॥ प्राणी० ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ अथ आत्म प्रबोध सव्याय ॥

॥ जीव क्रोध मकरजे, लोच मधरजे, मान मला
ईस, कूडा करम मबांधीस, धर्म मचूकीश, विनय म
भूकीश ॥ जाईरे जीवडा ॥ दोहिनो मानव नव
लाधो ॥ तुमे काई करी तत्वने साधो रे ॥ जोला ॥
दोहिनो० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ घर पठवाडे देरास
र जातां, वीश विमासण थाय ॥ नूख्यो तरस्यो
राउल रातें, माथे सहेतो घाय रे ॥ जीवडा ॥ दो
हि० ॥ २ ॥ धर्म तणी पोसाळें चाल्यां, सुणवा सद
गुरु वाणी ॥ एक वात करे बीजा उठी जाये, नयणे
निंद नराणी रे ॥ जीव० ॥ ३ ॥ नामें बेगो लोनें
पेगो, चार पोहोर निसि जाग्यो, बे घडीनो पडिक्क
मणो करतां, चोखो चित्त नराख्यो रे ॥ जीव० ॥ ४ ॥
आठम चउदश पूनम पाखो, पर्व पयूषण सारो ॥

बे घडीनो पञ्चख्याण करंता, एक बीजाने वारो रे ॥
 जीव० ॥ ५ ॥ कीर्त्ति कारण पगरण मांमी, अरथ गरथ
 सवि लूटे, पुण्यने काजें पारको पोतानो, गांठडीयें न
 वी ठूटे रे ॥ जीव० ॥ ६ ॥ घर घरणीने घाट बढा
 व्यां, पेहेरण आठा वागा ॥ दशे आंगुलीयें दश वेढ
 ज पहेल्यां, निरवाणे जावुंठे नागा रे ॥ जीवडा० ॥
 ॥ ७ ॥ वाको अक्षर माथे मांमो, नीलवट आधो
 चंदो ॥ मुनिलावन्य समय ईम बोले, ए त्रणकार्ले
 वंदो रे ॥ जीवडा० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ रहनेमिनी सव्वाय प्रारंजः ॥

॥ काउसगग थकीरे रहनेम, राजुल निहाली ॥
 चितहुं चलिवं तव बोले नार रे ॥ देवरिया मुनिवर
 ध्यानमां रेजो ॥ ध्यान थकी होये जवनो पार रे ॥
 ॥ देव० ॥ १ ॥ उत्तम कुलना यादव कुलरे अजुआ
 ली, लीधोठे संयम नार रे ॥ देव० ॥ हुंरे व्रतीरे तुं
 ठे संयम धारी, जासो सर्वे व्रत हारी रे ॥ देव० ॥
 ॥ ध्या० ॥ २ ॥ विषधर विष वमी आप नलेवे, क
 रे पावक परिचार रे ॥ देव० ॥ तुजरे बांधव नेमजी
 यें मुजने रे वामी, वम्यो नघटे तुमने आहार रे
 ॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ३ ॥ नारीअठेरे जगमां विषनी

रे वेली, नारीढे अवगुणनुं जंझार रे ॥ देव० ॥ नारी
 मोहेंरे मुनिवर जेह विगूता, ते नवि लहे जव पार
 रे ॥ देव० ॥ ४ ॥ नारीनुं रूप देखी मुनिने नरहेबुं,
 एढे आगममां अधिकार रे ॥ देव० ॥ नारी निसं
 गो तेतो मुनिवर कहियें, नकरे फरी संसार रे ॥
 ॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ५ ॥ एरे सतीना मुनिवर व
 चन सुणीने, पाम्या जव प्रतिबोध रे ॥ देव० ॥
 नेमजी जेटीने फरी संयम लीधो, कखोढे आतम शो
 रु रे ॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ६ ॥ धन्यरे सतीरे जेणे
 मुनि प्रतिबोध्या, धन धन ए अणगार रे ॥ देव० ॥
 एरे वखतारे मुनिवर वचन सुणीने, फिरी नकरे सं
 सार रे ॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशालिजन्नी सखा प्रारंभः ॥

॥ प्रथम गोवालीया तणे जवेजी रे, दोधुं मुनिव
 र दान ॥ नयरी राजगृही अवतखो जी, रूपे मयण
 समान ॥ सोजागी रे ॥ शालिजन् जोगीरे होय ॥ १ ॥
 ॥ ए आंकणी ॥ बत्रीश लक्षण गुणे जखोजी रे,
 परण्यो बत्रीश नार ॥ माणसने जवें देवनाजी रे,
 सुख विलसे संसार ॥ सो० ॥ २ ॥ गौजन् शेव ति
 हां पूरवेजी रे, नित नित नवला रें जोग ॥ करे शु

नडा उवारणाजी रे, सेव करे बहु लोग ॥ सो० ॥
 ॥ ३ ॥ एक दिन श्रेणीक राजीयोजी रे, जोवा आ
 व्यो रे रूप ॥ अंग देखी सकोमजाजी रे, हरख थ
 यो बहु नूप ॥ सो० ॥ ४ ॥ वड वैरागी चिंतवेजी
 रे, मुज शिर श्रेणीक राय ॥ पूरव पूण्य में नवि की
 याजी रे, तप आदरखुं माय ॥ सो० ॥ ५ ॥ इणे
 अवसरें श्रीजिनवरूजी रे, आब्या नयरी उद्यान ॥
 शालिनइ मन उजम्यो जी रे, बांधा प्रभुजीना पाय
 ॥ सो० ॥ ६ ॥ वीर तणो वाणी सुणीजी रे, वूठो
 मेह अकाज ॥ एकेकि दिन परिहरेजी रे, जिम जल
 ठंमे पाल ॥ सो० ॥ ७ ॥ माता देखी टल वलेजी
 रे, माठलडो विण नीर ॥ नारी सघली पायें पडेजी
 रे, मम ठंदो साहस धीर ॥ सो० ॥ ८ ॥ बहुअर स
 घली वीनवेजी रे, सांजल सासु विचार ॥ सर ठांमी
 पालें चड्योजी रे, हंसलो उमण हार ॥ सो० ॥ ९ ॥
 इणे अवसर तिहां नावताजी रे, धना शिर आसुं
 पडंत ॥ कवण दुःख तुज सांनख्योजी रे, उंचो जोइ
 कहंत ॥ सो० ॥ १० ॥ चंड मुखी मृग लोचनीजी
 रे, बोलावी नरतार ॥ बंधव वातमें सांजलजी रे, ना
 रीनो परिहार ॥ सो० ॥ ११ ॥ धनो नणे सुण घे

हेलडीजी रे, शालिनइ पूरो गमार ॥ जो मन था
 एयो ठंमवाजी रे, विलंब नकीजें लगार ॥ सो० ॥
 ॥ १२ ॥ करजोडी कामनी कहेजी रे, बंधव समो
 नही कोय ॥ कहेतां वातबे सोहेजीजी रे, मूकतां
 दोहेजी होय ॥ सो० ॥ १३ ॥ जारेजा तें इमकह्यो
 जी रे, तोमें ठंमीरे आठ ॥ पीउडामें हसता कह्यो
 जी रे, कुणगुं करगुं वात ॥ सो० ॥ १४ ॥ इणे व
 चने धन्नो निसखोजी रे, जाणे पंचायण सिंह, जइ
 शालाने साद कखोजी रे, पेला उठ अबीह ॥ सो०
 ॥ १५ ॥ काल आहेडी नित ममेजी रे, पुठे म जो
 इस वाट ॥ नारी बंधन दोरडीजी रे, धव धव ठंमे
 निरास ॥ सो० ॥ १६ ॥ जोवन जर बिहुं नीसखां
 जी रे, पोहोता वीरजीने पास ॥ दीक्षा लीधी रुअ
 डीजी रे, पाळे मन उव्वास ॥ सो० ॥ १७ ॥ मास
 खमणने पारणेजी रे, पूठे श्रीजिनराज ॥ अमने
 शुद्धज गोचरीजी रे, जान देसे कुण आज ॥ सो० ॥
 ॥ १८ ॥ माता हाथें पारणुजी रे, थासे तुमने रे
 आज ॥ वीर वचन निश्चय करीजी रे, आव्या नगरी
 मांज ॥ सो० ॥ १९ ॥ घरें आव्या नवी उलख्या
 जी रे, फरिया नगरी मजार ॥ मारग जातां महिया

रडीजी रे, सामी मजी तेणी वार ॥ सो० ॥ १० ॥
 मुनि देखी मन उल्लस्युंजी रे, विकसित थइ तस
 देह ॥ मस्तक गोरस सुजतुंजी रे, पडिलाज्यो ध
 रीनेह ॥ सो० ॥ ११ ॥ मुनिवर वोहोरी चालीयांजी
 रे, आब्यां श्रीजिन पास ॥ मुनि संसय जइ पूढीउ
 जी रे, माय न दीधो दान ॥ सो० ॥ १२ ॥ वीर
 कहे तुमे सांजलोजी रे, गोरस वोहोखोरे जेह ॥ मार
 ग मजी महीआरडीजी रे, पूरव जनमनी मायएह
 ॥ सो० ॥ १३ ॥ पूरव नव जिन मुखें लहीजी, ए
 कत्र जावें रे दोय ॥ आहार करी मुनि धारीउंजी
 रे, अणसण गुहज होय ॥ सो० ॥ १४ ॥ जिन आ
 देश लही करी जीरे, चढीआ गिरि वैजार ॥ शिला
 उपर जइ करीजी रे, दोय मुनि अणसण धार ॥
 ॥ सो० ॥ १५ ॥ माता नडा संचखाजी रे, साथें
 बहु परिवार ॥ अंतेउर पुत्रज तणोजी रे, लीधुं सवजुं
 सार ॥ सो० ॥ १६ ॥ समोसरणे आवी करीजी रे,
 वांछा वीर जगतात ॥ सकल साधु वांदी करीजी रे,
 पुत्र जोवे निज मात ॥ सो० ॥ १७ ॥ जोइ सघली
 परषदाजी रे, नवी दीठा दोये अणगार ॥ करजोडी
 करे वीनतीजी रे, जाखे श्रीजिनराज ॥ सो० ॥ १८ ॥

बैजार गिरि जाइ चड्याजी रे, मुनिदरसन उमंग ॥
 सहु परिवारें परवखांजी रे, पहोता गिरिवर श्रृंग ॥
 ॥ सो० ॥ २९ ॥ दोय मुनि अणसन उच्चरीजी रे,
 जीजे ध्यान मजार ॥ मुनि देखी विलखा थयाजी
 रे, नयणे नीर अपार ॥ सो० ॥ ३० ॥ गद गदशब्दें
 बोलतीजी रे, मली बत्रीशे नार ॥ पीठडा बोली बो
 लडाजी रे, जिम सुख पामे चित्त ॥ सो० ॥ ३१ ॥
 अमें तो अवगुणे नखाजीरे, तुं सही गुण नंभार ॥
 मुनिवर ध्यान चूका नहीजीरे, तेहने वचने लगार
 ॥ सो० ॥ ३२ ॥ वीरा नयणे निहालीयें जीरे, जिम मन
 थाये प्रमोद ॥ नयण उधाडी जोश्यें जीरे, माता पा
 मे मोद ॥ सो० ॥ ३३ ॥ शाजिनइ माता मोहनी
 जीरे, पोहोता अमर विमान ॥ धनो धरमी मुकें
 गयोजी रे, समय सुंदरनी वाण ॥ सो० ॥ ३४ ॥
 ॥ अथ चोत्रीश अतिशयनो ठंद ॥

॥ श्रीसुमतिदायक डुरित घायक, ज्ञान अनुभव
 श्रीवरी ॥ तसु सुगुरु केरा चरण प्रणमूं, युगम कर
 जोडी करी ॥ बहु जाव नकें शुणु जिनवर, चोत्रीशे
 अतिशय करी ॥ जे सुगुरु मुखथी सुण्या ते कहुं,
 आगम शास्त्रें अनुसरी ॥ १ ॥ तिहां प्रथम अतिश

य श्रीजिन केरा, रोम नख बाधे नही निरोग निर्म
 ल गात्र जेहनो, द्वितीय अतीशय ए सही ॥ गोदूध
 सरिखो मांस जोही, तृतीय एह वखाणीयें, चोथो
 ते उत्पल गंध सरिखो, श्वासोश्वास सो जाणीयें
 ॥ १ ॥ आहारने बज्जी निहार प्रबन, एह अतिशय
 पांचमो ॥ आकाश गत धर्म चक्र ठगो, गगन ठत्र
 ए सातमो ॥ रह्या ते अंबर स्वेत चामर, युग्म अ
 ष्टम ए कह्यो ॥ स्फटिक सिंहासन सुनिर्मल, नवमो
 अतीशय ए लह्यो ॥ ३ ॥ आकाशगत ढज सहस्र
 मंदित, इंद्र ढज आगल चजे, ए दशम अतीशय
 कह्यो श्रुतमां, देखी परमत खलनजे ॥ इग्यारमें
 वली स्वामी उना, रहे वली बेसे जिहां, सहाय स
 ढज देव ततकृण, अशोक तरु विरचे तिहां ॥ ४ ॥
 ढादशम अतिशय प्रना मंजल, पूर्वे रविकर जीपीयें ॥
 रमणीक सुंदर नूमि जागसो, तेरमो ए दीपीयें ॥ अ
 धोमुख होये सर्व कंटक, चौदमें अतिशय बरू ॥ अ
 नुकूल यइने प्रणमे क्रतु सब, पंचदशमो सुख करू
 ॥ ५ ॥ संवर्त्त पवने नूमि पूंजे, योजन लर्गे ए शो
 लमें, सुगंध वर्षा तिहां वरसे, प्रगट अतिशय सत्तर
 में ॥ जानुं प्रमाणे बीट नीचा, पंचवर्ण सोहामणा ॥

जलने थलना फूज वषैं, अठारमें अतीशय घणा ॥
 ॥६॥ अमनोद्ग शब्दादिकही नासे, उंगणीशमें अती
 शय वली ॥ वीशमें ते सुनिह् थाये, एम कहे प्रभु
 केवली ॥ एकवीशमें प्रभु तणीय देशना, योजन लगे
 सवि जिन सुणे ॥ बावीसमे धर्म अर्द्ध मागध, जा
 थायें जिनजी नणे ॥ ७ ॥ त्रेवीशमें जिनवाणी जन
 ने, हेतु शिव नणी परिणमे ॥ चोवीशमें प्रभु चर
 ण मूले, वैर जंतुना उपशमे ॥ अन्यलिंगी नमे जि
 नने, पंच विंशति अतिशयें ॥ अन्य तीर्थि मौन था
 ये, ठवीशमें प्रभु निश्चयें ॥ ८ ॥ पणवीश जोयण लगे
 जिनथी, इतने मारी नही ॥ स्वचक्रने परचक्र नहोये,
 त्रीश अतीशय ए सही ॥ अतिवृष्टीने अनावृष्टी ड
 निह्, त्रण ए नवी उपजे, चोत्रीशमें वली व्याधि
 पीडा, आदि दुःख न संपजे ॥ ९ ॥ चोत्रीश अति
 शय एह कहोया, सूत्र समवायागमां ॥ ते नणतां
 गुणतां ह्ये धरतां, रहे आतम रंगमां ॥ निज सुद्ध
 आतम रूप प्रगटे, जावहुं जो ध्याईयें ॥ दर्शनादिक
 रत्न लहीयें, परम पद सुख पाइयें ॥ १० ॥ अर्ह
 त जगवंत तणा अतिशय, नणो आणी आशाता ॥
 बहु पुण्य करीयें ध्यान धरीयें, सुख लहीयें शाश्वता ॥

श्रीसूरिविद्या उदधि सेवक, शिष्य इणीपरें संस्तवे ॥
मुनि ज्ञानसागर कहे प्रचुपद, सेवा मागुं नवो नवे ॥ १ ॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभः ॥

॥ हवे राणी पद्मावती, जीव रास खमावे ॥ जाण
पणु जग दोहेलुं, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुज
मिळामि डुकडं ॥ अरिहंतनी सांखे ॥ जे में जीव विरा
धिया, चोरासी लाख ॥ तेमुज० ॥ २ ॥ सात ला
ख पृथिवी तणा, साते अपकाय ॥ सात लाख ते
उकायना, साते वली वाय ॥ तेमुज० ॥ ३ ॥ दश
प्रत्येक वनस्पति, चउद साधारण ॥ बीति चउरिंदी
जीवना, बे बे लाख विचार ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता ति
र्येच नारकी, चार चार प्रकाशी, चउद लाख मनुष्य
ना, ए लाख चोरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इणे नवें परज
वे सेविया, जेमें पाप अढार ॥ त्रिविध त्रिविध करी
परिहरुं, दूरगतिना दांतार ॥ ते० ॥ ६ ॥ हिंसा की
धी जीवनी, बोल्या मृषावाद ॥ दोष अदत्ता दानना,
मैथुन उन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परीग्रह मेढ्यो कार
मो, कीधो क्रोध विशेष ॥ मान माया लोच में की
या, वली रागने द्वेष ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जी
व दूहव्या, दीधा कूडा कलंक ॥ निंद्या कीर्ती पार

(३१०)

की, रति अरति निशंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चाडी कीधी
 चोतरे, कीधो थापण मोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म
 नो, जलो आण्णो जरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने
 जवें में कीया, जीव नानाविध घात ॥ चडीमार ने जवे
 चडकलां ॥ मारया दिनने रात ॥ ते० ॥ ११ ॥ का
 जी मुलांने जवें ॥ पढी मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक ज
 बे कीया ॥ कीया पाप अघोर ॥ ते० ॥ १२ ॥ म
 ठीमारने जवें माठला, जाव्यां जल वास ॥ धीवर
 नील कोली जवें, मृग पाडया पास ॥ ते० ॥ १३ ॥
 कोटवालने जवें जे कीया ॥ आकरा करदंम ॥ बंदी
 वान मरावीया, करोडा ठडी दंम ॥ ते० ॥ १४ ॥
 परमा धामीने जवें, दीया नारकी दुःख ॥ वेदन जे
 दन वेदना ॥ ताडन अति तिख ॥ ते० ॥ १५ ॥ कुं
 जारने जवें में कीया ॥ नीमाहपचाव्या ॥ तेली जवें
 तिल पीलिया ॥ पापे पिंढनराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥
 हाली जवें हल खेडीया, फाडया पृथ्वीना पेट ॥ सू
 रनें दाण घणाकीया ॥ दीधी बजद चपेट ॥ ते० ॥
 ॥ १७ ॥ मालीने जवें रोपिया, नानाविध वृक्ष ॥
 मूल पत्र फल फूलना ॥ लागा पापते लक्ष ॥ ते० ॥
 ॥ १८ ॥ अक्षोवाईयाने जवें, जखा अधिका जार ॥

पोती पूर्वे कीडा पड्या ॥ दयानाणी लगार ॥ ते० ॥
 ॥ १९ ॥ ठीपाने जवे ठेतरया, कीधा रंगण पास ॥
 अग्नि आरंज कीधा घणां, धातुवाँद अन्यास ॥
 ॥ ते० ॥ २० ॥ सूरपणें रण फुंफता, माख्या माण
 स वृंद ॥ मदिरा मांस माखण जरव्या, खाधा मूलने
 कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी, पाणी
 उलंढ्या ॥ आरंजकीधा अतिघणा, पोते पापज सं
 ढ्या ॥ ते० ॥ २२ ॥ करम अंगार कीयावली ॥ घर
 ने दव दीधा ॥ सम खाधा वीतरागना, कूडा कोलज
 कीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिछ्छीजवे उंदर लीया, गिरो
 ली हत्यारी ॥ मूढ गमार तणेजवे, में जुं लीख मा
 री ॥ ते० ॥ २४ ॥ जाडनुंजा तणे जवे, एकेंडी जी
 व ॥ जुआरि चणा घट्टू सेकीया, पाडंता रीव ॥
 ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांमण पीसण गारनां, आरंज अ
 नेक ॥ रांधण इंधण अग्नीना, कीधा पाप अनेक ॥
 ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा चार कीधी वली, सेव्या पां
 च प्रमाद ॥ ईष्टवियोग पड्यां कीया, रुदन विख वा
 द ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधु अने श्रावक तणा, व्रत ल
 हीनें जाग्या ॥ मूल अने उत्तर तणा, मुळ दूषण जा
 ग्या ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप वींठी सिंह चितरा, सक

रानें समलि ॥ हिंसक जीव तणे नवें, हिंसा कीधी
 सबली ॥ ते० २९ ॥ सूआवडी दूरण घणा, वली
 गरज गलाव्यां ॥ जीवाणी ढोव्या घणां, शील व्रत
 जंगाव्यां ॥ ते० ॥ ३० ॥ नव अनंत नमतां थकां,
 कीधा देह संबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसरुं, ति
 एणुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ नव अनंत नमतां थकां,
 कीधां परिग्रह संबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसरुं,
 दुरगतिनुं बंध ॥ ते० ॥ ३२ ॥ नव अनंत नमतां
 थकां, कीधां कुटब संबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोस
 रुं, तिणसुं प्रति बंध ॥ ते० ॥ ३३ ॥ इणपरे इह
 नव परनवें, कीधा पाप अद्भुत ॥ त्रिविध त्रिविध
 करी वोसरुं, करुं जन्म पवित्र ॥ ते० ॥ ३४ ॥ ए
 णी विधें ए आराधना, नावें करसे जेह ॥ समय
 सुंदर कहे पापथी. बूटसे तेह ॥ ते० ॥ ३५ ॥ राग
 वेराडी जे सुणें, एह त्रीजी ढाल ॥ समयसुंदर क
 हे पापथी, बूटे ततकाल ॥ ते० ॥ ३६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आत्मसिद्धानावना लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ श्री जिनवर मुख वासिनी, जगमें जो
 ति प्रकास ॥ पदमासन परमेश्वरी, पूरे वंछित आस
 ॥ १ ॥ ब्रह्म सुता गुण आगजी, कनक कमंडल सा

२ ॥ वीणा पुस्तक धारणी, तुं त्रिभुवन जयकार ॥ २ ॥
 श्रीसरस्वति जिनपायनमी, मनधरी हरष अपार ॥
 आतम शीक्षा जावना, जणु सुणो नर नार ॥ ३ ॥
 रे जीव सुणतुं बापडा, तुं हीये विमासी जोय ॥ आ
 प स्वारथी सहु मिळ्युं, ताहरुं नही जग कोय ॥ ४ ॥
 धर्म विना सुण जीवडा, तुं नमोउं नव अनंत ॥ मू
 ढ पर्णे नवर्ते कीया, इम बोळे नगवंत ॥ ५ ॥ लाख
 चोरासी योनीमां, फरी लीयो अवतार ॥ एकेकी योनी
 वली, अनंत अनंती वार ॥ ६ ॥ चउद राज परमाणुआ,
 सुई अग्रजोय ठोम ॥ कर्म वसे जीवतुं नम्यो, मूरख चे
 तन ताम ॥ ७ ॥ निगोद सूक्ष्म बादरें, पुज्ज अनंत अ
 पार ॥ एतो कालतुं तिहां रह्यो, हवे कर हैये विचार ॥
 ॥ ८ ॥ श्वास उश्वासा एकमां, मरण सतर अध कीर ॥
 सूक्ष्म निगोदमांहे वली, एजिन वचन प्रसिद्ध ॥ ९ ॥ नर
 य विगलेंडी तिर्यगति, नवकीआ बहु देव ॥ भुवन
 पति व्यंतर जोतिषि, उर विमानिक देव ॥ १० ॥
 इम जमतां जमतां लिउं, मनुअ जनम अवतार ॥ मि
 ष्यात्व पर्णे नव निगम्या, काज नसीधो लगार ॥
 ॥ ११ ॥ जगमां जीवअठे बहु, एकेकगुं अनंति वा
 र ॥ विविध प्रकारें सगपण कीया, तुं हैया साथ वि

चार ॥ १२ ॥ तो कुण आपणो पारको, कुण वेरी
 कुण मित्त ॥ राग द्वेष टाली करी, कर समता एक
 चित्त ॥ १३ ॥ पूर्व कोडीनें आऊखे, ग्यानी गुरु
 अपार ॥ उतपती कही जीउं ताहरी, कहेतां नावेपा
 र ॥ १४ ॥ पुत्र पितापणें अवतरे, पितापुत्र पण
 जोय ॥ माता सगपण नारी मलि, नारी पण मा
 ता होय ॥ १५ ॥ सूतो सुपन जंजालमां, पाम्यो
 जाणो राज ॥ जब जाग्यो तब एकलो, राज नसीजे
 काज ॥ १६ ॥ तिमए कुटुंब सद्धु मढ्युं, खोटी मा
 या जाल ॥ आयु पढोचे आपणे, खिणमां थाए वि
 सराल ॥ १७ ॥ सोदो जेयण जण मिले, जिहां
 जोडी सही हाट ॥ आय सारुं विवसाय करी, फिरि
 चाव्या निजवाट ॥ १८ ॥ तिम जव जमतां सवि
 मढ्या, कुटुंब जोडी जो हाट ॥ पुन्य पाप विवसाय
 करी, जो उतरीये घाट ॥ १९ ॥ एम कुटुंब मढ्यो
 कारमो, माय अने वली ताय ॥ बंधु जगिनी नार
 जा, को केहनो नकहाय ॥ २० ॥ नव नवा नाटि
 क तुं वली, नाच्यो करी बहु रूप ॥ नाटिक एकसुं
 नाचिउं, जो बूटे जव कूप ॥ २१ ॥ उत्तम कुल
 नर जव लही, पाम्यो धरम जिनराय ॥ प्रमाद मू

की कीजीयें, खिण लाखीणो जाय ॥ ११ ॥ जैसुं
 कीजे तैसुं पाइयें, करे तैसा फल जोय ॥ सुख ड
 ख आप कमाईयें, दोष नदीजें कोय ॥ १२ ॥ दो
 ष दीजें निज कर्मनें, जेणें नवि कीधो धर्म ॥ धर्म
 विना सुख नवि मले, एजिन शासनमर्म ॥ १४ ॥
 वावी कूरी कोदरी, तोक्युं लुंणीयें साल ॥ पुन्यवि
 ना सवि जीवडा. आस्या आल पंपाल ॥ १५ ॥
 आय पहोती आतमा, कोइ नवि राखण हार ॥
 इंड चंड जिनवर वली, गया सवि निरधार ॥ १६ ॥
 मोडा मोड नकीजीयें, नकीजें मोटी वात ॥ कोडी
 अनंतमें वेचियो, त्यारें किहां गई जात १७ ॥
 आपसरूप विचारतूं, जोहोए हीयडे शान ॥ करणी
 तेहवी कीजीयें, जिम वाधे जग वान ॥ १८ ॥
 वरूपण धर्म थाये नही, जोबन आलें जाय ॥ तरु
 ण पणे धसमस करी, पठें फरी पठताय ॥ १९ ॥
 जरा आवी जोबन गयो, सिर पलीआते केश ॥ ल
 लुतातो ठोडी नही, नकरघो धर्म लवजेश ॥ २० ॥
 पचेंडिय जिहां परवडा, रोग जरां नावंत ॥ जो
 बन चंचल आवे सदा, करतुं धर्म महंत ॥ २१ ॥
 ठते हाथ न वावरघो, संबलन कीयो साथ ॥ आय

(३३४)

गइ मन चेतियो, पढे घसे निज हाथ ॥ ३१ ॥ ध
 न जोबन नर रूपनो, गर्वकरे ते गमार ॥ कृष्ण बल
 जइ धारिकां, जातां न लागी वार ॥ ३२ ॥ आठ
 पहोरतुं धस मसि, धनार्थे देशांतर जाय ॥ सोध न
 मेळ्युं ताहरुं, उरज कोई खाय ॥ ३३ ॥ आंख त
 एो फरुकडे, उथल पाथल थाय ॥ इंसुं जाणी
 जीव बापडा, मकरोस ममता माय ॥ ३४ ॥ मा
 या सुख संसारमां, ते सुख सहीय असार ॥ धर्म प
 सायें सुख मले, ते सुख नावे पार ॥ ३५ ॥ नय
 न फरुके जिहां लगे, तिहां ताहरुं सहु कोय ॥
 नयन फरुकत जबरही, तब ताहरुं नहिं होय ॥
 ॥ ३६ ॥ पाप कीया जीवतें बहू, धर्मन कोउ ल
 गार ॥ नरग पडयो यम कर चडयो, पडयो तिहां करे
 पोकार ॥ ३७ ॥ कोइ दिन राणो राजीउ, कोइदि
 न जयो तुंदेव ॥ कोइदिन रांकतुं अवतरयो, क
 रतो उरज सेव ॥ ३८ ॥ कोइदिन कोडी परवरयो, को
 दिन नही को पास ॥ कोदिन घर घर एकलो, नमे
 सहीज्युं दास ॥ ३९ ॥ कोदिन सुखासन पालखी,
 जठमची चकमोल ॥ रथपाला आगल चले, ॥ नि
 त नित करत कल्लोल ॥ ४० ॥ कोदिन कूर कपूर

तुं, जावतनही लगार ॥ कोदिन रोटी कारणें, न
 भेते घर घर बार ॥ ४२ ॥ हीर चीर अंगे पेहेरि
 आ, चूआ चंदन बहुलाय ॥ सो तन जतन करतयैं,
 ह्मिण मांही विगटाय ॥ ४३ ॥ सातमी गोखतुं शो
 नतो, कामनि जोग विलास ॥ एकदिन उही आव
 से, रेहेणोहि वन वास ॥ ४४ ॥ रूपे देव कुमार स
 म, देखत मोहे नर नार ॥ सो नर खिण एकमां व
 ली, बली जली होवे ठार ॥ ४५ ॥ जे विना घडी
 यन जायति, सो वरसां सो जाय ॥ ते वल्लन विसरी
 गयो, उरहिंसुं चित्तजाय ॥ ४६ ॥ देखत सब जुग
 जातुही, थिर नरही सवि कोय ॥ इसुं जाणी नलुं
 कीजीयें, हीयडे विमासी जोय ॥ ४७ ॥ सुरपति स
 वे सेवा करे, रायराणा नर नार ॥ आय पहोते आ
 तमां, जात नलागे वार ॥ ४८ ॥ देखत नर अंधा दु
 आ, जे मोह विंटया बाल ॥ जण्या गण्या मुख व
 ली, नर नारी बाल गोपाल ॥ ४९ ॥ रात दिवस नि
 ज नारसुं, तुरमतो मनरंग ॥ जे जोईयेंते पूरतो, क
 लट आणी अंग ॥ ५० ॥ सो रामा जीउं ताहरी,
 ह्मण माहिं विघटाय ॥ सवारथ पहोचत जब रह्यो,
 तब फरी वैरीथाय ॥ ५१ ॥ समुद्र द्वीप सायर स

बे, पामे कोनर पार ॥ नारी ठीइ चरित्रनो, को न
 वि पाम्यो पार ॥ ५२ ॥ ब्रह्मा नारायण ईश्वर, ईइ
 चंड नरकोड ॥ ललना वचने होई लालची, रह्याते
 बेकर जोड ॥ ५३ ॥ नारी वदन सोहामणो, पण
 बाघण श्रवतार ॥ जे नर एहनै वस पड्या, तस
 लुंठयां घर बार ॥ ५४ ॥ हस्त मुखी दीसे जली, क
 रती कारमो नेह ॥ कनक लता बाहिर जिसी, अन्य
 तर पीतल तेह ॥ ५५ ॥ पेहेली प्रीत करी रंगसुं, मी
 ठा बोली नार ॥ नरने दास करे आपणो, पढे मूके
 टाकर मार ॥ ५६ ॥ नारी मदन तलावडी, बूड्यो
 सयल संसार ॥ काढण हारो कोय नहि, बूना बूब
 नवार ॥ ५७ ॥ बीश वसाना जैतरा, कोइ नही त
 स वंक ॥ पण नारी संघत तेहने, निश्चै चढे कलं
 क ॥ ५८ ॥ मूजने चंद्रप्रद्योतना, दासी पति पा
 म्या नाम ॥ अजय कुमार बुयि आगलो, तेह उग्यो
 अजिराम ॥ ५९ ॥ नारी नहीरे बापडा, पण ए विष
 नी वेल ॥ जो सुख वांछे मुक्तिना, तो नारी संगत
 मेल ॥ ६० ॥ नारी जगमां ते जली, जेणें जायो पु
 रूष रतन ॥ ते सतीने नित पाय नमुं, जगमां ते ध
 न्य धन्य ॥ ६१ ॥ तुं पर काम करी सदा, निज का

ज नकरीय लगार ॥ अहूत्र नहूत्र करीय तुं, किम
 बूटीस नव पार ॥ ६२ ॥ पाप घट पूरण नरी, तें
 लीउं शिर नार ॥ तेकिम बुटीस जीवडा, नकरी ध
 र्म लगार ॥ ६३ ॥ एसो जाणी कूड कपट, ठज ठि
 इतुं ठांम ॥ ते ठांमीनें जीवडा, जिन धर्मतुं चित
 मांम ॥ ६४ ॥ जेणे वचने पर दुःख होए, जेणे हो
 य प्राणी घात ॥ कलेस पडे निज आतमा, तज उ
 त्तमते वात ॥ ६५ ॥ जिम तिम पर सुख दोजोयें,
 दुःख न दीजें कोय ॥ दुःख देइ दुःख पामीयें, सुख दे
 इ सुख होय ॥ ६६ ॥ पर तांत निंदा जे करे, कूडा
 देवे आल ॥ मर्म प्रकाशे परतणा, तेथी नजो चं
 माल ॥ ६७ ॥ षटमासीनें पारणें, एक सीध लहे
 आहार ॥ करतो निंद्या नवि टले, तस दुरगति अव
 तार ॥ ६८ ॥ बार उपर जिम लोपणो, तिम क्रोधें
 तप कीध ॥ तस तप जप संजम मुधा, एके काज न
 सीध ॥ ६९ ॥ पूर्व कोडीनें आवखे, पाली चारित्र
 सार ॥ सुकृत सुणो सवि तेहनूं, क्षिणमां होवे ठा
 र ॥ ७० ॥ पर अवगुण सरसव समो, अवगुण नि
 ज मेरु समान ॥ कां करे निंदा पारकी, मूरख आप
 ण निज सान ॥ ७१ ॥ पर अवगुण जिम देखोयें,

तिम परगुण तुं जोय ॥ परगुण लेता जीवडा, अक्षय
 अजरामर होय ॥ ७२ ॥ क्रोधी नरअठे सदा, कहीयें
 नैं उलटी रोस ॥ ते ठोडी दूरें आतमां, रहियें जोय
 ए पणवीस ॥ ७३ ॥ गुणकीधा माने नही, अ
 वगुण मांमी मूल ॥ तेनर संगत ठाहीयें, पग पग
 मां घासूल ॥ ७४ ॥ निंद्या करेजें आपणी, ते जीवो
 जगमांय ॥ मल मूत्र धोए परतणा, पठे अधोगति
 जाय ॥ ७५ ॥ जे मल मूत्र धोए सदा, गुणवंतना
 निसदिस ॥ तेडुर्जन जीवो घणुं, जगमां कोडी वरि
 स ॥ ७६ ॥ सजन दुर्जन केम जाणीयें, जब मुख
 बोलें वाण ॥ सजन मुख अमृत लवे, दुर्जन विष
 नी खाण ॥ ७७ ॥ नरनव चिंतामण लही, आर्जे
 तुं ममहार ॥ धर्म करीनैं जीवडा, सफल करो अव
 तार ॥ ७८ ॥ सकल सामग्री तें लही, जेणें तरी
 ये संसार ॥ प्रमाद वसें नवकां गमे, करनिज होये
 विचार ॥ ७९ ॥ दीउं उपदेश लागेनही, जो नवि
 चिते आप ॥ आप सरूप विचारतां, बूटीजें सवि
 पाप ॥ ८० ॥ जिणें रसें पाप कीयातुमे, तिणें रसें
 तुं कर धर्म ॥ अक्षत्र नक्षत्र नव अनंतना, बूटीजें
 सवि कर्म ॥ ८१ ॥ जिम आवखा दिन गुणी, वर

स मास घडी मान ॥ चेती सकेतो चेतजे, जो हो
 ए हीयडे शान ॥ ८२ ॥ धन कारणतुं जल फले,
 तिम धर्म करी थाये सूर ॥ अनंत जवना पाप स
 वि, क्षिणमां जाये दूर ॥ ८३ ॥ जेरचना दिन उग
 ती, ते रचना नहिं सांज ॥ एसुं जाणीरे जीवडा,
 चेतही हीयडां मांज ॥ ८४ ॥ आस्या अंबर जेव
 ढी, मरवो पगला हेव ॥ धर्मविना जे दिन गया,
 तेणे दिन कीधी वेव ॥ ८५ ॥ रे जीव सुणतुं बाप
 डा, मकरीस गर्व गमार ॥ मूल स्वरूप देखी करी,
 निज जीउंसुं विचार ॥ ८६ ॥ कर्मको नवि बुटीये,
 इंड चंड नरदेव ॥ राय राणा मंमलिक वली, अवर
 नर कुंण हेव ॥ ८७ ॥ वरस दिवस घर घर जम्यां,
 आदिनाथ जगवंत ॥ कर्म वसें दुःख तिणे लह्यां,
 जे जगमां बलवंत ॥ ८८ ॥ पास जिणंद प्रतिमा र
 हि, उपसर्ग कीउं सुरिंद ॥ ते उपसर्ग टालीउं, पद
 मावति धरणिंद ॥ ८९ ॥ कने खोला घातिआ, च
 रणे रांधी खीर ॥ तेहुं नें कर्मनडयो, चोवीसमो श्री
 वीर ॥ ९० ॥ श्रीमल्लि माया तपकरी, पाभ्या ना
 रीअवतार ॥ सुरपती कोड सेवा करी, कर्मनो एह
 प्रकार ॥ ९१ ॥ पुरुष विषे चूडा मणि, जरत नरेस

(३३०)

र राय ॥ बाहुबल हार मनावीउ, आज लगे कहे
वाय ॥ ९३ ॥ कीधां कर्म न बूटीये, जेहनो विषमो
बंध ॥ ब्रह्मदत्त नर चक्रवर्त्ति, सोल वरस लगे अंध
॥ ९३ ॥ आठमो सुनुम चक्रवी, रुद्धि तणो
नही पार ॥ कर्मवसे परिवारसुं, बुढा समुद्र मजा
र ॥ ९४ ॥ पांच पांढव अतुली बली, ते नम्या
वनवास ॥ एसा पुरष जगमां वली, दीनपर्ये फखा
० निरास ॥ ९५ ॥ राम लक्ष्मण जगमां वली, जेह
नो जपे सद्गुणाम ॥ ते वनवास मांहे रह्यां, जे
बहु गुणना धाम ॥ ९६ ॥ रावण विकट रामे ह
एयो, कृष्णे हएयो जरासंध ॥ जरा कुमरे हरिने
हएयो, देखो कर्मनो बंध ॥ ९७ ॥ निज पुत्री
ताते वरी, तस कूंखे सुत देव ॥ कर्मवसे जीव कप
नुं, त्रिष्टु श्रीवासुदेव ॥ ९८ ॥ जमतां जमतां अव
तखो, देवानंदानी कुख ॥ व्यासी रात्र तिहां रही, क
मे लखुं वीर दुःख ॥ ९९ ॥ इंदु अहिद्वयासुं जुठ,
लुब्ध दुठ सुरदेव ॥ इश्वर देव नचावीउ, पारवती
पीउं देव ॥ १०० ॥ मास खमणने पारणे, कुज
बालुठ अणगार ॥ चित्त वल्लगो संग नारीये, चुकत
नजगो वार ॥ १०१ ॥ पांचते रामा तजी, लीधो

संजम नार ॥ दश दश नंदिषेण बूजवी, नर कोस्या
 दरबार ॥ १०२ ॥ बांधि तांतणा सूत्रना, वींढ्यो
 आडकुमार ॥ सुत्त मोहनी वसें रही, पठें लीउ संज
 म नार ॥ १०३ ॥ पंचसया मुनि नेमना, उर श्री
 पासना बार ॥ जोग कारण संयम तजी, मांढ्यो
 तिणें घरबार ॥ १०४ ॥ नवाणु कोडी कंचन तजी,
 उर तजी आठेनार ॥ ते डुःकर नित वंदियें, श्रीजंबु
 त्रिण काल ॥ १०५ ॥ एक कन्या कोडीकंचन, तजी
 जेणें वली दूर ॥ ते वहेरस्वामीनें वंदीए, नित उगम
 ते सूर ॥ १०६ ॥ नवाणु पेटी सुरतणी, नित नित
 होय नि रीत्य ॥ नरजवे सुर सुख जोगवे, ते शाजि
 नड कुमार ॥ १०७ ॥ रत्न कंबलने कारणें, श्रेणी
 क आव्यो बार ॥ गोख थकी बोली रह्यो, लीयो ते
 संजम नार ॥ १०८ ॥ आठ नारी जेणें तजी, ते
 धनो धन्य धन्य ॥ नारी हास्य संयम लीउ, राख्यो
 ताम जिणे मन्न ॥ १०९ ॥ खट नंदन देवकी तणा,
 नदिलपुर सुलसा नार ॥ तिस घरें ते उड्ड्या, रूपें
 देव कुमार ॥ ११० ॥ बत्रीश बत्रीश पदमणी, बत्री
 श बत्रीश हेम कोड ॥ नेम समीप संयम वरी, ते
 वंदू करजोड ॥ १११ ॥ सदस पुरुषसुं संजम ली

(३३३)

उ, श्रीनेमिसर हाथ ॥ ते थावच्चो वंदियें, महोष्ठव
 कखो यडु नाथ ॥ ११२ ॥ बार वरष ठठ आंबिल,
 कीधां शिव कुमार ॥ शील व्रत सदाधरी, एणण डुः
 कर कार ॥ ११३ ॥ कोस्या मंदिर चोमासुं रही, चो
 रासी चोवीस ॥ ते शुल नड मुनि वंदियें, नडबाडु
 गुरुशिष्य ॥ ११४ ॥ कपीला संगें नवी चढ्यो, शेठ
 सुदर्शन चंग ॥ सूलो सिंघासण थयो, सुर करे मन
 रंग ॥ ११५ ॥ शिव रमणीनें कारणें, जिणें सुख
 ठंड्या देह ॥ तिस नाम दोए चार लीजीयें, नवि
 जन सुणजो तेह ॥ ११६ ॥ वरस दिवस काउसग
 किउ, बाडुबल अणगार ॥ मान गजथी उतख्यो, तब
 लीउ केवल सार ॥ ११७ ॥ गजसुकमाल सिर सो
 मले, देखी धखा अंगार ॥ समता पसार्यें ते वली,
 पाम्या नवनो पार ॥ ११८ ॥ मेतारज शिर सोनि
 यें, वाधर वींटयो धरि खेद ॥ निजमन ठामज रा
 खिउ, कीउ संसारनो ठेद ॥ ११९ ॥ सकोसल सुक
 माल मुनि, वलूखुं वाघण अंग ॥ बापनी जामि मा
 नखी, शिवपुरी बरी मनरंग ॥ १२० ॥ पूरव नव प्रि
 या सीआलणी, तेणे नख्यो अवंति सुकुमाल ॥ न
 लिनीगुल्म विमानमां, पाम्यो सुख ततकाल ॥ १२१ ॥

पंचशत शिष्य खंधक तणा, घाणी पील्या सोय ॥
 शिवनयरी शिव पामीया, ए समता फल जोय ॥
 ॥ १२२ ॥ चिजायति पुत्र नारी शिर, ठेदीनें कर
 लीध ॥ उपसम संवर विवेकधी, कृत कर्म दूर कीध
 ॥ १२३ ॥ दिन प्रते सात हत्या करी, अर्जुनमा
 ली नाम ॥ परीसह देखी कृमाधरी, पाम्या शिवपुर
 ठाम ॥ १२४ ॥ मुनिपति मुनि काउसग रहे, अग्नि
 दाधी देह ॥ परीसह सही पदवी वरी, अमर बधु
 धरी सनेह ॥ १२५ ॥ वंस उपर नाटिक करी, एजा
 पुत्र कुमार ॥ जाति समरण ऊपनो, ज्ञान अनंत
 अपार ॥ १२६ ॥ कर्म वसें आशाढ मुनि, जरतनो
 नाटिक कीध ॥ अनित्य जावना जावतां, तिणे तिहीं
 केवल लीध ॥ १२७ ॥ सुशिष्य पंधक मुनी, गुरु
 प्रमाद कीयो दूर ॥ शत्रुंजय गिरि अणसण करी, ते
 वंड गुण सूर ॥ १२८ ॥ चंद रौड गुरु खंधे करी,
 रजनी कीउं विहार ॥ शिष्य केवल पामीउं, तिम
 गुरु केवल धार ॥ १२९ ॥ षटमासीनें पारणें, ठंड
 ण नाम कुमार ॥ मोदक चूरत पामीउं, केवल ज्ञा
 न उदार ॥ १३० ॥ षट खंम राज हेलां तजी, लोथो
 संजम नार ॥ षटदस रोग ईहां सह्या, श्रीश्रीसनत

कुमार ॥ १३१ ॥ कूर जखंता केवल लह्यो, कूर गहु
 अणगार ॥ कूमा खडग हाथें धरी, जे मुनिमां सि
 एगार ॥ १३२ ॥ पंखी प्राणज राखवा, करी खंमो
 खंम निजदेह ॥ मेघरथ राय तणे जवें, प्रसन्न हुउं
 सुर तेह ॥ १३३ ॥ वीरवंदी गुमानसुं, दशार्णजइ
 नरसिंह ॥ सुरपति पाय लगाडीउं, जगराखी जिणें
 लीह ॥ १३४ ॥ प्रसन्न चंड काउसगमां, कोपी युद्ध
 करंत ॥ कोप सम्यो केवल लह्यो, मोटो ए गुणवंत
 ॥ १३५ ॥ अईमंतो सुकमाल मुनि, वखाण्यो वीर
 जिणंद ॥ इरिआवही पडिक्कमतां, केवल लह्यो आ
 एंद ॥ १३६ ॥ वीरवचनें थिर रह्यो, श्रेणिक सुत मे
 घ कुमार ॥ जातिसमरण पामीउं, करी दो नयणा सा
 र ॥ १३७ ॥ हाट वेंचाणी चंदनां, सुनडा चढ्यो
 कलंक ॥ दमयंति नल विजोग लह्यो, एह कर्मनो
 वंक ॥ १३८ ॥ कलावती कर ठेदीया, झोपदी का
 ढ्यां चीर ॥ अग्नि सीतल शीता कसुं, शीज गुणें
 थयुं नीर ॥ १३९ ॥ चंदना चरण मृगावती, निज
 खमावी अपराध ॥ केवल लही गुरुणी दीउं, दोई
 जीव टळ्यो विषवाद ॥ १४० ॥ चंद कलंक सायर
 कस्यो, खारो नीर किरतार ॥ नवसो नवाणुं नदीत

सो, देखो ए जरतार ॥ १४१ ॥ हरिचंद्राय कर्म
 वसें, शिरवह्नुं मुंब घेर नीर ॥ करम वसें नर सवि
 नम्या, जे जग बावन वीर ॥ १४२ ॥ गउ ब्राह्मण
 स्त्री बालका, इठ प्रहारें हत्या कीध ॥ चारपोल का
 उसग रही, षटमासें केवल लीध ॥ १४३ ॥ मेरु
 ढले नें धु चलें, सायर लोपे लीह ॥ कीधा कर्म न
 बूटीयें, जो उगे पन्निम दीह ॥ १४४ ॥ कीधा कर्म
 तो बूटीयें, जो कीजें जिनधर्म ॥ मन वचन कायार्यें
 करी, ए जिन शासन मर्म ॥ १४५ ॥ कर्म प्रकाशी
 आपणा, मन सुख आणंद पुर ॥ सह गुरु पास
 अठे वली, जिम जाय पाप सवि दूर ॥ १४६ ॥
 बलवंत अनंता जे नरा, केइ सुर सुजट फूंजार ॥
 कर्म सुजट जुउ एकले, सवि मनाव्यो हार ॥ १४७ ॥
 कर्म सुजट विषम विकट, ते वस कीउ न जाय ॥ जे
 नर एहनें वस करें, हूं वंडु तस पाय ॥ १४८ ॥
 इसु जाणीनें कीजीयें, जिम आतम सुख थाय ॥ प
 रजीव दुःख न दीजीयें ॥ इम बोढ्या जिनराय ॥
 ॥ १४९ ॥ दान शीयलें तप जावना, धर्मना चारए
 मूल ॥ पर अवगुण बोलत सही, ए सउ थाए धू
 ल ॥ १५० ॥ दान सुपात्रे दीजीयें, तिस पुण्य

नही पार ॥ सुख संपति लहोयें घणी, मणि मोति
 जंमर ॥ १५१ ॥ धनो सारथपति जूयो, घृत वोह
 राब्यो मुनि हाथ ॥ दान प्रनावें जीवडो, प्रथम दु
 यो आदिनाथ ॥ १५२ ॥ मुनि दान दोउ धन सार
 थी, आनंद हर्ष अपार ॥ नैमनाथ जिनवर हवां,
 यादव कुल सिणगार ॥ १५३ ॥ कलथी केरा रोट
 ला, दीधुं मुनिवर दान ॥ वासु पूज्य नव पाठजे,
 जिनपद लह्यो निधान ॥ १५४ ॥ मुनि जलो एक
 मारगें, वोहराब्यो तस आहार ॥ साथ मढ्यो ते
 सारथी, ते वीर जगदाधार ॥ १५५ ॥ सुजसा रेव
 ती रंगसुं, दान दीधो महावीर ॥ तीर्थकर पद पाम
 से, लहेसे ते नवतीर ॥ १५६ ॥ दाने जोगज पामी
 यें, शीयले होए सोजाग ॥ तप करी कर्मज टालीयें,
 जावना शिव सुख माग ॥ १५७ ॥ जावना नव ना
 शनी, जे आपे नव पार ॥ जावना वडी संसारमां,
 जस गुणनो नही पार ॥ १५८ ॥ अरिहंत देव सु
 साधु गुरु, केवली जाबित धर्म ॥ इश्युं समकित आ
 राधतां, बूटी जें सवि कर्म ॥ १५९ ॥ नव पद जाप
 जकीजीयें, चउद पुरवनो सार ॥ इस्या मंत्र गणीयें
 सदा, जे तारे नरनार ॥ १६० ॥ सकल तीरथनो रा

जीउं, कीजें तेहनी यात्र ॥ जस दरिसेणें डुरगति टले,
 निरमत्र थाए गात्र ॥ १६१ ॥ अष्टापद अर्बुदगिरि,
 समेत शिखर गिरनार ॥ पंचेतीरथ वंदियें, मन धरि
 हर्ष अपार ॥ १६२ ॥ कुरन शांति जग नेमिजिन,
 पार्श्व अनें वर्द्धमान, ए पांचे तीर्थ प्रणमतां ॥ नित
 वार्धे जीउं वान ॥ १६३ ॥ उत्तम नरनारी तणां,
 नाम कहाए मांय ॥ नाम निरंतर लीजीयें, जिम
 सह्य आणंद थाय ॥ १६४ ॥ आतम शिक्षा जाव
 ना, गुण मणि रयण जंमार ॥ पाप टले सवि तेह
 ना, जेह जणे नर नार ॥ १६५ ॥ आतमशिक्षा
 जावना, जे सुणे हर्ष अपार ॥ नवनिधि तिस घर
 संपजे, पुत्र कलत्र परिवार ॥ १६६ ॥ ए सुणतां सु
 ख उपजे, अंग टले सवि रीस ॥ समता रसमां जीव
 डो, जीले ते निस दीस ॥ १६७ ॥ इण जव परज
 व जव जवें, जिन मागुं हुं हेव ॥ मन वचन काबा
 रें करी, द्यो तुज चरणनी सेव ॥ १६८ ॥ ए गुण
 जीहा जावसुं, तिहां रान वेलाउल थाय ॥ आत
 म शिक्षा नामथी, सुर नर लागे पाय ॥ १६९ ॥
 वीर सासन दीपावतो, श्रीआणंद विमल सुरिंद ॥
 प्रमाद पंथ दूरें कस्यो, प्रणमुं तेह आणंद ॥ १७० ॥

तास शिष्य मुनिसर धणी, श्रीविजय दान सुरे
 स ॥ प्रगट महिमां तस जागतो, पाय नमे नर ईस ॥
 ॥ १७१ ॥ उपशम रसनो कुंपलो, तास पटोधर ही
 र ॥ सकल सूरि शिरोमणि, सायर जिम गंजीर ॥
 ॥ १७२ ॥ हीरविजय गुरु हीरलो, प्रति बोध्यो अ
 कबर जूप ॥ राय राणा सेवा करे, जेहनो अकल स
 रूप ॥ १७३ ॥ म्जेहुराय जिणें वस कखो, जग
 वर्त्तावी अमार ॥ बिमलाचल मुक्तो कीयो, सासन
 शोना कार ॥ १७४ ॥ कुमारपाल प्रति बोधिउ,
 श्रीश्रीहेम सुरिंद ॥ तिम अकबर गुरु हीरजी, मन
 धरि अति आणंद ॥ १७५ ॥ ध्यानवसें निज पद
 दीउ, निज मन हर्ष अपार ॥ विजयसेन सूरि नाम
 थी, नित्य होए जय जय कार ॥ १७६ ॥ काम कुं
 ज चिंतामणि, कल्पतरु अवतार ॥ ते सविथी जेह
 सिद्धिनी, अधिक ए जवि विचार ॥ १७७ ॥ श्रीवि
 जयसेन गुरुराय वर, श्रीविजयदेव सूरिंद ॥ विजय
 मान गुरु वंदीयें, जिम सूरज उर चंद ॥ १७८ ॥ त
 पगह्वा वाचक में वरू, श्रीविमल हर्ष शिर ताज ॥
 नामें नवनिधि संपजे, दरिसणसीजें काज ॥ १७९ ॥
 आत्म शिक्षा जावना, तास शिष्य मनरंग ॥ प्रेमवि

जय प्रेमे करी, उलट आणी अंग ॥ १०० ॥ श्रीरत्नद
 र्ष विबुध मुऊ, बंधु तास पसाय ॥ तास सानिध्य
 ग्रंथ में कखो, मन धरी हर्ष अपार ॥ १०१ ॥ मू
 ढ मतिठे माहरी, कवि मत करजो हास ॥ कृपाक
 री मुऊ ऊपरें, सोधी करजो खास ॥ १०२ ॥ संव
 त शोल बाशठए, वैशाख पूनम जोय ॥ वार गुरु
 सही दिनजलो, एह संवत्सर होय ॥ १०३ ॥ नय
 र उक्केणीमां बलि, आतम शिक्षा नाम ॥ मन जाव
 धरीने तिहांकरी, सीधावंठित काम ॥ १०४ ॥ एक
 शत ऐसी पांचए, दोहा अति अनिराम ॥ नणे गुणे
 जे सांजले, तेह लहे शिवगाम ॥ १०५ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश सीतरी प्रारजः ॥

॥ उतपती जोजो आपणी, मन मांहिं विमास ॥
 गरजावासें जीवडो, वसिठ नव मास ॥ उतपती जो
 जो आपणी ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ नारी तणे नाजी
 तर्जे, जिन वचनें जोय ॥ फूल तणी जिम नाली
 का, तामे नाडीठे दोय ॥ ३० ॥ २ ॥ तसु तर्जे यो
 नी कहीर्यें, वर फूल समान ॥ आंब तणी मांजर
 जिस्यो, तिहां मांस प्रधान ॥ ३० ॥ ३ ॥ रुधिर श्रवे
 तिण ठामथी, ऋतुकाल सदैव ॥ रुधिर शुक्र जोमें

करी, तिहां उपजे जीव ॥ ३० ॥ ४ ॥ जेश्व पाव
 न पवनें करी, वासित डुर्गंध ॥ तिणे थानक तुं उप
 नो, हवे हूउ मदंध ॥ ३० ॥ ५ ॥ नाली वांसतणी
 घणुं, जरियें रूघाली ॥ तातो जोह सोलाकते,
 जाले तत काल ॥ ३० ॥ ६ ॥ तिम महिलानी यो
 निमें, ठे नवलस्क जीव ॥ पुरुष प्रसंगे तेसहु, मरी
 जाय सदैव ॥ ३० ॥ ७ ॥ उपजे नर नारी मले, पं
 चेंडि जेह ॥ तेहतणी संख्या नाहिं, तजो कारज ए
 ह ॥ ३० ॥ ८ ॥ नव जख जीव टके तिहां, उत्कृ
 ष्टि वार ॥ जीव जघन्य पणो टके, एक दो त्रण चार
 ॥ ३० ॥ ९ ॥ जीव जघन्य तिहां रहे, सुदूरत प
 रिमाण ॥ बार वरसनी स्थिति तिहां, उत्कृष्टी जा
 ए ॥ ३० ॥ १० ॥ तिणे गरनें कोइ जीवडो, इमक
 हे जगदीश ॥ फिरी मरी आवेतो रहे, सवंहार चो
 वीश ॥ ३० ॥ ११ ॥ महिला वरस पंचावनें.
 कहियें निर बीज ॥ पंचोत्तेर वरस पठें, थाए पुरुष
 अवीज ॥ ३० ॥ १२ ॥ जिमणि कूखे नरवसें,
 तिम वामि नार ॥ विच्च नपुंसक जाणीयें, जिनव
 चनें विचार ॥ ३० ॥ १३ ॥ हवे सामान्य पणो
 तिहां, आव्यो गर्जावास ॥ सात दिवश उपर रहे,

नरगती नव मास ॥ ३० ॥ १४ ॥ आठ वरस
 तिर्यंच रहें, उत्कृष्टो काल ॥ गर्जावासें जोगव्या,
 इम बहु जंजाल ॥ ३० ॥ १५ ॥ कारमण का
 यें करलीयो, पहिलोते आहार ॥ शुक्र अने श्रो
 णित तणु, नहि जूठ लिगार ॥ ३० ॥ १६ ॥
 पर्यापति पूरी नही, तिहां विसवा बीस ॥ तिणे
 आहारे तनु थयो, उदारिक अरु मीस ॥ ३० ॥
 ॥ १७ ॥ पवन आवे उदर थको, उपजावे अंग ॥
 अग्नी करे थिर तेहने, जल सुरस सुरंग ॥ ३० ॥
 ॥ १८ ॥ कंठिन पणो पृथ्वी रचे, अवगाह आका
 श ॥ पांचे जूत शरीरनो, इम करे प्रकाश ॥ ३० ॥
 ॥ १९ ॥ बार सुहूर्त ऋतु पठें, विलसे नरनार ॥
 गरज तणी उत्पति तिहां, नही अवर प्रकार ॥
 ॥ ३० ॥ २० ॥ कलिल दुवे दिन सातमे, अरबुद
 दिन सात ॥ अरबुदथी पेसी वधे, घन मांस कहा
 त ॥ ३० ॥ २१ ॥ मांसतणी गोंटी हूवे, अडताली
 स टांक ॥ प्रथम मासें जिनवर कहे, मन मधरो सं
 क ॥ ३० ॥ २२ ॥ रुधीर मास बीजे दुवे, हवे त्रीजे
 मास ॥ कर्मतेणे योगें करी, माता मन आस ॥
 ॥ ३० ॥ २३ ॥ चौथे मासें मातना, प्रणमे सहू

अंग ॥ हाथ अर्ने पग पांचमें, तिम मस्तक संग ॥
 ॥ उ० ॥ २४ ॥ पित्त रुधिर ढठे पढे, सातमें इम
 संच ॥ नव धमणी नस सातसें, पेसि सय पंच ॥
 ॥ उ० ॥ २५ ॥ रोमराय पिण सातमें, साढी तिन
 क्रोड ॥ उपजे उणा केतले, इम आगम जोड ॥
 उ० ॥ २६ ॥ आठमे मासे नीपनो, एम सकल
 शरीर ॥ उंधे सिर वेदन सहे, जंपे जिन वीर ॥
 ॥ उ० ॥ २७ ॥ श्रोणीत सुक्र संज्ञेवमा, लघुने व
 डि नीत ॥ वात पित्त कफ गर्जमें, एथाए इणरीत ॥
 ॥ उ० ॥ २८ ॥ मात तणी फूटी लर्गे, बालकनो
 नाल ॥ रस आहार तणो तिहां, आवे ततकाल ॥
 ॥ उ० ॥ २९ ॥ जननी ले आहारते, जाए नाडो
 नाड ॥ रोम इंडी नख चख वधे, तिम मीजी ने हा
 रु ॥ उ० ॥ ३० ॥ सविहूं अंगे उल्लसे, सर्वांग आ
 हार ॥ कवल आहार करे नही, गर्जे इस्यो विचा
 र ॥ उ० ॥ ३१ ॥ ते गर्जे किण जीवने, थाय झा
 न विजंग ॥ अथवा अवधि कहिजीयें, तिणे ज्ञान
 प्रसंग ॥ उ० ॥ ३२ ॥ कटक करी वैक्रीय पर्णे, फु
 जी नरकें जाय ॥ को जिनवचन सुणी करी, मरी
 सुर पण थाय ॥ उ० ॥ ३३ ॥ उंधे मुखे गुमा ही

ये, सेहेतो बहू पीड ॥ ६४ ॥ आगल बिहुं हाथसुं,
 रहे सुती जीड ॥ उ० ॥ ३४ ॥ नरविण वस्त्र जला
 दिके, उपजे अधान ॥ अथवा बिहुं नारी मल्ला,
 कह्यो गर्न विधान ॥ उ० ॥ ३५ ॥ कोई उत्तम चित
 वे, देखी दुःख रास ॥ पुण्य करुं परो नीकजी, नाबुं
 गर्जावास ॥ उ० ॥ ३६ ॥ उठ कोडी सूई अंगमा,
 कोइ चांपे समकाल ॥ तिणथी गर्नमां अछगुणी, स
 हे वेदना बाल ॥ उ० ॥ ३७ ॥ माता नूखी नूखी
 उ, सुखणी सुख थाय ॥ मात सूते ते सुवे, परवस
 दिन जाय ॥ उ० ॥ ३८ ॥ गर्नथकी दुःख लख गु
 णो, जनमे जिण वार ॥ जनम थयो दुःख विसख्यो,
 धिग् मोह विकार ॥ उ० ॥ ३९ ॥ उपज्यो असूचि
 पणो तिहां, मल मूत्र कलेस ॥ पिम असूची करी पूरि
 उ, नवि सूचि लव लेस ॥ उ० ॥ ४० ॥ तुरत रुद
 न करतो थको, जनमे जिण वार ॥ माता पयोधर
 सुखठवे, पीये दूध तिवार ॥ उ० ॥ ४१ ॥ दीसे दिन
 दिन दीपतो, करे रंग अपार ॥ लाम कोम माता पिता,
 पूरे सुविचार ॥ उ० ॥ ४२ ॥ बिड बारह नारीने,
 नरना नव जाण ॥ रात दिवस वहेता रहें, चेतो
 खतुर सुजाण ॥ उ० ॥ ४३ ॥ सात धातु साते ल

चा, ठे सातसैं नाडी ॥ नवसैं नाराठे पिंममां, तिम
 त्रिणसैं हाम ॥ उ० ॥ ४४ ॥ सांधि एकसो साछठे,
 सत्तोतरसो मर्म ॥ तीन दोष पेसी पांचसैं, ढांक्यांठे
 चर्म ॥ उ० ॥ ४५ ॥ रूधीर सेर दस देहमें, पेसाब
 सरीष ॥ सेर पांच चरबी तिहां, दोय सेर पुरीष ॥
 ॥ उ० ॥ ४६ ॥ पित्त टांक चोसछठे, वीरज बत्री
 श ॥ टांक बत्रीश संलेशमां, जाणे जगदीस ॥
 ॥ उ० ॥ ४७ ॥ इण परिमाण थकी जदा, उठो
 थधिको थाय ॥ व्यापे रोग शरीरमें, नवि चले तव
 काय ॥ उ० ॥ ४८ ॥ पोष्यो पहिले दायके, एम
 वाध्यो अंग ॥ खान पान नूषण नला, करे नव न
 व रंग ॥ उ० ॥ ४९ ॥ हवे बीजे दसके नणें,
 विद्या विविध प्रकार ॥ त्रीजे दसके तेहनें, जाग्यो
 काम विकार ॥ उ० ॥ ५० ॥ जिण थानक तुं उ
 उपनो, तिणमें मन जाय ॥ चोथे दसके धन त
 णा, करे कोडी उपाय ॥ उ० ॥ ५१ ॥ पढोतो
 दसके पांचमें, मनमां ससनेह ॥ बेटा बेटीने पो
 तरा, परणावे तेह ॥ उ० ॥ ५२ ॥ ठठे दसके
 प्राणीयो, बली परवस थाय ॥ जरा आवी यौवन
 गयो, तृष्णा तोइ नजाय ॥ उ० ॥ ५३ ॥ आब्यो

दसके सातमें, हवे प्राणी तेह ॥ बल नांगो बुढो थ
 यो, नारी नधरे नेह ॥ उ० ॥ ५४ ॥ आठमें द
 सके दोसलो, खुलीया सहु दांत ॥ कर कंपावे शि
 रधुणे, करे फोकट वात ॥ उ० ॥ ५५ ॥ नवमें
 दसके प्राणीउं, तन सक्ति न कांय ॥ शाले वचन
 सहू तणा, दिन फूरता जाय ॥ उ० ॥ ५६ ॥
 खाट पडघो खूखूकरे, सूगाली देह ॥ हाल दूकम
 हाले नहीं, दीये परिजन ठेह ॥ उ० ॥ ५७ ॥ आं
 ख गले वे पड मिले, पडे मुढुडे जाल ॥ बेटा बे
 टीने वहू, नकरे संजाल ॥ उ० ॥ ५८ ॥ दशमे
 दसके आविउं, तव पूरी आय ॥ पुन्य पाप फल जो
 गवी, प्राणी पर नव जाय ॥ उ० ॥ ५९ ॥ दस इ
 षांते दोहिलो, लही नरनव सार ॥ श्रीजिनधर्म स
 माचरे, ते पामे नवपार ॥ उ० ॥ ६० ॥ तरूण पणे
 जे तप तपें, पालें निरमल शील ॥ ते संसार तरी
 करी, लहे अविचल लील ॥ उ० ॥ ६१ ॥ कोडी
 रतन कवडी सटे, कांई गमेरे गमार ॥ धरम विना
 एजीवनें, नहिको आधार ॥ उ० ॥ ६२ ॥ काया
 माया कारमी, कारमो परिवार ॥ तन धन जोवन
 कारमो, साचो धरम संसार ॥ उ० ॥ ६३ ॥ चउदे

राज प्रमाणए, ठे लोक महंत ॥ जनम मरण करी
 फरसीउ, जीव वार अनंत ॥ उ० ॥ ६४ ॥ आप स
 वारथीउ सद्गु, नही केहनो कोय ॥ निज स्वार्थ वि
 ण पूगतां, सुत पण रिपु होय ॥ उ० ॥ ६५ ॥ ज
 रान आवे जिहां लगें, जिहां लगें सबल शरीर ॥ ध
 र्म करो जीव तिहां लगें, होइ साहस धीर ॥ उ० ॥
 ॥ ६६ ॥ आरज देस लह्यो हवे, लाधो गुरु संजो
 ग ॥ अंगथकी आलस तजो, करो सुकृत संजोग ॥
 ॥ उ० ॥ ६७ ॥ श्रीनेमीराज तणीपरे, चेतो चित्त
 मांदि ॥ स्वारथनो सद्गुको सगो, कोइ किणरो नाही ॥
 ॥ उ० ॥ ६८ ॥ नोग संजोग तजीसद्गु, थया जे अ
 णगार ॥ धन धन तसु माता पिता, धन धन अव
 तार ॥ उ० ॥ ६९ ॥ सुरतरु सुरमणि सारिखो, से
 वो श्रीजिन धर्म ॥ जिणथी सुख संपति वधे, कीजे
 तेहज कर्म ॥ उ० ॥ ७० ॥ तंदूलि व्यालीमें अढे,
 एहनो अधिकार ॥ तिणथी उररीने कह्यो, नहिं कू
 ठ जिगार ॥ उ० ॥ ७१ ॥ कलश ॥ एह जैनधर्म वि
 चार सांजली ॥ लहियें संजम चारए, बली सिंढनी
 परे सदा पाजे ॥ नियम नरती चारए, संसारना सुख
 सकल नोगवी ॥ तेलहे नव पारए, श्रीरत्नहर्षसु

शिष्यरंगें इमकहे श्रीसारए ॥ ७२ ॥ इति गर्जवेली
जीवनी उतपति स्तवनं संपूर्ण ॥

॥ अथ कृमाठत्रीसी प्रारंजः ॥

॥ आदर जीव कृमागुण आदर, मकरोस रागने
देषजी ॥ समतार्यें शिव सुख पामीजें, क्रोधें कुगति वि
शेषजी ॥ आ० ॥ १ ॥ समता संजम सार सुणी
जें, कल्पसूत्रनी साखजी ॥ क्रोधें पूर्वकोडी चारित्र
बाले, जगवंत एणीपरें नाखजी ॥ आ० ॥ २ ॥ कुण
कुण जीव तरया उपशमथी, सांजलतुं दृष्टांत जी ॥
कुण कुण जीव जम्या नव माहें, क्रोध तणें विरतंत
जी ॥ आ० ॥ ३ ॥ सोमल ससरे शीस प्रजाब्यो,
बांधी माटीनी पालजी ॥ गज सुकुमाल कृमा मनध
रतो, मुक्ति गयो तत कालजी ॥ आ० ॥ ४ ॥ कुलवा
लुठ साधु कहातो, कीधो क्रोध अपारजी ॥ कोणीकनी
गणिका वसपडीठ, रड वडीठ संसार जी ॥ आ० ॥
॥ ५ ॥ सोवनकार करी अति वेदन, बाध्रुं वींटयो
शीसजी ॥ मेतारज कृषी मुक्ते पोहोतो, उपशम ए
ह जगीसजी ॥ आ० ॥ ६ ॥ कुरड महाकुरड बे
साधु कहंता, रह्या कुणाला खालजी ॥ क्रोध करीनें
कुगर्ते पहोता, ॥ जन्म गमार्यो आलजी ॥ आ० ॥

॥ ७ ॥ कर्म खपावी मुक्ति पढोता, खंधक सूरिना
 शिष्यजी ॥ पालक पापोयें घाणी पीठ्या, नाणी मन
 मां रीसजी ॥ आ० ॥ ८ ॥ अंचुकारी नारी चू
 की, त्रोटयो पीयुसुं नेहजी ॥ बब्बर कुलना दुःख
 सह्या बोहोला, क्रोध तणा फल एहजी ॥ आ० ॥
 ॥ ९ ॥ वाघणे सर्व शरीर विलोखुं, ततहिण ठो
 ड्या प्राणजी ॥ साधु सुकोसल शिव सुख पाम्या, ए
 ह हिमा गुण जाण जी ॥ आ० ॥ १० ॥ कुण चं
 माल कहीजें बिहूमें, निरति नही कहे देवजी ॥ रि
 षी चंमाल कहीजें बढतो, टालो वेढनी टेवजी ॥
 ॥ आ० ॥ ११ ॥ सातमी नरके गयो ते ब्रह्मदत्त,
 काढी ब्राह्मणनी आंखजी ॥ क्रोधतणा फल कडूआ
 जाणी, राम द्वेष द्यो नाखजी ॥ आ० ॥ १२ ॥ खं
 धक ऋषिनी खाल उतारी, सह्यो परिसह जेणजी ॥
 गरजावासना दुःखथी बूटयो, सबल क्रमा गुण तें
 एजी ॥ आ० ॥ १३ ॥ क्रोध करी खंधक आचारि
 ज, दुउं अग्नि कुमारजी ॥ दंभक नृपनो देश प्रजा
 वयो, जमसे जवह मजारजी ॥ आ० ॥ १४ ॥ चंद्रौ
 इ आचारज चालंते, मस्तक दीध प्रहारजी ॥ कृ
 मा करंता केवल पाम्यो, नव दक्षित अणगारजी ॥

॥ आ० ॥ १५ ॥ पांच वार कुरीनें संताप्यो, आ
 णी मनमां देखजी ॥ पांच नव सीम दह्यो नंदनावि
 क, क्रोधतणा फल देखजी ॥ आ० ॥ १६ ॥ साग
 र चंदनो शिस प्रजाढ्यो, निसि नजसेन नरिंदजी ॥
 समता जावधरी सुर लोकें, पढुतो परमानंदजी ॥
 ॥ आ० ॥ १७ ॥ चंदना गुरुणीयें घणुं निचंढी, धिग्
 धिग् तुज अवतारजी ॥ मृगावती केवलसिरि पामी,
 एह कृमानुं सारजी ॥ आ० ॥ १८ ॥ सांच प्रद्युम्न
 कुअर संताप्यो, कृष्ण धीपायन साहजी ॥ क्रोध क
 री तपनो फल हाखो, कीधो द्वारिका दाहजी ॥
 ॥ आ० ॥ १९ ॥ नरतने मारण मुठी उपाडी, बा
 हु बल बलवंतजी ॥ उपशम रस मनमांहें आणी,
 संजम लीए मतिवंतजी ॥ आ० ॥ २० ॥ काउल
 गमां चढीउं अतिक्रोधें, प्रभचंड कृषीरायजी ॥ सा
 तमी नरक तणा दल मेढ्या, कहुआ तेणें कषायजी ॥
 ॥ आ० ॥ २१ ॥ आहारमाहें क्रोधें कृषी शुक्त्यो,
 आय्यो अमृत जावजी ॥ कुरगडुउं केवल पाम्यो,
 कृमा तणे परजावजी ॥ आ० ॥ २२ ॥ पार्श्वनाथनें
 उपसर्ग कीधो, कमठ नवांतर धीवजी ॥ नरक तिर्थ
 च तणां दुःख लीधां, क्रोधतणुं फल दीवजी ॥ आ० ॥

॥ १३ ॥ द्रुमावंत दमदंत मुनिश्वर, वनमां रह्यो का
 उसगगजी ॥ कौरव कटके हण्यो इटालें, त्रोडया क
 र्मना वर्गेजी ॥ आ० ॥ १४ ॥ सज्यापालक काने तरु
 उं, नाम्यो क्रोध उदीरजी ॥ बेंदु काने खीजा ठोका
 णा, नवी बूटा महावीरजी ॥ आ० ॥ १५ ॥
 चार हत्यानु कारक हुंतो, दृढ प्रहार अति रेकजी ॥
 द्रुमाकरीनें मुक्ते पोहोतो, उपसर्ग सह्या अनेकजी ॥
 ॥ आ० ॥ १६ ॥ पटुर मांहें उपजतो हाखो, क्रो
 धें केवल नाणजी ॥ देखो श्रीदमसार मुनिसर, सू
 त्र गण्यो उठाण जी ॥ आ० ॥ १७ ॥ सिंह गुफा वा
 सी कृषीयें कीधो, थूलिनड ऊपर कोपजी ॥ वेश्या
 वचनें गयो नेपालें, कीधो संजम लोपजी ॥ आ०
 ॥ १८ ॥ चंडावतंसक काउसगग रहीउं, द्रुमातणो जं
 मार जी ॥ दासी तेल नख्यो निसि दीवो, सुर पदवी
 लहे सारजी ॥ आ० ॥ १९ ॥ इम अनेक तस्या त्रि
 शुवनमें, द्रुमागुणें जवि जीवजी ॥ क्रोध करीने कुग
 ति पहोता, पाडंतां मुख रीवजी ॥ आ० ॥ २० ॥
 विष हलाहल कहीयें विरुउं, ते मारे एकवारजी ॥
 पण कषाय अनंती वेंला, आपे मरण अपार जी ॥
 आ० ॥ २१ ॥ क्रोध करीनें तप जप कीधो, नपडे

कांइ ठामजी ॥ आप तपे परने संतापे, क्रोधछुं के
 हो कामजी ॥ आप ॥ ३२ ॥ कृमा करतां खरच न
 लागे, नांगे क्रोड किलेश जी ॥ अरिहंत देव आरा
 धक थाय, व्यापे सुजस परदेस जी ॥ आप ॥ ३३ ॥
 नगर मांहे नागोर नगीनो, जिहां जिनवर प्रासाद
 जी ॥ श्रावक लोक वसे अतिसुखीआ, धर्मतणा प्रा
 साद जी ॥ आप ॥ ३४ ॥ कृमा ठत्रीसी खांते की
 धी, आतम पर ऊपगार जी ॥ सांजलतां श्रावक पण
 समज्या, उपशम धखो अपारजी ॥ आप ॥ ३५ ॥
 ज्ञगप्रधान जिणचंद सूरिश्वर, सकलचंद तसु शिष्य
 जी ॥ समय सुंदर तसु शिष्य नणे एम, चतुर्विध सं
 घ जगीस जी ॥ आप ॥ ३६ ॥ इति ॥

॥ अथ वैकुण्ठपंथ लिख्यते ॥

॥ वैकुण्ठ पंथ बीहामणों, दोहिलो ठे घाट ॥ आ
 पणनो तिहां कोइ नही, जे देखाडे वाट ॥ मारग ब
 हेरे उतावलो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ उमे जीणोरी खे
 ह ॥ कोइ केहने पडखे नही, ठांमी जाए शनेह ॥
 मा० ॥ २ ॥ एक चाट्या बीजा चालसे, त्रीजा चा
 लण द्वार ॥ रात दिवस वहे वाटडी, पडखे नही
 लगार ॥ मा० ॥ ३ ॥ प्राणीने पीआणो आवीउ,

नगणो वार कुवार ॥ जडा जरणी योगणी, जो होय
 शामो काल ॥ मा० ॥ ४ ॥ जम रूपें बीहामणो,
 वाटे दीयेरे मार ॥ कृत कमाई पूढसे, जीवनो किर
 तार ॥ मा० ॥ ५ ॥ लोने बाह्यो जीवडो, करतो ब
 हु पाप ॥ अंतर जामी आगलें, केम करीश जबा
 प ॥ मा० ॥ ६ ॥ जे विण घडी सरतो नहीं, जीव
 न प्राण आधार ॥ ते विण वरश वहि गया, शुद्ध
 नहिं समाचार ॥ मा० ॥ ७ ॥ आव्यो तुं जीव एक
 लो, जातां नहीं कोइ साथ ॥ पुण्य विना तुं प्राणी
 आ, घसतो जाईस हाथ ॥ मा० ॥ ८ ॥ मगकोरी
 मांहे पेसीएं, तोहिं न मेले मोहोत ॥ चेतण द्वारा
 चेतजो, जासे गोफण गोला सोत ॥ मा० ॥ ९ ॥ ठ
 त्र पत्रि नूप केइ गया, सिद्ध साधक लाख ॥ कोड
 गमे करण आवट्या, अमर कोइ जीवदाख ॥ मा०
 ॥ १० ॥ आपण देखतां जग गयो, आपणें पण
 जाणा ॥ रुद्धि मेली रहर्षें नही, मोहोटा रायनें राणा ॥
 मा० ॥ ११ ॥ दाहाडे मोहोते आपणें, सहुकोइ जा
 से ॥ धर्म विना तुमे प्राणीआ, पडसो नरकावा
 से ॥ मा० ॥ १२ ॥ संबल होय तो खाईयें, नहिं
 तो मरीयें नृख ॥ आपणो तिहां कोइ नही, जेदनें

कहियें दुःख ॥ मा० ॥ १३ ॥ आगल हाट न वाणी
 आ, न करे कोई उधार ॥ गांठे होय तो खाईयें, न
 ही कोए देखण हार ॥ मा० ॥ १४ ॥ निश्चल रेहें
 बुंढे नही, मकरो मोडा मोड ॥ परखी प्रीत न मां
 नीए, एतो मोटी खोड ॥ मा० ॥ १५ ॥ वस्तु पी
 आरी मतलीउ, मकरो तात पीआरी ॥ धर्मविना ज
 ग जीवने, होशे अंते खुआरी ॥ मा० ॥ १६ ॥ कुड
 कपट तुंमे मत करो, जीव राखजो ठाम ॥ जीवदया
 प्रति पालजो, जो होए वैकुंठ काम ॥ मा० ॥ १७ ॥
 मोटा मंदिर मालीआ, घरपण घएँरी आय ॥ हीरा
 माणिक अतिघणा, पण कांइ नावे साथ ॥ मा० ॥
 ॥ १८ ॥ कोडी गमे कुकर्म किया, केता कहुं तुम आ
 गल ॥ लेखे किणीपरे पोहोचीयें, प्रभुजी सुं कागल ॥
 ॥ मा० ॥ १९ ॥ आगल वेतरणीं वहे, तिहां कोईन
 तारे ॥ धर्मी तरी पार पामसे, पापी जाशे पायाले ॥
 ॥ मा० ॥ २० ॥ दीठे मारग चालीयें, नजरियें कूडी
 साख ॥ काल काया पडी जायसे, मशाएँ उमसे रा
 ख ॥ मा० ॥ २१ ॥ जतन करंतां जायशें, उमीजा
 से सास ॥ माटीते माटी थायशे, उपर उगसे घास ॥
 मा० ॥ २२ ॥ माय बाप ए केहना, केहनो परिवार ॥

पुत्र पुत्रादिक केहना, केहनी घरनार ॥ मा० ॥ १३ ॥
 कोइ मकरसो गारवो, धन जोवन केरो ॥ अंते उग
 खो कोइनही, आपणथी नजेरो ॥ मा० ॥ १४ ॥
 मारुं मारुं करतो थको, पड्यो मायाने मोह ॥ लो
 चन बे मीचाणडा, तव घणी अनेराइ होय ॥ मा० ॥
 ॥ १५ ॥ जे जिहांते तिहां रह्यो, चाख्यो एकलो आ
 प ॥ साथे संगते बे थया, एक पुण्यने पाप ॥ मा० ॥
 ॥ १६ ॥ सुगुरु सुसाधु वंदियें, मंत्र मोटो नवकार ॥
 देव अरिहंत पूजीयें, जिम तरीयें संसार ॥ मा० ॥
 ॥ १७ ॥ शालिनइ सुख जोगव्या, पात्र तणें अधि
 कार ॥ खीर खांम घृत वोरावीया, पोता मुक्ति मज्जा
 र ॥ मा० ॥ १८ ॥ तसघर घोडा हाथीया, राजादी
 ए बहु मान ॥ दान दया करी दीजीयें, जावें साधु
 ने मान ॥ मा० ॥ १९ ॥ धरमे पुत्रज रुथडा, धर
 में रुडी नार ॥ धरमें लखमी पामीयें, धरमे जय ज
 य कार ॥ मा० ॥ २० ॥ नवनंद मत्ता मेलीगया, मूं
 गर केरा साणा ॥ समुड्मां थया शंखला, राजा नं
 दना नाणा ॥ मा० ॥ २१ ॥ पूंजी मेली मरी जाय
 शे, खावे खरचवे खोटा ॥ ते कडाह कपरथई अब
 तरथा, मणीधर मोटा ॥ मा० ॥ २२ ॥ माल मेली

करी एकता, खरचे नव खाय ॥ लेई जंमारें नोमीमां,
 तिहां कोई काढि जाय ॥ मा० ॥ ३३ ॥ मुंजीलख
 मी मेलशे, केहने पाणी नपाए ॥ धर्म कार्य आवे न
 द्दी, तेधूल धाणी थाए ॥ मा० ॥ ३४ ॥ जीवतां दान
 जे आपसें, पोतें जमणें हाथ ॥ श्रीनगवान ईम जा
 षीठ, शढु आवशे साथ ॥ मा० ॥ ३५ ॥ दयाकरी
 जे आपसे, उलटें अन्ननु दान ॥ अडशठ तीरथ इहां
 अर्थें, वली गंगा स्नान ॥ मा० ॥ ३६ ॥ जोगी
 जंगम घणां आयशे, दुःखिया एणें संसार ॥ खीचडी
 खाए खांतवुं, साचो जिन धर्मसार ॥ मा० ॥ ३७ ॥
 खांमानी धारें चालवुं, सुणजो एसार ॥ परस्त्रि मात
 करी जाणवी, लोचन करवो लगार ॥ मा० ॥ ३८ ॥
 कनक कामनी जेणे परिहरी, तेतो करमथी बूटा ॥
 नीखारी नमे घणा, बीजा खीचड खूटा ॥ मा० ॥
 ॥ ३९ ॥ पथरणें धरती नली, उठण नलो आका
 श ॥ शणगारे शीयल पहेरवुं, तेहनें मुक्तिनो वास
 ॥ मा० ॥ ४० ॥ उपवाश आंबिल नत करे, नित
 अरिहंत ध्यान ॥ काम क्रोध लोच परिहरे, तेहनें मु
 क्ति निधान ॥ मा० ॥ ४१ ॥ मनुष्य जनम पामी क
 री, जे करशे धरम ॥ सुख सघजा ए संपजे, बूटे सर

वे करम ॥ मा० ॥ ४२ ॥ धरमें धनज पामीयें, ध
 रमे सवि सुख थाए ॥ अरिहंत नाम आराधियें, पाप
 परले जाए ॥ मा० ॥ ४३ ॥ खाट पथरणे सुईरहो,
 खाउ नित खाणा ॥ एक अरिहंत नाम संनारता,
 किहां बेसे तुज नाणा ॥ मा० ॥ ४४ ॥ मनसा चाचा
 करमनी, लीजे जगवंत नाम ॥ सुख स्वर्गना सर्पजे, शी
 जे वंठित काम ॥ मा० ॥ ४५ ॥ खाता पीतां खरच
 तां, हश्यडा मकरे खलखंच ॥ काया माया कारमी,
 जोवन दादाडा पंच ॥ मा० ॥ ४६ ॥ केही सुचंगी
 वाढीउ, केही सुचंगी नार ॥ केते माटी होई रही, के
 ते नए अंगार ॥ मा० ॥ ४७ ॥ हंसराजा जब उडी
 उ, तव कोई न करे सार ॥ सगा कुटुंब सद्गु एम नणें,
 वहि काढो बार ॥ मा० ॥ ४८ ॥ मित्र मंत्रादिक
 तिहां लगे, तिहां लगे स्नेह जरपूर ॥ हंसराजा जब
 चालिया, तव थया सद्गु दूर ॥ मा० ॥ ४९ ॥ जेवो
 जाण्यो तेवो काढिउ, नवि मागीउ जाग ॥ आगल
 खोखर हांमली, मांहे अध बलति आग ॥ मा० ॥ ५० ॥
 पतित पावन प्रभुजी तुमें, सुणोहो दीननाथ ॥ संसा
 र सागरमांहे बुडतां, देजो तुमें हाथ ॥ मा० ॥ ५१ ॥
 सांजतो स्वामी शामला, मोरी अरदाश ॥ हुं मागुं

प्रभु एटलो, देजो वैकुंठ वास ॥ मा० ॥ ५१ ॥ अहं
 कार चित्त न आणीयें, केहनें गाल न दीजें ॥ काम
 क्रोध लोभ मारीयें, तो अमर फल लीजें ॥ मा०
 ॥ ५२ ॥ करत कमाई जोडीयें, केहनें दोष न दीजें ॥
 विष फलजो वावीयें, तो अमृत फल किम लीजे ॥
 मा० ॥ ५३ ॥ ठति रुद्धे खरचे नही, ते पण मूरख
 मोटा ॥ ठालो आव्यो जूलो जायशे, आगल पडसे
 खोटा ॥ मा० ॥ ५४ ॥ चोरासी लख जीवा जोनि
 मां, फिरीत वार अनंत ॥ मुनिनीम नणे अरिहंत
 जपो, जिम पामो नव अंत ॥ मा० ॥ ५५ ॥ संवत
 सोल नवाणुयें, बीजनें बुधवार ॥ आसुमार्शे गाडत,
 ठीकारी नगरी मजार ॥ मा० ॥ ५६ ॥ नीम नणे
 सहू सांजलो, मत संचो दाम ॥ जिमणे हार्थे वाव
 रो, तो सहि आवसे काम ॥ मा० ॥ ५७ ॥ नीम
 नणें सहू सांजलो, नवि कीजें पाप ॥ उठो अधिको
 जे में कह्यो, ते तमे करजो माफ ॥ मा० ॥ ५८ ॥

॥ अथ महावीरस्वामीनुं स्तवन ॥

॥ मुने तेदिननो विश्वास ठे, प्रभुजी तुमारो रे ॥
 साहेबजी तुमारो रे ॥ मु० ॥ दास तुमारो वीनवे,
 प्रभु पार उतारो रे ॥ मु० ॥ १ ॥ चोसठ इंद्रज आ

पिया, इंझासण आप्युं ॥ राज रुद्धि सुख संपदा, स
 मकित लइ थाप्युं रे ॥ मु० ॥ १ ॥ नक्त नलीपरे उइ
 खो, तेंतो शेठ सुंदरीन ॥ सूलि नांजी साहिबा, की
 धुं सिंघासण ॥ मु० ॥ २ ॥ चारित्रथी चूकी करी,
 गणिका घर वसिया ॥ आषाढ नदिषेण उइख्या, तु
 मे नक्तिना रसीया ॥ मु० ॥ ४ ॥ बारें व्रतमां एको
 नही, कांइ नियम न लीधूं ॥ श्रेणिक नक्ति जाणी
 करी, तेहने निज पद दीधूं ॥ मु० ॥ ५ ॥ चंदनबा
 ला बारणे, प्रभु चालीने आव्या ॥ बेडी नांजी नेउर
 थया, सोल शिणगार पहिराव्या ॥ मु० ॥ ६ ॥ अ
 श्रिज्वाला अंगे वसे, विषधर विकरालो ॥ चरणे म
 स्यो चंमकोसीयो, उइखो नाग कालो ॥ मु० ॥ ७ ॥
 नक्त नला बुरा उइख्या, तेतो शास्त्र वखाणे ॥ नाथ
 निरंजन लेहेरमां, रूपचंद रस माणे ॥ मु० ॥ ८ ॥

॥ अथ शंखेश्वर पार्श्वजिनस्तवन ॥

॥ रागप्रजाती कडखो ॥ पास शंखेश्वरा सारकर से
 वका, देव कां एवढी वार लागे ॥ कोडी कर जोडी
 दरबार आर्गे खडा, ठाकुरा चाकुरा मान मागे ॥
 पा० ॥ १ ॥ जगतमां देव जगदीश तुं जागतो, एम
 गुं आज जिनराज उंघे ॥ महोटा दानेश्वरी तेहने

दाखियें, दान दीयें जेह जग काल मूघे ॥ पा० ॥ २ ॥
 जीड पडी जादवा जोर लागी जरा, तिणे समे त्रिक
 में तुज संजाखो ॥ प्रगटी पातालथी पलकमां तें प्रभु,
 नक्तजन तेहनो नय निवाखो ॥ पा० ॥ ३ ॥ प्रगट
 था पासजी मेज पडदो परो, मोड अशुराणने आप
 ढोडो ॥ मुऊ महिराण मंजूसमां पेसीने, खलकना
 नाथजी ! बंध खोलो ॥ पा० ॥ ४ ॥ आदि आनादि
 अरिहंत तुं एक ठे, दीनदयाल ठे कोण दूजो ? ॥
 उदयरत्न कहे असुरनुं शुं गज्जुं, मान सो रखे महा
 राज दूजो ॥ पा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ वर्द्धमान स्वामीजीनुं स्तवन ॥

॥ राग धम्याश्री ॥ गिरुआ रे गुण तुम तणा,
 श्री वर्द्धमान जिन राया रे ॥ सुणतां श्रवणे अमी
 ऊरे, माहरी निर्मल थाये काया रे ॥ गि० ॥ १ ॥
 तुम गुण गण गंगाजलें, हुं जीली निर्मल थावं रे ॥
 अवर न धंधो आदरुं, निश दिन तोरा गुण गावं
 रे ॥ गि० ॥ २ ॥ जीव्या जे गंगाजलें, ते छिन्नरजल
 नवि पेसे रे ॥ जे मालती फूलें मोहीआ, ते बावज
 जइ नवि बेसे रे ॥ गि० ॥ ३ ॥ एम अमें तुम गुण
 गोठछुं, रंगें राच्याने वली माच्या रे ॥ ते केमपर सु

र आदरुं, जै परनारी वश राच्या रे ॥ गी० ॥ ४ ॥
 तुं गति तुं मति आशरो, तुं आलंबन मुज प्यारो
 रे ॥ वाचक जस कहे माहरे, तुं जीव जीवन आ
 धारो रे ॥ गी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजीना सातेवार लिख्यते ॥

॥ सखी नमीयें ते नेम जिनराज, गढ गिरनारें
 रे ॥ राणी राजुल जूए वाट, साते वारें रे ॥ १ ॥ स
 खी आदित्यें अरिहंत, अमघर आवो रे ॥ मारा स्या
 म सलुणा नेम, दीलमां जावो रे ॥ २ ॥ सखी सो
 मेते शुज सिणगार, सजियें अंगें रे ॥ मारा जगजी
 वन जिन राज, रमीयें रंगे रे ॥ ३ ॥ सखी मंगल
 शुजदिन आज, मंगल चारो रे ॥ मारो नवजव केरो
 नेह, स्वामी संजारो रे ॥ ४ ॥ सखी बुधेंते घरे आवो
 नाथ, बुधना दरीया रे ॥ तमे एक सहस्रने आव, ल
 क्णो जरिया रे ॥ ५ ॥ सखी गुरु गिरवा गुणवंत, शि
 वा देवीना रे ॥ तमे समुद्र विजय कुलचंद, नेम न
 गीनारे ॥ ६ ॥ सखी शुके सहसावन्न, चालो सक्क
 नी रे ॥ माहारे प्रगट थयोरे प्रजात, वीती रजनो
 रे ॥ ७ ॥ सखी सनीये ते संयम लीध, प्रीत वधारी
 रे ॥ बेढु पोहोता मुक्ति मजार, नरने नारी रे ॥ ८ ॥

कहे मूलचंद मन रंग, आस्या फलसे रे ॥ जे उज्ज्वल पाले शील, जवोदधि तरसे रे ॥ ए ॥ इति० ॥

॥ अथ पस्कीखामणा प्रारंजः ॥

॥ अरिहंतजीने खमावीर्ये रे, जेहना गुण ठे बार ॥ खमो जवि खामणा रे ॥ १ ॥ सिद्ध जीवने खमावीर्ये रे, गुण आठोए मनोहार ॥ खमो जवि० ॥ २ ॥ आचारजने खमावीर्ये रे, जेहना गुण ठत्रीश ॥ खमो जवि० ॥ ३ ॥ उपाध्यायने खमावीर्ये रे, जेहना गुण पञ्चवीश ॥ खमो जवि० ॥ ४ ॥ साधु सर्वेने खमावीर्ये रे, शोणे गुण सत्तावीश ॥ खमो जवि० ॥ ५ ॥ श्रावक श्राविकाने खमावीर्ये रे, जेहना गुण एकवीश ॥ खमो जवि० ॥ ६ ॥ आठम पाखी खमावीर्ये रे, चो मासुं त्रण वार ॥ खमो जवि० ॥ ७ ॥ संवत्सरी शुद्ध खमावीर्ये रे, खमावीर्ये वारं वार ॥ खमो जवि० ॥ ८ ॥ रूठढो संघ मनावीर्ये रे, मनावीर्ये वारं वार ॥ खमो जवि० ॥ ९ ॥ मुक्तिसागर सूरि खमावीर्ये रे, अंचलगढ सिणगार ॥ खमो जवि० ॥ १० ॥ चोमासी गुरुने खमावीर्ये रे, वांचे सूत्र सिद्धांत ॥ खमो जवि० ॥ ११ ॥

॥ अथ श्रीजीव विचारनो स्तवन प्रारंजः ॥

॥ ढाल ॥ श्री सरसतीजी, वरसति वचन विलासरे ॥

धुणसुं त्रिभुवनजी, तारण श्रीजिन पास रे ॥ सुणो स
 मरथजी, सुंदर श्रीजिन देव रे ॥ मुज देजोजी नव
 नव तुम पाय सेव रे ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ तुज सेव पा
 खे सहीय नमिउं, तुं निगमियो रे जिनवरू ॥ ठ का
 य मांहे जीव सहीउं, ठेदन जेदन आकरूं ॥ उत्कृष्ट
 आयु अथवाहनाजे, ईणे जीवें जोगवी ॥ लाख चो
 रासी जीवा योनी, तेह पण ईम जोगवी ॥ २ ॥
 ढाल ॥ मणि स्कटिकजी, हिंगलो रयण प्रवालरे ॥
 पारो अजरखजी, गेरु खडी हरियाल रे ॥ उस सुर
 मोजी, माटी पाषाण सात धात रे ॥ नूणादिकजी, पृ
 थिवी जेद बहु जात रे ॥ ३ ॥ त्रुटक ॥ अनेक जेद
 वली पाणी नणीयें, कूप सरोवर धूअरू ॥ उंसा हि
 म घणोदधि करा कह्यें, समुद्र अनेक पाणी ख
 रू ॥ अंगाल जाल मुम्मुर बीजली, उलकापात अग्नी
 कणा ॥ सिद्धांत मांहेठे विशेषें, जेद अनेक अग्नी त
 णा ॥ ४ ॥ ढाल ॥ एक वायरोजी हलुउं हलुउं वा
 यरे, गुंजारवजी करतो चिहुंदिसि धायरे ॥ पाडे उ
 त्कलीजी, वली वंतोलीउं एक रे ॥ घनवार्तेजी, वायु
 जेद अनेक रे ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ ईम दोय जेद वनस्प
 ति केरा, साधारण प्रयेक तरू ॥ कंद कोमल फल

अंकूरा, फूल सेवाल सेखरू ॥ अनेक जेद साधारण
 सुणीयें, लक्षण तस शास्त्रें सही ॥ एहथीजे होये वि
 परीत, तेह प्रत्येक वनस्पति कही ॥ ६ ॥ ढाला ॥ पृथिवी
 पाणीजी, तेउ वाउ काय रे ॥ वणसई पांचमीजी, आ
 वरकाय कहेवाय रे ॥ विकर्जेडीजी, नारकी तिर्यंच
 मानवी ॥ बली देवताजी, ठीनी त्रस काय पालवी ॥
 ॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ पहेली पृथिवी काय आयु, वरस
 सहस बावीसए ॥ सात सहस अपकाय नणीयें, अ
 ग्री त्रण दिन दीसए ॥ वरस सहस त्रण वायु सुणी
 यें, वणसई दस सहस जाणीयें ॥ नारय देव विण
 जघन्य आयु, अंतर मुहूर्त प्रमाणीयें ॥ ८ ॥ ढाला ॥ अंगु
 लतणोजी, नाग असंख्यातमो नणु ॥ स्वनाविकजी
 जघन्य हुवे सहुनो तनुं, चार आवरजी गुरु लघु स
 म तनुं जोयरे ॥ वनस्पतिजी, सहस जोजन जाजी
 होय रे ॥ ९ ॥ त्रुटक ॥ ईम होय समूर्धिम मनुष्य
 साधारण, सूक्ष्म जेह निगोदए ॥ तस आयु अंतर
 मुहूर्त होवे, चौदराज अजेदए ॥ पांच आवर कहीयें
 एक इंडी, शास्त्रे जेद तस ठे घणा ॥ एम कहे कवि
 यण सुणो नवियण, नाम मात्रज ए नण्या ॥ १० ॥
 ॥ दोहा ॥ नव साढा सत्तर कह्या, आसो आस मजा

र ॥ एकेंडी नव जोगवी, बलतो विगल विचार ॥ ११ ॥
 ॥ ढाल बीजी बेकर जोडी तामरे नझावीनवे ॥ एदेशी ॥

॥ संख सीप कोमा सरमीयारे, मेहर थापना सा
 र ॥ जलोई पुराने अलसीयारे, ए बे इंडी विचारो
 रे ॥ धन जिन वयणडा, उतारे नव पारो रे ॥ ते जग
 मां वडा ॥ ए आंकणी ॥ १२ ॥ कान खजूरा माकण
 जूथारे, गढहीयां धीमेल ॥ कीडी गिगोडा कातरा रे,
 गोकीड मकोडा चूडेल रें ॥ धन० ॥ १३ ॥ सांवा
 जूवा धान कीडलारे, ईली अने इंडगोप ॥ उदेही
 ने बली कुंथुआरे, मकरो तेंडीनो लोप रे ॥ धन० ॥
 ॥ १४ ॥ बीढी कंसारी खडमाकडी रे, नमरा नमरी ने
 तीड ॥ माखी मसा मंसा पतंगीया रे, टालो चौरिंडी
 नी पीड रे ॥ धन० ॥ १५ ॥ बेंडी वरसज बारनुं
 रे, हवे तेंडी प्रकाश ॥ दीवस उंगण पञ्चाशनुं रे,
 चौरिंडी षट मास रे ॥ धन० ॥ १६ ॥ संख प्रमुख
 जे बेइंडी रे, तस तनु जोयण बार ॥ कान खजूरा
 गाठ त्रण्यनो रे, नमर होये गाठ चार रे ॥ धन० ॥ १७ ॥
 बेंडी तेंडी चौरिंडी रे, ए विगलेंडीरे नाम ॥ कहे कवियण
 तुमे सांजलो रे, हवे पंचेंडी अनिराम रे ॥ ध० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥ नही विवेक विकल पणें, नहीं तस तत्व वि

चारा॥ नव नवांतरें जोगव्या, उपनो नरक मजार॥ १९॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ जंबूधीप मजार रे ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नप्रजा पहेली जेह रे, सागर एकनुं ॥ एक
 त्रीश हाथ ठ आंगुजाए, सक्र प्रजा बीजी होय रे ॥
 त्रण सागर तिहां, हाथ बाशठ बार आंगुजाए ॥ २०॥
 वालुप्रजा पुहवी त्रीजी रे, सात सागर आगु ॥ ए
 कत्रीश धनुष एक हाथनु ए, पंकप्रजा चोथी नाम
 रे ॥ दश सागर सही, बाशठ साढा धनुष तनुए ॥
 ॥ २१ ॥ पंचमी धूम प्रजार्ये रे, सत्तर सागर सुणो ॥
 धनुष सवासो जाणीर्येए, तम प्रजा ठही जाणो रे ॥
 बावीश सागर, धनुष अढीसैं नाणीर्येए ॥ २२ ॥ त
 म तमा सातमी नाम रे, तेत्रीश सागर ॥ धनुष पांच
 सैं देह रचेए, पांच कोडी अडशठ लाख रे ॥ सहस
 नवाणु ए, रोगे नारकी नित्य पचेए ॥ २३ ॥ परमा
 धामी पचावे रे, वली दश वेदना ॥ कीधा कर्म ते
 जोगवेए, राज राज प्रत्ये पोहवी रे ॥ ईम सात राज
 नी, सातमी पृथिवी योगवीए ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥ सात प्रकारें नारकी, बोळ्यो तास विचार॥
 जलचर थलचर खेचरू, तिर्येच त्रण प्रकार ॥ २५ ॥

॥ ढाल चौथी त्रिपदीनी देशी ॥

॥ उरपुरी छुजपुरी गर्नज थाय, गर्न समूर्द्धिम
मह कहेवाय, वरस पूरव कोडी आयहो ॥ नविका ॥
वरस पूर्वकोडी आय ॥ १६ ॥ सहस योजन तस
काया दीसे, छुज पुरि कोस पृथक्त वली कहीसे, जि
न वचने चित्त हीसेंहो ॥ नवि० ॥ जि० ॥ १७ ॥
त्रेपन सहस समूर्द्धिम व्याल, छुजपुरि सर्प सहस
बायाल, योजन पृथक्त तनु जालहो ॥ नवि० ॥
॥ ज० ॥ १८ ॥ गर्नज तिर्यच चतुपदनी जात, त्र
ए पद्योपम आयु विख्यात, काया ठ कोश सुणो
घातहो ॥ नवि० ॥ काया० ॥ १९ ॥ चतुपद समु
र्द्धिम कहिये जास, आयु सहस चोरासी वास ॥
कोश पृथक्त तनु तासहो ॥ नवि० ॥ कोश० ॥ २० ॥
पंखी गर्नज आयुनो माग, पद्योपम असंख्यातमो
जाग, धनुष पृथक्त तनु जागहो ॥ नवि० ॥ धनु० ॥
॥ २१ ॥ समूर्द्धिम पंखी बहुतेर सहस, ए पहेले आ
रे कहेस, चतुपद विवरी जहेसहो ॥ नवि० ॥ चत०
॥ २२ ॥ जेणे आरे जे मानव आयु धार, तेहतणा
जाग कीजे उदार, जाग चौथे अश्व सारहो ॥ नवि०
॥ जाग० ॥ २३ ॥ अज आयु जाग आठमे वखाणु,

गाय नेंसने उंट खरादिक जाणु, पांचमें जाग प्रमा
 णुहो ॥ नवि० ॥ पांच० ॥ ३४ ॥ स्वानादिक जाग
 दशमें कहीयें, हस्ति आयु मानव परें लहीयें, जिन
 आणा शिर वहीयेंहो ॥ नवि० ॥ जिन० ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥ पशु अपणे परवस पड्यो, पाम्यो
 दुःख अपार ॥ कर्म केतां तिहां निर्झरी, धरियो
 मनुष्य अवतार ॥ ३६ ॥

॥ ढाल ॥ पांचमी कपूरहोवे अती उज्ज्वलो रे ॥ एवेशी ॥

॥ चार कोडाकोडी सागरूरे, सुसम सुसमा नाम,
 त्रण्य पदयोपम आयुखुरे, त्रण गाउ अनिराम रे ॥
 प्राणी मानव नव अवतार, नरीयें सुकृत चंदार रे
 ॥ प्राणी ॥ मान० ॥ ३७ ॥ ए आंकणी ॥ सागर
 कोडा कोडी त्रण्यनो रे, सुसम बीजो जेह ॥ दोय
 पदयोपम आउखोरे, युगल गाउ दोय देहरे ॥ प्राणी
 ॥ मान० ॥ ३८ ॥ त्रीजो सुसम दुसमा रे, सागर
 कोडा कोडी दोय ॥ एक पदयोपम युगलनो रे, कोश
 काया एक होय रे ॥ प्राणी ॥ मान० ॥ ३९ ॥ पे
 हेले तुअर बीजे बोर समो रे, त्रीजे आमलदार ॥
 अठम ठठ अकांतरो रे, सुर तरु पूरे आहार रे ॥
 प्राणी ॥ मान० ॥ ४० ॥ दुसम सुसम कोडा कोडी

नो रे, सहस्र बेयालीश कण ॥ पूर्व कोडी वरस मा
 नथी रे, पांचजों धनुष प्रमाण रे ॥ प्राणी ॥ मान०
 ॥ ४१ ॥ वरस सहस्र एकवीशनो रे, डुषमा कलीयुग
 नाथ ॥ एकशो वीश वर्ष आउखुं रे, मानव काय
 सात हाथ रे ॥ प्राणी ॥ मान० ॥ ४२ ॥ ठो सह
 स एकवीशनुं रे, डुसमाडुसम अपार ॥ वीश वरस
 दोय हाथनुं रे, मढाहारी नरनार रे ॥ प्राणी ॥ मान०
 ॥ ४३ ॥ ए ठ आरे अवसर्पिणी रे, उत्सर्पिणी वि
 परीत जाण ॥ कालचक्र ए दोय मली रे, बार आरे
 प्रमाण रे ॥ प्राणी ॥ मान० ॥ ४४ ॥ पांच नरत पांच
 ऐरवतें रे, तिहां सदा सरिखो काल ॥ पांचविदेह परं
 परा रे, चोथो आरो सुविस्तार रे ॥ प्राणी ॥ मान० ॥ ४५ ॥
 ॥ दोहा ॥ दशदृष्टांते दोहिलो, मानवनो अवता
 र ॥ छुननावें सुरुत पणे, उपनो देव मजार ॥ ४६ ॥
 ॥ ढालठछी नंदनकूं त्रिसला डुलरावे एदेशी ॥
 ॥ दस प्रकारें जवनपति कहीयें, व्यंतर आठ प्र
 कारो रे ॥ ज्योतषी पांच प्रकारें सुणजो, दोय विमा
 नीक सारो रे ॥ दस० ॥ ४७ ॥ असुर कुमार साधि
 क एक सागर, सात हाथ तस काय रे ॥ देसैं उणा
 दोय पढ्योपम, नवनिकाय कहेवाय रे ॥ दस० ॥

॥ ४७ ॥ लाख सहस्र वरस एक पद्योपम, चंद्र सूर्य विचार रे ॥ व्यंतर आयु एक पद्योपम, तनु सम असुर कुमार रे ॥ दस० ॥ ४९ ॥ नारकी जवन पतिने व्यंतर, दश सहस्र वरस जवन्य रे ॥ ज्योतीषी पद्योपम अड नागें, पद्योपम विमान रे ॥ ॥ दस० ॥ ५० ॥ युगल सौधर्मने ईशानेंद्र, ईहांथी होये एक राज रे ॥ सागर बे बीजे बे जाजा, सात हाथ विराजे रे ॥ दस० ॥ ५१ ॥ सनत कुमार जु गम माहेंद्र, दोय राज हवे जाणो रे ॥ त्रीजे सात चोथे सात जाजा, ठ हाथ काया प्रमाणो रे ॥ दस० ॥ ॥ ५२ ॥ पांचमें ब्रह्म आयु दस सागर, लांतक ठठे चौद रे ॥ पांच हाथ तस काया कहोयें, त्रण राज अजेद रे ॥ दस० ॥ ५३ ॥ शुक्र सातमे सत्तर सागर, बली सहस्रारें अठार रे ॥ चार हाथ तनु सुर देह सोहे, राज होवे तिहां चार रे ॥ दस० ॥ ५४ ॥ नवमे आनत उगणीश सागर, प्राणत दशमे बीश रे ॥ एकादशमें आरण्य एकबीश, बारमें अच्युत बा बीश रे ॥ दस० ॥ ५५ ॥ ए चारे त्रण हाथनी काया, पांच राज्य ईहां सोहे रे ॥ नवग्रैवेयक एक उपर उपे, दीठे जवि मन मोहे रे ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥ बार स्वर्ग सोहे सदा, तिहां राज्य नीत प्र
धान ॥ जेद बीजो वैमाननो, नव ग्रैवेयक निधान ॥ ५७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ माई धन सुपन तुं धन ॥

॥ जीवो तोरी आस ॥ ए देशी ॥

॥ सुदर्शन पहेले, सागर तिहां त्रेवीश ॥ सुप्रति
बंध चोवीश, मनोरमें पचवीश ॥ ५८ ॥ सर्वजडे बढी
श, सुविशालें सत्तावीश ॥ सुमनसें अछावीश, हवे त्रि
क त्रिजे जगीश ॥ ५९ ॥ उगणत्रीश सोमनसें, प्रीयंकर
आठमें त्रीश ॥ आदित्यें एकत्रीश, दोय हाथ तनु दी
श ॥ ६० ॥ ए नव ग्रैवेयके, ठए राज प्रधान ॥ सा
तमें सिद्ध ठेहडे, हवे अनुत्तर विमान ॥ ६१ ॥ वि
जय विजयंतें, जयंत अपराजीत ॥ सरवारथ सिद्धें, न
हीं तिहां राजनी नीत ॥ ६२ ॥ सागर आयु तेंत्री
श, काया कर एक वारू ॥ एका अवतारी, सुख अ
नंत तस वारू ॥ ६३ ॥ तिहांथी बार योजन, सिद्ध
सीला महंत ॥ जोजनने अंतें, सिद्ध हवां अनंत
॥ ६४ ॥ आयु अवगाहना, कही सामान्य प्रका
र ॥ जघन्य संक्षेपे, बोल्या तास विचार ॥ ६५ ॥

॥ दोहा ॥ नवस्थिति एणीपरें नोगवी, तुजविण

त्रिभुवन देव ॥ कुण स्थानक काया स्थितें, रह्यो
कहुं सुण हेव ॥ ६६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ नरतनृप जावहुंए ॥ ए देशी ॥

॥ सात हेठल सात उपरेंए, चउद राज लोक जा
व ॥ नविक जिन जावहुंए ॥ पुरुषाकार लोक पूरीयोए,
षट पदारथ जाव ॥ नवि० ॥ ६७ ॥ नयर नवनपति दे
वताए, अथो लोक निशंक ॥ नवि० ॥ व्यंतर नर तिरि
गिरिवरूए, द्वीप समुद्र अशंख्य ॥ नवि० ॥ ६८ ॥
अग्नी विकलेंडी ज्योतषीए, ए सवि त्रीढे लोक ॥
॥ नवि० ॥ स्वर्ग त्रैवेयक पांच अनुत्तरूए, सर्व सि
द्ध उर्ध्व लोक ॥ नवि० ॥ ६९ ॥ असंख्याती उत्स
र्षिणीए, सर्व एकेंडी स्थितिकाय ॥ नवि० ॥ का
ल अनंतो अनंतकायमांए, उपजेने वली जाय ॥
॥ नवि० ॥ ७० ॥ विगल संख्या वरस सहस्रनीए,
नर तिरि नव सात आठ ॥ नवि० ॥ नारकी देव च
वीय न उपजेए, जघन्य आयु परिपाठ ॥ नवि० ॥
॥ ७१ ॥ सात सात लाख चार थावरूए, वनस्पति दश
लाख ॥ नवि० ॥ अनंतकाय चौद लाख सुणोए, विगलें
डी दो दो लाख ॥ नवि० ॥ ७२ ॥ नारकी तिर्यंच
देवताए, चउ लाख होये तेह ॥ नवि० ॥ चउद लाख

वली मानवीए, संख्या जीवायोनी एह ॥ नवि० ॥
 ॥ ७३ ॥ इंडी पांच त्रण बल कह्याए, शासोश्वास
 वली आय ॥ नवि० ॥ दश प्राण होये सन्नीया रे,
 नव असन्नीया थाय ॥ नवि० ॥ ७४ ॥ ठ सात आठ
 विकलेंडी तणाए, एकेंडी प्राण चार ॥ नवि० ॥ नर
 तिरियंच त्रण वेद सुणोए, देवता दोय वेद सार ॥
 नवि० ॥ ७५ ॥ थावर विकलेंडीने नारकीए, एक न
 पुंसक वेद ॥ नवि० ॥ पङ्कमणु अधिक बादर अग्गी
 ए, वैमानिक छुवणेंद ॥ नवि० ॥ ७६ ॥ नरय व्यंतर
 ज्योतषी चउरिंडीए, तिरियंच बिति इंडीक ॥ नवि० ॥
 पृथिवी पाणी वायु वणसईए, एक एक जीवथी अधि
 क ॥ नवि० ॥ ७७ ॥ चिहुं गति नमीनमी उपनोए, सं
 प्रति प्रभु पद लीध ॥ नवि० ॥ शास्त्रथकी जे विरुद्ध
 कह्युं ए, ते पंथित करजो छुद्ध ॥ नवि० ॥ ७८ ॥ द्वार
 हइयें रयणनो ए, धरजो चतुर सुजाण ॥ नवि० ॥ नयो
 गणो जे सांजले ए, तस घर कोडी कढ्याण ॥ न० ॥ ७९ ॥

॥ ढाल नवमी कडखानी देश ॥

॥ चउदराज मांहे जीव केइ छुग नम्यो, सूक्ष्म
 बादर अनंती वारू ॥ कर्मनी कोड जरी अकाम निर्ज
 रा करी, पामीउ पास त्रिछुवन्न तारू ॥ ८० ॥ जेटरे

जेट प्रभु पास चिंतामणी, एहिज मुक्तिनो मार्ग सा
 चो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मने परहरो, मोह मिथ्यामर्ते
 को मराचो ॥ जेट० ॥ ७१ ॥ नयर गुण दीव गुण
 वेली वाधे सदा, पुष्करावर्त्त पास मेघ देवा ॥ श्रीसं
 घ मंमप तर्जे वेलि ते विस्तरे, उपजे आनंद सु
 कृत मेवा ॥ जेट० ॥ ७२ ॥ संवत ससी सायर चंड
 लोचन स्तव्यो, आशोसुदि दशमी रविवार राजे ॥ सू
 रि शिर ताज गुरु राज आणंदजी, तस पटें सूरि वि
 जयराज ठाजे ॥ जेट० ॥ ७३ ॥ धन्य धन्य हर्ष गुरु
 विबुद्ध चूडामणी, जास दिक्षित जर्गे कीर्त्ति सारी ॥
 रत्नविजय बुद्ध सत्यविजय तणो, वृद्धिविजय नणे
 आनंदकारी ॥ जेट० ॥ ७४ ॥ इति ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ नवतत्त्वनो स्तवन प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ सरसतीर्ने प्रणमुं सदा, वरदाता नित्य
 मेव ॥ मुज मुख आवोतूं वसे, करुं निरंतर सेव ॥ १ ॥
 आदिसर अरिहंत नमुं, जुगला धर्म निवार ॥ गुरु
 श्रुत देवी चंदलो, एहीज मुज आधार ॥ २ ॥ जास
 तणा पद युग नमी, वर्णवुं तत्व विचार ॥ नवियण
 एक चित्ते करी, नाम कहुं हीतकार ॥ ३ ॥ जीव अ
 जीव पुण्य पाप जे, संवर आश्रव जेह ॥ निर्झरा बं

धने मोक्ष जे, जिनजीयें जाख्या एह ॥ ४ ॥ एहना
 जेद ठे नव नवा, आगममां अनुरूप ॥ गुरु सुखथी
 ते सांजली, जाखुं एह स्वरूप ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ शोलमां श्रीजिनराज, उलग ॥

॥ सुणो अम तणी लजना ॥ ए देशी ॥

॥ जीव तत्वना जेद ते चउदे जाणीयें लजना ॥
 चउद अजीवना जेद ते मनमां आणीयें लजना ॥
 जेद बेतालीस पुण्यना नवियण चित्तधरो लजना ॥
 व्यासी जेद ते पापना मनथी संवरो लजना ॥ १ ॥
 आश्रवना बेतालीश जेदते जावियें लजना ॥ संवरना
 सत्तावन चित्तमां जावीयें लजना ॥ बारजेदेठे निर्झ
 रा कर्मते निर्झरे लजना ॥ जेहथी प्राणी मोक्ष रमणी
 सुखने वरे लजना ॥ २ ॥ बंध तत्वना चार ते बंध
 ने तोडीयें लजना, मोक्ष तत्वना नवते सुखथी जो
 डीयें लजना ॥ सर्व मली नव तत्वना जेद ते जाण
 जो लजना ॥ बशेने ठहोत्तेर ते मनमां आणजो ल
 जना ॥ ३ ॥ तेहमां अठ्यासी अरूपी जेदते सुख
 करू लजना, एकशो अठ्यासी रूपी कहे ते जिनवरू
 लजना ॥ मंगर गुरु ध्यानथी सुखने अनुसरे लजना,
 विवेक कहे नविलोकते नव सायर तरे लजना ॥ ४ ॥

॥ दोह ॥ हवे प्रथम जीव तत्त्वना, जेद कहुं हित
कार ॥ विवरीने ते वरणवुं, एक एक सुखकार ॥१॥

॥ ढाल बीजी ॥ नदी घुमुनाके तीर उढे ॥

॥ दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥

॥ एक जेदे कह्यो जीव, डुविध जेदे वली ॥ त्रए
प्रकारें जाण, चउविह कहे केवली ॥ पंच षट विध
जीव ठे, ठए नाखीया ॥ अरिहा जिनवर एहके, सु
खथी दाखीया ॥१॥ चेतना लक्षण जीवते, एक अ
जेद ठे ॥ त्रस अने बीजो यावर, इहां नवी खेद ठे ॥
स्त्री वेद पुरुष नपुंसक, त्रए विधैं सही ॥ देव गइ
मनुष्य तिर्येच, वली नारक कही ॥ २ ॥ पांच प्रका
रें जीव, पंचेंडी परखीयें ॥ ठ प्रकारें जीव, ठकायने
निरखीयें ॥ इणैविध ठ जेदे जीव, धारो तुमें एक म
ना ॥ हवे आगल दश प्राण, कहे त्रिभुवन जना ॥३॥
पांच इंडी त्रण वज्र, स्वासोश्वास आउखुं ॥ ए दश प्रा
णीने होय, विवरी कहुं पारीखुं ॥ एकेंडीने चार प्रा
ण, बेरेंडीने ठ कह्या ॥ तेरिंडी सात जाणो चौरिंडी
आठ लह्या ॥ ४ ॥ असन्नी पंचेंडीने नव, सन्नी दश
धारजो, एविना अवर न होय, संदेह मन वारजो ॥
हवे एकेंडी सूझा, बादर दोय ठे ॥ पंचेंडी संज्ञी

असंझी, दोय जेद जोय ठे ॥५॥ बैरिंझी तेरिंझी एक,
 चौरिंझी जाणजो ॥ ए साते जेद होयके, शुन मन
 आणजो ॥ पळ्ळ अपळ्ळ ए दोय, चउद जेदजीवना,
 धारो चित्तमें जेहके, नविजन एक मना ॥६॥ आहा
 र शरीरने इंडीय, श्वास वचन सही ॥ मननी ठछी
 जाण, एकेंडीय चउ कही ॥ बिति चौरिंझी असन्नीने,
 होये पंचए ॥ षट सन्नीने जाणवी, विशेष कहेसंचए ॥७॥

॥ दोहा ॥ जीव तत्व पूरण थयो, हवे अजीव वि
 चार ॥ निन्न निन्न करीने कहुं, सांजलजो नर नार ॥१॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ वीरजीने वचने रे अमृत रस जरे रे ॥ ए देशी ॥

॥ धर्मास्तिकाय खंध देश प्रदेश ठे रे, तिम अधर्मा
 स्ति काय ॥ एहना पण ए त्रण जेदज कह्या रे, एम
 आकाशना त्रण थाय ॥ नवि तुमें जाणो रे अजीव त
 त्वना रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ ए त्रणना मली नव जेद
 सुंदरू रे, दशमो जेद ठे काल ॥ खंध देश प्रदेश प्रमा
 णुठ रे, अजीवना चौद कह्या सुविशाल ॥ नवि०
 ॥ २ ॥ धर्मास्ति अधर्मास्ति पुजला रे, आकाश काल
 सुविहाण ॥ ए पांचे अजीव ते जिन कह्या रे, कह्या
 कह्या त्रिभुवन जाण ॥ नवि० ॥ ३ ॥ चलण स्वजाव

धर्मास्तिकायमां रे, अधर्मास्ति थिर ठाण ॥ अवकाश
 आपे पुजल जीवने रे, हवे पुजलना चार विन्नाण ॥
 नवि० ॥ ४ ॥ खंध देश प्रदेश प्रमाणुठ रे, पुजलना
 ए चार जेव ॥ हवे आवलिका जेद तुमें लहो रे, अ
 संख समय एक आवलि मेव ॥ नवि० ॥ ५ ॥ एको
 डीने शडसठ लाख ठे रे, उपर सीतोत्तर सहस्सज जो
 य ॥ बर्शेने शोल आवलिका कही रे, एटली आवलि
 यें एक मुहूर्त होय ॥ नवि० ॥ ६ ॥ त्रीश मुहूर्तें दिवस
 रात्री कही रे, पंदर अहो रात्रें एकज पद्द ॥ बे पद्धें एक
 मासज नावियें रे, बारमासें एक वर्षज दद्द ॥ नवि०
 ॥ ७ ॥ एहवें वरसें हवे पूर्व कहुं रे, सीतेर लाब को
 डी वरसज जाय ॥ ठपन्न सहस्स कोडी वरस मान
 कहुं रे, पूर्व एटलें वरसें थाय ॥ नवि० ॥ ८ ॥ असंख्या
 त पूरवें एक पढ्य जाणीयें रे, दश कोडा कोडी पढ्यें
 सागर एक ॥ सागर दश कोडाकोडी उत्सर्पिणी रे,
 अवसर्पिणी कोडाकोडी दश ठेक ॥ नवि० ॥ ९ ॥
 बीश कोडाकोडी सागरें काल चक्र ठे रे, काल अनंते
 पुजल परावर्त जाण ॥ मूंगर गुरुना पद गुन ध्यानथी
 रे, नित्य नित्य विवेक लहे कल्याण ॥ नवि० ॥ १० ॥
 ॥ दोहा ॥ पुण्य तत्व तणा कहुं, जेद बेतालीश जे

ह॥ एकमना यइ सांनजो, आणी अधिको नेह ॥ १ ॥

॥ ढाल चौथी साहेबजी श्रीविमलाचल ॥

॥ जेटीयें होलाल एदेशी ॥

॥ बेंतालीश जेद पुण्य तत्वना होलाल, शाता
वेदनी उंच गोत्र साहेबजी ॥ मनुष्यगति मनुष्यानुपू
र्वी होलाल, चार जेद ए युक्त ॥ सा० ॥ पुण्य त
त्व हवे सांनजो होलाल ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ साहे
बजी सुरडुग पंचेंडी पणु होलाल, पांच देह मनो
हार ॥ सा० ॥ उदारिक वैकीय आहार कें हो
लाल, अंगोपंगे युक्त धार ॥ सा० ॥ पु० ॥ १ ॥
॥ सा० ॥ प्रथम संघयण संस्थानछुं होलाल, छुन
वरण छुन गंध ॥ सा० ॥ छुन रस छुन स्पर्शने
होलाल, अगुरु लघु अदंन ॥ सा० ॥ पु० ॥
॥ २ ॥ सा० ॥ पराधात आसोआसने होलाल,
लेवाने जेहनी सक्त ॥ सा० ॥ आताप जेद पच
बीशमो होलाल, उद्योत कर्मनी व्यक्त ॥ सा० ॥
॥ पु० ॥ ४ ॥ सा० ॥ छुनगई छुनगती करे होला
ल, निर्माण नाम अगर्व ॥ सा० ॥ त्रस दशको
दश जेदनो होलाल, आगलें कहे ते सर्व ॥ सा० ॥
॥ पु० ॥ ५ ॥ सा० ॥ सुर नर तिरि आउखूं

होलाल, तीर्थकर नाम कर्म ॥ सा० ॥ हवे त्रस
 दशको वरणवुं होलाल, जेहथी लहे शिव शर्म ॥
 ॥ सा० ॥ पु० ॥ ६ ॥ सा० ॥ त्रस बायर पर्यासा
 होलाल, प्रत्येक थिर शुन नाम ॥ सा० ॥ सोजा
 ग्य नाम कर्मथी होलाल, जीव लहे शुन ठाम
 ॥ सा० ॥ पु० ॥ ७ ॥ सा० ॥ सुस्वर आदेय जस
 नामथी होलाल, जीव लहे सुख नित्य ॥ सा० ॥
 मूंगर गुरु पद सेवतां होलाल, विवेक लहे जग
 जीत ॥ सा० ॥ पु० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥ पाप तत्वथी दुःख होये, पामे नरक दू
 वार ॥ ते माटे चेतन तुमे, मनथी एह निवार ॥१॥

॥ ढाल पांचमी ॥ सुरती महीनानी देशी ॥

॥ आवरण पंचने तिम वली, अंतरायढे पंच ॥ पंच
 निडा कही दर्शन, चारे ते खल खंच ॥ नीच गोत्र
 आशाता, तिम वली मिथ्यात्व, आवर दशको आगल
 कहे, सांजलो एह विख्यात ॥१॥ नरक त्रिक अने व
 ली, पणवीस कषाय ॥ तिरिय दुग मली कह्या, जेद
 बाशठ ए थाय ॥ ईग बि ती चउ जाई, कुखगई उ
 पघात ॥ होये प्राणीने ते सही, नीच कर्मनी ख्यात
 ॥ २ ॥ अशुन वरण अशुन रस, गंध अशुन तेम

जाण ॥ फरस अशुज तेमज कह्यो, आगममां जिन
 जाण ॥ पढम संघयण विनाही, पढम संस्थान ॥ ब
 होत्तेर जेद ए थया, जाणो एहनो मान ॥ ३ ॥ था
 वर सुढूम अपज्ज, साधारण अस्थिर ॥ अशुजग ड
 श्वर, अनादेय अपजश धीर ॥ आगममां पाप तत्व
 ना, जेद ए व्यासी जाण ॥ मूंगर गुरुनो सेवक, ते
 हने नित्य कळ्याण ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥ पाप तत्वने एकह्यो, हवे आश्रवनो ठा
 म ॥ पाप आवे जे जीवने, आश्रव एहनुं नाम ॥ १ ॥

॥ ढाल ठछी देखी कामिनी दोयके कामे व्यापीउरे
 के कामे व्यापिउ ॥ ए देशी ॥

॥ पांच इंडी कषाय चारके, अत्रत पण कहा
 रे के ॥ अत्रत० ॥ त्रण योग त्रण जेद के, गुरु मु
 खथी लह्या रेके ॥ गुरु० ॥ हवे किरिया ते जोयके,
 पणवीश अनुक्रमें रेके ॥ पण० ॥ तजीयें जेहथी हो
 यके, पुण्य सुसंक्रमें रेके ॥ पुण्य० ॥ १ ॥ पहेली का
 यकी जाणके, बीजी अधिकरणकी रेके ॥ बीजी० ॥
 त्रीजी परदेषकी होयके, चौथी पारीतापनकी रेके
 ॥ चो० ॥ प्राणाती पातनी पांचमी, ठछी आरंजकी रे
 के ॥ ठछी० ॥ परीग्रहकी सातमी, आठमी कायकी

रेके ॥ आ० ॥ १ ॥ मिथ्यादंसण अपञ्चस्काणकी, नव
 दस एक कही रेके ॥ नव० ॥ दिछी पुठि पाडूचकी,
 त्रयोदश ए लही रेके ॥ त्रयो० ॥ सांमतोनपात नि
 शस्त्र, स्वहस्तकी शोलमी रे ॥ स्व० ॥ सत्तरमी आणव
 णी, विदारण अठारमी रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ अणानोग अ
 णवकंखके, बे मली वीश अइ रेके ॥ बे० ॥ अणउप
 योग समुदायकी, बावीश ए लही रेके ॥ बा० ॥ त्रेवी
 शमीते रागकी, चोवीशमी द्वेषकी रेके ॥ चो० ॥ पण
 वीशमी इर्यापय्यकी, कही विशेषकी रेके ॥ कही० ॥
 ॥ ४ ॥ जेद बेतालीश आश्रव, तत्वना ए कहा रेके
 ॥ तत्व० ॥ सम्यक्दृष्टी जीवके, मनथी सदह्या रेके ॥
 ॥ मन० ॥ मूंगर गुरु गुनध्यानथी, आश्रवने तजो
 रेके ॥ आश्रव० ॥ विवेक कहे जविलोकके, शिव र
 मणी नजो रेके ॥ शिव० ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ प्राणी वाणी जिनतणी० ॥ एदेशी॥

॥ संवर तत्व ते सांजलो, संवरीयें आतम नित्य
 रे ॥ अरिहा जिनवरें नासीयो, आगम मांहे गुन
 रीतरे ॥ आगम मांहे गुनरीत ॥ सुचित सुनित जग
 त गुरु नासीयो सुख कंदरे ॥ सुख कंद अमंद आ
 नंद ॥ जगत गुरु नासीयो सुख कंदरे ॥ ए आंकणी

॥ १ ॥ पांच समिति त्रण गुप्तिजे, परीसह बावीश
निवारोरे ॥ दशविध मुनिवर धर्मजे, मुनिजन नित्य
तुमे धारोरे ॥ मुनि० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ २ ॥ पांच स
मिति विवरी कहुं, इर्या समिति प्रथम वखाण रे ॥
ठक्काय रक्षा जे करे, इर्या कही तेह सुजाण रे ॥
॥ इर्या० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ ३ ॥ जाषा समिति बीजी
हवे, सहुने सुख उपजे सोयरे ॥ एषणा बेतालीश
दोषणे, मुनिने आहार एम होयरे ॥ मुनि० ॥ सु०
॥ सु० ॥ ज० ॥ ४ ॥ आदाना निक्षेपणा, समिति ले मूके
योगरे ॥ पारिष्ठापनीका कही, मल मूत्र नाखे उप
योगरे ॥ मल० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ ५ ॥ त्रण गुप्ति हवे
चित्त धरो, मन वचन काया करे शुद्धरे ॥ आठ प्रव
चन मातजे, मुनि धारे तेहीज बुद्धरे ॥ मुनि० ॥
॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ ६ ॥ क्रुधा पीपासा शीतजे, उष्ण
मंसा परीसह चेलरे ॥ रती स्त्रीयादिक ते वली, च
रीया निसिद्धियादिक मेलरे ॥ चरी० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज०
॥ ७ ॥ सखा आक्रोस वह जायणा, अलान रोग
तण फासरे ॥ मल सक्कार परीसहजे, पन्ना अन्नाण
समत्तरे ॥ पन्ना० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ ८ ॥ खंति मद्दव अ
क्कव, मुत्ति तव संजम मेहरे ॥ सच्चं सोहं अकिंचण,

ब्रह्मचर्य ए दशविध जेहरे ॥ ब्रह्म० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज०
 ॥ ए ॥ प्रथम अनित्यह जावना, अशरण संसार ए
 कत्वरे ॥ अन्यत्व जावना पंचमी, अशुची जावना त
 त्वरे ॥ अशु० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ १० ॥ आश्रव संवर
 निर्झरा, लोक बोधि दूर्लभ जावरे ॥ धर्म ध्यानते
 बारनी, एते नवजल जंतु नावरें ॥ एते० ॥ सु० ॥
 सु० ॥ ज० ॥ ११ ॥ पांच जेद चारित्रना, सामायि
 क ठेदोपस्थानरे ॥ परिहार शूद्र चारित्रजे, यथा
 ख्यातथी मोक्ष निदानरे ॥ यथा० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज०
 ॥ १२ ॥ यथाख्यात चरण जे आचरे, ते पामे मु
 क्तिनो ठाण रे ॥ मूंगर गुरुना ध्यानथी, विवेक लहे
 बहु नाणरे ॥ विवे० ॥ ज० ॥ सु० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥ बार प्रकारें तप तपे, निर्झरा जेहतुं ना
 म ॥ आत्म प्रदेशह ते थकी, कर्म पुजल खिरे ठाम ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ दुर्लभ चारित्र युक्तो समितिने
 युक्तो विश्वनो तारूजी ॥ ए देशी ॥

॥ पेहेलुं अनशन ते अन्न पाणी लेवे नही ॥ सोनागी ॥
 बली बछने अछम तप तेह जाणो सही ॥ सो० ॥
 पुरुषने बत्रीश कवल स्त्री अछावीश लहे ॥ सो० ॥
 नपुंसकने चोवीश कवल जिनवर कहे ॥ सो० ॥ १ ॥

इव्य क्षेत्र कालने जाव अनिग्रह जेवरे ॥ सो० ॥ जेम
 चंदनबाला वीरनो अनिग्रह पूरण करे ॥ सो० ॥ व्रती
 संक्षेप पण तप ए त्रीजो कह्यो ॥ सो० ॥ खट रस
 नो करे त्याग एह चोथो लह्यो ॥ सो० ॥ १ ॥ लोच करा
 वे अलुवाणे पर्गे संचरे ॥ सो० ॥ इत्यादिक जली
 नांतशुं काय कष्ट तप आदरे ॥ सो० ॥ पांच इंझी
 चार कषाय योगने सोधवा ॥ सो० ॥ स्त्रीयादिक सं
 सर्ग ते सर्वथी रोधवा ॥ सो० ॥ ३ ॥ षटविध बाह्य ए
 तप तुमे जाणवो ॥ सो० ॥ गुरु मुखथी लही जाव
 संदेह मन नाणवो ॥ सो० ॥ हवे षटविध अन्यंतर
 नवि तुमें सांजलो ॥ सो० ॥ धरीयें चित्तमां ए मूकीने
 मन आमलो ॥ सो० ॥ ४ ॥ पोतानी वातने लोकते
 नवि लहे ॥ सो० ॥ हेजा मांहे ते बहु कर्मने खेपवे ॥
 सो० ॥ पाप लाग्ना होय ते गुरु मुखथी आलवे ॥ सो० ॥
 इणीविध प्रायश्चित्त तपने जालवे ॥ सो० ॥ ५ ॥
 नाण दंसण चारित्रनो विनय घणो करे ॥ सो० ॥
 अरिहंत सिद्ध चैत्य विनय मनमां धरे ॥ सो० ॥ वै
 यावच्च तप त्रीजो प्रश्न व्याकरणे कह्यो ॥ सो० ॥
 चौदे जेदे वैयावच्च, गुरु मुखथी लह्यो ॥ सो० ॥ ६ ॥
 हवे चोथो तप सधाय, ध्यानने मन खरें ॥ सो० ॥

सिद्धांत वांचे पूढे सिद्धांतने नित गणे ॥ सो० ॥
 चिंतवे धर्मोपदेश दीयें नवि चित्तने ॥ सो० ॥ जेहथो
 पामे सवाय तप वित्तने ॥ सो० ॥ ७ ॥ समता जा
 वें मनने आणे ध्यानमें ॥ सो० ॥ निरामय निराका
 र अवस्था ज्ञानमें ॥ सो० ॥ शुक्ल ध्यानने ध्यावे रौ
 डने परिहरे ॥ सो० ॥ ए पांचमो तप नवियण चित्त
 धरें ॥ सो० ॥ ८ ॥ ब्रह्मो हवें काउस्सग तप आ
 दरे ॥ सो० ॥ क्रोध अने मान माया लोन ने परिहरे
 ॥ सो० ॥ ए अन्यंतर षट जेदने प्राणी मन धरो ॥
 सो० ॥ विवेक कहे नवियण नवसायर तरो ॥ सो० ॥ ९ ॥
 ॥ दोहा ॥ बंध तत्व दूरें तजो, बंधन ते नित्य मेव ॥
 गति ना दुःख पामे घणा, कहें श्रीजिनवर देव ॥ १ ॥
 ॥ ढाल नवमी कपूर होवे अती उजलो रे ॥ एदेशी ॥
 ॥ बंध तत्व हवें सांजलो रे, नवियण तुमे उमे
 द ॥ चार प्रकारें बंधवे रे, जापे जिन अवेद रे ॥ प्रा
 णी ॥ सांजलो तेह सुजाण ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥
 प्रकृतिबंध पहेलो कह्यो रे, सहावा कहेतां स्वनाव ॥
 स्थितिते काल ने जाणजो रे, एहिज एहनो जाव
 रे ॥ प्राणी० ॥ सां० ॥ २ ॥ अनुनाग बंधते शुं क
 हीयें रे, कटुक मीष्ट जेम रस ॥ प्रदेश बंध चोथो ह

वे रे, दल संचय जाणो तस रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥
 ॥ ३ ॥ ज्ञानावरणी कर्मनो रे; चक्रु बंधन जेह, दर्श
 न ते कहीयें बीजो रे, पोलीया सरिखो एह रे ॥
 ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ सां० ॥ वेदनी लित्त असी सारि
 खो रे, मोहनी मदिरा समान ॥ हेड सरिखो आयु
 जाणीयें रे, चितारा सरिखो नाम रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥
 ॥ ५ ॥ गोत्रते कुंनार जेहवो रे, जंमारी सम अंतरा
 य ॥ आठ करम नाव जाणजो रे, जेहथी दुर्गति
 जाय रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ ६ ॥ नाण दंसण वेयणी
 अंतरायनुं रे, त्रीश कोडाकोडी मान ॥ मोहनी
 सीतेर कोडाकोडीनो रे, सागर एह निदान रे ॥
 ॥ प्रा० सां० ॥ ७ ॥ वीश कोडाकोडी नाम गोत्रनो
 रे, आयु अयर तेंत्रीश ॥ काल उत्कृष्ट पुरो थयो रे,
 नाखे श्रीजगदीश रे ॥ प्रा० सां० ॥ ८ ॥ जघन्य का
 ल हवे कहुं रे, आठ कर्मनो जेह ॥ वेदनी करमनो
 जाणीयें रे, बार मुहूर्त कह्यो एह रे ॥ प्रा० ॥
 ॥ सां० ९ ॥ नामकर्म गोत्र कर्मनो रे, आठ मुहूर्त
 तिम होय ॥ पांच कर्मनो आगल कहे रे, जघन्य
 काळ स्थिति जोय रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ १० ॥
 ज्ञानावरणी कर्मनी रे, दर्शनावरणी अंतराय ॥ मोह

नी आयु कर्मनी रे, अंतर मुहूर्त कहेवाय रे ॥ प्रा०
॥ सां० ॥ ११ ॥ आठ कर्मथी अजगा रहो रे, जिम
लहो सुख निरवाण ॥ मूंगर गुरु ना पद थकी रे,
विवेकने कोड कल्याण रे ॥ प्रा० सां० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥ बंध तत्व पूरण थयो, मोक्ष तत्व सुवि
चार ॥ तेमाटे नवियण तुमे, आराधो हितकार ॥ १ ॥
॥ ढाल दशमी नविका सिद्धचक्र पद वंदो ॥ एदेशी ॥

॥ ठता पदनो प्रथम प्ररूपण, इव्य प्रमाण ए
बीजो ॥ खेत्र प्रमाण ते त्रीजो जाणो, फरशना दारें
रीजो रे ॥ प्राणी ॥ मुक्तिपद आराधो, आराधी शिव
साधोरो ॥ प्राणी ॥ मुक्ति० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥
काल दार ते पांचमो शुणीयें, अंतर ठछो धीर ॥
सातमों जागने आठमो जाव, अल्प दार कहे वीर
रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ २ ॥ चारगति मांहे मनु
ष्य गतियें, मोक्ष होवे निरधार ॥ पांच इंडी मांहे पं
चेंडीथी, शिवपद लहे सुखकार रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति०
॥ ३ ॥ पृथिवी आदि पांचे थावर, एहने मोक्ष न
लहीर्यें ॥ त्रस कायथी मोक्षें जावे, एह आणा सब
हीर्यें रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ ४ ॥ नव्य अने अनव्य
ए दो विध, नव्यने होय शिव ठाणा ॥ सन्नी अस

त्री वे पद मांहे, सन्नोउ लहे निरवाण रे ॥ प्राणी०
 ॥ मुक्ति० ॥ ५ ॥ चारित्र पांच प्रकारें जाण्या, श्री
 जिन आगम माहिं ॥ यथाख्यात चारित्रें ते मोक्ष,
 बीजे चरणे मोक्ष नाहिं रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ ६ ॥
 पांच प्रकारें समकित जाणो, पंचांगीना जाण ॥ बी
 जे समकितें नवि लहीयें, द्वायके मोक्ष होय नाण
 रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ ७ ॥ आहारते नव मांहे न
 माडे, अणाहार दीये मोक्ष ॥ दर्शन चार कल्या जि
 नराजें, केवल मोक्षने मांहे रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ ८ ॥
 मति अने श्रुत अवधि ज्ञान, मनपर्यव ते जोवे ॥
 केवल ज्ञानथी केवल ज्योति, प्रथम द्वार एम होवे
 रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ ९ ॥ सिद्धना जीव इव्य अनंता,
 अनंता जीव सिद्धि पाण्या ॥ लोकने असंख्यातमें जा
 गें, सिद्धते सवि दुःख वाम्या रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ १० ॥
 खेत्रथी फरशना अधिकी जाणो, एक आकाश प्रदेशों ॥
 एक सिद्ध आश्रीत आदि ठे, अनंते अनादि रे
 ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ ११ ॥ पडवाना अजावथी जा
 णो, अंतर सिद्धने नही ॥ सर्व जीवने अनंतमें जागें,
 सिद्ध रह्या सुची सही रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ १२ ॥
 द्वायिकने परिणामिक जावें, वे जावें होवे सिद्ध ॥

सर्व थकी थोडा नपुंसक, संख्यात गुणी स्त्री सिद्ध
 रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ १३ ॥ तेहथी संख्याता पुरु
 षज जाणो, समये नपुंसक दश ॥ स्त्री सीजे एक स
 मयें वीश, पुरुष अष्टोत्तर इशरे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ १४ ॥
 अल्प बहुत्व ए नवमों द्वार, कह्यो गुरु मुखथी में
 आज ॥ मूंगर गुरु पद कमलनो सेवक, विवेकना सी
 धा काज रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ १५ ॥

॥ ढाल अगीआरमो धनाश्रीरामें गिरुआरे गुण
 तुम तणा ॥ ए देशी ॥

॥ हवे पंदर जेद सिद्धना, वरणवुं ते सुखकारी
 रे ॥ जिण सिद्ध ते अरिहंतजो, पुंरुकि अजिण ब
 लिहारी रे ॥ वारी जावुं हुं सिद्धनी ॥ ए आंकणी
 ॥ १ ॥ वहेर मान ते तीर्थ सिद्ध, अतीर्थ सिद्ध म
 रुदेवी माय रे ॥ गृहस्थावासें कुर्मापुत्र सीधा, अ
 न्य लिंगे बलकल शिव जाय रे ॥ वारी० ॥ २ ॥ स्व
 लिंगें साधु ते सिद्ध कह्या, स्त्री लिंगें चंदन बाला
 रे ॥ पुरुष लिंगे गौतम जाणवा, नपुंसक लिंगें गंगे
 या रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ प्रत्येकबुध ते नमि थया, पो
 तानी मेले स्वयंबुद्ध रे ॥ बुद्ध बोधित सिद्ध ते उपदे
 शें, जरतादिक बुध बोधि रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ एक जी

वते एक सिद्ध ठे, घणा सिद्धे अनेक रे ॥ इम पंदर
 जेद सिद्धना, वरणव्या सुविवेक रे ॥ वा० ॥ ५ ॥
 जीवादिक नव तत्वने, प्राणी सदहे जे जावें रे ॥ ते
 नर समकित सुरतरु, पामीने शिव जावे रे ॥ वा०
 ॥ ५ ॥ जीव संवर निर्झरा मोह, ए चारे होवे अ
 रूपी रे ॥ बंध आश्रव पुण्य पाप जे, एहने कहीयें
 रूपी रे ॥ वा० ॥ ७ ॥ मिश्र जावें अजीव ठे, बंध
 आश्रव पुण्य पाप रे ॥ ए चारेने ठांनवा, जेहथी ल
 हे प्राणी संताप रे ॥ वा० ॥ ८ ॥ जीव अजीव बे
 जाणवा, संवर निर्झरा मोह रे ॥ आदरवा ए त्रण
 तत्वने, प्राणी लहे शिव शर्म रे ॥ वा० ॥ ९ ॥ काल
 अनंत गये जिन मार्गे, सिद्धनीष्टा उद्धासैं रे ॥ गो
 लाने अनंतमें जागें, सिद्ध थया सुविलासैं रे ॥ वा०
 ॥ १० ॥ ए नव तत्व तणा गुण गाया, दिन दिन
 चढत सवाया रे ॥ श्रीविजय मूंगर गुरु सुपसाया,
 विवेकने नित सुख दाया रे ॥ वा० ॥ ११ ॥

॥ कलश ॥ जगजंतु तारण, दुःख निवारण, आ
 दि जिनवरमें धुण्यो ॥ संवत अठार बहोतेरा वर्षे, न
 बिक हित हेतें नण्यो ॥ दमण पूर्व विजय दशमी,
 आश्विन मास सु पक्ष ए ॥ सुरगुरु वारें सुखविधा

रें, कहे कवी जन दहए ॥ १ ॥ तपगञ्ज राजे, बडे
 दीवाजे, श्रीविजय दया सूरिसरू ॥ तस चरण सेवि
 मुक्ति विजय, नविक जन मन सुखकरू ॥ तस शि
 ष्य सुंदर गुण पुरंदर, पंढित मूंगर मुणिंदए, तस
 शिष्य सेवक नणे नावें, विवेक लहें आणंदए ॥ २ ॥
 इति नवतत्व स्तवन समाप्त ॥

॥ अथ श्री जिनदासजी कृतधन ॥

॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकार, उनसे उतरोगे
 नवपार ॥ होए तेरी कायाको आधार, सफल करले
 अपनो अवतार ॥ ध्यान तुम मनमें धरो नरनार, खा
 ए दुःखकीयह हे संसार ॥ करो प्रभु न्याल अवे जि
 नदाश, रखो प्रभु मुऊ चरणोंके पास ॥ १ ॥

॥ सरकजा कुमति नार काली, तेरी संगतसे गइ
 लाली ॥ सोबत समताकीमें टाली, आतमा तपमें
 नही घाली ॥ अनंत जब बीत गया खाली, वेदना
 निगोदकी जाली ॥ अमरपद जिनदास मागे, सदा
 पद प्रभुजीकुं लागे ॥ २ ॥

॥ शीश नित नमुं नानिनंदन, चरण पर चडे के
 सर चंदन ॥ करत सब इंद्रादिक बंदन, कटत हे क
 रमोका फंदन ॥ साथ्यो तें शिवपुरको साधन, सर्व

(३९१)

जीवनकुं सुख कंदन ॥ जिनंद गुण जिनदास गावे,
शीश चरणोंसें नमावे ॥ ३ ॥

॥ बोलत हैया मेरा हसकर, चढावुं चंदन चूवा
घसकर ॥ पेठा में धर्मोंमें धसकर, पाप दल दूर गया
खसकर ॥ चेतन हुवा खडा कमर कसकर, हठाया
कर्मोंका लसकर, ॥ श्रीजिनराज जिहाऊ खासा, श
रण जिनदास लीया बासा ॥ ४ ॥

॥ समज मन मेरा मतवाला, तुंजें नहिं कोइ ह
टकणवाला ॥ वस्या तेरे दर्ईए कुगुरु काला, दियातें
सुरगतिकुं ताला ॥ फेरतो ममताकी माला, बालतो
जगवंत पर जाला ॥ दयाकुं दे दिया ताला, देखो
जिनदासका चाला ॥ ५ ॥

॥ कीया में गणधर प्रेमपती, मुजे वरदायक हे स
रसती ॥ करी निर्मल निर्धैथ मति, पूठ पर खडे जा
गता जति ॥ मुजे बलवंत नइ सोलसती, मिटी मेरी
डुर्गतकी सबगति ॥ ऐसा घन जिनदास गावे, अच
ल पद नक्तिसें पावे ॥ ६ ॥

॥ बीकट घट डुरगतका नारी, नीर जिहां जरती कु
मति नारी ॥ बरबी उन नैनोंकी महारी, मूढ्या केइ
कामी संसारी ॥ इनोंकी हों रइ खुआरी, जींत्या को

इ सत धरमधारी ॥ प्रभु तुम परमारथ पाया, शरण
अब जिनदास आया ॥ ७ ॥

॥ चेत नर निगोदका बासी, कराइ जगमें तें हा
सी ॥ कुमतिकी पड़ी गले फांसी, सुमतिसुं रखी हे
उदासी ॥ कुमतिकी बसी सेज खासी, मान रह्यो मम
ताकूं मासी ॥ हीयो खोल अरिहंतकों परखो, करो
जिनदास आप सरखो ॥ ८ ॥

॥ अफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी न
ही मानी ॥ कीया नही गुरु निग्रंथ ग्यानी, कानसें
लगी कुमति रानी ॥ जगतमें उतर गया पानी, गति
तेरी दुरगतिकी ठानी ॥ सेवक तोरा जिनदास बाजे,
सुधारोंगे तुमही काजें ॥ ९ ॥

॥ सफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी तें
मानी ॥ किया निज गुरु निर्ग्रंथ ग्यानी, कानसें ल
गी सुमति रानी ॥ जगतमें अधिक चढ्यो पानी, ग
ति तेरी सुरगतिकी ठानी ॥ सेवक तेरा जिनदास बा
जे, सुधारोंगे तुमही काजें ॥ १० ॥

॥ अथ लावणी पहेली ॥

॥ चल चेतन अब उठकर अपने, जिनमंदिर ज
इयें ॥ कीसीकी चूंमीना कहियें, कीसीकी बूरीना क

हीयें ॥ चल० ॥ ए आंकणी ॥ चरण जिनवरजीका
 जेठया ॥ चर० ॥ नवनव संचित पाप करम सब,
 तन मनका मेठया ॥ सुकृत कीजें, महाराज ॥ सुकृत० ॥
 जिनरवका गुण नज लीजें, समकित अमृत रस पी
 जें, लानजिन नक्तिको लहीयें रे ॥ लान० ॥ चल०
 ॥ १ ॥ करोजी मत मुखसें बडाइ ॥ करो० ॥ तज
 तामस तन मनकी सुमता, सें रेनां जाइ ॥ रीतसें
 बोलो, मेरी जान ॥ रीत० ॥ आतम समतामें तोलो,
 मत मरम पारका खोलो, मौन कर तन मनसें रही
 यें रे ॥ मौन० ॥ चल० ॥ २ ॥ जोबन दिन चार
 तणो संगी रे ॥ जोबन० ॥ अंत समय चेतन उठ
 चाले काया पडि नंगी ॥ प्रीत सब तूटी, मेरी जान
 प्रीत० ॥ आउखाकी खरची सूटो, चेतनसें काया रू
 ठी, सुख दुःख आप किया सहियें रे ॥ सुख० ॥
 चल० ॥ ३ ॥ जगतसें रहेनां उदासी रे ॥ जग० ॥
 परख्या में जिनराज, हरो मेरी डुरगतकी फांसी ॥ त
 जो सब धंधा, मेरी जान ॥ तजो० ॥ जिनवर मुख
 पूनम चंदा, जिनदास तुमारा बंदा, मेरे एक जिन द
 रशन चाहियें रे ॥ मेरे० ॥ चल० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ सीखामएनी लावणी बीजी ॥

॥ तुम नजो जिनेसरदेव, सुगति पदपाइ ॥ सुग० ॥
 अब अचल अखंति ज्योत, सदा सुखदाइ ॥ एअ
 कणी ॥ में रुदयो चोरासी मांहे, नूदयो में नरम ॥
 नूदयो० ॥ महारे उदये अनंता दुःख, बांध्या जब
 करम ॥ में कदियेक हूउ रंक, फिखो तजी शरम ॥
 फिखो० ॥ अरु कदियेक राजा नयो, गरयकी गरम ॥
 जब गरव आणकर बोदयो, पारका मरम ॥ पार० ॥
 पण निरमल जुगमें जैन, कीयो नही धरम ॥ अब
 मनख जनममें चेत, घडी सुन आइ रे ॥ घडी० ॥
 अब० ॥ १ ॥ में सुर नरका सुख वार, अनंती पाया
 अनं० ॥ महारे शिव समताका सुख, हाथ नही आ
 या ॥ में कुगुरुने कृदेव, जला कर ध्याया ॥ जला० ॥
 में उलज्यो अनादि अग्यान, विषय जोग जाया ॥
 में पडयो लोचके फंद, जोडतो माया ॥ जोड० ॥ प
 ण लग्यो अंत जब आय, कालने खाया ॥ अब प
 रिहर सब परमाद, धर्मकर नाइ रे ॥ धर्म० ॥ अब०
 ॥ २ ॥ अब डुरलन अवसर लही, तूं सुरुत कर
 रे ॥ तूं सुरु० ॥ अब दान शीयल तपनाव, हीया में
 धर रे ॥ तूं करमकी माला काट, पाप परिहर रे ॥

पाप० ॥ अब बारंवार कहूं तोहे, जगतसें तर रे ॥
 तुं निरमल नयणें देख, नरकसुं मर रे ॥ नर० ॥ तुं
 शीख सुगुरुकी मान, अग्यानी नर रे ॥ अब पर त्रि
 याकर जान, बेनने माइ ॥ बेन० ॥ अब० ॥ ३ ॥
 अब जिनवर मुज मन जायो, सदा गुण गाउं ॥
 सदा० ॥ अब इतनी किरपा करो, नरक नहीं जाउं ॥
 अब जव जव मांही देव, जिनेसर पाउं ॥ जि० ॥ में
 मन वच काया करी, चरण चित्त लाउं ॥ ए दया ध
 रम हितकार, सदा में चाउं ॥ सदा० ॥ ए चोरासी
 के मांहे, फेर नहीं आउं ॥ युं अरज करे जिनदास,
 कीरत ए गाइ ॥ कीरत० ॥ अब० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ सीखामणनी लावणी त्रीजी ॥

॥ कब देखुं जिनवर देव, जगत गुरु ग्यानी ॥
 जग० ॥ कोइ आप समो नहीं उर, जो अंतरध्यानी ॥
 ए आंकणी ॥ अब विषम वन संसार, जगतमें नट
 क्यो ॥ जग० ॥ मुजे अनमत ने लेजाय, नरकमें प
 टक्यो ॥ अब लहुं दरिशन जिनवरका, उं दिन कब
 उगे ॥ उ० ॥ मुज मनकी वंछित आस, अधिक सब
 पूगे ॥ अब जिनदरशन बिन नयन, जरे मुज पानी ॥
 जरे० ॥ कोइ० ॥ १ ॥ थारे कुगुरुको उपदेश, ही

यामें ढायो ॥ हिया० ॥ पण सरस जेद समकितको,
 जीव नही पायो ॥ अब जैनधर्म निज माज, मूरख
 मत खोवे ॥ मूरख० ॥ ए सुमति सुरगको पंथ, अ
 मर गत होवें ॥ अब दूर्जन जिन नक्तिकी, लही नि
 ज टानी ॥ लही० ॥ कोइ० ॥ २ ॥ अब सुरनर गा
 वे गीत, अब जड लागी ॥ अब० ॥ जिहां ना
 चत नृत्य अनेक, अजसकूं त्यागी ॥ अब मोहत म
 न नरपतिका, गगनधुनि गरजे ॥ गग० ॥ ए जिनवर
 मंहिमा अनंत, ध्यान दीज धरजे ॥ एसी अधिक ठ
 बी जिनजीकी, मेरे मन मानी ॥ मेरे० ॥ कोइ० ॥ ३ ॥
 अब जिन चरणोंसें रंग, अधिक दीज लागो ॥ अ० ॥
 में पेहेछो जिन गुण अब, सुरंगी वागो ॥ आ सफ
 ल घडी समकितकी, हाथ अब आइ ॥ हाथ० ॥ में
 गगन गमनकी पांख, अमूलक पाइ ॥ अब बोजतयुं
 जिनदास, सुनो जिनबानी ॥ सुनो० ॥ कोइ० ॥ ४ ॥
 ॥ सीखामणनी लावणो चोथी ॥

॥ एक जिनवरका निज नाम, होया में लेनां ॥
 हिया० ॥ अब लगी लगन जिनवरसें, आप खुश
 रेनां ॥ सदा खुश रेनां ॥ ए आंकणी ॥ अब निरखुं
 जिन दिदार, दरस कब पाउं ॥ दर० ॥ जगमें जिन

वर निज नाम, निरंजन ध्यावें ॥ अब रहे नयन लो
 नाय, हीयो नित फरके ॥ हियो० ॥ मोहे जिनदर्श
 नकी आस, पाप सब सरके ॥ अब सुरपति निरखत
 रूप, नजर नर नेनां ॥ नजर० ॥ अब० ॥ १ ॥ अब
 मिटयो मरण जब जबको, आस मुज पूरो ॥ आस० ॥
 में जपुं जिणंदको नाम, मेलुं नही दूरो ॥ ए घनघा
 ति घाले घेर, करम सब चूरो ॥ कर० ॥ में दुरगति
 नमतां आयो, आप हजूरो ॥ अब गुन नजरां मुज
 निरख, मुगति पद देनां ॥ मुग० ॥ अब० ॥ २ ॥ अब
 हे हीराकी खान, ग्यान निज करणी ॥ ग्यान० ॥ ए
 मुगति पंथ दातार, सुमतिकी घरणी ॥ अब गुल
 ध्यानकी पेडी, चढा नीसरणी ॥ चढा० ॥ ऐसा जगमें
 संत सुजान, मुगति पद वरणी ॥ अब आपो मया
 करकर कें, अमर सुख चेनां ॥ अमर० ॥ अब० ॥ ३ ॥
 अब बैठ करुं में मोज, आनंद के घरमें ॥ आ० ॥
 में परख्या श्रीजिनराज, जगतकुण नरमें ॥ में
 दुःख जोगताहे अनंत, करे कुण लेखो ॥ करे० ॥ में
 अरज करुं तन मनसें, नजर नर देखो ॥ अब बोजत
 युं जिनदास, सरव रसबेनां ॥ सरव० ॥ अब० ॥ ४ ॥

॥ उपदेश लावली पांचमी ॥

॥ खबर नहीं आछुगमें पलकी रे ॥ खबर० ॥
 सुकृत करना होय तो करले, कोन जाने कलकी ॥
 ए आंकणी ॥ यादोस्ती हे जगवासकी, काया मंगल
 की ॥ काया० ॥ सासउसास समरले साहेब, आयु
 घटे पलकी ॥ खबर० ॥ १ ॥ तारा मंगल रवी चंझ
 मा, सब हे चलनेकी ॥ सब० ॥ दिवस चारका च
 मत्कार ज्युं, बीजलिया जलकी ॥ खबर० ॥ २ ॥
 कूड कपट कर माया जोड़ी, करि बातां ठलकी ॥
 करि० ॥ पापकी पोटली बांधी सिरपर, कैसे होय ह
 लकी ॥ खबर० ॥ ३ ॥ या जुगहे सुपनेकी माया,
 जैसी बुंदा जलकी ॥ जैसी० ॥ विणसंता तो वार न
 लागे, डुनीया जाय खलकी ॥ खबर० ॥ ४ ॥ मात
 तात सुत बंधव बाइ, सबजुग मतलबकी ॥ सब० ॥
 काया माया नार हवेली, ए तेरी कबकी ॥ खबर०
 ॥ मन मावत तन चंचल हस्ति, मस्ति हे बलकी ॥
 मस्ति० ॥ सतगुरु अंकुश धरो शिसपर, चल मारग स
 तकी ॥ खबर० ॥ ६ ॥ जबलग हंसा रहे देहमां,
 खुसीयां मंगलकी ॥ खुसी० ॥ हंसा ठोड चल्या जब
 देही, मटीयां जंगलकी ॥ खबर० ॥ ७ ॥ दया धरम

साहेबको समरन, ए बातां सतकी ॥ ए बातां०॥ राग
 क्षेप उपजे नही जिनकुं, बिनती अखमलकी ॥ ख०॥७॥

॥ सुमति कुमतिनी लावणी ठही ॥

॥ हारे तुं कुमति कलेसण नार, लगी क्युं कडे
 ॥ लगी० ॥ चल सरक खडी रहे दूर, तुजे कुण ठे
 डे ॥ ए आंकणी ॥ हारे तुं सुमतिको जरमायो, मुजे
 क्युं ठोडी ॥ मुजे० ॥ मेरी सदा शाश्वती प्रीत, ठी
 नक में तोडी ॥ तुज बिन सुन मेरी सेज, कहुं कर
 जोडी ॥ कहुं० ॥ उठ चलो हमारे संग, सुखे रहो
 पोहोडी ॥ युं जूर जूर कुमति आंसु, आंखसें रेडे
 ॥ आंख० ॥ तुं कुमति० ॥ चल० ॥ १ ॥ हारे तेरी
 नरक निगोदकी सेहेज, संतिमें रूठयो ॥ संति० ॥
 पकडयो साचो जिनराज, संग तेरो बूटयो ॥ तेरी
 मूरख माने बात, हैयाको फूटयो ॥ हैया० ॥ में स
 हेज हुवो हुं दूर, तार तेरो बूटयो ॥ तुं कर दूरसें
 बात, आव मत नेडे ॥ आ० ॥ च० ॥ २ ॥ ते
 री अनंत कालकी प्रीत, पलक नहीं पाली ॥ पलक० ॥
 सुमतिके लागो संग, मुजे क्यों टाली ॥ तुं सुमतिको
 सिरदार, सुणावे गाली ॥ सु० ॥ तेरी हम दोनु हे
 नार, गोरी और काली ॥ तूं हमकुं ठेले दूर, सुमतिकुं

तेडे ॥ सुम० ॥ चल० ॥ ३ ॥ अब कुमतिको लल
चायो, रति नहीं मगीयो ॥ रति० ॥ सुन कर सूत्रकी
शीख, साच होय लगीयो ॥ चेतन कुमतिके सेहेज
दूर सुं जगीयो ॥ दूर० ॥ जिनराज बचनको ग्यान,
हैयेमें जगीयो ॥ जिनदाश कुमत तुं बात, खोटी म
त खेडे ॥ खोटी० ॥ चल सरक० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ उपदेश लावणी सातमी ॥

॥ तुम तजो जगतका ख्याज, इसकका गाना ॥
इस० ॥ तेरी अल्प उमर खुटजाय, नरक उठ जा
ना ॥ ते दिनो चार जुग बीच, जिया हे वासा ॥
जिया० ॥ तेरे सिरपर बेठा काल, करे हे हासा ॥
में बोलुं साची बात, जूठ नही मासा ॥ जूठ० ॥ तुं
सूता हे कुण निंद, किसी कर आसा ॥ अब सेव दे
व जिनराज, खलकमें खासा ॥ खल० ॥ तेरा जोब
न पतंगका रंग, जूठ सब आसा ॥ अब हीये धरो
मेरी सीख, समज रे दीवाना ॥ सम० ॥ तुम० ॥ १ ॥
अब बुरी जली सब बात, मौनकर रीजें ॥ मौन० ॥
ए मुख मीठा संसार, जेद नही दीजें ॥ कर वीतरा
ग विसवास, हीये धर लीजें ॥ हिये० ॥ पण नीच ना
रका संग, मांहेँ मत जीजें ॥ अब सात विसनको सं

ग, प्रीत मत कीजे ॥ प्रीत० ॥ तोहे डुरगत दे पहो
चाय, तेरो तन ठीजे ॥ तुं सुख डुरवका सिरदार, रं
क नही राणा ॥ रंक० ॥ तुम० ॥ २ ॥ तुं बीसर ग
या जुग बीच, नाम जिनवरका ॥ नाम० ॥ पच रह्या
कुटुंबके काज, कीया फंद घरका ॥ तें दया धरम बि
न खोया, जनम सब नरका ॥ जनम० ॥ तें पछ
बांध्या पाप, कसाइ सरखा ॥ अब लीया नही तें ला
ज, बखत पर करका ॥ बखत० ॥ तेरी वीति बात
सब जाय, जनम जुं खरका ॥ अब सुणो सीख सू
तरकी, सुलट रे शाणा ॥ सुल० ॥ तुम० ॥ ३ ॥
तेरी चरण सेहेज पर पोढ्या, आनंद दील आया ॥
आनं० ॥ मेरी जगी नूख सब प्यास, सुधारस पाया ॥
मेरे सिरपर तुम सिरदार, जिनेसर राया ॥ जिने० ॥
में चाउं चरणकी सेव, सफल कर काया ॥ अब द्यो
दोजत दरसनकी, मेरे एही माया ॥ मेरे० ॥ युं अर
ज करे जिनदास, अलप गुन गाया ॥ अब बुरा कु
गुरु उपदेश, धरो मत काना ॥ धरो० ॥ तुम० ॥ ४ ॥

॥ उपदेश लावणी आठमी ॥

॥ सुगुरुकी शीख ह्ये धरना रे ॥ सुगुरु० ॥ अ
मरापुरको पंथ सदा, श्रीजैनधर्म करना ॥ सु० ॥ ५

रम परमारथ नें टालो रे ॥ पर० ॥ सार जगतमें जै
 नधरम, जुगतिसें नही पालो ॥ प्रचुको नाम नही
 लीनो रे ॥ प्रचु० ॥ महा हलाहल विषय विकट,
 मिथ्या मतसें जीनो ॥ चेतन सुं बहुविध दुःख पावे
 रे ॥ चेत० ॥ लपटयो जालच मांहे पांच, इंडीके सुख
 चावे ॥ जीव अब पाप परिहरना रे ॥ जी० ॥ अमरा
 पुर० ॥ १ ॥ दया चेतनकुं सुखकारी रे ॥ दया० ॥ श्री
 जिनराज परूपी जैसी, केसरकी क्यारी ॥ जगतमें तीर
 थ हे चारीरे ॥ जग० ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका,
 दुआ व्रतधारी ॥ इन्कूं कहिये ब्रह्मचारी रे ॥ इन्० ॥
 समता संयम सार करीने, कर्म हण्वा जारी ॥ इनुंने
 मेटया जनम मरणां रे ॥ इनुं० ॥ अमरा० ॥ २ ॥ पं
 च इंडियसें लपटायो रे ॥ पंच० ॥ दुख अनंतां सह्यां
 रे बहुलां, प्राणी पठतायो ॥ बहु दुर्गतिमें जमि आ
 यो रे ॥ बहु० ॥ गुन मंत्र नवकार सार, दुर्जन अब
 में पायो ॥ मेरो मन जिनवर सुं जायो रे ॥ मेरो० ॥
 कुगुरुको सब संग अगुन, मिथ्या मत ठटकायो ॥ इ
 नविध नवजलसें तरना रे ॥ इन० ॥ अ० ॥ ३ ॥ र
 हो जिनवाणी में राता रे ॥ रहो० ॥ अनंत सुखकी
 खाण, सदा शिव मंगलकी दाता ॥ सदा जिनवर न

क्ति करजो रे ॥ सदा० ॥ चित्त धारी दैयामे नवि तुम,
पाप परां हरजो ॥ अल्प जिनवरका गुण गाया रे ॥
अल्प० ॥ कर जोडि जिनदास कहे, जिन नक्तिसे न्हा
या ॥ सदा में चाहुं जिन चरणां रे ॥ सदा० ॥ अम
रापुरको पंथ सदा० ॥ ४ ॥ इति

॥ अथ चोवीस दंमकनो स्तवन प्रारजः ॥

॥ दोहा ॥ वंदी जिनचोवीशने, तसु नाषित श्रुतजेद ॥
दंमक पद कही तसु शुणु, अहो नवि सुणो उमेद ॥ १ ॥

॥ ढाल पहेली नटीयाणीनीदेशी ॥

॥ साते नरकें एक, नवनपतिदस दंमकहो ॥ पुढ
वीआदि पंच जाणीया, विकलेंडीना त्रण ॥ गर्नज
तिरियंचने नरहो, व्यंतर जोईस वेमणीया ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ जरूखे बीजली होलाल ॥ एदेशी ॥

॥ जीवदंमाए ज्याहि दंमक नाम जेहनुं होलाल ॥
॥ दंमक० ॥ संक्षेपें लवलेस संग्रह करुं तेहनो हो
लाल ॥ संग्रह० ॥ नरकादिक चोवीस दंमक पद जे
लहे होलाल ॥ दंमक० ॥ दंमाये नही तेह वाचक
उदये कहे होलाल ॥ वाच० ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी गौतम समुझ कमार रे ॥ एदेशी ॥

॥ शरीरने शरीरनुं मानरे, संघयणने संज्ञा, संस्थान

कषाय लेश्या बली ए ॥ इंडीयने समुद्गधात रे, दष्टी
ने दरशन्न, ज्ञान अने योगा बलीए ॥ १ ॥ उपयोगने
उपपात रे, चवन स्थिति पर्यापति ॥ आहारने संज्ञा
त्रिकए ॥ गति आगति वेद अल्परे, द्वार चोवीशए,
दंभक प्रत्ये नणो नविए ॥ २ ॥

॥ द्वारपहेलो ॥ ढाल चोथी ॥ सिद्धचक्र पदवंदो ए देशी ॥

॥ गर्भज तिर्यंच वातकायने, शरीर कहाळे चा
र ॥ औदारिक वैक्रिय तेजस कार्मण, नरने पांच नि
रधार रे, श्रोता द्वार एणी परें जाणो ॥ बीजा सर्वेने
त्रण जाणो, आगम मनमां आणो रे ॥ श्रोता ॥ १ ॥
॥ द्वार बीजुं ॥ ढाल पांचमी सोरठी चालमां ॥ वनस्प
तिविण थावर चार, तनु जघनोत्कृष्ट विचार ॥ अंगु
लनुं असंख्यातमो नाग, वदे मान एहवुं वीतराग ॥
॥ १ ॥ बीजे पण दंभक बीजें, जघन्य एमज कहाँ
जगदीसें ॥ उत्कृष्टं कहुं हवे आगें, धनुष पांचजें ना
रकी नागें ॥ २ ॥ सुरने सात हाथ वखाणु, जोयण
सहस गर्भज तिरिय जाणु ॥ वनस्पतिने जाजेरूं, त्र
ण गाठ नर तेंडि नजेरूं ॥ ३ ॥ बेंडी चोरिंदि बार
एक, जोयण जाणो सुविवेक ॥ देह उंचपणे ए न
णीउं, वैक्रिय सूत्रें ईम शुणीउं ॥ ४ ॥ अंगुजनो असं

ख्यातमो जाग, प्रारंज समय लहो जाग ॥ सुरनरने
साधिक लाख, जोयण नवसें तिरिय सु जाख ॥ ५ ॥
मूलथी नारकीने बमणुं, अंतर मुहूर्त रहे एम पनणु ॥
तिरि नरने मुहूर्त चार, देवने एक पक्ष उदार ॥ ६ ॥
॥ द्वारत्रीजुं ॥ ढाल ठछी ॥ रह्योरे अवास डुवार ॥ एदेशी ॥

॥ वज्र कृष्णनाराच, कृष्णनाराच रे, नाराच
अर्धनाराचठे रे ॥ किजिका ठेवतुं ए सूत्रे, जिनवर
देवें रे, संघयण ठ जाख्या अठेरे ॥ १ ॥ आवर
नारकी देव, असंघयणा रे, ठेवछा विकल्लेडीयारे,
मनुष्य अने तिर्यंच, ठ संघयणा रे, समय विषे नि
वेदीया रे ॥ २ ॥

॥ द्वार चोथुं ॥ ढाल सातमी ॥ वृषजानु नवने गई दूती

॥ ए देशी ॥ चार दश संज्ञा दुए सहूनी, आहार
जय मैथुन परीग्रहनी ॥ क्रोध मान माया लोन लोक,
उध दशमी संज्ञा थोक ॥ १ ॥

॥ द्वार पांचमुं ॥ ढाल आठमी ॥ सेलामारूनी देशी ॥

॥ समचतुरस्त्रहो न्यग्रोध निसादिक, वामन कू
ब्ज हो हुंफक ए ठ कह्या ॥ सर्वे सुरने हो पहेलु
होय संस्थान, नर तिर्यंच मांहे सघलां लहया ॥ १ ॥
विकल्लेडीहो नरकमां हुंफक होय, नाना विध वज

सूई बुब वणसई ॥ वाउ तेउहो थप चउकें ए चार,
पुढवी मसुर चंदाकारें कही ॥ २ ॥

॥ द्वार ठहुं ॥ ढाल नवमी ॥ सिरोईनो सेलोहोके एदेशी ॥

॥ क्रोध मान माया होके, बली लोच सूत्रें लह्या ॥
दंमक चीवीरों होके, कषाय ए चार कह्या ॥ १ ॥

॥ द्वार सातमुं ॥ ढाल दशमी ॥ देखीकामिनी दोय एदेशी ॥

॥ कृष्ण नील कापोत तेजो, पद्म शुक्ल कही
रेके ॥ पद्म ० ॥ ए ठ लेश्या नर तिर्यच गर्नजमां लही
रेके ॥ गर्न ० ॥ १ ॥ नारक तेऊ वाउके, विगल वेमाणी
यां रेके ॥ त्रि ० ॥ त्रण त्रण लेश्यावंतके, नीच उच्च
जाणीयां रेके ॥ नीच ० ॥ २ ॥ ज्योतषी पांचे मांहे, तेजो
लेश्या घणी रेके ॥ तेजो ० ॥ बाकी चउद दंमकें चार,
लेश्या सूत्रें जणी रेके ॥ लेश्या ० ॥ ३ ॥

॥ द्वार आठमुं ॥ ढाल अगीआरमी ॥ बिमलीनी देशी ॥

॥ आठमुं इंडीय द्वार, ठे सुगम तेहनो विचार
हो ॥ जो नवि जावें लहो ॥ जेहने इंडीय होये जे
ती, तेमज गणी लेजो तेतीहो ॥ जो नवि ० ॥ १ ॥

॥ द्वार नवमुं ॥ ढाल बारमी ॥ फतमलनी देशी ॥

॥ वेदना कषायने मरण, वैक्रिय तेजस बली ॥
आहारकने केवली सातें, ए लहो मननी रली ॥ १ ॥

संझी नरने होये सात, तिरि सहु सुर पदें ॥ आहार
कने केवल वर्जित, पांच आगम वदें ॥ १ ॥ नारक
वाउमां पहेलां चार, बाकी सात दंमकें ॥ वेदनादि प
हेला त्रण होय, कह्या श्रुतमां जिके ॥ ३ ॥

॥ द्वार दशमुं ॥ ढाल तेरमी ॥ प्रभु ताहारो प्रभु
ताहारो मेहेर करी मुनेजी ॥ ए देशी ॥

॥ विकलेंडी विकलेंडी मांहे दृष्टी बे वदीजी, सम
कितने समकितने मिथ्या दृष्टी सोयहो ॥ पांच
थावर पांच थावर मित्र दिठि कह्याजी, बीजा सर्वे
बीजा सर्वे त्रिदृष्टी होयहो ॥ विकलें० ॥ १ ॥

॥ द्वार आगीआरमुं ॥ ढाल चौदमी ॥ सुरती महीनानी ॥

॥ पंच थावर बेइंड़ी तेइंड़ीने, अचट्टु दर्शन एक ॥
चट्टु अचट्टु चउरिंड़ीने, बे जाणो सुविवेक ॥ १ ॥
चट्टु अचट्टु अवधि, केवल दर्शन चार ॥ नरमां बी
जे सर्व दंमकें, केवल विण त्रण धार ॥ २ ॥

॥ द्वार बारमुं ॥ ढाल पंदरमी ॥ कोइ सुध लावे
दिनानाथनी ॥ ए देशी ॥

॥ त्रण त्रण सुर तिरि निरयमां, ज्ञान अने अ
ज्ञान ॥ थावरमां अज्ञान बे, विकलें दो दो मान ॥ १ ॥
अज्ञान ज्ञान द्यो उंजखी, त्रण पंच प्रधान ॥ अनु

क्रमें मनुजना कहा, समजो सावधान ॥ अ० ॥ १ ॥
॥ द्वार तेरमुं ॥ ढाल शोलमी ॥ सारद बुधदाइ ॥ ए देशी ॥

॥ सत्य असत्यने मिश्र, असत्य मृषा संयोग ॥
मन वचनने योगें, आठ थया ए योग ॥ वैक्रियने
आहारक, औदारिक मिश्र सोइ ॥ तेजस कार्मेण
साते, काय तणा योग होइ ॥ नारक सुर सहुने, अ
नुक्रमें योग इग्यार ॥ तेर तिर्यचने जाणो, नरने पंदर
निरधार ॥ विकलेंडीने चार, वली वायुकायने पंच ॥
त्रण थावरमां जोजो, सिद्धांते ए संच ॥ १ ॥

॥ द्वार चौदमुं ॥ ढाल सत्तरमी ॥ सोहमपतीजी ए देशी ॥

॥ त्रण अज्ञानजी, ज्ञान पांचनी आवली ॥ चार
दर्शनजी, उपयोग बार सहु मली ॥ मानवमांजी,
बारे लहो मननी रली ॥ देव तिरियनेजी, नव नार
कने कहा वली ॥ उथलो ॥ वली पांच कहा विकलेंडी
मांहे, चउरिंडीमां ठो कहा ॥ पांच थावरमां त्रण
प्रकाश्या, सूत्र मार्गे सदह्या ॥ १ ॥

॥ द्वार पंदरमुं उपपातनुं तथा शोलमुं चवननो ॥ ढाल
अठारमी ॥ एक अनोपम शीखामण खरी ॥ ए देशी ॥

॥ गर्नज तिरिय, विगल सुर नारकी ॥ असंख्य सं
ख्याता, व्यो तमे पारखी ॥ नर संख्याता, असन्नी अ

संख्याता ॥ तेमज थावर, हवे वणसई ख्याता ॥ ढाला ॥
 वनस्पतिमां विख्यात जाणो, अनंता उपजे चवे ॥
 उपजे जेता चवे तेता ॥ बीजो जेद नही जवे ॥ १ ॥
 ॥ द्वार सत्तरमुं ॥ ढाल उंगणीशमी ॥ काठबानी ॥ देशी ॥

॥ पुढवी अपने वायु, वनस्पतिमांहे हो उत्कृष्टं
 आयु लहो ॥ वरस बावीशने सात, त्रण दश सहस
 हो साचुं सद्धो ॥ १ ॥ त्रण दिवस तेउकाय, नर
 तिरि केरुं हो त्रण पढ्य सारिखो ॥ सुर निरय सा
 गर तेत्रीश, व्यंतर आयुहो पढ्य एक पारिखो ॥ २ ॥
 साधिक पढ्य चंद सूर, असुर निकायें हो, सागर
 जाजेरडूं ॥ पढ्य दोये देशूण, निश्चय जाणो हो, नि
 काय नव केरडूं ॥ ३ ॥ बे इंडीयनुं वरस बार, तेंडी
 यनुं दिनहो उंगण पचाशठे ॥ चउरिंइयनुं ठ मास,
 अनुक्रमे आयुहो उत्कृष्टं एहठे ॥ ४ ॥ जघन्य आ
 यु एक मुहूर्त, पुढवी आदेहो दंभक दशमां कह्यो ॥
 दश सहस वरस प्रमाण, जवनपति नरकें हो, व्यंत
 र गति लह्यो ॥ ५ ॥ एक पढ्योपम मान, वैमानिक
 सुरनुं हो ज्योतषीनो जाणजो वली ॥ पढ्योपमनुं
 आवमुं नाग, आगम मांहेहो कहे एम केवली ॥ ६ ॥

॥ द्वार अठारमुं ॥ ढाल बीशमी ॥ बुठा दल
वादल ॥ ए देशी ॥

॥ आहारने शरीर इंडीयहो, सासोसास जासा
मण ॥ सुर नर तिरि निरयनेहो, ए ठ पर्यासि गण
॥ १ ॥ पांचे थावर मांहे हो, पर्यासि चारे कही ॥
वली पंच पर्यासि हो, विकलेंडी मांहे लही ॥ २ ॥

॥ द्वार उगणीशमुं ॥ ढाल एकवीशमी ॥ राम
चंदके बाग ॥ ए देशी ॥

॥ पट दिशिनो जे आहार, सघजा जंतु सदाइ ॥
लोकने खूणे जीव, पंच चार त्रण दिसि ताइ ॥ १ ॥

॥ द्वार बीशमुं ॥ ढाल बावीशमी ॥ राम सीताने
बीज करावे रे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे संज्ञा त्रण कहेसेरे, दीर्घ कालकी पहेली
दीसे ॥ हीतोपदेशकी बीजी रे, दृष्टीवादोपदेशकी
त्रीजी ॥ १ ॥ देवताना दंभक तेर रे, तिर्थच नारक
नही फेर ॥ संज्ञा ए पहेली दाखीरे, दीर्घकालकी सूत्र
साखी ॥ २ ॥ विकलेंडीमां हीतोपदेशा रे, संज्ञा रहित
थावर असेसा ॥ नरने पहेली बे नाखीरे, कोईकने
त्रीजी पण दाखी ॥ ३ ॥

॥ द्वार एकवीशमुं तथा बावीशमुं ॥ गति अगतिनुं ॥ ढाल
त्रेवीशमी ॥ धण समरथ पीठ नानडो ॥ ए देशी ॥

॥ पर्याप्ता पंचेंडी जेह, तिरियंचने मानव मरी ते
ह ॥ चार निकाय मांहे उपजे, सुरनी योनी जाणो
ससनेह ॥ १ ॥ गति आगति लहो जीवनी, असं
ख्याता आउखावंत ॥ पंचेंडी पर्याप्त, तिरियंचने नर
ए बे तंत ॥ गति० ॥ २ ॥ तिम पर्याप्ता वली, नू ज
लने जे तरू प्रत्येक ॥ अमर मरीने अवतरे, समजो
ए पांच पदे सुविवेक ॥ गति० ॥ ३ ॥ संख्या आयु
पर्याप्ता, गर्नज नरने तिरियंच जेह, ॥ साते नरकें उप
जे, तिहांथी आवे नर तिरियमां तेह ॥ गति० ॥ ४ ॥
नू जल वणसई योनीमां, नारकीने वर्जी सर्व जीव ॥
आवी आवी उपजे, निज निज कर्म प्रमाणे सदीव
गति० ॥ ५ ॥ पृथिव्यादिक दश दंमकें, नू जल वण
सईना जीव जाय ॥ वर्जी ते दश दंमक विना, तेउ
वाउ पण नवि थाय ॥ गति० ॥ ६ ॥ तेऊ वाउ तिम व
ली, पृथिव्यादिक नव दंमकें जंति ॥ दश पदना विग
लेंडी मांहे, विगलेंडी दश पद उपजंति ॥ गति० ॥ ७ ॥
गर्नज तिरियंच उपजे, मरी चोवीशो दंमक मांय ॥
चोवीश पदना जीव ते, गर्नज मरी तिरियंच थाय ॥

गति० ॥ ८ ॥ चोवीश पदने शिव पदें, मानव मरी
सघञे जाय ॥ तेऊने वाउ विना, बावीश पदना मा
नव थाय ॥ गति० ॥ ९ ॥

॥ ढार त्रेवीशमुं ॥ ढाल चोवीशमी ॥ थांपर वा
रि महारा साहेबा ॥ ए देशी ॥

॥ गर्जज नर तिरि योनीमां, वेद त्रण वखाएया ॥
स्त्री पुरुष वेद ठे देवमां, नव नपुंसक जाएया ॥ १ ॥

॥ ढार चोवीशमुं अल्प बहुत्वनो ॥ ढाल पचोशमी ॥
सुंकरियें जो मूजज कूडूं ॥ ए देशी ॥

॥ सहु जीवथी थोडा संसारो, पर्याप्ता मानव नि
रधारी ॥ बादर अग्नी वैमानिक देवा, जुवनपति व्यंत
र नारक लेवा ॥ १ ॥ ज्योतषी चौरिंझी पंचेंझी तिरिया,
बेंझीतें नू जल वाउ कहीया ॥ चढते पदें एक एक थ
कां, असंख्य गुणा लहो अधिकां अधिकां ॥ २ ॥ स
हुथी वधता वनस्पति जीव, अनंत गुणा जाणो स
दीव ॥ जिनजीयें कहा जाव में जोया, तुम खिज
मत विना नव खोया ॥ ३ ॥

॥ ढाल ठवीशमी ॥ सुण करुणानिधि हंसला ॥ एदेशी ॥

॥ एणोपरें चोवीश दंमकें, नवमांहें प्राणी नमि
उरे ॥ अनंत चोवीश। वहीगई, पण जिन मारग

नवी गमीउ रे ॥ १ ॥ धन धन दिन माहारे आहुं
 नो ॥ मुने त्रिछवन नायक तूगे रे, श्री जिनशासन
 पामीउ ॥ आज मेह अमीरस तूगेरे ॥ धन० ॥
 ॥ २ ॥ सत्तर एक्यासीयें चैत्रमां, वारु वदि ठछ
 मंगल वार रे ॥ वीतराग ईम वीनव्या, सूरय पुर
 नगर मोजार रे ॥ धन० ॥ ३ ॥ श्रीवासुपूज्य पसा
 उले, होररत्न सूरि सानिध्यें रे ॥ वाचक उदय रतन
 वदे, रुद्रि वृद्रि वाधि सर्व सिद्धि रे ॥ धन० ॥ ४ ॥

॥ रग धन्याश्री ॥ कृषन अजित संजव अनिनंदन,
 सुमति पद्म सुपासजी ॥ चंद्रप्रन सुविधि शीतल श्रे
 यांस, वासुपूज्य विमल जिन खासजी ॥ अनंत धर्म
 शांति कुंथु अर, मद्धि मुनिसुव्रत नमी नेमजी ॥ पा
 र्श्व वीर चोवीशो प्रणमुं, परम उदय लहो प्रेमजी ॥
 ॥ १ ॥ इति चतुर्विंशति दंभक गर्जित श्रीचतुर्विंशति
 वीतराग स्तवन ॥ ढाल सत्तावीश गाथा चोशठे ॥

॥ अथ श्री आनंदधनकृत चोवीसजिनस्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम श्री कृषजजिनस्तवन ॥

॥ रागमारु करम परीक्षाकरण कुमारचव्यो रे एदेशी ॥

॥ कृषजजिनेश्वर प्रतिम माहरो रे, उर नचाहुंरे
 कंत ॥ रीज्यो साहेब संग नपरिहरे रे, जागें सादि अ

नत ॥ ऋषज० ॥ १ ॥ प्रीत सगाईरे जगमां सद्गु करे
 रे, प्रीत सगाई नकोय ॥ प्रीत सगाईरे निरूपाधिक क
 हीरे, सोपाधिक धनखोय ॥ ऋषज० ॥ २ ॥ कोइ कंत का
 रण काष्ठ जह्ण करे रे, मलसुं कंतने धाय ॥ एमेलो
 नवि कहियें संजवे रे, मेलो ठाम नठाय ॥ ऋषज० ॥ ३ ॥
 कोइ पति रंजन अति घणो तप करे रे, पति रंजन
 तन ताप ॥ एपति रंजन में नवि चित्त धर्युं रे, रंज
 न धातु मिलाप ॥ ऋषज० ॥ ४ ॥ कोइ कहे लीला
 रे अलख ललख तणी रे, लख पूरे मन आस ॥
 दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विला
 स ॥ ऋषज० ॥ ५ ॥ चित्त प्रसन्नेरे पूजन फल कह्युं
 रे, पूज अखंमित एह ॥ कपट रहित थई आतम
 अरपणा रे, आनंद धन पद रेह ॥ ऋषज० ॥ ६ ॥

॥ अथश्री अजितजिन स्तवन ॥

॥ रागआसावरीमारुंमनमोह्युंरेश्रीविमलाचल्लेरे एदेशी ॥

॥ पंथडो निहालूरे बीजा जिनतणो रे, अजित अ
 जित गुण धाम ॥ जे तें जीत्यारे तेणे हुं जीतियो रे, पु
 रुष कीश्युं मुज नाम ॥ पंथ० ॥ १ ॥ चरम नयण करी मा
 रग जोवतो रे, जूलो सयल संसार ॥ जेणे नयणे करी
 मारग जोइयें रे, नयणते दीव्य विचार ॥ पंथ० ॥ २ ॥ पुरुष

परंपर अनुभव जोवतां रे, अंधो अंध पुलाय ॥ वस्तु
विचारे रे जो आगमें करी रे, तो चरण धरण नही
ठाय ॥ पंथ० ३ ॥ तर्क विचारैरे वाद परंपरा रे, पार
न पडोचे कोय ॥ अजिमतें वस्तु वस्तुगते कहे रे,
तेविरला जग जोय ॥ पंथ० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारैरे
दीव्य नयण तणो रे, विरह पडयो निरधार ॥ तरत
म जोगेरें तरतम वासना रे, वासित बोध आधार ॥
॥ पंथ० ॥ ५ ॥ काल लब्धि लही पंथ निहाल सुं
रे, ए आस्या अविजंब ॥ एजन जीवेरे जिनजी जा
एजो रे, आनंद घन मत अंब ॥ पंथ० ॥ ६ ॥ इति

॥ अथश्रीसंजवजिनस्तवनप्रारंभः ॥

॥ रागरामगिरिरातडीरमिनेकिहांथीआवियारे एदेशी ॥

॥ संजवदेवते धुर सेवो सवे रे, लहि प्रभु सेवन
जेद ॥ सेवन कारण पहेली नूमिका रे, अनय अवे
ष अखेद ॥ संजव० ॥ १ ॥ नय चंचलताहो जे प
रणामनी रे, द्वेष अरोचक जाव ॥ खेद प्रवृत्तिहो
करतां आकीर्ये रे, दोष अबोध लखाव ॥ संजव० ॥
॥ २ ॥ चरमावर्त्तहो चरम करण तथा रे, नव परि
णति परि पाक ॥ दोष टले वली दृष्टी खुले जलो रे,
प्रापति प्रवचन वाक ॥ संजव० ॥ ३ ॥ परिचय पाति

क घातिक साधुसूं रे, अकुशज अपचय चेत ॥ ग्रंथ
 अध्यातम श्रवण मनन करी रे, परिशीलन नय हे
 त ॥ संनव० ॥ ४ ॥ कारण जोगेंहो कारज नीपजे
 रे, एमां कोइ न वाद ॥ पण कारण विण कारज सा
 धीयें रे, ए निज मत उनमाद ॥ संनव० ॥ ५ ॥ सु
 ग्ध सुगम करी सेवन आदरे रे, सेवन अगम अनू
 प ॥ देजो कदाचित् सेवक याचना रे, आनंदधन र
 स रूप ॥ संनव० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथश्री अजिनंदनजिनस्तवननिरूप्यते ॥

रागधन्यासिरिसिंधुउआजनिहेजोरेदीसेनाहलो एदेशी
 ॥ अजिनंदन जिन दरिण तरसीयें, दरिण दूर्जनदे
 व ॥ मत मत जेदेरे जो जई पूढीयें, सद्गुथापे अह
 मेव ॥ अजि० ॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिण दोहे
 लूं, निरणय सकल विशेष ॥ मदमें येखोरे आंधो केम
 करे, रविशसि रूप विलेख ॥ अजि० ॥ २ ॥ हेतु
 विवादेंहो चित धरि जोइयें, अति डुरगम नय वाद ॥
 आगमवादेंहो गुरुगम को नही, ए शबलो विषवा
 द ॥ अजि० ॥ ३ ॥ घाती मूंगर आमा अतिघणा, तु
 ज दरिण जगनाथ ॥ धीठाई करी मारग संचरूं, से
 गू कोइ नसाथ ॥ अजि० ॥ ४ ॥ दरिण दरिण र

टतो जो फरुं, तो रण रोज समान ॥ जेहने पीपा
 साहो अमृत पाननी, किम नाजे विषपान ॥ अजि० ॥
 ॥ ५ ॥ तरस न आवेहो मरण जीवन तणो, सीजेजो
 दरिण काज ॥ दरिण दुर्लेज सुलज रुपा थकी,
 आनंदघन महाराज ॥ अजि० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथश्री सुमतिजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ रागवसंततथाकेदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपण, दरपण
 जिम अविचार ॥ सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत
 जाणिये, परिसरपण सुविचार ॥ सुग्यानी ॥ सुम
 ति० ॥ १ ॥ त्रिविध शकल तनु धर गत आतमा,
 बहिरातम धुरि नेद ॥ सु० ॥ बीजो अंतर आतम
 तीसरो, परमातम अविचेद ॥ सु० ॥ सुमति० ॥ २ ॥
 आतम बुद्धे कायादिके ग्रह्यो, बहिरातम अधरूप ॥
 ॥ सुग्यानी ॥ कायादिकनोहो साखी धर रह्यो, अंत
 र आतम रूप ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ ३ ॥ ज्ञाना
 नंदेहो पूरण पावनो, वरजित सकल उपाधी ॥ सु
 ग्यानी ॥ अतिंद्ध्य गुण गण मणि आगरू, इम प
 रमातम साध ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ ४ ॥ बहिरा
 तम तज अंतर आतमा, रूपथई थिर नाव ॥ सु० ॥

परमात्मनुंहो आत्म नावतूं, आत्म अरण दाव
॥ सु० ॥ सुमति० ॥ ५ ॥ आत्म अरण वस्तु वि
चारतां, नरम टले मति दोष ॥ सु० ॥ परम पदारथ
संपति संपजे, आनंदधन रस पोष ॥ सु० सु० ॥ ६ ॥

॥ अथश्रीपद्मप्रज्ञ जिन स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग मारु तथा सिंधुउ चांदलीया संदेसो केहेजे ॥
॥ मारा कंतनेरे ॥ एदेशी ॥

॥ पद्मप्रज्ञ जिन तुज मुज अंतरूं रे, किंम नाजे
जगवंत ॥ करम विपाकें कारण जोइने रे, कोइ कहे
मति मंत ॥ पद्म० ॥ १ ॥ पयइ तिई अणुजाग प्रदे
शथी रे, मूल उत्तर बहु जेद ॥ घाती अघातीहो बं
धूदय ऊदिरणा रे, सत्ता करम विछेद ॥ पद्म० ॥ २ ॥
कनकोपलवत पयडि पुरष तणी रे, जोडी अनादि
स्वनाव ॥ अन्य संजोगी जिहां लगे आत्मा रे, सं
सारी कहेवाय ॥ पद्म० ॥ ३ ॥ कारण जोगेहो बंधे
बंधने रे, कारण सुगति मूकाय ॥ आश्रव संवर ना
म अनुक्रमें रे, हेय ठपादेय सुणाय ॥ पद्म० ॥ ४ ॥
यूंजन करणेहो अंतर तुज पड्यो रे, गुण करणे क
री जंग ॥ ग्रंथ उकतें करी पंक्ति जन कह्यो रे, अंत
र जंग सुअंग ॥ पद्म० ॥ ५ ॥ तुज मुज अंतर अं

तर नाजसे रे, वाजसे मंगल तूर ॥ जीव सरोवर अ
तिशय वाधसे रे, आनंदघन रस पूर ॥ पद्य० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्रीसुपार्श्वजिनस्तवन प्रारंभः ॥

॥ रागसारंग तथा मल्हार ॥ ललनानीदेशी ॥

॥ श्रीसुपासजिन वंदियें, सुख संपत्तिने हेतु ॥ ललना ॥
शांति सुधारस जलनिधि, नव सागरमांहें सेतु ॥ ल
लना ॥ श्रीसु० ॥ १ ॥ सात महा जय टालतो, स
प्तम जिनवर देव ॥ ललना ॥ सावधान मनसा क
री, धारो जिनपद सेव ॥ ल० ॥ श्रीसु० ॥ २ ॥ शि
व शंकर जगदीश्वरू, चिदानंद जगवान ॥ ल० ॥
जिन अरिहा तीर्थंकरू, ज्योति सरूप असमान ॥
॥ ल० ॥ श्रीसु० ॥ ३ ॥ अलख निरंजन वड्डलू, स
कल जंतु विसराम ॥ ल० ॥ अजयदान दाता सदा,
पूरण आतमराम ॥ ल० ॥ श्रीसु० ॥ ४ ॥ वीतराग
मद कल्पना, रति अरति जय सोग ॥ ललना ॥ नि
झा तंझा डुरंदसा, रहित अबाधित योग ॥ ल० ॥
श्रीसु० ॥ ५ ॥ परम पुरुष परमात्मा, परमेश्वर पर
धान ॥ ललना ॥ परम पदारथ परमिष्टी, परमदेव
परमान ॥ ल० ॥ श्रीसु० ॥ ६ ॥ विधि विरंचि विश्वं
नरू, कृषी केश जगनाथ ॥ ल० ॥ अघहर अघ मो

चनधणी, मुक्ति परम पद साथ ॥ ल० ॥ श्रीसु० ॥ ७ ॥
 एम अनेक अनिधा धरे, अनुभव गम्य विचार ॥ ल० ॥
 जेह जाणे तेहने करे, आनंदधन अवतार ॥ श्री० ॥ ८ ॥

॥ अथ श्रीचंद्रप्रज्जिनस्तवन लिख्यते ॥

॥ रागकेदारो तथा गोडी ॥ कुमरी रोवे आक्रंद करें
 मुने कोइ मूकावे ॥ ए देशी ॥

॥ देखणदेरे सखी मुने देखणदे, चंद्र प्रज मुख
 चंद्र ॥ सखि० ॥ उपशम रसनो कंद ॥ सखि० ॥
 सेवे सुरनर इंद ॥ सखि० ॥ गत कलिमल दुख दंद
 ॥ सखी० ॥ १ ॥ सुहम निगोर्दे न देखिउं ॥ सखि० ॥
 बादर अतिहि विशेष ॥ स० ॥ पुढवी आउ न लेखि
 उं ॥ स० ॥ तेउ वाउ न लेस ॥ स० ॥ २ ॥ वनस
 पति अति घणदिहा ॥ स० ॥ दीतो नहीय देदार ॥
 स० ॥ बि ति चउरिंदी जल जिहा ॥ स० ॥ गति
 सन्नीपण धार ॥ स० ॥ ३ ॥ सुर तिरि निरय निवा
 समां ॥ स० ॥ मनुज अनारज साथ ॥ स० ॥ अप
 ऊता प्रति जासमां ॥ स० ॥ चतुर न चढीउं हाथ ॥
 स० ॥ ४ ॥ एम अनेक थल जाणियें ॥ स० ॥ द
 रिशण विणु जिन देव ॥ स० ॥ आगमथी मति जा
 णियें ॥ स० ॥ कीजे निरमल सेव ॥ स० ॥ ५ ॥

निरमल साधु नगति लही ॥ स० ॥ योग अवंचक
 होय ॥ स० ॥ किरिया अवंचक तिम सहि ॥ स० ॥
 फल अवंचक जोय ॥ स० ॥ ६ ॥ प्रेरक अवसर जि
 नवरू ॥ स० ॥ मोहनीय ह्य जाय ॥ स० ॥ का
 मित पूरण सुरतरू ॥ स० ॥ आनंदनप्रचुपाय ॥ स० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीसुविधिजिनस्तवन प्रारंभः ॥

॥ रागकेदारो एम धनोधरणे परचावे ॥ ए देशी ॥

॥ सुविधिजिणोसर पाय नमिने, छुज करणी एम
 कीजें रे ॥ अतिघणो उलट अंग धरीने, प्रहउठी पू
 जीजें रे ॥ सुवि० ॥ १ ॥ इव्य जाव सुचि जाव धरी
 ने, हरखें देदरे जइयें रे ॥ दह तिग पण अहिगम
 साचवतां, एकमना धुरि थइयें रे ॥ सु० ॥ २ ॥ कुं
 सुंम अकृत वर वास सुगंधो, धूप दीप मन साखी
 रे ॥ अंग पूजा पण जेद सुणी एम, गुरु मुख आगम
 जाखी रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ एहनुं फल दोय जेद सुणी
 जें, अनंतरने परं पर रे ॥ आणा पालण चित्त प्रस
 न्नी, सुगति सुगति सुर मंदिर रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ फूल
 अकृत वर धूप पड्वो, गंध नैवेद्य फल जल जरी
 रे ॥ अंग अग्र पूजा मलि अडविध, जावें नविक सु
 नगति वरी रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ सत्तर जेद एकवीस प्र

कारें, अछोत्तर सत जेदें रे ॥ नाव पूजा बहुविधि
 निरवारी, दोहग डुरगति ठेदे रें ॥ सु० ॥ ६ ॥ तुरि
 य जेद पडिवत्तो पूजा, उपशम स्त्रीण सयोगी रे ॥
 चउहा पूजा इम उतरक्षयणे, नाखी केवज नोगी रे
 सु० ॥ ७ ॥ एम पूजा बहु जेद सुणीने, सुखदायक
 छेन करणी रे ॥ नाविक जीव करसे ते जेसे, आनं
 दधन पद घरणी रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशीतलजिनस्तवन त्रिल्यते ॥

॥ मंगजिक माला गुणह विसाजा ॥ ए देशी ॥

॥ शीतल जिनतपति लजित त्रिजंगो, विविध जंगो
 मन मोहे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता, उदाशी
 नता सोहे रे ॥ शी० ॥ १ ॥ सर्व जंतु हित करणी
 करुणा, कर्म विदारण तीक्ष्ण रे ॥ हानादाना रहि
 त परणामि, उदाशीनता विक्ष्ण रे ॥ शी० ॥ २ ॥
 पर दुःख ठेदन इहा करुणा, तीक्ष्ण पर दुख रोजे
 रें ॥ ऊदाशीनता कनय विजृक्ष्ण, एक ठामें केम
 सीजे रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अनयदान ते मजृक्ष्ण करु
 णा, तीक्ष्णता गुण नावें रे ॥ प्रेरण विष्णु कृत उ
 दाशीनता, इम विरोध मति नावेरे ॥ शी० ॥ ४ ॥ श्र
 क्ति व्यक्ति त्रिभुवन प्रभुता, नियंत्रता संयोगें रे ॥ यो

गी जोगी वक्ता मौनी, अनुपयोगि उपयोगें रे ॥ शी०
 ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु जंग त्रिजंगी, चमतकार चित्त
 देती रे ॥ अचरिज कारी चित्र विचित्रा ॥ आनंदधन
 पद छेती रे ॥ शी० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री श्रेयांसजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ राग गोडी अहोमतवाले साजना ॥ ए देशी ॥

॥ श्री श्रेयांस जिन अंतरजामी, आतमरामी ना
 मीरे ॥ अध्यातम मत पूरण पामी, सहज सुगति
 गति गामीरे ॥ श्रीश्रे० ॥ १ ॥ सयल संसारी इंडि
 यरामी, मुनिगुण आतम रामीरे ॥ मुख्य पणे जे
 आतम रामी, ते केवल निःकामीरे ॥ श्रीश्रे० ॥ २ ॥
 निज स्वरूपजे किरिया साधे, तेह अध्यातम लहियें
 रे ॥ जे किरिया करि चउगति साधे, ते न अध्यातम
 कहियेंरे ॥ श्रीश्रे० ॥ ३ ॥ नाम अध्यातम ठवण
 अध्यातम, इव्य अध्यातम ठंमोरे ॥ जाव अध्यात
 म निजगुण साधे, तो तेहसुं रढ मंमोरे ॥ श्रीश्रे० ॥
 ॥ ४ ॥ शब्द अध्यातम अरथ सुणीने, निर विकल्प
 आदरजोरे ॥ शब्द अध्यातम नजना जाणी, हान
 ग्रहण मति धरजोरे ॥ श्रीश्रे० ॥ ५ ॥ अध्यातम जे
 वस्तु विचारी, बीजा जाण लवासीरे ॥ वस्तुगते जे

वस्तु प्रकाशे, आनंदघन मत वासीरे ॥ श्रीश्रेण॥६॥

॥ अथ वासुपुज्य जिन स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग गोडीतथापरजीउतूंगीयागिरिसिखरसोहेएदेशी

॥ वासुपुज्यजिन त्रिभुवन स्वामी, घननामी पर
नामीरे ॥ निराकार साकार सचेतन, करम करम फ
ल कामीरे ॥ वासु० ॥ १ ॥ निराकार अचेद संग्रा
हक, जेद ग्राहक साकारोरे ॥ दर्शन ज्ञान दुजेद चे
तना, वस्तु ग्रहण व्यापारोरे ॥ वासु० ॥ २ ॥ कर्ता
परिणामि परिणामो, कर्मजे जीवें करियेंरे ॥ एक अ
नेक रूप नय वादें, नियतें नर अनुसरियेंरे ॥ वासु० ॥
॥३॥ दुख सुख रूप करम फल जाणो, निश्चय एक
आनंदोरे ॥ चेतनता परिणाम नचूके, चेतन कहे जिन
चंदोरे ॥ वासु० ॥४॥ परिणामि चेतन परिणामो, ज्ञान
करम फल जावीरे ॥ ज्ञान करम फल चेतन कहियें,
जेजो तेह मनावीरे ॥ वासु० ॥ ५ ॥ आतम ज्ञानी
श्रमण कहावे, बीजा तो इव्य लिंगीरे ॥ वस्तुगते जे
वस्तु प्रकासे, आनंद घनमति संगीरे ॥ वासु० ॥६॥ इति॥

॥ अथ श्रीविमलजिन स्तवन प्रारब्धते ॥

॥ रागमल्हारश्मरथांबाथांबलीरे ॥ ए देशी ॥

॥ दुख दोहग दूरें टढ्यारे, सुख संपदसुं जेट ॥

धींग धणी माथे कियारे, कुण गंजे नर खेट ॥ विम
 लजिन, दीठा लोयण आज ॥ मारा सीधा वंछित का
 ज, विमलजिन ॥ दीठा ० ॥ १ ॥ चरण कमल कम
 ला वसेरे, निरमल थिर पद देख ॥ समज अथिर
 पद परिहरीरे, पंकज पामर पेख ॥ वि० ॥ दी० ॥
 ॥ २ ॥ मुऊ मन तुऊ पद पंकजेंरे, लीनो गुण म
 करंद ॥ रंक गणे मंदिर धरारे, इंद चंद नागिंद ॥
 ॥ वि० ॥ दी० ॥ ३ ॥ साहिव समरथ तुं धणीरे,
 पाम्यो परम उदार ॥ मन विसरामी वालहोरे, आ
 तमचो आधार ॥ वि० ॥ दी० ॥ ४ ॥ दरिण दी
 ठे जिन तणोरे, संशय नरहे वेध ॥ दिनकर करनर
 पसरंतारे, अंधकार प्रतिखेध ॥ वि० ॥ दी० ॥ ५ ॥
 अमीय नरी मूरति रचीरे, उपम नघटे कोय ॥ शां
 ति सुधारस जीलतीरे, निरखित तृपति न होय ॥
 ॥ वि० ॥ दी० ॥ ६ ॥ एक अरज सेवक तणीरे,
 अवधारो जिनदेव ॥ कृपा करी मुऊ दीजोयेंरे, आ
 नंदघन पद सेव ॥ वि० ॥ दी० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अनंतजिनस्तवन लिख्यते ॥

॥ रागरामगिरिकडखानादेशोनी ढाल प्रसिद्धे ॥

॥ धार तरवारनी सोहेली दोहेली, चवदमां जि

नतणी चरण सेवा ॥ धार पर नाचता देख बाजीग
 रा, सेवना धार पर रहे न देवा ॥ धा० ॥ १ ॥ ए
 आंकणी ठे ॥ एक कहे सेविये विविध किरिया करी,
 फल अनेकांत लोचन न देखे ॥ फल अनेकांत किरि
 या करी बापडा, रडवडे चार गति मांहे लेखे ॥ धा० ॥
 ॥ २ ॥ गह्वना चेद बहु नयण निहालतां, तत्वनी
 वात करतां नलाजे ॥ उदर जरणादि निज काज कर
 ता थका. मोह नडिया कलिकाल राजे ॥ धा० ॥
 ॥ ३ ॥ वचन निरपेक्ष व्यवहार जूठो कह्यो, वचन
 सापेक्ष व्यवहार साचो ॥ वचन निरपेक्ष व्यवहार
 संसार फल, सांजली आदरी कांइ राचो ॥ धा० ॥
 ॥ ४ ॥ देव गुरु धर्मेनी शुद्धि कहो केम रहे, केम
 रहे शुद्ध श्रद्धान आणो ॥ शुद्ध श्रद्धान विण सर्व
 किरिया करी, ठार पर लीपणो तेह जाणो ॥ धा० ॥
 ॥ ५ ॥ पाप नही कोइ उत्सूत्र जाषण जिशो, धर्म
 नही कोइ जग सूत्र सरिखो ॥ सूत्र अनुसार जे न
 विक किरिया करे ॥ तेहनो शुद्ध चारित्र परिखो ॥
 ॥ धा० ॥ ६ ॥ एह उपदेशनुं सार संक्षेपथी, जे नरा
 चित्तमें नित्य ध्यावे ॥ तेनरा दीव्य बहु काल सुख अ
 नुजवी, नियत आनंद धन राज पावे ॥ धा० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीधर्मजिनस्तवन लिख्यते ॥

॥ राग गोडीसारंग ॥ रसीयानी देशीमां ॥

॥ धरमजिनेसर गाउं रंगसुं, जंग म पडसोहो प्रीत ॥
 जिनेसर ॥ बीजो मनमंदिर आणु नही, ए अम कु
 लवट रीत ॥ जिनेसर ॥ धर्म० ॥ १ ॥ धरम धरम
 करतो जग सद्गु फिरे, धरम नजाणेहो मर्म ॥ जि० ॥
 धरम जिनेसर चरण ग्रह्या पढी, कोइ न बांधे हो कर्म
 जि० ॥ धर्म० ॥ २ ॥ प्रवचन अंजन जो सदगुरु
 करे, देखे परम निधान ॥ जि० ॥ रुदय नयण नि
 हाळे जग धणी, महिमा मेरु समान ॥ जि० ॥ धर्म०
 ॥ ३ ॥ दोडत दोडत दोडत दोडीउं, जेती मननी रे
 दोड ॥ जि० ॥ प्रेम प्रतीत विचारो टूकडी, गुरुगम
 लेजो रे जोड ॥ जि० ॥ ध० ॥ ४ ॥ एक पखी केम
 प्रीति वरें पडे, उजय मिढ्या दुए संधि ॥ जि० ॥
 हुं रागी हुं मोहें फंदिउं, तुं निरागी निरबंध ॥ जि० ॥
 ध० ॥ ५ ॥ परम निधान प्रगट मुख आगलें, जग
 त उलंघोहो जाय ॥ जि० ॥ ज्योति विना जुउं जग
 दीसनी, अंधो अंध पुजाय ॥ जि० ॥ ध० ॥ ६ ॥
 निरमल गुण मणि रोहण नूधरा, मुनिजन मानस हं
 श ॥ जि० ॥ धन ते नगरी धन वेला घडी, माता पिता

कुलवंश ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ मन मधुकर वर करजो
 डी कहे, पदकज निटक निवास ॥ जि० ॥ धन नामी
 आनंदधन सांजलो, ए सेवक अरदाश ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ ८

॥ अथ श्रीशांतिजिनस्तवन प्रारंभः ॥

॥ राग मल्हार ॥ चतुर चोमासो पडिक्कमी ॥ ए देशी ॥

॥ शांति जिन एक मुऊ वीनती, सुणो त्रिभुवन
 राय रे ॥ शांति सरूप केम जाणियें, कहो मन
 परखाय रे ॥ शांति ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ धन्यतुं
 आतमा जेहने, एहवो प्रश्नअवकाश रे ॥ धीरज म
 न धरी सांजलो, कहुं शांति प्रतिनाश रे ॥ शां
 ति० ॥ २ ॥ नाव अविगुह सुविसुहजे, कहा जिनवर
 देव रे ॥ ते तेम अवितड सदहे, प्रथम ए शांति पद
 सेव रे ॥ शांति० ॥ ३ ॥ आगमधर गुरु समकेति,
 किरिया संवर सार रे ॥ संप्रदायी अवचंक सदा, सु
 ची अनुनवाधाररे ॥ शांति० ॥ ४ ॥ गुह आलंबन आद
 रे, तजी अवर जंजाल रे ॥ तामसी वृत्ति सवि परि
 हरी, नजे सात्विकी शाल रे ॥ शांति० ॥ ५ ॥
 फल विसंवाद जेहमां नही, शब्दते अर्थ संबंधि रे ॥
 शकल नय वाद व्यापि रह्यो, ते शिव साधन संधि रे ॥
 ॥ शांति० ॥ ६ ॥ विधि प्रतिषेध करी आतमा, प

दारथ्य अविरोध रे ॥ ग्रहण विधि महाजने परिग्र
 ह्यो, इसो आगमें बोध रे ॥ शान्ति० ॥ ७ ॥ इष्ट ज
 न संगति परिहरी, नजे सुगुरु संतान रे ॥ जोग सा
 मर्थ्य चित्त नावजे, धरे मुगति निदान रे ॥ शान्ति० ॥
 ॥ ८ ॥ मान अपमान चित्त समगणे, समगणे क
 नक पाखाण रे ॥ वंदक निंदक समगणे, इशो दो
 य तुं जाण रे ॥ शान्ति० ॥ ९ ॥ सर्व जगजंतुने
 समगणे, गणे तृणमणि नाव रे ॥ मुक्ति संसार वेदु
 समगणे, मुणे नवजल निधि नाव रे ॥ शान्ति० ॥
 ॥ १० ॥ आपणो आतमा नावजे, एक चेतनाधार
 रे ॥ अवर सवि साथ संयोगथी, एह निज परिकर
 सार रे ॥ शान्ति० ॥ ११ ॥ प्रभु मुखथी एम सां
 नली, कहे आतमराम रे ॥ ताहरे दरिणो निस्त
 रघो, मुज सीधा सवि काम रे ॥ शान्ति० ॥ १२ ॥
 अहो अहो दुं मुजने कहुं, नमोमुज नमोमुंज रे ॥ अ
 मित फल दान दातारनी, जेहनी नेट थयी तुज रें ॥
 ॥ शान्ति० १३ ॥ शान्ति सरूप संक्षेपथी, कह्यो नि
 ज पर रूप रे ॥ आगम माहें विस्तर घणो, कह्यो
 शान्ति जिन जूप रे ॥ शान्ति० ॥ १४ ॥ शान्ति सरू
 प एम नावसे, धरी शुद्ध प्रणिधान रे ॥ आनंदधन

पद पामसे, ते सेहेसे बहु मान रे ॥ शान्ति० ॥ १५ ॥

॥ अथ श्रीकुंशुजिनस्तवन प्रारंभः ॥

॥ रागगुर्जरी अंबरदेहो मुरारी हमारो० ॥ ए देशी ॥

॥ कुंशुजिन मनहुं किमही न बाजे हो ॥ कुं० ॥

जिम जिम जतन करीने राखूं, तिम तिम अलगुं ना
जे हो ॥ कुं० ॥ १ ॥ रजनी वासर वसति वजड,

गयण पायाछें जाय ॥ साप खाएने मुखहुं थोथुं, ए
ह उखाणो न्याय हो ॥ कुं० ॥ २ ॥ मुगति तणा

अजिलाषी तपीया, झानने ध्यान अन्यासैं ॥ वयरीहुं
कांइ एहवुं, चिंते, नाखे अलवे पासैं हो ॥ कुं० ॥ ३ ॥

आगम आगम धरने हाथें, नावे किणविध आंकूं ॥
किहां कणे जो हठकरी हटकूं, तो व्याल तणी परें

वांकूं हो ॥ कुं० ॥ ४ ॥ जो उग कहुं तो उगतो न
देखुं, साहुकार पण नाही, सर्व मांहे ने सद्गुणी अ

लगुं, ए अचरिज मन मांही हो ॥ कुं० ॥ ५ ॥ जे
जे कहुं ते कान न धारे, आप मतैं रहे कालो ॥ सु

रनर पंक्ति जन समजावे, समजे न माहरोसालो
हो ॥ कुं० ॥ ६ ॥ में जाण्यु ए लिंग नपुंसक, सक

ल मरदने ठेले ॥ बीजी वातें समरथ ठे नर, एहने
कोइन जेजे हो ॥ कुं० ॥ ७ ॥ मन साधुं तेणें स

घलुं साधुं, एह वात नही खोटी ॥ एम कहे साधुं
त नवी मानुं, ए कहिवातबे मोटी हो ॥ कुं० ॥ ७ ॥
मनहुं डुराराध्यतें वस आणुं, ते आगमथी मति
आणुं ॥ आनंदघन प्रभु माहरुं आणो, तो साधुं क
री जाणुं हो ॥ कुं० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअरजिनस्तवन निख्यते ॥

॥ रागपरज ॥ कृष्णजनो वंसरयणायरू ॥ ए देशी ॥

॥ धरम परम अरनाथनो, किम जाणु नगवंत रे ॥
स्वपर समय समजावियें, महिमावंत महंत रे ॥ ध०
॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ शुद्धातम अनुनव सदा, स्वस
मय एह विजास रे ॥ परबडी ठाहडी जेह पडे, ते
परसमय निवास रे ॥ ध० ॥ २ ॥ तारा नक्षत्र ग्रह
चंदनी, ज्योति दिनेस मजार रे ॥ दर्शन ज्ञान चरण
थकी, शक्ति निजातम धार रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ जारी
पीलो चीकणो, कनक अनेक तरंग रे ॥ पर्याय दृष्टी
नदीजोयें, एकज कनक अजंग रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ द
रिण ज्ञान चरण थकी, अलख सरूप अनेक रे ॥
निर विकल्प रस पीजियें, शुद्ध निरंजन एक रे ॥
ध० ॥ ५ ॥ परमारथ पंथ जे कहे, ते रंजे एक तंत
रे ॥ व्यवहारें लख जे रहे, तेहना जेद अनंत रे ॥

ध० ॥ ६ ॥ व्यवहारें लखे दोहिजा, कांइन आवे
 हाथ रे ॥ शुद्धनय थापना सेवतां, नवी रहे डुविधा
 साथ रे ॥ ध० ॥ ७ ॥ एक पखी लखि प्रीतनी, तु
 म साथें जगनाथ रे ॥ कृपा करीने राखजो, चरण
 तलें ग्रही हाथ रे ॥ ध० ॥ ८ ॥ चक्री धरम तीरथ
 तणो, तीरथ फल तत सार रे ॥ तीरथ सेवे तेजहे,
 आनंदधन निरधार रे ॥ ध० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमल्लिजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ रागकाफी सेवककिम अवगणियें हो॥ ए देशी ॥

॥ सेवक किम अवगणियें हो, मल्लिजिन ॥ एह
 अब सोना सारी ॥ अवर जेहने आदर अतिदीए,
 तेहने मूल निवारी हो ॥ मल्लि० ॥ १ ॥ ज्ञान स्वरू
 प आनादि तुमारुं, ते लीधुं तुमें ताणी ॥ छुट अ
 ज्ञान दशा रीसावी, जातां काण न आणी हो ॥
 मल्लि० ॥ २ ॥ निडा सुपन जागर उजागरता, तुरि
 य अवस्था आवी ॥ निडा सुपन दशा रीसाणी, जा
 णी न नाथ मनावी हो ॥ मल्लि० ॥ ३ ॥ समकेत
 साथें सगाई कीधी, सपरिवारसुं गाढो ॥ मिथ्यामति
 अपराधण जाणी, घरथी बाहिर काढी हो ॥ मल्लि०
 ॥ ४ ॥ ह्रास्य अरति रति शोक डगड्डा, जय पामर

करसाली ॥ नोकषाय श्रेणी गज चढतां, श्वानतणी
 गति जाली हो ॥ मल्लि० ॥ ५ ॥ राग वेष अविरति
 नी परिणति, एचरण मोहना योद्धा ॥ वीतराग पर
 एति परणमता, उठी नाठा बोद्धा हो ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥
 वेदोदय कामा परिणामा, काम्य करम सद्गु त्यागी ॥
 निःकामी करुणा रस सागर, अनंत चतुष्क पद पा
 गी हो ॥ मल्लि० ॥ ७ ॥ दान विघन वारी सद्गु ज
 नने, अजय दान पद दाता ॥ लाज विघन जग वि
 घन निवारक, परम लाज रस माता हो ॥ मल्लि०
 ॥ ८ ॥ वीर्य विघन पंक्ति वीर्य हणी, पूरण पदवी
 योगी ॥ जोगोपजोग दोय विघन निवारी, पूरण जोग
 सुंजोगी हो ॥ मल्लि० ॥ ९ ॥ ए अठार दूषण वर
 जित तनुं, मुनिजन वृंदे गाया ॥ अविरति रूपक दो
 ष निरूपण, निर दूषण मन जाया हो ॥ मल्लि०
 ॥ १० ॥ इणविध परखी मन विसरामी, जिनवर
 गुण जे गावे ॥ दीनबंधुनी महिर नजरथी, आनंद
 घन पद पावे हो ॥ मल्लि० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमुनिसुव्रत जिनस्तवन लिख्यते ॥

॥ रागकाफी आधा आम पधारो पूज्य ॥ ए देशी ॥

॥ मुनिसुव्रत जिन राय, एक मुऊ वीनति निसु

णो ॥ आतम तत्व क्युं जाण्युं जगत गुरु, एह वि
 चार मुऊ कहियो ॥ आतम तत्व जाण्या विण निर
 मल, चित्त समाधि नवि लहियो ॥ मुनि० ॥ १ ॥
 ए आंकणी ॥ कोइ अबंध आतम तत माने, किरि
 या करतो दीसे ॥ क्रिया तणु फल कहो कुण जोग
 वे, इम पूठ्युं चित्त रीसैं ॥ मुनि० ॥ २ ॥ जडचेतन
 ए आतम एकज, थावर जंगम सरिखो ॥ दुःख सु
 ख संकर दूषण आवे, चित्त विचारी जो परिखो ॥
 मुनि० ॥ ३ ॥ एक कहे नित्यज आतम तत, आ
 तम दरिण लीनो ॥ कृत विनाश अकृतागम दूष
 ण, नवी देखे मतिहीणो ॥ मु० ॥ ४ ॥ सौगत म
 तिरागी कहे वादी, क्लिष्टिक ए आतम जाणो ॥ बंध
 मोख सुख दुःख न घटे, एह विचार मन आणो ॥
 मुनि० ॥ ५ ॥ नूत चतुष्क वरजित आतम तत,
 सत्ता अलगीन घटे ॥ अंधशकट जो नजर न देखे,
 तोसुं कीजें शकटें ॥ मुनि० ॥ ६ ॥ एम अनेक वा
 दी मत विभ्रम, संकट पडियो न लहे ॥ चित्त समा
 ध ते माटे पूढुं, तुम विण तत कोइ नकहे ॥ मुनि०
 ॥ ७ ॥ बलतुं जगगुरु इणिपरें नाषे, पक्षपात सब
 नंभी ॥ राग द्वेष मोह पख वर्जित, आतमसुं रढ

मंदि ॥ मुनि० ॥ ७ ॥ आतम ध्यानकरे जो कोउ,
 सोफिर इणमें नावे ॥ वाग जाल बीजुं सद्गु जाणे,
 एह तत्व चित्त चावे ॥ मुनि० ॥ ८ ॥ जेणे विवेक
 धरी ए पख ग्रहियें, ते तत्व ज्ञानी कहियें ॥ श्रीमुनि
 सुव्रत कृपाकरोतो, आनंदधनपद लहियें ॥ मुनि० ॥ १०

॥ अथ श्रीनमिजिन स्तवन लिख्यते ॥

॥ रागआशावरी धनधन संपति साचो राजा एदेशी ॥

॥ पटदरिसण जिन अंग जणीजे, न्यास षडंग जो
 साधेरे ॥ नमि जिनवरना चरण उपासक, पट दरि
 शण आराधेरे ॥ षट० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जिन
 सुर पादप पाय वखाणुं, सांख्य जोग दोय जेदेंरे ॥
 आतम सत्ता विवरण करता, लहो दुग अंग अखे
 देंरे ॥ षट० ॥ २ ॥ जेद अजेद सौगत मीमांसक,
 जिनवर दोय कर जारीरे ॥ लोकालोक अवलंबन
 नजियें, गुरुगमथी अवधारीरे ॥ षट० ॥ ३ ॥ लो
 कायतिक कूख जिनवरनी, अंश विचारीजो कीजेंरे ॥
 तत्व विचार सुधारस धारा, गुरुगम विण केम पीजें
 रे ॥ षट० ॥ ४ ॥ जैन जिनेश्वर वर उत्तम अंग,
 अंतरंग बहिरंगेरे ॥ अक्षरन्यास धरा आधारक, आरा
 धे धरी संगेरे ॥ षट० ॥ ५ ॥ जिनवरमां सघला द

रिशणढे, दर्शन जिनवर नजनारे ॥ सागरमां सघला
 तटनी सही, तटनीमां सागर नजनारे ॥ षट० ॥
 ॥ ६ ॥ जिनस्वरूप थइ जिन आराधे, तेसही जिन
 वर होवेरे ॥ नृंगी ईलीकाने चटकावे, ते नृंगी जग
 जोवेरे ॥ षट० ॥ ७ ॥ चूर्णि जाण्य सूत्र निर्युक्ति,
 वृत्ति परंपर अनुनवरे ॥ समय पुरुषना अंग कहा
 ए, जे ढेदेते डुरनवरे ॥ षट० ॥ ८ ॥ मुझ बीज धा
 रणा अक्षर, न्यास अरथ विनियोगेरे ॥ जेथ्यावे ते
 नवि वंचीजे, क्रिया अवंचक नोगेरे ॥ षट० ॥ ९ ॥
 श्रुत अनुसार विचारी बोलुं, सुगुरु तथा विधि न
 मिलेरे ॥ किरिया करी नवि साधी सकीयें, ए विष
 वाद चित्त सघलेरे ॥ षट० ॥ १० ॥ ते माटे उजा
 कर जोडी, जिनवर आगल कहीयेंरे ॥ समय चरण
 सेवा छुट देजो, जेम आनंदधन लहीयेंरे ॥ षट० ॥ ११ ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजिन स्तवन लिख्यते ॥

॥ रागमारूणी धणराढोला ॥ ए देशी ॥

॥ अष्टनवंतर वालहीरे, तुं मुऊ आतमराम ॥ म
 नरा वाला ॥ मुगति स्त्रीसुं आपणेरे, सगपण कोइन
 काम ॥ म० ॥ १ ॥ घर आवोहो वालिम घर आ
 वो, मारी आशाना विसराम ॥ म० ॥ रथ फेरोहो

साजन रथ फेरो, साजन महारा मनोरथ साथ ॥
 ॥ म० ॥ १ ॥ नारी पखोस्यो नेहलोरे, साच कहे
 जगनाथ ॥ म० ॥ २ ॥ इश्वर अरधंगें धरीरे, तुं मुज जा
 ले न हाथ ॥ म० ॥ ३ ॥ पसु जननी करुणा करीरे,
 आणी रुदय विचार ॥ म० ॥ माणसनी करुणा
 नहीरे, एकुण घर आचार ॥ म० ॥ ४ ॥ प्रेम कल
 पतरु ठेदीयोरे, धरियो जोग धतूर ॥ म० ॥ चतुरा
 इ रो कुण कहोरे, गुरु मिलियो जग सूर ॥ म० ॥
 ॥ ५ ॥ मारुंतो एमां क्युंही नहीरे, आप विचारें
 राज ॥ म० ॥ राज सनामें बेसतारे, किसडी बधसी
 लाज ॥ म० ॥ ६ ॥ प्रेम करे जग जन सद्गुरे, नि
 रवाहेते उर ॥ म० ॥ प्रीत करीने गोडीदेरे, तेहसुं
 न चाले जोर ॥ म० ॥ ७ ॥ जो मनमां एहवुं हतुं
 रे, निसपति करत नजाण ॥ म० ॥ निसपति करी
 ने ठांमतारे, माणस दुवे नुकसाण ॥ म० ॥ ८ ॥
 देतां दान संवत्सरीरे, सद्गु लहे वंढित पोष ॥ म० ॥
 सेवक वंढित नवी लहेरे, ते सेवकनो दोष ॥ म० ॥
 ॥ ९ ॥ सखी कहे ए शामलोरे, हुं कहुं लक्षण सेत
 ॥ म० ॥ इण लक्षण साची सखीरे, आप विचारे
 हेत ॥ म० ॥ १० ॥ रागीसुं रागी सद्गुरे, वैरागी

स्यो राग ॥ म० ॥ राग विना किम दाखवोरे, मुंगति
 सुंदरी माग ॥ म० ॥ ११ ॥ एक गुह्य घटवूं नथीरे,
 सघजोई जाणो लोक ॥ म० ॥ अनेकांतिक जोगवो
 रे, ब्रह्मचारी गत रोग ॥ म० ॥ १२ ॥ जिण जो
 णी तुमने जोउंरे, तिण जोणी जोवो राज ॥ म० ॥
 एकवार मुज्जने जुउंरे, तो सीजे मुज्ज काज ॥ म० ॥
 ॥ १३ ॥ मोहदसा धरी नावनारे, चित्त लहे तत्व
 विचार ॥ म० ॥ वीतरागता आदरीरे, प्राणनाथ नि
 रधार ॥ म० ॥ १४ ॥ सेवक पण ते आदरेरे, तो
 रहे सेवक माम ॥ म० ॥ आशय साथें चालीयेरे,
 एहीज रुडूं काम ॥ म० ॥ १५ ॥ त्रिविध योगधरी
 आदखोरे, नेम नाथ जरतार ॥ म० ॥ धारण पोष
 ण तारणोरे, नव रस मुगता द्वार ॥ म० ॥ १६ ॥
 कारण रूपी प्रभु जज्योरे, घण्यो न काज अकाज ॥
 ॥ म० ॥ कृपा करी मुज्ज दीजीयेरे, आनंद घन पद
 राज ॥ म० ॥ १७ ॥ इति ॥ द्वाविंशतिजिन स्तवन ॥

॥ अथ समकेतनु स्तवन प्रारंभ ॥

॥ समकेत द्वार गंजारे पेसतां जी, पाप पद्मज गया
 दूररे, माता मरु देवीनो लाडलौजी, दीठां आनंद पूररे
 ॥ सम० ॥ १ ॥ आयुर्वर्जित सात कर्मनी जी, सागर कोडा

कोडी हीन रे ॥ स्थिति प्रथम करणे करीजी, वीर्य अपूर्व
 मोगर लीनरे ॥ सम० ॥ १ ॥ जूंगल जांगी आद कषाय
 नी जी, मिथ्या मोहनी शांकल साथरे, बार उवाडया
 स्वामी संवेगनाजो, दीठा श्री अनुनव नवियण नाथ
 रे ॥ सम० ॥ ३ ॥ तोरण बांध्या जीवदया तणाजी, सांथी
 उ पूखो श्रद्धा रूपरे ॥ धूप घटा प्रभु गुण अनुमोद
 नाजी, दीप मंगल आठ अनूप रे ॥ सम० ॥ ४ ॥ सं
 वर पाणीयें अंग पखालेयाजी, केशर चंदन उत्तम
 ध्यानरे ॥ आतमरुची मृग मद महमहेजी, पंचाचार
 कुसुम प्रधानरे ॥ सम० ॥ ५ ॥ जावें पूजो रे पाव
 न आतमाजी, पूजो परमेसर परम पवित्ररे ॥ कारण
 योगें कारज नीपजे जी, स्वमाविजय जिन आगम री
 तरे ॥ सम० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीवीर जगवाननुं स्तवन ॥

॥ श्रीसिद्धारथ नंदन देवा, प्रभु सेव करुं नित्य
 मेवा ॥ देजो मुज नव नव सेवा ॥ जगत गुरु वीर
 परम उपगारी ॥ प्रभु करुणा निधि दातारी ॥ जग
 त० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ शोल पहोर प्रभु देशना
 वरसे, सांजली नवि रुदयमां धरशे ॥ तोरा चरण
 कमल नित्य फरसे ॥ ज० ॥ १ ॥ ब्राह्मण देवसर्मा

जाणे, प्रतिबोधवा मोकलेया ते टाणे ॥ गौतम चाव्या
 गुण खाणे ॥ ज० ॥ ३ ॥ प्रतिबोधीने पाढा वलेया,
 मारग मांहे श्रवणे सांजलेया ॥ प्रभु मोक्ष मार्ग संच
 रेया ॥ ज० ॥ ४ ॥ ते सांजली दिलमां वात, गौतम
 ने वज्र घात थात ॥ विवेकें गुण मणी ख्यात ॥
 ॥ ज० ॥ ५ ॥ हवे केहने हुं कहीश वीर, गौतम
 चिंतवे साहस धीर, कर्म शत्रुना त्रोट्या जंजीर ॥
 ॥ जग० ॥ ६ ॥ काती कृष्ण दुःखा निरवाण, प्र
 जाते इंद्रूति केवल नाण ॥ जयो जयो जणे गुण
 खाण ॥ ज० ॥ ७ ॥ अठार देशना राजा मलेया,
 जाव दीपक मोक्षमां जलेया ॥ इव्य दीपक गुणमणी
 नरेया ॥ ज० ॥ ८ ॥ प्रभु वख्खा शिव लटकाली, धरुं
 ध्यान पद्माशन वाली ॥ तिहां प्रगटी लोक दीवाली ॥
 ॥ ज० ॥ ९ ॥ मुज मंदिर सुरतरु फलेयो, परमात्म
 गौतम मलेयो, गई जावठ शुनदिन वलेयो ॥ ज० ॥
 ॥ १० ॥ संवत उंगणीश पचलोतेरा वर्षे, दीवाली दिन
 मन हर्षे ॥ प्रभु मोक्ष वख्खा शुन दिवर्षे ॥ जग० ॥ ११ ॥

॥ अथ कलियुगनी स्वाध्याय ॥

॥ सरसती सामिनी पायनमीने, उलट मनमांहे
 आयो, तीरथ नहीं कोइ इणे संसारें, तेणे ए कलियुग

आयो ॥ देखो बे यारो कूडो कलियुग आयो ॥ ए आ
 कणी ॥ बाबो कहे महारी नानडी बेटी, दिन दिन
 मूढ्य सचायो बे यारो ॥ कूडो कलियुग आयो ॥ १ ॥
 राजा ते परजाने पीडे, कुनर काम जलायो ॥ बोलें
 बंध नही मंत्रीने, गोचर खेत्र खेढायो बे यारो ॥
 ॥ कू० ॥ २ ॥ गुरुने गाल दीये निज चेलो, वेद पु
 राण पढायो ॥ सासु चूलेने बहु खाटलडे, फूकें श
 रीर जालायो बे यारो ॥ कू० ॥ ३ ॥ एंसी वर्पनुं हींमे
 होंसें, मूर्खें हाथ घलायो ॥ पंच तणी साखें परणी
 ने, अबला अर्थ गमायो बेयारो ॥ कू० ॥ ४ ॥ जोगी
 जंगमने संन्यासी, जांग नखे मद वायो ॥ चोर चाड
 परधनने खाये, साधुजन सीदायो बेयारो ॥ कू० ॥
 ॥ ५ ॥ निरधनने बहु बेटा बेटी, धनवंत एक न
 पायो ॥ नीच तणे घर अति घणी लखमी, उत्तम
 जन सीदायो बेयारो ॥ कू० ॥ ६ ॥ नमले बाप सं
 घातें बेटो, घणोरे मनोर्थें जायो ॥ हाथ उपाडे माय
 नें मारें, परणीछुं उमाह्यो बेयारो ॥ कू० ॥ ७ ॥ घर
 डाने घहेलो कहे बेटो, आप तणो मद वाह्यो ॥ वडू
 सूतीने वरहिंमोजे, सासरे सूवाने धरायो बे यारो ॥
 ॥ कू० ॥ ८ ॥ हज खेडे बांजण गो ज़ुति, निर्दय

नाक फडायो ॥ मा बापें बेटी वेंचीने, बेटाने पर
 णायो बेयारो ॥ कू० ॥ ए ॥ राग तणे वस गुरुने
 गुरुणी, काम करे परायो ॥ कांगानी पेरे कलहो मां
 मी, कुल गुरु नाम धरायो बेयारो ॥ कू० ॥ १० ॥
 बयर बार वरसनीने बेटो, दीठो गोद खेलायो ॥ मा
 ग्या मेह न वरसे महीयल, जानें धख्यो सवायो बे
 यारो ॥ कू० ॥ ११ ॥ कूडा कलियुगनी ए माया,
 देखी गीत गवायो ॥ पनणे प्रीतिविमल परमारथ,
 जिन वचने सुख पायो बेयारो ॥ कू० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ जंबूस्वामीनी सखाय प्रारंभः ॥

॥ सरसति सामण वीनबुं, सहगुरु जागुंजी पाय ॥
 गुंण रे गाळुं जंबु स्वामीना, हरख धरी मन मांय
 ॥ १ ॥ धन धन धन जंबु स्वामीने ॥ ए आंकणी ॥ चा
 रित्रठे वत्त दोहेळुं, व्रतठे खंमानी धार ॥ पाये अणु
 आणेजी चालबुं, करवोजी उग्रविहार ॥ धन० ॥ १ ॥
 मध्यान्ह पढी करवी गोचरी, दिनकर तपेरे निघाड ॥
 वेळु कवल सम कोलिया, ते किम वाढ्यारे जाय ॥
 ॥ धन० ॥ २ ॥ कोडी नवाणु सोवन ताहरे, ताहा
 रेठे आठेजी नार ॥ संसार तणा सुख सुण्या नही,
 जोगवो जोग रसाल ॥ धन० ॥ ४ ॥ रामे सीताने

विजोगडें, बहोत कीयारे संग्राम ॥ ठतीरे नारी तुमें
 कांइ तजो, कांइ तजो धनने धाम ॥ धन० ॥ ५ ॥
 परणीने शुं जी परिहरो, हाथ मेढ्यानो संबंध, पढी
 ने करसो स्वामी उरतो, जिम कीधो मेघ मुणिंद ॥
 ॥ धन० ॥ ६ ॥ जंबु कहेरे नारी सुणो, अम मन
 संयम जाव ॥ साचो सनेह करी जेखवो, तो संयम
 द्योअम साथ ॥ धन० ॥ ७ ॥ तेणे समे प्रजवोजी आ
 वियो, पांचसें चोर संघात ॥ तेने पण जंबुस्वामियें
 बुजव्या, बुजव्या मायने बाप ॥ धन० ॥ ८ ॥ सा
 सु ससराने बुजव्या, बुजवी आठे नार ॥ पांचसें स
 तावीशशुं, लीधोजी संयम नार ॥ धन० ॥ ९ ॥ सु
 धर्मा स्वामी पासें आविया, विचरेठे मनने उद्वास ॥
 कर्म खपावी केवल पामीया, पोहोता जी मुक्ति मो
 जार ॥ धन० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशिनी सखाय प्रारंजः ॥

॥ आज महारे एकादशीरे, नणदल मौन करी
 मुख रहियें ॥ पुढ्यानो पडूत्तर पाढो, केहने कांइ न
 कहियें ॥ आ० ॥ १ ॥ माहारो नणदोइ तुजनेवाढ्हो,
 मुजने ताहारो वीरो ॥ धूआडाना बाचका जरतां,
 हाथ न आवे हीरो ॥ आज० ॥ २ ॥ घरनो धंधो

घणो कखो पण, एक न आब्यो आडो ॥ परजव
 जातां पालव जाले, ते मुजने देखाडो ॥ आ० ॥ ३ ॥
 मागशिर सुदि अगीआरस महोटी, नेवुं जिनना निर
 खो ॥ दोहोढशो कल्याणक महोटा, पोथी जोइने
 हरखो ॥ आ० ॥ ४ ॥ सुव्रत शेठ थयो सुद्ध आ
 वक, मौन धरी मुख रहीउ ॥ पावक पूर सवजो पर
 जाल्यो, एहनो कांई न दहीउ ॥ आ० ॥ ५ ॥
 आठ पहोर पोसा ते करियें, ध्यान प्रभुनुं धरियें ॥
 मन वच काया जो वस करियें, तो जव सायर
 तरियें ॥ आ० ॥ ६ ॥ इयां समिति जाया न बोले,
 आडो अवजो पेखे ॥ पडिक्कमणासुं प्रेम न राखे,
 कहो केम लागे लेखे ॥ आ० ॥ ७ ॥ कर उपर तो
 माला फिरती, जीव फरे मन मांही ॥ चित्तडो तो
 चिहुंदिस मोले, इणे जजने सुख नाही ॥ आ० ॥ ८ ॥
 पौषध सालें जेगा थइने, चार कथा वली सांधे ॥
 कांइक पाप मिटावण आवे, बार गुणो वली बांधे
 ॥ आ० ॥ ९ ॥ एक उठंति आलश मोढे, बीजी
 उंचे बेठी ॥ नदियोमांथी कांइक नीसरती, जइ दरि
 यामां पेठी ॥ आ० ॥ १० ॥ आइ बाइ नणंद जो
 जाइ, न्हानी महोटी वडुने ॥ सासु ससरो मा ने

मासी, सीखामण ठे सढुने ॥ आ० ॥ ११ ॥ उदय
रतन वाचक उपदेशे, जे नर नारी रहेशे ॥ पोसा
मांहे प्रेम धरीने, अविचल लीला लेशे ॥ आ० ॥ १२ ॥

॥ अथ वैराग सङ्काय ॥ मननमरानी देशीमां ॥

॥ उंचा मंदिर मालीयां, सोडय वालीने सूतो ॥
काहाडो काहाडो एने सढु करे, जाणे जनम्योज नोतो
॥ १ ॥ एकरे दिवस एवो आवसे, मने सबलोजी
शाले ॥ मंत्री मढ्या सर्वे कारमां, तेनुं कांइ नचाले ॥
एकरे दिवस ० ॥ ए आंकणी ॥ साव सोनानारे शां
कला, पहेरण नव नवा वागा ॥ धोलुंरे वस्तर एना
कर्मनुं, तेतो सोधवा लाग्या ॥ एकरे ० ॥ २ ॥ चरु
कढाईया अतीषणा, बीजानुं नही लेखुं ॥ खोखरी
हांमी एना करमनी, तेतो आगल देखुं ॥ एकरे ० ॥
॥ ३ ॥ केना ठोरुने केना वाठोरु, केना मायने बाप ॥
अंतकाले जावुं जीवने एकजुं, साथे पुण्यने पाप ॥ ए
करे ० ॥ ४ ॥ सगीरे नारी एनी कामनी, उनी टग
टग जूवे, तेनु पण कांइ चाले नही, बेठी धूसके रूवे
॥ एकरे ० ॥ ५ ॥ वाढहाते वाढहा सुंकरो, वाला वो
लावी बलसे, वालांते वनना लाकडां, तेतो सार्थे जी
बलसे ॥ एकरे ० ॥ ६ ॥ नही तापी नही तुंबडी,

नथी तरवानो आरो ॥ उदयरतन प्रभु श्मनणे, मने
पार उतारो ॥ एकरे० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ अमल वर्द्धन स्वाध्याय ॥ कंत तमाकू
परिहरो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजिनवाणी मनधरी, सहगुरु दीये उपदेश
॥ मेरेलाल ॥ बावीश अजह्यमां कह्युं, अमल अज
ह्य विशेष ॥ मे० ॥ अमल म खाजो साजना ॥ १ ॥
अमल विगोवे तन्न ॥ मे० ॥ उंघ बगासा घेरणी, आवे
आखो दिन्न ॥ मे० ॥ अ० ॥ २ ॥ अमली अमलने
सारखो, आवे आनंद थाय ॥ मे० ॥ उतरतां आर
ति घणी, धीरज जीव न धराय ॥ मे० ॥ अ० ॥
॥ ३ ॥ आलसने उजागरो, बेगो ढबका खाय ॥ मे० ॥
अकल नकांइ उपजे, धर्म कथा न सुणाय ॥ मे० ॥
॥ अ० ॥ ४ ॥ काला अहिथी उपनु, नामे जे अ
हिफ्तीण ॥ मे० ॥ संग करे कोण एहनूं, पंमित लो
क प्रवीण ॥ मे० ॥ अ० ॥ ५ ॥ पहेलुं सुख कडवुं
डुए, वली घांटो घेहेराय ॥ मे० ॥ उदर व्यथानि
क आफरो, इणथी अवगुण थाय ॥ मे० ॥ अ० ॥
॥ ६ ॥ नाक बंधार्ये बोलतां, आधुं वचन बोलाय
॥ मे० ॥ अमीष सुकाये जीननुं, एहनी खाय बला

य ॥ मे० ॥ आ० ॥ ७ ॥ दाढीने मूठांदिसि, उगे
 नही अंकूर ॥ मे० ॥ काया काली मिसी दुए, गाब
 डी गालें नूर, ॥ मे० ॥ अ० ॥ ८ ॥ पलक अवेरुं
 जोलीए, तो आतम अकुजाए ॥ मे० ॥ नाक चूए
 नयणां जरे, काम करी नसकाय ॥ मे० ॥ अ० ॥
 ॥ ९ ॥ अधविच मारगमां पडे, जीवन मृत्यु समा
 न ॥ मे० ॥ हाथ पगानी नस गले, अमलि आवी
 शान ॥ मे० ॥ अ० ॥ १० ॥ आगराइ आठो कह्यो,
 मालवी मांहें जेल ॥ मे० ॥ आपइशुं सखरुं नही,
 मिसरी शुं मन मेल ॥ मे० ॥ अ० ॥ ११ ॥ नवटां
 क जे नर जीरवे, तसु अहि विष न जणाय ॥ मे० ॥
 अमल घणुं खाधा थकी, कंदर्प बल मिट जाय ॥
 ॥ मे० ॥ अ० ॥ १२ ॥ अमलीने उंन्दु रुचे, टाढुं
 नावे दाय ॥ मे० ॥ खोजी रोटी खांन घी, उपर दूध
 सुहाय ॥ मे० ॥ अ० ॥ १३ ॥ कुलवंती जे कामि
 नी, जाणे जुगति सुजाण ॥ मे० ॥ वस्तु वेची कृण
 करी, अमलीने दीए आणी ॥ मे० ॥ अ० ॥ १४ ॥
 प्रीतम आशा पूरती, न करे रीश लगार ॥ मे० ॥
 कथन नलोपें कंतनुं, ते विरली संसार ॥ मे० ॥ अ०
 ॥ १५ ॥ दुर्जागणी नारी जीका, बोले कर्कश वाणी

॥ मे० ॥ रेरे अधम अफीणीयां, आलस वंत अजाण
 ॥ मे० ॥ अ० ॥ १६ ॥ परणी जाइ पारकी, छुं कीधुं
 तें धीठ ॥ मे० ॥ पोतानुं पण पेटए, निठुर जरायन
 नीठ ॥ मे० ॥ अ० ॥ १७ ॥ कान कोट नूपण सहु,
 वेंची खांधु तेह ॥ मे० ॥ निर्लज तुज घरवासमां, क
 हे सुख पाम्युं जेह ॥ मे० ॥ अ० ॥ १८ ॥ अमल
 समो असगो नहीं, मानो ए मुज सीख ॥ मे० ॥
 बाले सुंदर देहडी, अंतें मगावे जीख ॥ मे० ॥ अ०
 ॥ १९ ॥ दालिडीने दोहेलुं, सूर उग्यानुं शाल ॥
 मे० ॥ श्रीमंतने पण नहीं जलुं, जोतां ए जंजाल ॥
 मे० ॥ अ० ॥ २० ॥ सासु बहु वढतां ठतां, रीसैं
 अमल जखंत ॥ मे० ॥ बालक खाये अजाणतां,
 जो घर अमल हवंत ॥ मे० ॥ अ० ॥ २१ ॥ प्राणी
 वध जिणछुं हुवे, ते तो तजीयें दूर ॥ मे० ॥ कर्मा
 दान दशमुं कछुं, विष व्यापार पमूर ॥ मे० ॥ अ०
 ॥ २२ ॥ चतुर विचार ए चित्त धरी, कीजें अमल
 परिहार ॥ मे० ॥ खिमाविजय पंमित तणु, कहे मा
 णिक मनुहार ॥ मे० ॥ अ० ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ अथ मरुदेवाजीनी सव्वाय ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ तुज साथें नहीं बोलुंरे रिखनजी, तें मुजने

बीसारी जी ॥ अनंत ज्ञाननी तुं रिद्धि पाम्यो, तो
 जननी न संजारी जी ॥ तु० ॥ १ ॥ मुजने मोह ह
 तो तुज उपरें, रूपन रूपन करी जपतीजी ॥ अन्न
 उदक मुजने नवि रुचतुं, तुज मुख जोवाने तृप्तिजी
 ॥ तु० ॥ २ ॥ तुं बेगो शिर ठत्र धरावे, सेवे सुर नर
 नारीजी ॥ तो जननीने केम संजारे, जाणी जाणी
 प्रीत तुमारी जी ॥ तु० ॥ ३ ॥ तुं कहेनोने हुं वली
 कहेनी, नथी इहां कोइ कहेनो जी ॥ ममता मोह धरे
 जे मनमां, मूरख पणुं सही तेहनो जी ॥ तु० ॥ ४ ॥
 अनित्य जावनायें चढया मरु देव्या, बेग गयवर
 खंधो जी ॥ अंतगड केवली थइ गया मुक्तें, रिपन
 मन आणंदो जी ॥ तु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सिखामणनी सखाय ॥

॥ श्रीगुरु चरण पसाउलें, कहिहुं सीखामणसार ॥
 मन समजावो रे आपणु, जिमपामो नव पार ॥ १ ॥
 कहे जाइ रुडुं तें हुं कहुं ॥ ए आंकणी ॥ इह नव
 परनव सुख घणालहियें, जय जय कार ॥ कहे० ॥ १ ॥
 लाख चोरासी योनीयें तुं, नमि पाम्यो नर अवतार
 देव गुरु धर्म नउलख्यो, न जप्यो मन नवकार ॥
 कहे० ॥ ३ ॥ नव मसवाडा उदरें धख्यो, पाली पोढो

रे कीध ॥ माय ताय सेवा कीधी नही, न्यायें मन नवि
 सिद्ध ॥ कहे० ॥ ४ ॥ चाडो कीधीरे चोतरें, दंभाव्या
 नजा लोक ॥ साधु सद्गुने संतापिया, आज चढाव्या
 तें फोक ॥ कहे० ॥ ५ ॥ लोनें लाग्यो रे प्राणीयो,
 नगणे रातने दीस ॥ हाहो करतां रे एकलो, जई
 हाथ घसीस ॥ कहे० ॥ ६ ॥ कपट ठज जेद तें कखा,
 जाख्या परनारे मर्म ॥ साते व्यसनने सेवेया, नवि
 कीधो जिनधर्म ॥ कहे० ॥ ७ ॥ कृमान कीधी तें खांत गुं,
 दया न कीधी रे रेख ॥ परवेदन तें जाणी नही, तो
 गुं लीधो तें जेख ॥ कहे० ॥ ८ ॥ संध्यारंग सम आ
 उखुं, जल पंपोटो रे जेम ॥ मान अणी परें विंडुठ,
 अथिर संसार ठे एम ॥ कहे० ॥ ९ ॥ अनक अनं
 तकाय वावखां, पीथां अणगल नीर ॥ रात्रि जोजन
 तें कखा, किम पामीस जवतीर ॥ कहे० ॥ १० ॥
 दान सीयल तप जावना, धर्मना चार प्रकार ॥ तेतो
 जावें न आदखा, रजलीश अनंत संसार ॥ कहे०
 ॥ ११ ॥ पंचेंडीजे पापणी, डुरगति गाले रे जैह ॥
 ते तो मेली रे मोकली, किम जाइस शिव गेह ॥
 कहे० ॥ १२ ॥ क्रोधें वींढ्यो रे प्राणीयो, मान न
 मूके रे केड ॥ माया सापणीने संग्रहो, जोनने ली

धो तें तेड ॥ कहे० ॥ १३ ॥ पररमणीरस मोहियो,
 परनिंदानो रे ढाल ॥ परइव्य तें नवि परिहस्यो, प
 रने दीधी रे गाल ॥ कहे० ॥ १४ ॥ धर्मनी वेलातुं
 आलस्यु, पापनी वेला उजमाल ॥ संच्यो धन कोइ
 खायसे, जिम मध माखी महुआल ॥ कहे० ॥ १५ ॥
 मेली मेली मूकी गया, जे उपार्जी रे आय ॥ संच
 य कीजें रे पुण्यनो, जिम आवे तुज साथ ॥ कहे०
 ॥ १६ ॥ सु६ देव गुरु उलखी, कीजें समकित सु६ि ॥
 गुरु सीखामण ए सही, ए जाणे हित बु६ि ॥ कहे०
 ॥ १७ ॥ गोडीदास संघवी तणे, आदर कीध सचाय ॥
 श्रीनयविजय उवळायनो, रूपविजय गुण गाय ॥ १८ ॥

॥ अथ नेमिनाथजिन स्तवन ॥

॥ सुनो मेरे नेमजी प्यारे, इगनसैं मत रहो
 न्यारे ॥ सुनो० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पंचरंगी पाग सिर
 सोहीयें, गले फूल माल मन मोहियें ॥ सुनो० ॥ २ ॥
 दया करी दरिशन मुज दीजें, मया करी अपनो करी
 लीजें ॥ सुनो० ॥ ३ ॥ जिनदास बंदा हे तेरा, लगा
 जिनराजसैं नेडा ॥ सु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन ॥

॥ लाल तेरे नैनोकी गत न्यारी, एतो उपशम

रसकी क्यारी ॥ लाल तेरे ॥ ए आंकणी ॥ काम
 क्रोधादि दोष रहीतसें, नयन जये अविकारी ॥
 निशा सुपन दिसा नही यामे, दर्शनावरण निवारी
 ॥ लाल ० ॥ १ ॥ औरनैनुं में काम क्रोध है, ब
 होत जरीहे खुमारी ॥ परधनादि हरनको इन्हा, ए
 ही है दुसोयारी ॥ लाल ० ॥ २ ॥ एता लक्षण है
 नैनुमें, कोयुं पामे जब पारी ॥ और बिचार करो दी
 ल अपने, एतो है करमुं सें जारी ॥ लाल ० ॥ ३ ॥
 धर्मबिना कोइ सरणा नही है, ऐसो निश्चय दीलधा
 री ॥ विनय कहे प्रभु जक्ति करले, एहीहे तारण
 हारी ॥ लाल ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वीरजिन पूजानुंस्तवन प्रारंभ ॥

॥ गोकुल मथुरां रे वाला ॥ ए देशी ॥

॥ त्रिशला नंदन रे देहें, रचीयें पूजा अधिक स
 नेहें ॥ नवनव जांतें रे करीयें, जिम जब सायर हे
 लें तरीयें ॥ चेतन प्यारा रे महारा, जिन पूजा करी
 लहो जब पारा ॥ चेतन ० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ न
 मण करो रे मन रंगें, चरचो केशर प्रभु नव अंगें ॥
 फूलनी फुटरी रे माला, कंठ तवो पंच रंग रशाला ॥
 चेतन ० ॥ २ ॥ धूप दीप मनोहार, अर्घ्य नैवेद्य फल

सुरसाज ॥ श्रीजिनवर जग सणगार, गावो गीत
 ज्ञान मनोहार ॥ चेतन० ॥३॥ दरिशण चरणने ना
 ए, तप ए चउहा पूजा जाण ॥ आराधक तेहने क
 हीयें, पूजा द्वादश जेदे लहीयें ॥ चेतन० ॥४॥ पाद
 पोष पद धारी, वरिया जिन उत्तम शिव नारी ॥ तस
 पद पञ्चने वंदो, रूपविजय पद लही आनंदो ॥ चे० ॥५॥

॥ अथ नेमराजुज स्तवन ॥

॥ मत जाउ रे पीया तुमें पाहाडमां ॥ पाहाड
 मां पाहाडमां पाहाडमां ॥ मत० ॥ तुमतो कहो ह
 म नारी त्यागी, किम जाउ गिरिनारिमां ॥ म० ॥१॥
 ठक्काय के रक्षक हो तुम, तो किम जाउ जाडिमां ॥
 म० ॥ २ ॥ कठिन गिरिवरकी वांकी टूँको, वसवो ज
 ५ उजाडिमां ॥ म० ॥ ३ ॥ राजीमतीकी वीनंती मा
 नो, रहेवो संघनी हारमां ॥ म० ॥ ४ ॥ रूपचंद कहे
 नाथनिरंजन, नेम मग्नजयो संजम जारमां ॥ म० ॥५॥

॥ अथ नेमजिन पद ॥

॥ महारा सामलीयानी वात रे, हुं केहेने पूढुं ॥
 महारा० ॥ जेने पूढुं ते दूर बतावे, पीया बिन रह्यो
 न जाय रे ॥ हुं० ॥ महा० ॥१॥ तोरण आए चजे रथ
 फेरी, पशुअन सुणी पोकार रे ॥ हुं० ॥ महा० ॥ आंबा

मोह्या केछुंडा फूट्या, आयो मास वसंत रे ॥हुं०॥
 महा०॥१॥ दाडुर मोर बपैया रे बोझे, कोयल शब्द
 सुणावे रे ॥हुं०॥महा०॥ जरमर जरमर मेहुलो रे
 वरसे, बुंद पडे रंग सोल रे ॥हुं०॥महा०॥३॥ लख्यो
 संदेसो पीया मलवेको, कोइ बटावया न जाय रे ॥हुं०॥
 महा०॥ रि६ कुशल बुध शिष्य इम जंप्पे, वालम ध्यान
 धराय रे ॥ हुं० ॥ महा० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नीडनंजन जिन स्तवन ॥

॥ जिनराज जोवानी तक जायढे रे, खरां दुःख
 डां खोवानी तक जायढे रे ॥ हलु कर्म होवानी त
 क जायढे रे, जगवंत जज्यानी तक जायढे रे ॥ ब
 हु लोने ते लान लूटायढे रे ॥ जिन० ॥ १ ॥ डनि
 या रंग दोरंगी दीसे, पलक पलक पलटायढे रे ॥
 ॥ जि० ॥ खोटे चरोसे खोटी आबुं, गांठनो ग्रंथ लुं
 टायढे रे ॥ जि० ॥ २ ॥ सज्जन सगां सहु स्वार
 थ सुधी, गरजे घहेजां आयढे रे ॥ जिन० ॥ पुण्य
 विना एक परनव जातां, संसारी सीदायढे रे ॥
 ॥ जिन० ॥ ३ ॥ रामा रामा धन धन करतो, धव
 धव जिहां तिहां धायढे रे ॥ जि० ॥ कनक अने
 बीजी कामिनी लुब्धा, केई प्राणी कूटायढे रे ॥जिन०॥

॥ ४ ॥ पंच विषयना प्रवाह मांहे, तृष्णा पूर्ण तणा
 यठे रे ॥ जि० ॥ नाव सरिखा नाथने मूकी, पापने
 जारें जरायठे रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ मोहराजाना राजमां
 वसतां, परमाधामी पासे जायठे रे ॥ जि० ॥ जिन
 मारग विण जमनो जोरो, कहोने केणे जीतायठे रे ॥
 ॥ जि० ॥ ६ ॥ श्रीसद्गुरुने उपदेशें, सूधो जहवेरी
 जणायठे रे ॥ जि० ॥ पाखंम मांहे पड्या जे प्राणी,
 काचमलामां कहेवायठे रे ॥ जि० ॥ ७ ॥ जीड जं
 जन प्रभु पास जिनेसर, पूजतां पाप पलायठे रे ॥
 ॥ जि० ॥ उदय रत्ननो अंतर जामी, बूडतां बाहे
 साहेठे रे ॥ जि० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ त्रेशठ शिलाका पुरुषनो प्रजातीउं ॥

॥ चोपाईनी देसीमां ॥

॥ प्रहसमे प्रणमुं सरसति माय, वली सहगुरुने
 लागुं पाय ॥ त्रेशठ सलाका ना कहुं नाम, नाम ज
 पंता सीजे काम ॥ १ ॥ प्रथम चोवीश तीर्थकर जा
 ण, तेह तणाहुं करीश प्रमाण ॥ रिषज अजितने
 संजव स्वाम, चोथा अजिनंदन अजिराम ॥ २ ॥ सु
 मति पदम प्रज पूरे आस, सुपार्थ चंद्रप्रज ये सु
 ख वास ॥ सुविधि शीतलने श्रेयांस नाथ, एठे सा

चा शिवपुर साथ ॥ ३ ॥ वासुपूज्य जिन विमल अ
 नंत, धर्म शांति कुंशु अरिहंत ॥ अर महि मुनिसुव्र
 त स्वाम, एहथी लहियें मुक्ति सुगाम ॥ ४ ॥ नमी
 नाथ नेमीसर देव, जस सुर नर नित्य सारे सेव ॥
 पार्श्वनाथ महावीर प्रसिद्ध, तूठा आपे अविचल रि
 ष ॥ ५ ॥ हवे नाम चक्रवर्त्ति तणा, बार चक्रीजे
 शास्त्र नण्या ॥ पहेलो चक्री जरत नरेस, सुखें सा
 ध्या जेणे षट खंम देस ॥ ६ ॥ बीजो सगर नामे
 नूपाल, त्रीजो मधव राय सुविसाल ॥ चोथो कहीयें
 सनत कुमार, देव पदवी पाम्याळे सार ॥ ७ ॥ शां
 ति कुंशु अर त्रणे राय, तीर्थकर पण पद कहेवा
 य ॥ सुष्ठुम आठमो चक्री थयो, अति लोने करी न
 रकें गयो ॥ ८ ॥ महापद्म राय बुद्धि निधान, हरि
 षेण दशमो राजान ॥ ईग्यारमो जय नाम नरेस,
 बारमो ब्रह्मदत्त चक्रेश ॥ ९ ॥ ए बारे चक्रीसर क
 ह्या, सूत्र सिद्धांत थकी में लह्या ॥ हवे वासुदेव क
 हुं नव नाम, त्रणखंम जेणे जीत्या गाम ॥ १० ॥
 वीर जीव प्रथम त्रिष्टु, बीजो नृप जाणो द्विष्टु ॥
 स्वयंनू पुरुषोत्तम महाराय, पुरुषसिंह पुरुष पुंमरि
 क राय ॥ ११ ॥ दत्त नारायण कृष्ण नरेश, ए नव

हवे बलदेव विशेष ॥ अचल विजय नइ सुप्रन जूप,
 सुदर्शन आनंद नंदन रूप ॥ १२ ॥ पद्म राम ए न
 व बलदेव, प्रतिशत्रु नव प्रति वासुदेव ॥ अश्वग्री
 व तारक राजेंड, मेरक मधु निशुंन बलेंड ॥ १३ ॥
 प्रह्लादने रावण जरासिंध, जीत्यां चक्र बलें तस सं
 ध ॥ त्रेशठ संख्या पदवी कही, माता एकशठ ग्रंथें
 लही ॥ १४ ॥ पिता बावनने शाठ शरीर, उगणशाठ
 जीव महाधीर ॥ पंच वरण तीर्थकर जाण, चक्री
 सोवन वान वखाण ॥ १५ ॥ वासुदेव नव शामल
 वान, उज्ज्वल तनु बलदेव प्रधान ॥ तीर्थकर मुक्ति
 पद वरदा, आठ चक्री साथें संचरया ॥ १६ ॥ बल
 देव आठ बली तेने साथ, शिव पद लीधो हाथो हा
 थ ॥ मधवा सनतकुमार सुर लोक, त्रीजे सुख विल
 से गत शोक ॥ १७ ॥ नवमो बलदेव ब्रह्म निवास,
 वासुदेव सद्गु अद्योगति वास ॥ अष्टमो बारमो चक्री
 साथ, प्रतिवासुदेव समा नरनाथ ॥ १८ ॥ सुरव
 र सुख शाता जोगवी, नारकी दुःख व्यथा अनुजवी ॥
 अनुक्रमें कर्म सेन्य जय करी, नर वर चतुरंगी सुख
 वरी ॥ १९ ॥ सद्गुरु जोगें क्लायक नाव, दर्शन
 ज्ञान नवोदधि नाव ॥ आरोही शिव मंदिर वसें, अ

नंतचतुष्टय तव उल्लसे ॥ १० ॥ लेशे अक्षय पद नि
रवाण, सिद्ध सवे मुज द्यो कव्याण ॥ उत्तम नाम
जपो नर नार, स्वरूप चंड लहे जय जय कार ॥ ११ ॥

॥ अथ अजितजिन स्तवन ॥ निड्डीनी देशी ॥

॥ उलंग अजित जिणंदनी, नवि कीधी हो जेणे
एक वारके ॥ दश उपनय करी दोहिलो, पाम्यो पण
हो एलें अवतारके ॥ उलंग० ॥ १ ॥ असासय सा
सय इस्यो, कोइ कुमति हो देखाडे संद के ॥ पुत्र
पिता गुरु शिष्यनो, किम तेहने हो घटसे संबंधके ॥
उलंग० ॥ २ ॥ अक्षरथी जिम ज्ञाननो, गुण प्रगटे
हो टले सयल विरूद्ध के ॥ तिम वाहाला जिनजी
तणा, दरिणथी हो होये दंशण सुद्ध के ॥ उलंग०
॥ ३ ॥ परम साधन जिन सेवना, कोइ तेहमां हो
कहे हिंसा दोषके ॥ गमन अशन गुरु वंदना, जल
क्रमणादि हो किम क्रिया पोषके ॥ उलंग० ॥ ४ ॥
सुर करणी संजारीयें, जो वारीयें हो नर करणी की
ध के ॥ घट पट आगम लिपि कला, इत्यादिक हो
आयें निषेध के ॥ उलंग० ॥ ५ ॥ ठउमढादि न्हव
णादिके, अवढा हो तिहां होय सुप्रसादके ॥ जिहां
अनुभव संजावना, ते पूजा हो किम करवो प्रमाद

के ॥ उलंग० ॥ ६ ॥ वृक्षानुगत नवि चर्चियें, लो
जीनेहो लोजी ठे सिद्ध के ॥ मोहन कहे कवि रूपनो,
गज लंठन हो नामे नवनिद्ध के ॥ उलंग० ॥ ७ ॥

॥ अथ कृष्णजिन स्तवन ॥ निड्डीनी देशीमां ॥
॥ वृष्ण लंठन दिन एटला, अति पावन हो कीधुं
पाताल के, नाग्य योगें हवे नक्तिने, दीधुं दरिशन
हो एह दीन दयाल के ॥ १ ॥ सौजागी साहेब सेवी
यें ॥ ए आंकणी ॥ नक्ति वत्सल महिमा निधि, करुणा
कर हो उपशम रस पूरके ॥ प्रगट थया नूपति पुरे
जिम प्रहरमें हो निषदाचलें सूरके ॥ सोजागी०
॥ २ ॥ अतिशयवंत जिनेसरू, जगजीवनहो नरदेव
पमूरके ॥ पुण्यवसें सुप्रसन्न थया, समकितथी हो
अनुनव अंकूर के ॥ सोजागी० ॥ ३ ॥ आज परम
आनंद हुउं, आज बूठा हो अमीय जलधार के ॥ नव
जय जंजण तुम तणो, जेह निरख्यो हो दूर्लज देदार
के ॥ सोजागी० ॥ ४ ॥ सुर नायक सेवाकरे, तुम
मूरति हो सही मोहन बेल के ॥ रस लीणा गुण आ
लवे, स्वर जीणा हो नारी गज गेल के ॥ सोजागी०
॥ ५ ॥ स्वामी नाम प्रजावथी, सवि संपद हो नवनिधि
कृद्धि गेह के ॥ चरण कमल जेटया थकी, महा मंग

ल हो मन मान्यो नेह के ॥ सोनागी० ॥ ६ ॥ संवत
सत्तर अडशठें, फागुण सुदि हो तेरश तिथि सार
के ॥ मोहन कहे कवि रूपनो, जिन प्रणम्या हो होये
जय जय कार के ॥ सोनागी० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितजिन स्तवन ॥

॥ अजित जिणंदजुहारीयें ॥ साहेबा विजयाराणीना
नंद ॥ जिणंद मोराहे ॥ सुर नर किन्नर तमतणा,
साहेबा सेवे पय अराविंद ॥ जिण० ॥ अजि० ॥
॥ १ ॥ जितशत्रु नृप लाडलो ॥ सा० ॥ जितशत्रु
जगवान ॥ जि० ॥ जीतशत्रु मुज कीजीयें ॥ सा० ॥
दीजीयें वंठित दान ॥ जि० ॥ अजि० ॥ २ ॥ अंत
राय पंचक टट्यो ॥ सा० ॥ हास्य ठक्क अज्ञान ॥ जि० ॥ अ
विरति काम निझा तजी, तेम राग द्वेष अंतवान ॥
जि० ॥ अजि० ॥ ३ ॥ मिथ्यात्व दोष अठार ए ॥
सा० ॥ त्यजी करवो तुम गुण संग ॥ जि० ॥ केव
लज्ञान विराजता ॥ सा० ॥ सादि अनंत अजंग ॥
जि० ॥ ४ ॥ तुं सकल परमेसरू ॥ सा० ॥ तुं निज
शिव पद नूप ॥ जि० ॥ तुम पद पद्मनी चाकरी ॥
सा० ॥ चाहे चित्त नित्य रूप ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितजिन स्तवन ॥ सुरतिमहीनानी देशी ॥

॥ कौशल्य देस सोहामणु, नयरी अयोध्या रे ठा
म ॥ राज करे तिहां राजवी, जीतशत्रु एनु नाम
॥ १ ॥ विजया रे राणी तेहनी, शीयलवती अनिरा
म ॥ तेहनी कूखे अवतस्या, अजित जिनेसर स्वाम
॥ २ ॥ शाढा रे चारसें धनुपनी, कंचन वरणी का
य ॥ बहोतेर लाख पूर्व आउखो, श्रीजिनवरनी आ
य ॥ ३ ॥ पुण्य संयोगें हुं पामियो, तमने श्रीजि
नराज ॥ पाप गया सर्वे माहेरा, फलेया मनोरथ
आज ॥ ४ ॥ दीन दयाल दया करी, देजो अविचल राज,
नित्यलान कहे प्रभु माहेरा, सारजो वंछित काज ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ देही देही नणंद हठीली ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीपासजी प्रगट प्रजावी, तुज मूरती मुज म
न जावी रे ॥ मन मोहना जिनराया ॥ सुर नरुंकि
न्नर गुण गाया रे ॥ म० ॥ ए आंकणी ॥ जे दिनथी
मूरती दीठी, ते दिनथी आपदा नीठी रे ॥ म० ॥ १ ॥
मुख मटकाळुं सुप्रसन्न, देखत रीजे नवि मन्न रे ॥
म० ॥ समता रस केरा कचोला, नयणा दीठे रंग रो
ला रे ॥ म० ॥ २ ॥ हाथे न धरे हथियार, नहीं ज

पमालानो प्रचार रे ॥ म० ॥ उत्संगें नधरे रामा, तेहथी
 उपजे सवि कामा रे ॥ म० ॥ ३ ॥ नकरे गीत नृ
 त्यना चाला, एतो प्रत्यक्ष नटना चाला रे ॥ म० ॥ आ
 पें न वजावे वाजा, नधरे वस्त्र जीरण साजा रे ॥
 म० ॥ ४ ॥ एम मूरति तुज निरुपाधी, वीतराग प
 णे करी साधी रे ॥ म० ॥ कहे मानविजय उवजा
 या, में अवलंब्या तुज पाया रे ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥
 ॥ अथ पार्श्वजिन स्तवन संदेसो जइ लावे वागड
 देशनो रे ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ साहेबा श्री संखेसर पासजी, प्रभुजी नवोदधि
 तरण जिहाज ॥ संदेसो सुणजो वामानंदजी ॥ सा
 हिबा धारक तारक बिरुदनो, प्रभुजी अहो अहो ग
 रीब निवाज ॥ संदेसो ० ॥ १ ॥ साहिबा अतीत चो
 वीशीमां वर्त्ततां, प्रभुजी दामोदर नगवंत ॥ सं० ॥
 साहिबा तेसमी जीव गणधर तेणे, प्रभुजी बिंब न
 राव्यो गुणवंत ॥ सं० ॥ २ ॥ साहिबा ध्यान धख्यो
 जब आपणुं, प्रभुजी श्रीसंखेसर राय ॥ सं० ॥ सा
 हिबा प्रगट थयां पातालथी, प्रभुजी विघन हस्या
 सहु जाय ॥ सं० ॥ ३ ॥ साहिबा जनम मरण न
 य सवि हरो, प्रभुजी तो ए उपडव कुण मात्र ॥

सं० ॥ साहिबा इंद चंद नागेंदथी, प्रभुजी रूप अ
 नंत गणु गात्र ॥ सं० ॥ ४ ॥ साहिबा प्रातिहार्य
 सवि सुंदरु, प्रभुजी शोजित गुण गण वृंद ॥ सं० ॥
 साहेबा सुरपति नरपति मुनिवरा, प्रभुजी सेवित पद
 अरविंद ॥ सं० ५ ॥ साहिबा अहोनिशि पद कज से
 वना, प्रभुजी चाहुं भुं दरिशन देदार ॥ सं० ॥ साहे
 बा दीपविजय कहे दीजीयें, प्रभुजी तुम दरिशन सु
 खकार ॥ सं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथनी स्वाध्याय ॥

॥ सातेवारनी देशीमां ॥

॥ तोरण आवी कंत, पाठावलिया रे ॥ मुऊ फ
 रके दाहिण अंग, तेणे अटकलिया रे ॥ १ ॥ कुण
 जोशीयें जोया जोश, चुगल कुण मलिया रे ॥ कु
 ण अवगुण दीठा आज, जिणथी टलिया रे ॥ २ ॥
 जाउ जाउ रे सहियरो दूर, शाने ठेडो रे ॥ पातली
 यो शामल वान, वालिम तेडो रे ॥ ३ ॥ यादव कु
 ल तिलक समान, एम न कीजें रे ॥ एक हासुंने बी
 जी हाण, केम खमीजें रे ॥ ४ ॥ इहां वाये जाजो स
 मीर, बीज जबूके रे ॥ बापैयो पीठ पोकारे, है
 यडुं चमके रे ॥ ५ ॥ मरपावे दाडुर सोर, नदीउ

माती रे ॥ घन गङ्गारिवने जोर, फाटे ठाती रे ॥ ६ ॥
 हरताणुक पहेखां जूमि नवरस रंगें रे ॥ वावलीया
 नवरस हार, प्रीतम सगें रे ॥ ७ ॥ में पूरण कीधां
 पाप, तापें दाधी रे ॥ पडे आंसुधार विषादें, वेलडी
 वाधी रे ॥ ८ ॥ मुने चडावी मेरु शीस, पाडी हेठी
 रे ॥ किम सहवाये महाराज, विरह अंगीठी रे ॥ ९ ॥
 मुने परणी प्राण आधार, संयम लेजो रे ॥ हुं पतिव्र
 ता हुं स्वामी, साथें वहेजो रे ॥ १० ॥ इम आठे न
 वनी प्रीत, पीठडा बलसे रे ॥ मुज मनना मनोरथ
 नाथ, पूरण फलसे रे ॥ ११ ॥ हवें चार महाव्रत सा
 र, चुंदडी दीधी रे ॥ रंगीजी राजुलना रें, प्रेमें लीधी
 रे ॥ १२ ॥ मैत्र्यादिक जावना चार, चोरी बांधी रे ॥
 देइध्यानानल सलगाय, करम उपाधि रे ॥ १३ ॥ थ
 यो रत्न त्रयी कंसार, एकी जावें रे ॥ आरोगे नरने
 नार, सुख स्वजावें रे ॥ १४ ॥ तजो चंचलता त्रिक
 योग, दंपती मलिया रे ॥ श्री खिमाविजय जिन नेम,
 अनुभव कलिया रे ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ केशरीयाजीनुं स्तवन ॥

॥ प्रचुनी मूरत मोहन वेलडी, जी तुमारी मूरत
 मोहन वेलडी ॥ चालो सखी धुलेवेरे जाइयें, प्रचुनी

सामरी सूरतढे सेलडी ॥ जीतु० ॥ १ ॥ केशर चंद
 न नखारे कचोलां, प्रभुजीनी पूजा करूं सहु पेहेलडी
 ॥ जीतु० ॥ २ ॥ जाई जुइ वर ममरोजी मरुवो, प्रभुजीने
 पूजी चडाउं चंबेलडी ॥ जी० ॥ ३ ॥ सुरनर मुनिवर जो
 इने मोह्या, कांइ रुपनदाश गुण वेलडी ॥ जीतु० ॥ ४ ॥
 ॥ अथ उपदेश विपे-सद्या फतमलनी देशी ॥

॥ पडजो कुमतिगढना कांगरा, मरजो राउ मोह
 राण ॥ वालो महारो निज घरे नावीउं, एणे परघरें
 कीधा प्रयाण ॥ वा० ॥ एम कहे सुमति सुजाण
 ॥ वा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ दांत पाडूं रे दूती त
 णा, पाडोसणना रे लउं प्राण ॥ जेणें महारो जीवन
 जोलव्यो, लइ नारव्यो नरकनी खाण ॥ वा० ॥ २ ॥
 मायायें मद पाइने, एतो वास्यो पोताने वास ॥ मा
 हारोने वासो टाळीने, एणें मुजने कीधी निरास
 ॥ वा० ॥ ३ ॥ गुणवंतना गुण गोपवी, गुण हीणा
 सुं मांमी गोठ ॥ आप स्वरूप न उजखे, एतो पाप
 नी चलवे पोठ ॥ वा० ॥ ४ ॥ अबुज सार्ये धरे आ
 सकी, एतो पूजे न पूज्यना पाय ॥ परम महोदय
 पामजो, ज्यारें आवसे आपणे ठाय ॥ वा० ॥ ५ ॥
 श्रीदादा पास पसाउलें, में तो कुमतिनो पाडयो को

ट ॥ घर आण्यो निज घर धणी, में तो चूकवी सो
 कनी चोट ॥ वा० ॥ ६ ॥ वाचक उदयरतन वदे, जे
 पूजसे प्रभुना पाय ॥ ते परमपदे पद धारसे, बली
 संपत्ति लहेसे सवाय ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ धर्मजिन स्तवन ॥

॥ केशर वरणोहो काढ कसुंबो मारा लाल ॥ ए देशी ॥
 ॥ धर्मजिणंदाहो, में तुज बंदा ॥ मारालाल ॥
 तुजगुण वृंदाहो, गावे इंदा ॥ मा० ॥ शिवतरु कंदा
 हो, तुं कुलचंदा ॥ मा० ॥ तेज दिणंदाहो, अति आ
 नंदा ॥ मा० ॥ १ ॥ मोहन गारीहो, मूरति तारी
 ॥ मा० ॥ प्राण पीयारीहो, जावं बलिहारी ॥ मा० ॥
 द्यो शिवनारीहो, रंग करारी ॥ मा० ॥ ते जगल्यारी
 हो, ठे मुजवारी ॥ मा० ॥ २ ॥ दिल अटकाणोहो,
 दास कहाणो ॥ मा० ॥ तुं जग राणोहो, सुजस
 गवाणो ॥ मा० ॥ करुणा आणोहो, सेवा जाणो
 ॥ मा० ॥ हवे नताणोहो, मलिउं टाणो ॥ मा० ॥
 ॥ ३ ॥ नेह नवेलीहो, सुमति सहेली ॥ मा० ॥
 रंगे खेलीहो, थइ मुज बेली ॥ मा० ॥ माया वेली
 हो, मूल उखेली ॥ मा० ॥ कुमती अकेलीहो, दूरें
 मेली ॥ मा० ॥ ४ ॥ तुं जिनरायाहो, सुजस सवा

या ॥ मा० ॥ दिलमें आयाहो, पाप गमाया ॥ मा०
 वंठित पायाहो, विमल पसाया ॥ मा० ॥ गुण मन
 जायाहो, रामें गाया ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मल्लिजिन स्तवन ॥ होरी खेलेंगे ॥ ए देशी ॥

॥ मन मोहन मल्ली नाथको. जस बोलेंगे ॥ शि
 व रमणीको रंग, धुंधट पट खेलेंगे ॥ मोह्यो मन घ
 न मोरज्युं ॥ जस० ॥ अब औरन चाहुं संग ॥ धुं०
 ॥१॥ चिंतामणीकूं पाइके ॥ ज० ॥ कूंण राचे काचे
 काच ॥ धुं० ॥ को चाहै खर केलिकूं ॥ ज० ॥ तजी
 सुर कुमरिको नाच ॥ धुं० ॥ २ ॥ बाउलकूं सेवे न
 र्ही ॥ ज० ॥ तजी मधुकर मालती फूल ॥ धुं० ॥
 कोमल सज्या ठोरके ॥ ज० ॥ कुण बैठे धरिके सूल
 ॥ धुं० ॥ ३ ॥ प्रलुकी मूरति मेरे मनवसी ॥ ज० ॥
 सोतो विसराइ विसरैन ॥ धुं० ॥ परसन प्रलु मुख
 देखके ॥ ज० ॥ हम पावन कीने नैन ॥ धुं० ॥ ४ ॥
 जनम कृतारथमें कखो ॥ ज० ॥ जब पायो असो
 इस ॥ धुं० ॥ विमल विजय उवधायको ॥ ज० ॥
 इम राम कहे गुन शीश ॥ धुं० ॥ ५ ॥

॥ अथ नेमिजिन स्तवन रागणी जंगली ॥

॥ संयम लेउंगी साथ, पीयामें तो संयम लेउंगी ॥

माय बाप मेरे काम न आवे, जूठो ए संसार ॥ पी
या० ॥ १ ॥ तोरणसैं रथ फेर चलायो, सुणी पशु
अन पोकार ॥ पी० ॥ २ ॥ सहसावन जइ संयम
लीनो, नेम चढे गिरनार ॥ पी० ॥ ३ ॥ मोतन जा
ल कहे अपने प्रीतसैं, उताख्यो नव पार ॥ पी० ॥ ४ ॥

॥ अथ श्रीदेवचंड़जीकृत चोवीशी प्रारंभ ॥ तत्र प्रथम ॥
॥ श्रीरिपनजिन स्तवन निड्डीवेरण दुइ रही ॥ ए देशी ॥

॥ रिपन जिणंदशुं प्रीतडी, किम कीजेंहो कहो
चतुर विचार ॥ प्रभुजी जइ अलगा वस्या, तिहां कि
णे नविहो कोइ वचन उच्चार ॥ १ ॥ रि० ॥ कागल
पण पोहोचे नहि, नवि पोहोचेहो तिहां को परधा
न ॥ जे पोहोचे ते तुम समो, नवि जाखेहो कोइनो
व्यवधान ॥ २ ॥ रि० ॥ प्रीत करे ते रागीया, जि
नवरजीहो तुमेतो बीतराग ॥ प्रीतडी जेह अरागी
थो, जेलववीहो लोकोत्तर माग ॥ ३ ॥ रि० ॥ प्रीति
अनादिनी विष नरी, तेरीतेंहो करवा मुज नाव ॥
करवी निरविष प्रीतडी, किण जांतेहो कहो बने ब
नाव ॥ ४ ॥ रि० ॥ प्रीती अनंती पर थकी, जे तो
डेहो ते जोडे एह ॥ परम पुरुषथी रागता, एकत्वता

हो दाखी गुण गेह ॥ ५ ॥ रि० ॥ प्रभुजीने अवलं
बता, निज प्रभुताहो प्रगटे गुण राश ॥ देवचंद्नी
सेवना, आपे मुऊहो अविचल सुखवास ॥ ६ ॥ रि० ॥

॥ अथ श्रीअजितजिन स्तवन ॥

॥ देखो गति दैवनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानादिक गुण संपदारे, तुऊ अनंत अपार ॥
ते सांजलतां उपनीरे, रुचि तेणे पार उतार ॥ १ ॥
अजित जिन तारजोरे, तारजो दीनदयाल ॥ अ
जि० ॥ ए आंकणी ॥ जे जे कारण जेहनोरे, सामग्री
संयोग ॥ मिलता कारज नीपजेरे, कर्त्ता तणे प्रयोग
॥ २ ॥ अ० ॥ कार्यसिद्धि कर्त्ता वसुरे, लहि कारण
संयोग ॥ निज पद कारक प्रभु मित्यारे, होय निमि
त्तह जोग ॥ ३ ॥ अ० ॥ अजकुल गत केसरि लहे
रे, निज पद सिंघ निहाल ॥ तिम प्रभु नक्ते नवि
लहेरे, आत्म शक्ति संजाल ॥ ४ ॥ अ० ॥ कारण
पद कर्त्ता पणोरे, करी आरोप अजेद ॥ निजपद अ
रथी प्रभु थकीरे, करे अनेक उमेद ॥ ५ ॥ अ० ॥
एहवा परमात्म प्रभुरे, परमानंद स्वरूप ॥ स्यादवाद
सत्ता रसीरे, अमल अखंन अनूप ॥ ६ ॥ अ० ॥
अरोपित सुख त्रम टव्योरे, नास्यो अव्याबाध ॥

समख्यो अजिजाखी पणोरे, कर्त्ता साधन साध्य ॥
 ॥ ७ ॥ अ० ॥ ग्राहकता स्वामित्वतारे, व्यापक जो
 का जाव ॥ कारणता कारज दशारे, सकल ग्रहं नि
 ज जाव ॥ ८ ॥ अ० ॥ श्रद्धा नासन रमणतारे, दाना
 दिक परिणाम ॥ सकल यथा सत्ता रसीरे, जिनव
 र दरिसण पाम ॥ ९ ॥ अ० ॥ तिणे निर्यामक मा
 हणोरे, वैद्य गोप आधार ॥ देवचंद्र सुख सागरुरे,
 जाव धरम दातार ॥ १० ॥ अ० ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसंनवजिन स्तवन ॥ धणरा ढोला ॥ एदेशी ॥
 ॥ श्रीसंनवजिन राजजीरे, ताहंरुं अकल स्वरूप
 जिनवर पूजो ॥ स्वपर प्रकाशक दिन मणीरे, समता
 रसनो नूप ॥ जि० ॥ १ ॥ पूजो पूजोरे नविक जि
 न पूजो, प्रभु पुज्या परमानंद ॥ जि० ॥ ए आंकणी ॥
 अविसंवाद निमित्तठोरे, जगत जंतु सुखकाज ॥ जि० ॥
 हेतु सत्य बहुमानथीरे, जिन सेव्यां शिवराज ॥
 ॥ जि० ॥ २ ॥ उपादान आतम सहीरे, पुष्टालंबन
 देव ॥ जि० ॥ उपादान कारण पणे रे, प्रगट करे
 प्रभु सेव ॥ जि० ॥ ३ ॥ कार्यगुण कारण पणेरे,
 कारण कार्य अनूप ॥ जि० ॥ सकल सिद्धता ताह
 री रे, माहरे साधन रूप ॥ जि० ॥ ४ ॥ एक बार

प्रभु वंदना रे, आगमरीतें थाय ॥ जि० ॥ कारण
 सत्यें कार्य नीरे, सिद्धि प्रतित कराय ॥ जि० ॥ ५ ॥
 प्रभु पणे प्रभु उलखी रे, अमल विमल गुण गेह
 ॥ जि० ॥ साध्यदृष्टी साधक पणे रे, वंदे धन नर
 तेह ॥ जि० ॥ ६ ॥ जन्म कृतारथ तेहनो रे, दिवस
 सफल पण तास ॥ जि० ॥ जगतसरण जिन चरणे
 रे, वंदे धरीय उद्वास ॥ जि० ॥ ७ ॥ निज सत्ता निज
 जावथी रे, गुण अनंतनो ठाण ॥ जि० ॥ देवचंड़ जि
 नराजजी रे, सुदसिदसुख खाण ॥ जि० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ ॥ श्रीअनिनंदनजिनस्तवन ॥

॥ ब्रह्मचरजपद पूजीयें ॥ ए देशी ॥

॥ क्युं जाणुं क्युं बनीआवसे, अनिनंदन रस
 रिति होमिच्छ ॥ पुज्ज अनुभव त्यागथी, करवी जसु
 परतीत होमिच्छ ॥ क्युं० ॥ १ ॥ परमात्म परमे
 स्वरू, वस्तु गते ते अलिप्तहो मिच्छ ॥ इव्ये इव्य
 मिलेनही, जावेंते अन्य अव्याप्तहो मिच्छ ॥ क्युं० ॥ २ ॥
 शुद्ध स्वरूप सनातनो, निर्मलजे निसंगहो मिच्छ ॥
 आत्म विनूति परणम्यो, नकरे ते परसंगहो मिच्छ
 ॥ क्युं० ॥ ३ ॥ पण जाणुं आगम बले, मिलवो तुम
 प्रभु साथहो मिच्छ ॥ प्रभुतो स्व संपत्तिमई, शुद्ध स्व

रूपनो नाथहो मित्त ॥ क्युं० ॥ ४ ॥ पर परिणामि
 कता अठे, जेतुज पुजल जोगहो मित्त ॥ जड चल
 जगनी एवनो, नघटे तुजने जोगहो मित्त ॥ क्युं० ॥ ५ ॥
 शुद्ध निमित्त प्रभु ग्रहो, करी अशुद्ध पर हेयहो मि
 त्त ॥ अत्मालंबी गुण लही, सद्गु साधकनो व्येयहो
 मित्त ॥ क्युं० ॥ ६ ॥ जिम जिनवर आलंबने, वधे सधे
 एकतानहो मित्त ॥ तिमतिम आत्मालंबनी, ग्रहे स्व
 रूप निदानहो मित्त ॥ क्युं० ॥ ७ ॥ स्व स्वरूप एकत्वता,
 साधे पुर्णानंदहो मित्त ॥ रमे जोगवे आतमा, रत्नत्रयी
 गुणवृंदहो मित्त ॥ क्युं० ॥ ८ ॥ अजिनंदन अवलंबने,
 परमानंद विलासहो मित्त ॥ देवचंद्र प्रभु सेवना, करी
 अनुभव अन्यासहो मित्त ॥ क्युं० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ ॥ श्रीसुमतिजिनस्तवन ॥ कडखानी देशी ॥

॥ अहो श्री सुमतिजिन शुद्धता ताहरी, स्वगुण
 पर्याय परिणाम रामी ॥ नित्यता एकता अस्तिता इ
 तरयुत, जोग्यजोगी अको प्रभु अकामी ॥ १ ॥ अ० ॥
 उपजे व्यय लहे तहवि तेहवो रहे, गुण प्रमुख ब
 हुलता तहवि पिमि ॥ आत्मजावें रहे अपरता न
 विग्रहे, लोक प्रदेश मित्त पिण अखंमी ॥ २ ॥
 ॥ अ० ॥ कार्य कारण पणे परणमे तहवि ध्रुव, का

र्यजेदं करे पण अजेदी ॥ कर्तृता परणमे नव्यता न
 वी रमे, शकल वेत्ता थको पिण अवेदी ॥ ३ ॥ अ० ॥
 शुद्धता बुद्धता देव परमात्मता, सहज निज जाव
 जोगी अयोगी ॥ स्वपर उपयोगितादात्म्य सत्तार
 सी, शक्ति प्रयुंजतो न प्रयोगी ॥ ४ ॥ अ० ॥ व
 स्तु निज परिणते सर्व परिणामकी, एतजे कोइ प्रचुता
 नपामे ॥ करे जाणे रमे अनुजवे ते प्रचु, तत्व स्वा
 मीत्व शुचि तत्व धामे ॥ ५ ॥ अ० ॥ जीव नवि पुं
 ग्गली नैव पुग्गल कदा, पुग्गलाधार नहीं तास रं
 गी, परतणो ईस नहीं अपर ऐश्वर्यता, वस्तुधर्मे क
 दा नपर संगी ॥ ६ ॥ अ० ॥ संग्रहे नहीं आपे न
 हीं पर जणी, नवि करे आदरे नपर राखे ॥ शुद्ध
 स्यादाद निज जाव जोगी जिके, तेह परजावने के
 म चाखे ॥ ७ ॥ अ० ॥ ताहरी शुद्धता जास आ
 श्र्वर्यथी, उपजे रुचि तेणे तत्व इहे ॥ तत्त्वरंगी थयो
 दोषथी उजग्यो, दोष त्यागे टले तत्वलीहे ॥ ८ ॥ अ० ॥
 शुद्ध मार्गे वध्यो साध्य साधन सध्यो, स्वामी प्रतिबंदे
 सत्ता आराधे ॥ आत्म निष्पत्ति तिम साधना नवि
 टके, वस्तु उत्सर्ग आत्म समाधे ॥ ९ ॥ अ० ॥
 माहरी शुद्ध सत्तातणी पूर्णता, तेहनो हेतु प्रचु तु

हिं साचो ॥ देवचंडे स्तब्धो मुनि गणे अनुभव्यो,
तत्त्व नक्ते नविक सकल राचो ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीपद्म प्रज्ञ जिन स्तवन ॥

हुं तुज आगल शीकहुं केशरीया लाल ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीपद्मप्रज्ञ जिन गुणनिधिरे लाल, जग तारक
जग दीसरे ॥ वाढ्हेसर ॥ जिन उपगार थकी लहेरे
लाल, नविजन सिद्धि जगीसरे ॥ वा० ॥ १ ॥ तुज
दरिसण मुज वालहोरे लाल, दरिसण छुट पवित्त
रे ॥ वा० ॥ दर्शन शब्द नयें करेरे लाल, संग्रह एवं
नूतरे ॥ वा० ॥ २ ॥ तु० ॥ बीजें वृद्ध अनंततारे
लाल, पसरे नू जल योगरे ॥ वा० ॥ तिम मुज आ
तम संपदारे लाल, प्रगटे प्रभु संयोगरे ॥ वा० ॥
॥ ३ ॥ तु० ॥ जगत जंतु कारज रुचीरे लाल, साथे
उदये जाणरे ॥ वा० ॥ चिदानंद सुविलासतारे लाल,
वाधे जिनवर जाणरे ॥ वा० ॥ ४ ॥ तु० ॥ लब्धि
सिद्धि मंत्राद्धरेंरे लाल, उपजे साधक संगरे ॥ वा० ॥
सद्देज आध्यात्म तत्त्वतारे लाल, प्रगटे तत्वी रंगरे
॥ वा० ॥ ५ ॥ तु० ॥ लोह धातु कंचन दुवेरेलाल,
पारस फरसन पामिरे ॥ वा० ॥ प्रगटे अध्यात्म
दशारे लाल, व्यक्त गुणी गुण ग्रामरे ॥ वा० ॥ ६ ॥

॥ तु० ॥ आत्म सिद्धि कारज नणीरे लाल, सहज
 निर्यामक हेतुरे ॥ वा० ॥ नामादिक जिनराजना रे
 लाल, नवसागर मांहे सेतुरे ॥ वा० ॥ ७ ॥ तु० ॥
 थंनन इंदिय योगनोरे लाल, रक्त वरण गुण रायरे
 ॥ वा० ॥ देवचंड वृंदे स्तव्योरे लाल, आप अवर्ण
 अकायरे ॥ वा० ॥ ८ ॥ तु० ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुपार्श्व जिन स्तवन ॥

॥ हो सुंदर तप सरिखो, जगको नही ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसुपास आनंदमें, गुण अनंतनो कंदहो जि
 नजी ॥ ज्ञानानंदे पूरणो, पवित्र चारित्रानंद हो
 ॥ जि० ॥ १ ॥ श्री० ॥ संरक्षण विण नाथहो, इव्य
 विना धनवंतहो ॥ जि० ॥ करता पद किरिया विना,
 संत अजेअ अनंत हो ॥ जि० ॥ २ ॥ श्री० ॥ अ
 गम अगोचर अमरतुं, अन्वय रुद्धि समूहहो ॥ जि० ॥
 वरण गंध रस फरस विणुं, निज नोक्ता गुण व्यूहहो
 ॥ जि० ॥ ३ ॥ श्री० ॥ अद्भ्य दान अचिंतना, ला
 न अयत्ने नोगहो ॥ जि० ॥ वीर्य शक्ति अप्रया
 सता, सुख स्वगुण उपनोगहो ॥ जि० ॥ ४ ॥ श्री० ॥
 एकांतिक आत्यंतिको, सहज अकृत स्वाधीनहो ॥
 ॥ जि० ॥ निरुपचरित निरदंड सुख, अन्य अहेतु

क पीनहो ॥ जि० ॥ ५ ॥ श्री० ॥ एक प्रदेशों ताहरे,
 अव्याबाध समायहो ॥ जि० ॥ तसु पर्याय अवि
 नागता, सर्वाकाश नमायहो ॥ जि० ॥ ६ ॥ श्री० ॥
 इम अनंत गुणनो धणी, गुण गुणनो आनंदहो ॥
 ॥ जि० ॥ जोग रमण आस्वाद युत्त, प्रभुतुं परमानंद
 हो ॥ जि० ॥ ७ ॥ श्री० ॥ अव्याबाध रुची अइ,
 साधे अव्याबाध हो ॥ जि० ॥ देवचंइ पद ते ल
 हे, परमानंद समाधहो ॥ जि० ॥ ८ ॥ श्री० ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचंइप्रजजिन स्तवन ॥

॥ श्रीश्रेयांसजिन अंतरजामी ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीचंइप्रज जिन पद सेवा, हेवार्ये जे हिति
 याजी ॥ आतम गुण अनुभवथी मलीया, ते नव
 नयथी टलीयाजी ॥ १ ॥ श्री० ॥ इव्य सेव वंदन
 नमनादिक, अर्चन बली गुण ग्रामोजी ॥ नाव अ
 नेद थावानी ईहा, परजावें निःक्कामोजी ॥ २ ॥
 ॥ श्री० ॥ नाव सेव आपवादें नैगम, प्रभु गुणने
 संकल्पें जी ॥ संग्रह सत्ता तुल्यारोपे, नेदाचेद विक
 ल्पें जी ॥ ३ ॥ श्री० ॥ व्यवहारे बहु मान ज्ञान
 निज, चरणे जिन गुण रमणाजी ॥ प्रभु गुण आलं
 बी परिणामे, रभु पद ध्याने स्मरणाजी ॥ ४ ॥

॥ श्री० ॥ शब्दें शुक्ल ध्यानारोहण, समनिरुद्ध गुण
 दशमेजी ॥ बीअ शुक्ल अविकल्प एकत्वे, एवंजुत
 ते अमर्मेजी ॥ ५ ॥ श्री० ॥ उत्सर्गें समकित गुण
 प्रगट्यो, नैगम प्रचुता अंसेंजी ॥ संग्रह आत्म स
 चालंबी, मुनिपद नाव प्रसंसेंजी ॥ ६ ॥ श्री० ॥
 रुजुसूत्रें जे अणि पदस्थें, आत्म शक्ति प्रकासेजी ॥
 यथाख्यात पद शब्द स्वरूपे, शुद्ध धर्म उद्घाशेजी ॥
 ॥ ७ ॥ श्री० ॥ नाव सयोगि अयोगि सैलसें, अंति
 म दुग नय जाणोजी ॥ साधनताए निज गुणव्यक्ति,
 ते सेवना वखाणो जी ॥ ८ ॥ श्री० ॥ कारण नाव
 तेह अपवादे, कारय रूप उत्सर्गें जी ॥ आत्मनाव
 ते नाव इव्य पद, बाह्य प्रवृत्ति निसर्गें जी ॥ ९ ॥
 श्री० ॥ कारण नाव परंपर सेवन, प्रगटे कारय ना
 वोजी ॥ कारय सिद्धे कारणता व्यय, शुचि परिणा
 मिक नावोजी ॥ १० ॥ श्री० ॥ परम गुणी सेवन
 तन्मयता, निश्चय ध्याने व्यावेजी ॥ शुद्धात्म अनु
 जव आस्वादी, देवचंद्र पद पावेजी ॥ ११ ॥ श्री० ॥

॥ अथ श्रीसुविधिजिन स्तवन ॥

थारामहेला उपरमहेजरूपे वीजली होलाल ॥ एदेशी ॥

॥ दीगो सुविधि जिणंद, समाधि रसे नखो होला

ल ॥ समाधिरसें नखो ॥ नास्यो आत्मस्वरूप, अ
 नादिनो वीसखो होलाल ॥ अ० ॥ सकल विजाव
 उपाधि, थकी मन उसखो हो साल ॥ थ० ॥ सत्ता
 साधन मार्ग, जणी ए संचखो होलाल ॥ ज० ॥ १ ॥
 तुम प्रभु जाणंगरीति, सरव जग देखता होलाल ॥
 स० ॥ निज सत्तायें शुद्ध, सद्गुने लेखता होलाल ॥
 स० ॥ पर परणति अद्वैत, पणे उवेखता होला
 ल ॥ पणे० ॥ जोग्यपणे निज शक्ति, अनंत गवेख
 ता होलाल ॥ अ० ॥ २ ॥ दानादिक निज जाव,
 हता जे परवसा होलाल ॥ हता० ॥ ते निजसन्मुख जाव
 ग्रहीतही तुज दशा होलाल ॥ ग्र० ॥ प्रभुनो अद्भू
 त योग, स्वरूप तणी रसा होलाल ॥ स्व० ॥ नासे
 वासे तास जास गुण तुज जिसा होलाल ॥ जा०
 ॥ ३ ॥ मोहादिकनी धूमि, अनादिनी उतरे होला
 ल ॥ अ० ॥ अमल अखंड अलिप्त, स्वजावज सां
 जरे होलाल ॥ स्व० ॥ तत्व रमण शुचि ध्यान,
 जणीजे आदरे होलाल ॥ ज० ॥ ते समतारस धाम,
 स्वामी मुझा वरे होलाल ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ प्रभुगे
 त्रिभुवन नाथ, दास हुं ताहरो होलाल ॥ दा० ॥ क
 रुणानिधि अनिलाख, अर्धे मुज ए खरो होलाल ॥

अ० ॥ आत्म वस्तु स्वभाव, सदा मुक्त सांनरो हो
 लाल ॥ स० ॥ नासन वासन एह, चरणध्याने धरो
 होलाल ॥ च० ॥ ५ ॥ प्रभु मुंडाने योग, प्रभु प्रभु
 ता लखे हाल ॥ प्र० ॥ इव्य तणे साधर्म, स्वसंप
 ति उलखे होलाल ॥ स्व० ॥ उलखतां बहुमान, स
 हित रुचि पण वधे होलाल ॥ स० ॥ रुचि अनुजा
 यी वीर्य, चरण धारा सधे होलाल ॥ च० ॥ ६ ॥
 द्योपशमिक गुण सर्व, थया तुक्त गुण रसी होला
 ल ॥ थ० ॥ सत्ता साधन शक्ति, व्यक्तता उल्लसी हो
 लाल ॥ व्य० ॥ हवे संपूरण सिद्ध, तणी सीवारढे
 होलाल ॥ त० ॥ देवचंड जिनराज जगत आधारढे हो
 लाल ॥ जग० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशीतलजिन स्तवन ॥

॥ आदर जीव द्दमागुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ शीतलजिनपति प्रभुता प्रभुनी, मुक्त्यी कहिय
 न जायजी ॥ अनंतता निर्मलता पूरणता, ज्ञान वि
 ना नजणायजी ॥ १ ॥ शी० ॥ चरम जलधी जल
 मिणे अंजली, गति जीपे अति वायजी ॥ सर्व आ
 काश उल्लंघे चरणे, पिण प्रभुता न गणायजी ॥
 ॥ २ ॥ शी० ॥ सर्व इव्य प्रदेश अनंता, तेहथी गु

ए पर्यायजी ॥ तास वर्गथी अनंत गुणो प्रभु, केव
 ल ज्ञान कहायजी ॥ ३ ॥ शी० ॥ केवल दर्शन ए
 म अनंतो, ग्रहे सामान्य स्वनावजी ॥ स्वपर अनंत
 थी चरण अनंतो, स्व रमण संवर जावजी ॥ ४ ॥
 शी० ॥ इव्य क्षेत्रने काल जाव गुण, राजनीति ए चार
 जी ॥ त्रास विना जड चेतन प्रभुनी, कोइ नलोपे
 कारजी ॥ ५ ॥ शी० ॥ शुद्धाशय थिर प्रभु उपयो
 गें, जे समरे तुम नामजी ॥ अव्याबाध अनंतो पा
 मे, परम अमृत सुख धामजी ॥ ६ ॥ शी० ॥ आ
 णा इश्वरता निरनयता, निरवांठकता रूपजी ॥ जाव
 स्वाधीनते अव्यय रीते, इम अनंत गुण नूपजी ॥
 ॥ ७ ॥ शी० ॥ अव्याबाध सुख निरमल तेतो, कर
 ण ज्ञाने न जणायजी ॥ तेहज एहनो जाणंग जो
 का, जे तुम सम गुण रायजी ॥ ८ ॥ शी० ॥ एम
 अनंत दानादिक निजगुण, वचनातीत पमूरजी ॥
 वासन नासन जावें डुर्जन, प्रापतितो अति दूरजी ॥
 ॥ ९ ॥ शी० ॥ सकल प्रत्यक्ष पणे त्रिभुवन गुरु,
 जाणु तुंज गुण ग्रामजी ॥ बीजुं कांइ नमाणुं स्वा
 मि, एहिजठे मुज कामजी ॥ १० ॥ शी० ॥ इम अ
 नंत प्रभुता सरदहतां, अरचेजे प्रभु रूपजी ॥ देव

चंद्र प्रभुता तेषामे, परमानंद स्वरूपजी ॥ ११ ॥

॥ अथ श्री श्रेयांसं जिन स्तवन ॥

॥ प्राणी वाणी जिनतणी० ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीश्रेयांसं प्रभु तणो, अति अद्भुत सहजानंद
 रे ॥ गुण इक विध त्रिक परणम्यो, इम गुण अनंत
 नोवृंद रे ॥ १ ॥ मुनिचंद जिणंद अमंद दिणंद, परे
 नित दीपतो सुख कंद रे ॥ ए आंकणी ॥ निज झा
 नेकरी झेयनो, झायक झाता पद ईस रे ॥ देखे नि
 ज दर्शन करी, निज दृश्य सामान्य जगीस रे ॥
 ॥२॥ मु०॥ निज रम्ये रमण करो, प्रभु चारित्रें रम
 ता राम रे ॥ जोग अनंतने जोगवो, जोगे तेणे जो
 क्ता स्वामि रे ॥ ३ मु० ॥ देय दान नित दीजते,
 अति दाता प्रभु स्वय मेव रे ॥ पात्र तुम्हे निज श
 क्तिना, ग्राहक व्यापक मय देव रे ॥ ४ ॥ मु० ॥
 परिणामिक कारज तणो, करता गुण करणे नाथ
 रे ॥ अक्रिय अकृत्य स्थिति मयी, निकलंक अनंती
 आथ रे ॥ ५ ॥ मु० ॥ परिणामिक सत्ता तणो, आ
 विर्जावि विजास निवास रे ॥ सहज अकृतिम अपरा
 श्रयी, निर्विकल्पने निःप्रयांस रे ॥ ६ ॥ मु० ॥ प्रभु
 प्रभुता संजारतां, गातां करतां गुण ग्राम रे ॥ सेव

क साधनता वरे, निज संवर परणति पाम रे ॥
 ७ ॥ मु० ॥ प्रगट तत्वता ध्यावतां, निज तत्त्वनो
 ध्याता थाय रे ॥ तत्त्वरमण एकाग्रता, पूरणतत्त्वे
 एह समाय रे ॥ ८ ॥ मु० ॥ प्रभुदीठे मुऊ सांजरे,
 परमात्म पूर्णानंद रे ॥ देवचंद्र जिन राजना, नित
 वंदो पय अखंड रे ॥ ९ मु० ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीवासुपूज्यजिन स्तवन ॥

॥ पंथीडो निहालुरे बीजा जिनतणुरे ॥ ए देशी ॥

॥ पूजनातो कीजेरे बारमा जिन तणी रे, जसु
 प्रगटयो पूज्य स्वभाव ॥ परकृत पूजारे जे इहे
 नहीं रे, साधक कारय दाव ॥ १ ॥ पू० ॥ इव्यथी
 पूजारे कारण जावनो रे, जाव प्रशस्तने शुद्ध ॥ पर
 म इष्ट वल्लभ त्रिभुवन धणी रे, वासुपूज्य स्वयंभु
 ६ ॥ २ ॥ पू० ॥ अतीशय महिमारे अति उपगार
 ता रे, निरमल प्रभु गुण राग ॥ सुरमणि सुरघट सु
 रतरु तुं ठते रें, जिन रागी महाजाग ॥ ३ ॥ पू० ॥
 दर्शन ज्ञानादिक गुण आत्मना रे, प्रभु प्रभुता लय
 लीन ॥ शुद्ध स्वरूपी रूपे तन्मयी रें, तसु आस्वाद
 न पीन ॥ ४ ॥ पू० ॥ शुद्ध तत्व रस संगी चेत
 ना रे, पामे आत्म स्वभाव ॥ आत्माजंबी निज गु

ए साधतो रे, प्रगटे पूज्य स्वजाव ॥ ५ ॥ पू० ॥
 आप अकर्ता सेवाशी दुवे रे, सेवक पूरण सिद्धि ॥
 निज धन न दीये पण आश्रित लहे रे, अक्षय अक्षर
 रुद्धि ॥ ६ ॥ पू० ॥ जिनवर पूजा रे ते निज पूज
 ना रे, प्रगटे अन्वय शक्ति ॥ परमानंद विलासी अ
 नुजवे रे, देवचंद्र पद व्यक्ति ॥ ७ ॥ पू० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री विमलजिन स्तवन ॥

॥ दास अरदास सीपरें करेजी ॥ एदेशी ॥

॥ विमलजिन विमलता ताहरीजी, अवर बीजे
 न कहाय ॥ लघु नदी जिम तिम लंबीयेंजी, स्वयंनू
 रमण न तराय ॥ १ ॥ वि० ॥ सयल पुढवी गिरि ज
 ल तरुजी, कोइ तोले एक हाथ ॥ तेह पण तुज गु
 ण गण नणीजी, नाखवा नही समर्थ ॥ २ ॥ वि० ॥
 सर्व पुजल नन धर्मनाजी, तेम अधर्म प्रदेश ॥
 तास गुण धर्म पङ्कव सद्गुजी, तुज गुण एक तणो
 लेश ॥ ३ ॥ वि० ॥ एम निज जाव अनंतनीजी,
 अस्तिता केतली थाय ॥ नास्तिता स्वपर पद अस्ति
 ताजी, तुज समकाल समाय ॥ ४ ॥ वि० ॥ ताह
 रा छुट् स्वजावनेजी, आदरे धरी बहु मान ॥ तेह
 ने तेहिज नीपजे जी, ए कोइ अजुत तान ॥ ५ ॥

वि० ॥ तुम्ह प्रभु तुम्ह तारक विनूजी, तुम समो
 अवर नकोय ॥ तुम दरिसण थकी हूं तखोजी, शुद्ध
 आलंबन होय ॥ ६ ॥ वि० ॥ प्रभुतणी विमलता
 उलखीजी, जे करे थिर मन सेव ॥ देवचंद्र पद ते
 लहेजी, विमल आनंद स्वयमेव ॥ ७ ॥ वि० ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअनंतजिन स्तवन ॥

॥ दीर्घीहो प्रभु दीर्घी जगगुरु तुज ॥ एदेशी ॥

॥ मूरतिहो प्रभु मूरति अनंत जिणंद, ताहरीहो
 प्रभु ताहरी मुऊ नयणे वसीजी ॥ समताहो प्रभु स
 मता रसनो कंद, सहजेहो प्रभु सहजे अनुभव रस
 लसीजी ॥ १ ॥ नवदवहो प्रभु नवदव तापित जी
 व, तेहनेहो प्रभु तेहने अमृत धन समीजी ॥ मि
 थ्याविषहो प्रभु मिथ्याविषनी खीव, हरवाहो प्रभु
 हरवा जांगुल मन रमीजी ॥ २ ॥ नावहो प्रभु नाव
 चिंतामणि एह, आतमहो प्रभु आतम संपति आ
 पवाजी ॥ एहिजहो प्रभु एहिज शिव सुखगेह, तत्व
 हो प्रभु तत्वालंबन आपवाजी ॥ ३ ॥ जायेहो प्रभु
 जाये आश्रव चाल, दीर्घीहो प्रभु दीर्घी संवर बधे
 जी ॥ रत्नहो प्रभु रत्नत्रयी गुण माल, अध्यातम
 हो प्रभु अध्यातम साधन सधेजी ॥ ४ ॥ मीठीहो

प्रभु मीठी सूरति तुऊ, दीठीहो प्रभु दीठी रुचि बहु
 मानथीजी ॥ तुऊगुणहो प्रभु तुऊगुण नासन शु
 क्त, सेवेहो प्रभु सेवे तसुं नव नय नथीजी ॥ ५ ॥
 नामे हो प्रभु नामे अझूत रंग, उवणाहो प्रभु उवणा
 दीठां उल्लसेजी ॥ गुंण आस्वादहो प्रभु गुण आस्वाद
 अजंग, तन्मयहो प्रभु तन्मयतायें जे धसेजी ॥ ६ ॥
 गुणअनंतहो प्रभु गुणअनंतनो वृंद, नाथहो प्रभु नाथ
 अनंतने आदरेजी ॥ देवचंडहो प्रभु देवचंडने आनंद,
 परमहो प्रभु परम महोदय ते वरेजी ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीधर्मजिन स्तवन ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणु ॥ एदेशी ॥

॥ धर्म जगनाथनो धर्म शुचि गाइयें, आपणो
 आतमा तेहवो जावियें ॥ जाति जसु एकता तेह
 पलटेनहिं, शुद्ध गुण पङ्कवा वस्तु सत्तामयी ॥ १ ॥
 नित्य निरवयव बलि एक अक्रिय पणे, सर्व गत ते
 ह सामान्य जावें नणे ॥ तेहथी इतर सावयव विशे
 षता, व्यक्तिजेदे पडे जेहनी जेदता ॥ २ ॥ एकता
 पिंमने नित्य अविनाशता, अस्ति निज कृद्धिथी का
 र्यगत जेदता ॥ जाव श्रुत गम्य अनिलाप्य अनंत
 ता, नव्य पर्यायिनी जे परावर्चिता ॥ ३ ॥ क्षेत्र शु

ए जाव अविजाग अनैकता, नास उत्पाद अनित्य
 पर नास्तिता ॥ क्षेत्र व्यापत्व अनेद अवक्तव्यता, व
 स्तुते रूपथी नियत अजव्यता ॥ ४ ॥ धर्म प्रागजा
 वता सकल गुण शुद्धता, नोग्यता कर्तृता रमण परि
 णामता ॥ शुद्ध स्वप्रदेशता तत्त्वचैतन्यता, व्याप्य व्या
 पक तथा ग्राह ग्राहक गता ॥ ५ ॥ संग परिहारथी
 स्वामी निज पद लहुं, शुद्ध आत्मिक आनंद पद
 संग्रहं ॥ जइवि परजावथी हुं नवोदधि वस्यो, परत
 णो संग संसारतायें ग्रस्यो ॥ ६ ॥ तहवि सत्तागुणे
 जीवणे निरमलो, अन्य संश्लेष जिम स्फटिक नवि
 सामलो ॥ जे परोपाधिथी दूष्ट परणति ग्रही, जाव
 तादात्ममां माहरुं ते नहीं ॥ ७ ॥ तिणे परमात्म प्रह
 नक्ति रंगी थइ, शुद्ध कारण रसे तत्व परणति म
 र्थी ॥ आत्म ग्राहक थये तजे पर ग्रहणता, तत्व
 नोगी थये टले परनोग्यता ॥ ८ ॥ शुद्ध निःप्रयास
 निज जाव नोगी यदा, आत्म क्षेत्रे नही अन्य रह
 ण तदा ॥ एक असहाय निस्संग निरदंढता, शक्ति
 उत्सर्गनी होय सद्बु व्यक्तता ॥ ९ ॥ तिणे मुज
 आतमा तुज थकी नीपजे, माहरी संपदा सकल मु

ऊ संपजे ॥ तिणे मन मंदिरे धर्म प्रचुध्याइयें, परम
देवचंइ निज सिद्धि सुख पाईयें ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशांतिजिन स्तवन ॥ मालाकिहांढेरे ए देशी ॥

॥ जगत दिवाकर जगत कृपानिधि, वाढ्हामारा
समवसरणमां बेठारे ॥ चउमुख चउविह धर्म प्रका
से, ते में नयणे दीठा रे ॥ १ ॥ जविक जन हरखो
रे, निरखी शांतिजिणंद ॥ ज० ॥ उपसम रसनो कं
द, नहिं इणे सरिखो रे ॥ एअंकाणी ॥ प्रातिहारय
अतिशय शोभा ॥ वा० ॥ तेतो कहिय नजावे रे ॥
घूक बालकथी रवि कर जरनो, वरणन किणिपरे आ
वे रे ॥ २ ॥ ज० ॥ वाणी गुण पांत्रीश अनोप
म ॥ वा० ॥ अविस्वाद सरूपें रे ॥ जव दुःख वार
ण शिव सुख कारण, सूधो धर्म प्ररूपे रे ॥ ३ ॥
ज० ॥ दक्षिण पश्चिम उत्तर दिशि मुख ॥ वा० ॥
ठवणाजिन उपगारी रे ॥ तसु आलंबन लहीय अ
नेकें, तिहां थया समकित धारी रे ॥ ४ ॥ ज० ॥
खट नय कारय रूपे ठवणा ॥ वा० ॥ सग नय कार
ण ठाणी रे ॥ निमत्त समान थापना जिनजी, एअ
गमनी वाणी रे ॥ ५ ॥ ज० ॥ साधक तीन निक्षेपा
मुख्य ॥ वा० ॥ जे विणु जाव न लहीयें रे ॥ ठव

गारी डुग जाण्यें जाख्या, जाव वंदकनो ग्रहीयें रे ॥
 ६ ॥ ज० ॥ ठवणा समवसरणे जिन सेती ॥ वा० ॥
 जो अचेदता वाधी रे ॥ ए आतमना स्व स्वजाव गु
 ण, व्यक्त योग्यता साधी रे ॥ ७ ॥ ज० ॥ जलुं थ
 युं में प्रभु गुण गाया ॥ वा० ॥ रसनानो फल ली
 धो रे ॥ देवचंद्र कहे माहरा मननो, सकल मनोर
 थ सीधो रे ॥ ८ ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीकुंशुजिन स्तवन ॥ चरम जिनेसरू ॥ ए देशी ॥

॥ समवसरण बेसी करी रे, बारह परखद मां
 हिं ॥ वस्तु स्वरूप प्रकासता रे, करुणाकर जग ना
 हो रे ॥ १ ॥ कुंशुजिनेसरू, निरमल तुळ मुख वा
 णी रे ॥ जे श्रवणे सुणे, तेहिज गुणमणि खाणी
 रे ॥ २ ॥ कुं० ॥ गुण पर्याय अनंतता रे, वली स्वजा
 व अगाह ॥ नय गम जंग निक्षेपना रे, हेयादेय
 प्रवाहो रे ॥ ३ ॥ कुं० ॥ कुंशुनाथ प्रभु देशना रे,
 साधन साधक सिद्धि ॥ गौण मुख्यता वचनमां रे,
 ज्ञानते सकल समृद्धि रे ॥ ४ ॥ कुं० ॥ वस्तु अनं
 त स्वजावढे रे, अनंत कथक तसु नाम ॥ ग्राहक
 अवसर बोधथी रे, कहवे अर्पित कामो रे ॥ ५ ॥
 कुं० ॥ शेष अनर्पित धर्म्मेने रे, सापेक्ष श्रद्धाबो

ध ॥ उजय रहित जासन होवे रे, प्रगटे केवल बोधो
 रे ॥ ६ ॥ कुं० ॥ ठति परणति गुण वर्त्तना रे, जासन जो
 ग आनंद ॥ समकाले प्रनु ताहरे रे, रम्य रमण गु
 ण वृंदो रे ॥ ७ ॥ कुं० ॥ निजजावे सीअ अस्तिता
 रे, पर नास्तित्व स्वजाव ॥ अस्तिपणे ते नास्तिता
 रे, सीअ ते उजय स्वजावो रे ॥ ८ ॥ कुं० ॥ अस्ति
 स्वजावजे आपणो रे, रुचि वैराग्य समेत ॥ प्रनु स
 नमुख वंदन करी रे, मागीस आतम हेतो रे ॥ ९ ॥
 कुं० ॥ अस्ति स्वजाव रुचि थइ रे, ध्यातो अस्ति
 स्वजाव ॥ देवचंड पद ते लहे रे, परमानंद जमावो
 रे ॥ १० ॥ कुं० ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअरजिन स्तवन ॥ रामचंडकेबाग ॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमो श्री अरनाथ, शिवपुर साथ खरोरी ॥
 त्रिनुवन जन आधार, नव निस्तार करोरी ॥ १ ॥
 करता कारण योग, कारय सिद्धिलहेरी ॥ कारण चा
 र अनूप, कार्याथ तेह ग्रहेरी ॥ २ ॥ जे कारण ते
 कार्य, थाए पूर्ण पदेरी ॥ उपादान ते हेतु, माटी घ
 ट ते वदेरी ॥ ३ ॥ उपदानथी निन्न, जे विणु का
 र्य नथाय ॥ नहुवे कारय रूप, कर्त्ताने व्यवसाय ॥
 ४ ॥ कारण तेह निमित्त, चक्रादिक घट जावे ॥ का

(४९१)

र्य तथा समवाय, कारण नियत ने दावे ॥ ५ ॥ व
 वस्तु अनेद स्वरूप, कार्य पणु न ग्रहेरी ॥ ते असा
 धारण हेतु, कुंने स्थास लहेरी ॥ ६ ॥ जेहनो नवि
 व्यापार, निन्न नियत बहुजावी ॥ नूमि काल आकाश,
 घट कारण सदजावी ॥ ७ ॥ एह अपेक्षा हेतु, आ
 गम मांहि कह्योरी ॥ कारण पद उत्पन्न, कार्य थये
 न लह्योरी ॥ ८ ॥ कर्त्ता आतम इव्य, कार्य सिद्ध पणो
 री ॥ निज सत्तागत धर्म, ते उपादान गणोरी ॥ ९ ॥
 योग समाधि विधान, असाधारण तेह वदेरी ॥ वि
 धि आचरणा नक्ति, जिणे निज कार्य सधेरी ॥ १० ॥
 नरगति पढम संघयण, तेह अपेक्षा जाणो ॥ निमि
 त्तश्रित उपादान, तेहने लेखे आणो ॥ ११ ॥ नि
 मित्त हेतु जिनराज, समता अमृत खाणी ॥ प्रनु
 आलंबन सिद्धि, नियमा एह वखाणी ॥ १२ ॥ पू
 ष्ट हेतु अरनाथ, तेहना गुणथी हिलिये ॥ रीज
 नक्ति बहुमान, जोग ध्यानथी मिलिये ॥ १३ ॥ मो
 टाने उत्संग, बेठाने सीर्चिता ॥ तिम प्रनु चरण प
 साय, सेवक थया निर्चिता ॥ १४ ॥ अर प्रनु प्रनु
 ता रंग, अंतर शक्ति विकाशी ॥ देवचंद्ने आनंद, अ
 ह्य जोग विलासी ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमद्विजिनस्तवन ॥ देखी कामिनी दोयके
कामे व्यापीउरे के० ॥ एदेशी ॥

॥ मन्त्रिनाथ जगनाथ चरण गुग ध्याईये रे ॥
च० ॥ शुद्धातम प्राग जाव परम पद पाईये रे ॥
प० ॥ साधक कारक षट्क करे गुण साधनारे ॥ क० ॥
तेहिज शुद्ध स्वरूप थाये निराबाधना रे ॥ आ० ॥
॥ १ ॥ कर्ता आतम इव्य कारय निज सिद्धता रे ॥
का० ॥ उपादान परिणाम प्रयुक्त ते करणता रे ॥
प्र० ॥ आतम संपद दान तेह संप्रदानता रे ॥ ते० ॥
दाता पात्रने देय त्रिनाव अनेदता रे ॥ त्रि० ॥ २ ॥
स्वपर विवेचन करण तेह अपादानथी रे ॥ ते० ॥
सकल पर्याय आधार संबंध आस्थानथी रे ॥ सं० ॥
बाधक कारक जाव अनादि निवारवो रे ॥ अ० ॥ साध
कता अवलंबि तेह समारवो रे ॥ ते० ॥ ३ ॥ शुद्ध
पणे पर्याय प्रवर्तन कार्यमे रे ॥ प्र० ॥ कर्तादिक परि
णाम ते आतम धर्ममें रे ॥ ते० ॥ चेतन चैतन जाव
करे समवेतमे रे ॥ क० ॥ सादि अनंतो काल रहे
निज खेत्तमे रे ॥ र० ॥ ४ ॥ परकर्तृत्व स्वजाव करे
तां लगि करे रे ॥ क० ॥ शुद्ध कार्य रुचि नास थये
नवि आदरे रे ॥ थ० ॥ शुद्धातम निज कार्य रुचि

कारक फरे रे ॥ रु० ॥ तेहिज मूल स्वनाव ग्रहे
 निज पद वरे रे ॥ ग्र० ॥ ५ ॥ कारण कारज रूप
 अठे कारक दसारे ॥ अ० ॥ वस्तु प्रगट पर्याय ए
 ह मनमें वस्यारे ॥ ए० ॥ पण शुद्धसरूप ध्यान ते चे
 तनता ग्रहेरे ॥ ते० ॥ तब निज साधक नाव सक
 ल कारक लहेरे ॥ स० ॥ ६ ॥ माहरुं पूर्णानंद प्र
 गट करवा जणीरे ॥ प्र० ॥ पुष्टालंबन रूप सेव प्रभुं
 जी तणीरे ॥ से० ॥ देवचंड जिनचंड जगति मनमें
 धरोरे ॥ ज० ॥ अव्याबाध अनंत अक्षय पद आद
 रोरे ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमुनिसुव्रतजिन स्तवन ॥ उलगडी उल

॥ गडी सुहेलोहो श्रीश्रेयांसनीरे ॥ ए देशी ॥

॥ उलगडी उलगडी तोकीजे श्रीमुनिसुव्रत स्वामि
 नीरे, जेहथी निज पद सिद्धि ॥ केवल केवल ग्या
 नादिक गुण उल्लसेरे, लहीयें सहज समृद्धि ॥ १ ॥
 ॥ उ० ॥ उपादान उपादान निज परणति वस्तुनीरे,
 पण कारण निमित्त आधीन ॥ पुष्ट अपुष्ट दुविधते
 उपदिस्योरे, ग्राहक विधि आधीन ॥ २ ॥ उ० ॥ सा
 ध्य साध्य धर्मजे मांदिं दुवेरे, ते निमित्त अति पुष्ट ॥
 पुष्प पुष्प मांदिं तिल वासक वासनारे, नवी प्रध्वंसक

डुष्ट ॥ ३ ॥ उ० ॥ दंम दंम निमित्त अपुष्ट घडा त
 णो रे, नवि घटता तसु मांहि ॥ साधक साधक प्र
 ध्वंसकता अढे रे, तिणे नहिं नियत प्रवाह ॥ उ०
 ॥ ४ ॥ खटकारक खटकारक ते कारण कार्यनोरे, जे
 कारण स्वाधीन ॥ तेकर्त्ता तेकर्त्ता सहु कारक ते वसु
 रे, कर्मते कारण पीन ॥ ५ ॥ उ० ॥ कारण कारण
 संकल्पे कारक दसा रे, ठति सत्ता सदजाव ॥ अथवा
 अथवा तुल्य धर्मने जोड्वे रे, साध्यारोपण दाव ॥ ६
 ॥ उ० ॥ अतिशय अतीशय कारण कारक करणता
 रे, निमित्त अने उपादान ॥ संप्रदान संप्रदान कार
 ण पद जवनथी रे, कारण व्यय अपादान ॥ ७ ॥
 उ० ॥ जवन जवन व्यय विणु कारय नवि दुवे रे,
 जिम दृषदें न घटत्व ॥ सुद्धाधार सुद्धाधार स्वगुण
 नो ड्व्यढे रे, सत्ताधार सुतत्व ॥ ८ ॥ उ० ॥ आत्म
 आत्म कर्त्ता कारय सिद्धता रे, तसु साधन जिन
 राज ॥ प्रनु दीठे प्रनु दीठे कारय रुचि उपजे रे,
 प्रगटे आत्म समाज ॥ ९ ॥ उ० ॥ वंदन वंदन से
 वन नमन वलि पूजना रे, समरण स्तवन वली ध्या
 न ॥ देवचंड देवचंड कीजे जिन राजनी रे, प्रगटे पू
 र्ण निधान ॥ १० ॥ उ० ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीनमिजिन स्तवन ॥ पीढोलारी पाल उजा
दोय राजवी रे ॥ ए एशी ॥

॥ श्रीनमिजिनवर सेव घनाघन उनम्यो रे ॥ घ० ॥
दीठां मिष्यारोर नविक चित्तथी गम्यो रे ॥ न० ॥
सुचि आचरणा रीति ते अत्र वधे वडा रे ॥ ते० ॥
आतम परणति शुद्ध ते बीज ऊबूकडा रे ॥ तेवी० ॥ १ ॥
वाजे वाय सुवाय ते पावन जावनारे ॥ ते० ॥ इन्द्र
धनुष त्रिक योगते नक्ति इक मना रे ॥ ते० ॥ नि
र्मल प्रजु स्तव घोष ध्वनी घनगर्जना रे ॥ ध्व० ॥ तृ
ष्णा ग्रीष्म काल तापनी तर्जना रे ॥ ता० ॥ २ ॥
शुन लेश्यानी आलि ते बगपंकति बनी रे ॥ ते० ॥
श्रेणी सरोवर हंस वसे शुचि गुण मुनी रे ॥ व० ॥
चउगति मारग बंध नविक जन घर रह्या रे ॥ न० ॥
चेतन समता संग रंगमें उमह्या रे ॥ रं० ॥ ३ ॥ स
म्यक् दृष्टि मोर तिहां हरखे घणुं रे ॥ ति० ॥ देखी
अद्भूत-रूप परम जिनवर तणुं रे ॥ प० ॥ प्रजुगुण
नो उपदेश ते जलधारा बही रे ॥ ते० ॥ धरम रु
चि चित नूमि मांहिं निश्चल रही रे ॥ मां० ४ ॥
चातक श्रमण समूह करे तब पारणो रे ॥ क० ॥
अनुभव रस आस्वाद सकल दुःख वारणो रे ॥

स० ॥ अशुभाचार निवारण तृण अंकूरता रे ॥ तृ० ॥
 विरति नो परणाम ते बीजनी पूरता रे ॥ ते० ॥
 ५ ॥ पंच महाव्रत धान तणा करसण वध्या रे ॥
 त० ॥ साध्य जाव निज थापी साधनताएं सध्या रे ॥
 सा० ॥ द्वायिक दर्शन ग्यान चरण गुण उपना रे ॥
 च० ॥ आदिक बहुगुण शश्य आतम घर नीपना
 रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ प्रभु दरिशन महामेह तणे परवे
 समें रे ॥ त० ॥ परमानंद सुनिह् ययो मुक्त देशमें
 रे ॥ थ० ॥ देवचंड जिनचंड तणो अनुभव करो रे ॥
 त ० ॥ सादि अनंतो काल आतम सुख अनुसरो
 रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजिन स्तवन ॥

॥ पद्मप्रजजिनजइअलगारह्या ॥ एदेशी ॥

॥ नेमजिणेंसर निज कारज करघो, ठामघो सर्व
 विजावोजी ॥ आतम शक्ति सकल प्रगटीकरी, आ
 स्वाद्यो निज जावोजी ॥ १ ॥ ने० ॥ राजुल ना
 रीरे सारी मतिधरी, अवलंब्या अरिहंतोजी ॥ उक्त
 म संगेरे उत्तमता वधे, सधे आनंद अनंतोजी ॥
 २ ॥ ने० ॥ धर्म अधर्म आकाश अचेतना, ते विजा
 ती अग्राह्योजी ॥ पुज्ज ग्रहवेरे कर्मकलंकता, बा

धे बाधक बाह्योजी ॥ ३ ॥ ने० ॥ रागी संगेरें रागदशा
 वधे, थाये तिणे संसारोजी ॥ नीरागीथीरे रागनो
 जोडवो, लहीयें नवनो पारोजी ॥ ४ ॥ ने० ॥ अ
 प्रशस्ततारे टाली प्रशस्तता, करतां आश्रव नासेजी ॥
 संवर वाधेरे साधे निर्जरा, आतम जाव प्रकाशोजी
 ॥ ५ ॥ ने० ॥ नेमिप्रभु ध्याने रे एकत्वता, निज त
 त्वे एकतानो जी ॥ शुद्धध्याने रे साधि सुसिद्धता, ल
 हियें मुक्ति निदानो जी ॥ ६ ॥ ने० ॥ अगम अरू
 पी रे अलख अगोचरू, परमातम परमीशो जी ॥
 देवचंद् जिनवरनी सेवना, करतां वाधे जगीशो जी ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तवन ॥ कडखानी देशी ॥

॥ सहज गुण आगरो स्वामी सुख सागरो, ज्ञान
 वरागरे प्रभु सवायो ॥ शुद्धता एकता तीक्ष्णता जा
 वथी, मोह रिपु जीति जय पडह वायो ॥ १ ॥
 स० ॥ वस्तु निज जाव अविनास निकलंकता, पर
 एति वृत्तिता करी अजेदे ॥ जावतादात्म्यता शक्ति
 उद्भासथी, संतति योगने तुंउहेदे ॥ २ ॥ स० ॥ दो
 ष गुण वस्तुनी लखिय यथार्थता, लही उदासीन
 ता अपर जावे ॥ ध्वंसितक्लान्यता जाव कर्त्तापणो,
 परम प्रभु तुं रम्यो निज स्वजावे ॥ ३ ॥ स० ॥ शु

न अशुन नाव अविनास तहकीकथी, शुन अशुन
 नाव तिहां प्रभु न कीधो ॥ शुद्ध परिणामता वीथ
 कर्त्तायई, परम अक्रीयता अमृत पीधो ॥ ४ ॥ स० ॥
 शुद्धता प्रभुतणी आत्म नावे रमे, परम परमात्मता
 शुद्ध थाये ॥ मिश्र नावे अढे त्रिगुणनी निन्नता, त्रिगु
 ण एकत्व तुज चरण थाये ॥ ५ ॥ स० ॥ उपशम
 रस नरी सर्व जन संकरो, मूर्ति जिनराजनी आज
 जेटी ॥ कारणे कार्य निष्पत्ति श्रद्धान ठे, तिणे नव च
 मणनी नीडमेटी ॥ ६ ॥ स० ॥ नयर खंजायते पा
 र्थप्रभु दरशने, विकसते हर्ष उत्साह बाध्यो ॥ हेतु
 एकत्वता रमण परिणामथी, सिद्धि साधक पणो आ
 ज साध्यो ॥ ७ ॥ स० ॥ आज कृत पुण्य धन दीह
 माहरो थयो, आज नर जनममें सफल नाव्यो ॥
 देवचंड स्वामी तेवीसमो वंदीयो, नक्ति नर चित्त तु
 ज गुण रमाव्यो ॥ ८ ॥ स० ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमहावीरजिन स्तवन ॥ कडखानी देशी ॥
 ॥ तारहो तार प्रभु तार मुज सवक नणी, जगतमें
 एटलो सुजश लीजें ॥ दास अवगुण नखो, जाणी
 पोतातणो, दयानिधि दीनपर दया कीजे ॥ १ ॥ ता० ॥
 रागदेषे नखो मोह वेरी नड्यो, लोकनी रीतिमें घ

एण्ये रातो ॥ क्रोधवस धमधम्यो शुद्ध गुण नवि र
 म्यो, नम्यो नव मांहि हुं विषय मातो ॥ १ ॥ ता० ॥
 आदह्यो आचरण लोक उपचारथी, शास्त्र अन्यास
 पण कोई कीथो ॥ शुद्ध श्रद्धान निज आत्म अवलं
 बविनुं, तेहवो कार्य तिणे को नसीथो ॥ ३ ॥ ता० ॥
 स्वामी दरशण समो निमित्त लही निरमजो, जो उ
 पादान ए शुचि न थारो ॥ दोष को वस्तुनो अहवा
 उद्यमतणो, स्वामी सेवा सही निकट लारो ॥ ४ ॥
 ता० ॥ स्वामी गुण उजखी स्वामीने जे नजे, दरि
 सण शुद्धता तेह पामे ॥ ज्ञान चारित्र तप वीर्य उल्ला
 सथी, कर्म जीपि वसे मुक्ति धामे ॥ ५ ॥ ता० ॥ जगत
 वत्सल महावीर जिनवर सुणी, चित्त प्रनु चरणने
 शरण वास्यो ॥ तारजो बापजी बिरुद निज राख
 वा, दासनी सेवना रखे जोस्यो ॥ ६ ॥ ता० ॥ वी
 नती मानजो शक्ति एम आपजो, जाव स्यादादता शु
 द्धजासे ॥ साधि साधक दशा सिद्धता अनुजवी, देव
 चंड विमल प्रभुता प्रकाशे ॥ ७ ॥ ता० ॥ इति ॥

॥ कलश ॥ चउवीसे जिन गाइयें, ध्याइयें तत्व
 सरूपोजी ॥ परमानंद पद पाइयें, अद्भुत ग्यान अनू

पो जी ॥ १ ॥ चो० ॥ चवदहसे बावन जला, ग
 णधर गुण जंमारो जी ॥ समतामयी सादु सादुणी,
 सावय सावई सारोजी ॥ २ ॥ चो० ॥ वर्द्धमान जि
 नवरतणो, शासन अति सुखकारो जी ॥ चउविह सं
 घ विराजतां, दूसम काल आधारो जी ॥ ३ ॥ चो० ॥
 जिन सेवनथी ज्ञानता, लहे हिताहित बोधोजी ॥
 अहित त्याग हित आदरे, संयम तपनी सोधोजी ॥
 ॥ ४ ॥ चो० ॥ अजिनव कर्म अग्रहणता, जीण क
 र्म अजावो जी ॥ निकर्मीने अबाधता, अवैदन अ
 नाकूल जावो जी ॥ ५ ॥ चो० ॥ जावरोगना विगम
 थी, अचल अक्षय निराबाधो जी ॥ पूर्णानंद दसा
 लही, विजसे सिद्धि समाधो जी ॥ ६ ॥ चो० ॥ श्री
 जिनचंडनी सेवना, प्रगटे पुण्य प्रधानो जी ॥ सुंमति
 सागर अतिउल्लसे, साधुरंग प्रभु ध्यानो जी ॥ ७ ॥
 चो० ॥ सुविहित गह्व खरतर वरू, राजसागर उवजा
 यो जी ॥ ज्ञानधर्म पाठक तणो, शिष्य सुंजस सुख
 दायो जी ॥ ८ ॥ चो० ॥ दीपचंड पाठक तणो, शि
 ष्यस्तवे जिनराजो जी ॥ देवचंड पद सेवतां, पूर्णानंद
 समाजो जी ॥ ९ ॥ चो० ॥ इति ॥

॥ अथ श्रावक नीचे लिखेला त्रण मनोर्थेने चिं ॥

॥ तवतो माहा मोहोटी निर्झरा करे ॥

॥ संसारनो अंत करे ते लिखेढे ॥

॥ किवारे दुं बाह्य तथा अन्यंतर परिग्रहजे मा
हापापनो मूल, दुर्गतीने वधारनारो, काम, क्रोध,
मान, माया, लोच, विषय, अने कषायनो स्वामी,
माहादुःखनो कारण, माहा अनर्थकारी, दुर्गतिनी सि
द्धा, माठी लेश्यानो परिणामी, अज्ञान मोह मळर रा
ग अने द्वेषनो मूल, दशविध यति धर्म रूप कल्पवृ
क्षनो दावानल, ज्ञान क्रिया कृमा दया सत्य संतो
षः तथा बोधबीज रूप समकेतनो नास करनारो, सं
यम अने ब्रह्मचर्यनो घातकरनारो, कुमति तथा कु
बुधिरूप दुःखदालिडनो देवावालो, सुमति अने सुबु
द्धिरूप सुखसौभाग्यनो नास करनारो, तप संयम रू
प धनने लुंढनारो, लोच क्लेश रूप समुडनो वधार
नारो, जन्म जरा अने मरणनो देवावालो, कपटनो
जंझार, मिथ्यात्व दर्शन रूप शब्दे जरेलो, मोहमा
र्गनो विघ्नकारी, कडवा कर्म विपाकनो देवावालो,
अनंत संसारनो वधारनारो, महा पापी, पांचइंदि
यना विषयरूप वैरीनी पुष्टीनो करनारो, मोटीचिंता

शोक गारव अने खेदनो करनार संसाररूप अगाध वै
 ल नो शीचवा वालो, कूड कपट अने क्लेशनो आगा
 र, मोहोटा खेदनो करावनारो, मंदबुधिनो आदखो,
 उत्तम साधु निग्रंथोए जेने निंद्योढे, सर्व लोकमां सर्व
 जीवोने एना सरिखो बीजो कोइ विषम नथी, मोह
 रूप पासनो प्रतिबंधक, इहलोक तथा परलोकना सु
 खनो नास करनार, पांच आश्रवनो आगार, अनंत
 दारुण दुःख अने जयनो देवा वालो, मोटा सावय
 व्यापार कुवाणिज्य कुकर्मादाननो करावनारो, अध्रुव,
 अनित्य, असास्वतो, असार, अत्राण, असरण, ए
 वो आरंज अने परिग्रह तेने हुं केवारे ठांमीश ते दि
 वस महारो धन्यढे ॥ ए प्रथम मनोर्थ ॥

३ किवारे हुं मुंम अर्शने दशप्रकारे यतिधर्म धा
 री, नववाडें विमुक्त ब्रह्मचारी, सर्व सावय परिहारी,
 अणगारना सत्तावीश गुणधारी, पांच समिति त्रण गु
 तिएं विमुक्त विहारी, मोहोटा अजिग्रहनो धारी, बे
 तालीश दोष रहीत विमुक्त आहारी, सत्तर जेदे संय
 म धारी, बारे जेदे तपस्या कारी, अंत आहारी, प्रां
 त आहारी, अरस आहारी, विरस आहारी, लुक्क आ
 हारी, तुष्ट आहारी, अंतजीवी, प्रांतजीवी, अरसजी

वी, विरसजीवी, लुक्कजीवी, तुड्डजीवी, सर्व रस त्या
गी, ठक्कायनो दयाल, निर्लोनी, निस्वादी, पखी तु
ल्य वायरानी परे अप्रतिबंध विहारी, वीतरागनी आ
झासहित, एहवा गुणोनो धारक जे अणगार ते हुं
किवारे अईश तेदिवस धन्य ठे ॥ ए बीजो मनोर्थ ॥

३ किवारेहुं सर्व पापस्थानक आलोई, निशब्द
ई, सर्व जीवराशी स्वमावीने, सर्व व्रत संजारीने, अ
ठार पापस्थानकथी त्रिविधे त्रिविधे वोसरीने, चारे
आहार पञ्चखीने, शरीरने ठेहेजे श्वासोश्वासें वोस
रावीने, त्रण आराधना आराधतो थको, चार मंग
लिक रूप चार शरण मुखे उच्चरतो थको, सर्व सं
सारने पूठ देतो थको, एक अरिहंत बीजा सिद्ध त्री
जा साधु अने चोथो केवलि परूपितधर्म तेने ध्याव
तो थको, शरीरनी ममता रहित थयो थको, पादोप
गमन संथारा सहित, पांच अतिचार टाळतो थको,
मरणने अणवांढतो थको, एहवो पंडित मरण अं
त काले मुजने दोजो. ए त्रीजो मनोर्थ ॥ ३ ॥

ए त्रण मनोर्थने श्रावक मन वचन अने कायायें
करी सुद्धपणे ध्यावतो थको सर्व कर्म निर्जरीने संसार
नो अंतकरे मोक्षरूप शाश्वत स्थानक प्रत्ये पामे ॥

॥ अथ वसंत धमाल वगैरे होरीमां गावाना पद
प्रारंभः ॥ तत्र प्रथम वसंत ॥

॥ ए रूत रूडीरूडी मारा वाला, रूडो मास व
संत ॥ रूडो समकित केसू फूव्यो, गुंजत मधुकर
संत माहारावाला ॥ ए० ॥ १ ॥ संवेग रंग पखाब
जबाजे, डुविध दया कर नाल ॥ उपशम जर पिच
कारी मारी, जवनिरवेद्य गुलाल माहारावाला ॥
ए० ॥ २ ॥ आस्तिक आप सुबागमें बेठे, खेलत खे
ल रसाल ॥ ज्ञानउद्योत प्रभु फगुआ मागत, दीर्जे
शांति कृपाल माहारावाला ॥ ए० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ राग वसंत धमाल बीजो ॥

॥ सुमति सदा सुख दाईहो, खेलन आई होरी ॥
खेलन आई प्यारे खेलन आई ॥ सुमति० ॥ एटे
क ॥ पूर्णानंद सुखद पीयु संगे, सब सखी आन मि
लाईहो ॥ खेल० ॥ निज गुन बागमें सहज बसंतें,
मौज मची मन जाईहो ॥ खेल० ॥ १ ॥ ध्यान स
माधि जवनमें बेठे, रसजरी खेले गोसाईहो ॥ खे० ॥
प्रभु आणा शिर ठत्र बिराजे, बिहुं नय चमर ठला
ईहो ॥ खे० ॥ २ ॥ आगम वचन संगीते बढुगम,
वाजित्र विविध बजाईहो ॥ खे० ॥ शांति सुधारस

प्याले पीवत, आनंद लीज जमाईहो ॥ खे० ॥ ३ ॥
 याविध पीउ प्यारी मिली खेलत, सब सुख संपति पा
 ईहो ॥ खे० ॥ जानुचंद प्रभु पास पसाएं, शिव सु
 ख हर्ष वधाईहो ॥ खे० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ राग वसंत त्रीजुं ॥

॥ होरी खेलावत कानईया, नेमीसर संगें ले ज
 ईयां ॥ ए आंकणी ॥ रेवत गिरि पर एकठा मिले
 सब, सहेस बत्रीश अंतेउरीयां ॥ होरी० ॥ १ ॥
 कोई संग पिचकारी लीए कोई, अबिर गुलालसैं
 जोरी नरईयां ॥ हो० ॥ २ ॥ नेमकुमर खेले उत
 होरी, विवाह मिलावत ताल नरईयां ॥ हो० ॥ ३ ॥
 मौन रह्या प्रभु बात विचारी, परणो देवर नारी नल
 ईयां ॥ हो० ॥ ४ ॥ तोरण आवी पसुंयां गोडाव
 त, राजुल नारी विचार करईयां ॥ हो० ॥ ५ ॥ सु
 कि धूतारी सोक हमारी, इनसैं केमेरो चित्त नल
 ईयां ॥ हो० ॥ ६ ॥ सहसावन जई संयम लीनो,
 सुकल ध्यानसैं केवल पईयां ॥ हो० ॥ ७ ॥ नेम
 राजुल दोए मुक्ति सधाए, रूप कहे हम लेत बल
 ईयां ॥ हो० ॥ ८ ॥ इति ॥

(५०६)

॥ राग वसंत चोथो ॥

॥ नहीरे नाहार नवरंग बनायो, अपने नेमजी
को घररे ॥ १ ॥ हारे नहीरे नाहार० ॥ एटेक ॥
आंबो मोखो केसू फूट्यो, फूट्यो सघलो वन्नरे ॥ हां० ॥
२ ॥ उपशम रसको रंग जयोहे, अवीर अरगजा ध
ररे ॥ हां० ॥ ३ ॥ पंच समिति खेले अब रहीउ,
शील सदाकों धररे ॥ हां० ॥ ४ ॥ रास मच्योहे सु
जमति सखीको, कुमति सखीकों मर रे ॥ हां० ॥
५ ॥ फगुआ दो नर जोली अविचल, माहानंदको
घररे ॥ हां० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ राग धमाल पांचमो ॥

॥ वामा नंदन अंतर जामी, जीवन प्राण आ
धार ललना ॥ दरिसण देखी ताहरोहो, सफल कस्यो
अवतार ॥ मन मोहन गोडी पासजीहो ॥ अने हो
मेरे ललना, तुम समो नहि कोई देव ॥ मन० ॥
१ ॥ तुम साथें मुज प्रेम बन्योहे, नगमे बीजानो सं
ग ललना ॥ तुम पसाएं पामीयेंहो ॥ अतिषणो उह
व रंग ॥ म० ॥ २ ॥ अमने मोटी होंस मुक्तिनी, ते
आपो मुजस्वाम ललना ॥ तुं प्रभु सुरतरु सारिखोहो,
पूरण वंढीत काम ॥ म० ॥ ३ ॥ महेर घणी प्रभु रा

खीएंहो, सुं कहुं वारो वार ललना ॥ नेह कीधो तु
 मसुं खरोहो ॥ नवी जाऊं बीजे दरबार ॥ म० ॥
 ४ ॥ जिहां तिहां संग नकीजीएं हो, रहीयें सहेजा
 नंद ललना ॥ नित्यजान कहे प्रभु सेवियेंहो, लीजीएं
 शिवसुख कंद ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ रग धमाल ठो ॥

॥ नयरी वणारसी जाणीएंहो, अश्वसेन कुज चं
 द ललना ॥ वामानंदन वंदीएंहो, पासजी सुरतरु कं
 द ॥ परमेश्वर नित गुण गाइएंहो, अहो मेरे ललना
 गावत शिवसुख पाइयें हो ॥ १ ॥ एटेक ॥ फणी
 धर लंठन नव कर जिनजी, सबल घनाघन सा
 र ललना ॥ संयम छेई शत तीनसुंहो ॥ सवि कहे
 तुं धन धन्य ॥ पर० ॥ २ ॥ वरस शत एक आठ
 खोहो ॥ सीधा समेतगिरीश ललना ॥ सोल सहस
 मुनी तुम तणाहो ॥ समणी सहस अडत्रीश ॥
 पर० ॥ ३ ॥ धरणीधर पदमावतीहो, प्रभु सासन र
 खवाल ललना ॥ रोग सोग संकट टलेहो, नाम जं
 पतां जपमाल ॥ पर० ॥ ४ ॥ पास आस पूरो अब
 मेरी, अरज एक अवधार ललना ॥ श्रीनयविजय वि
 बुद्ध पसायथीहो, जसकहे नवजल तार ॥ पर० ॥ ५ ॥

(५००)

॥ राग वसंत सातमो ॥

॥ श्रीचिंतामणि पास प्रभुतारा, मंदिर बरसे रंग
रे ॥ एटेक ॥ ग्यान गुजाल अबिर उडावत, समता
नीर सुचंगरे ॥ श्रीचिं० ॥ मंदिर० ॥ १ ॥ अनुजव
लहेर फूली फूल वाढी, फबकती नव नव रंग रे ॥
श्री० ॥ २ ॥ उपशम बाग अंग अनोपम, सुकल
ध्यानसें चंग रे ॥ श्री० ॥ अमरचंद चिंतामणि चित्तध
र, लागो अविहड रंग रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ राग वसंत आठमो ॥

॥ ऐसें होरीतो होय रही चंपा नगरीमें, फागुनके
दिन आवे ॥ ऐसें० ॥ एटेक ॥ वासपूज्यजीके नव
ल मंदिरमें, होई रही हो सुखदाई ॥ ऐसें० ॥ १ ॥
केसर घोली जरीरे कचोली, प्रभु पूजो जले जावे ॥
ऐसें० ॥ २ ॥ अनोपम प्रेम पिचरकी अदभूत, जा
वना अबिर सुवासे ॥ ऐसें० ॥ ३ ॥ परमानंद पर
म सुख दायक, किरति जग कहाय ॥ ऐसें० ॥ ४ ॥

॥ राग वसंत नवमो ॥

॥ आदिजिनेसर प्रभुजी साहिब तेरी रे, जांउमें
बलिहारी ॥ एटेक ॥ नाजिके नंदन पाप निकंदन, तीन
जवन हितकारी रे ॥ जांउमें बलिहारी ॥ १ ॥ सि

ऋगिरि सोहन जिन मन मोहन, पेखत मूरति प्या
 री रे ॥ जा० ॥ १ ॥ पूर्व नवाणु वार प्रनूजी, र
 ह्या रायण निरधारी रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ जात्रा नवाणु
 कीये युक्ते, डुरगति दूर निवारी रे ॥ जा० ॥ ४ ॥ अठार
 अछावन चैत्री पूनम, जात्रा नवाणु छुहारी रे ॥ जा० ॥
 ५ ॥ सुरत संघ सदा सुखदाता, कहत कल्याण जय
 कारीरे ॥ जा० ॥ ६ ॥ इति

॥ राग वसंत दशमो ॥

॥ नेमि निरंजन ध्यावो रे, वनमें तप कीनो ॥
 नेमी० ॥ सहसावनकी कूँज गलनमें, पंचमहाव्रत ली
 नो रे ॥ वनमें० ॥ १ ॥ उपशम अबिर गुलाल उ
 डावत, खेलत नेम नगीनो रे ॥ वनमें० ॥ २ ॥ रेव
 त गिरी पर एकठा मिले सब, सहस बत्रीसे जीनो
 रे ॥ वनमें० ॥ ३ ॥ आत्मग्यानकी जरी पिचकारी,
 प्रछु लहे केवल नगीनो रे ॥ वनमें० ॥ ४ ॥ रूप
 चंद प्रछु गुण गावत, नेम राजुल शिव लीनो
 रे ॥ वनमें० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ फाग वसंत अगीआरमो ॥

॥ सोरीपुर नगर सोहामणोहो, समुद्रविजयराजें
 ६ ॥ शिवादेवी राणी तेहनो हो ॥ अंगज नेमजिणें

द, वृंदावन फाग सोहामणोहो ॥ अहो मेरे ललना,
 गावत नेमजिणंद ॥ वृं० ॥ एथांकणी ॥ १ ॥ समुद्र
 विजयको चातलोहो, श्रीवसुदेवकुमार ॥ जास सो
 हागगुणे करीहो, मान तजे हरि हार ॥ वृंदा० ॥ २ ॥
 बहुतेर सहस त्रिया रस रसधर ॥ मधु क
 र सुख मकरंद ॥ अंगज सकज अढे तस दोष, गु
 ण नरघा राम गोविंद ॥ वृं० ॥ ३ ॥ सोल सहस गो
 पी मनमोहन, मनोहर रूप मोरार ॥ मेघस्याम मुर
 ली लेनके, वाजत वेणुविशाल ॥ वृं० ॥ ४ ॥ चंग
 मृदंग उपंग बजावत, गावतहे वृजनार ॥ नेमकुमार
 हलधर गिरधर, करतहे केलि अपार ॥ वृं० ॥ ५ ॥
 टोले मिली मिली तान मचावत, जीलत सुरजी गुला
 ल ॥ दारत केसर कमल पिचकारी, रंग करतहे नर
 नार ॥ वृं० ॥ ६ ॥ अजब लाल तनु वेष बन्योहे,
 नयन लाल मुख लाल ॥ पंच पीतांबर उढत नीके,
 जादव ठेल ठोगाल ॥ वृं० ॥ ७ ॥ अंबर कोकिल
 आलापीत, गावत गीत रसाल ॥ चढी कदंब श्री
 कृष्ण बजावे, मधु वरांतकी ढाल ॥ वृं० ॥ ८ ॥ न
 टिका नंदी करुणानधि, हरिकुल पंकज नाण ॥ क
 रत केलि श्रीनेम मुरारी, रवि शशी उपम आण ॥

वृं० ॥ ए ॥ यादव कुंमर जले एकरथे, गुणवंत रू
पवंत ॥ नेमीसर सरखो नहिं कोई, त्रिजुवनके बलवं
त ॥ वृं० ॥ १० ॥ वृंदावनमें इणिपरे खेलत, सब
जादवके वृंद ॥ नेमीसर जिनचंद पसायें, प्रत्यह प
रमानंद ॥ वृं० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रजाति स्तवन ॥

॥ जागजाग जीवतुं ऊठ थयो प्रजातरे, प्रजुजीको
नाम नज ॥ पावे ज्युं शिव सातरे ॥ जा० ॥ पूरव
दिसि उदित सूर, धरि प्रवाल रंग गातरे ॥ विबुधवृंद
पठत पाठ, नाठ गईछे रातरे ॥ जा० ॥ १ ॥ मोह ग
हली नींद ठामि, दूर करि मिथ्यातरे ॥ सुगुरु वचन बो
धकरि, धर्मसुं धरि धातरे ॥ जा० ॥ दान शील तपो
जाव ॥ जावनसुं बहु जातरे ॥ चार मंगल चार बुद्धि,
होत नामथी विख्यातरे ॥ जा० ॥ २ ॥ पंच पदको ध्यान
करी, गुणीयण गुण गातरे ॥ आपहीमें दोस देखि, टा
ल पराइ तातरे ॥ जा० ॥ चरण करण विवेक छुछ, मन
हुं करि थिर शांतरे ॥ कहेत मुनि मजूक चंद, होत स
दा सुख सांतरे ॥ जा० ॥ ३ ॥ इति आत्मशीक्षागीत ॥

॥ अथ पुंमरगिरि स्तवन प्रारंभः ॥

॥ वीरजी आचार्य विमलाचलके मेदान, सुरपति

जायारे समोवसरण मंमाण ॥ ए आंकणीढे ॥ देसना
 देवे वीरजी स्वाम, शत्रुंजय महिमां वरणवे ताम ॥
 जाखे आठ उपर सो नाम, तेहमा जाख्युंरे पुंमरगिरि
 अजिधान ॥ सोहम इंदोरे तव पूढे बहु मान, किम
 थयुं स्वामीरे जाखो तास निदान ॥ वीर० ॥ १ ॥
 प्रजुजी जाखे सांजल इंद, प्रथमजे दुआ रिषज जिणं
 द ॥ तेहना पुंम्रते जरत नरिंद, जरतना दुआरे रुप
 नज्ञोन पुंम्रिक ॥ रुपजजी पासेरे देसना सुणी ते
 उत्तंग, दीक्षा लीधीरे त्रिपदी ज्ञान अधिक ॥ वीर० ॥
 ॥२॥ गणधर पदवी पाम्या जाम, षादश अंगी गुंथी
 अनिराम ॥ विचख्या महियलमां गुण धाम, अनुक्र
 मे आव्यारे श्रीसिद्धाचल सार ॥ मुनिवर कोडीरे पां
 च तणे परिवार, अनशन कीधुंरे निज आतमने उ
 पगार ॥ वीर० ॥ ३ ॥ तेणे ए प्रगट पुंमरगिरि नाम,
 सांजल सोहम देवलोक स्वाम ॥ एहनो महिमां अ
 तिहि उदाम, इणेदिन कीजेरे तप जप पूजाने दा
 न ॥ व्रत वली पोसोरे जेह करे निदान, फल तस
 पामेरे पंच कोडी गुण मान ॥ वीर० ॥ ४ ॥ चैत्री
 पूनम दिवसें जेह, पाम्या केवल ज्ञान अढेह ॥ शि
 व सुख वरिया अमल अदेह, पूर्णानंदीरे अगुरु ल

घु अगवाह ॥ अज अविनासी रे निजगुण नोगी
 अबाह, निज गुण करतारे पर पुजल नही चाह ॥
 वीर० ॥ ५ ॥ नक्तें नव्य जीव जे होय, पंच नवें
 मुक्ति लहे सोय ॥ एहमां बाधकळे नही कोय, व्यव
 हार केरीरे मध्यम फलनी एवात ॥ उत्कृष्टे योगेरे
 अंतरमूहूर्त विख्यात, शिव सुख साधेरे आतमने अ
 वदात ॥ वीर० ॥ ६ ॥ चैत्री पूनम महीमा देख,
 पूजा पंच प्रकार विशेष ॥ तेहमां उंणिम नही कांइ
 रेख, इणीपरे नाखेरे जिनवर उत्तम वाण ॥ सांज
 ली बूज्यारे केइक नविक सुजाण, इणीपरे गायारे प
 द्मविजय सुप्रमाण ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रस्ताविक दोहा कवित्त सवैया प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥ सत मढोडीस चतुर नर, लह्नी चिहुगणि
 होय ॥ सुख दुःख रेखा कर्मकी, मेट नसके कोय ॥ १ ॥
 हिंस्या दुखनी वेलडी, हिंस्या दुखनी खाण ॥ जीव
 अनंत नरके गया, ते हिंस्या तणें परिमाण ॥ २ ॥ द
 याते सुखनी वेलडी, दयाते सुखनी खाण ॥ जीव
 अनंत स्वर्गे गया, ते दया तणे परिमाण ॥ ३ ॥ जीव
 मारंता नरगळे, राखतां ठे सग ॥ ए बेहुळे वाटडी,
 जिणे जावे तिणे लग ॥ ४ ॥ विण कपास कपडो नही,

तिम दया विना नहि धर्म ॥ पापनही हिंस्या विना,
 बुजो एहज मर्म ॥ ५ ॥ धनवंते एक अधम नर, उ
 त्तम वंते मान ॥ ते थानक सर्व ठंमीयें, जिहां लहियें
 अपमान ॥ ६ ॥ बार बुजावण बेसणुं, बीडी बेकर
 जोड ॥ जिणघर पांच बच्चानहि, ते घर दूरे ठोड ॥ ७ ॥

ठपय ॥ हरखे किशुं गमार, देख धन संपत नारी ॥
 प्रौढ पुत्र परिवार, लोक मांहे अधिकारी ॥ यौवन
 रूप अनूप, गर्व मनमांहे उमावे ॥ करतो मोडा मों
 ड, जगत तृण सरखो जावे ॥ अखीयां मूढ देखे न
 ही, आज काल मरवुं अठे ॥ जिनहर्ष समजरे प्रा
 णीयां, नहींतर दुःख पामीश पठें ॥ १ ॥ लंक स
 रिखी पुरी, विकट गढ जास डुरंगम ॥ पाखली खा
 ई समुद्र, जिहां पडुचे नही विहंगम ॥ विद्याधर ब
 लवंत, खंम त्रण केरो स्वामी ॥ सेव करे जसु देव,
 नवग्रह पाये नामी ॥ दंसकंध वीश जुजा लहे,
 पार पाखें सेना बहु ॥ जिनहर्ष राम रावण हण्यो
 दिन पलटयो पलटया सहु ॥ २ ॥ सवैयो ॥ रूप घ
 टयो रस रंग घटयो नघटयो मन पाप विकारनथें,
 नईया तेज घटयो तरुणाप घटयो नघटयो चित्त
 कामविजासनथें ॥ सार घटयो अब सीर घटयो न

घटघो चित्त लोचन रसायनयें, नइसेन कहे जुगजात
घटघो नघटघो कोउ क्रोध कषायनयें ॥ १ ॥ कवित्त

॥ पहेलो सुखजे दीजे नरा, बीजो सुखजे घरें
दीकरा ॥ त्रीजो सुखजे कृण विण वरा, चोथो सुखजे
पोतें घरा ॥ पांचमो सुखजे नक्ति नारि, ठछो सुखजे
प्रतिष्ठा बार ॥ सातमुं सुखजे आंगण जुत्त, पुण्ये लही
यें ए घर सुत्त ॥ १ ॥ पहेलो सुखजे नजईयें गाम,
बीजो सुखजे वसीयें ठाम ॥ त्रीजो सुखजे माने नू
प, चोथो सुखजे रूप सरूप ॥ पांचमो सुखजे ईढा
यें रमे, ठछो सुख जे वेलो जिमे ॥ कवि कहे सात
मुं सुख गमे, सकल लोक घर आवी नमे ॥ २ ॥
पहेलो दुःख पडोसी चाड, बीजो दुःख घर वृद्धुं
जाड ॥ त्रीजो दुःख नित्य सहियें मार, चोथो दुःख
जें नजरे आहार ॥ पांचमो दुःख पाला चालवो,
ठछो दुःख नित्य नित्य मागवो ॥ कवि कहे मांचे
मांकण बहु, ए सातें दुःख सुणजो सहु, ॥ ३ ॥ प
हेलो दुःखजे परनी आस, बीजो दुःखजे उठो वा
स ॥ त्रीजो दुःखजे बहु कृण चडे, चोथो दुःख प
रने वस पडे ॥ पांचमो दुःख जे नटले रोग, वांढघो

नमले जेहने जोग ॥ कविजन कहे नित्य खारुं नी
र, ए साते दुःख सहे शरीर ॥ ४ ॥

॥ गुणविन निसि कबाण, ज्ञान विन ब्रह्म यो
गीसर ॥ पतिविण जुवति नेह, दीप विन अनोपम
मंदिर ॥ लूण विना रसवति, पत्र विन जिता तरुव
र ॥ वदन नेत्र विदुण, नीर विण सार सरोवर ॥
विद्या चतुराई विन, चंद्रविना रजनी जिती ॥ विनय
मेर गणी ईम कहे, तिम दान विना लठी कसी ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥ ते अजाण्या माणसां, रूपें जे राचंत ॥ दी
वा ज्योति पतंग जिम, पंख सहित दाजंत ॥ १ ॥ नर
जो कडवा तुंबडा, गुणे करीने मीठ ॥ ते माणस
केम वीसरे, जेह तणा गुण दीठ ॥ २ ॥ राति ग
माई सोवते, दीवस गमाया खाय ॥ हीरा जैसा म
नुष्य नव, कवडी बदले जाय ॥ ३ ॥ पठन गुनन
कवि चातुरी, ए तीनो बात सहेल ॥ काम दहन मन ब
स करन, गगन चढन मुसकेल ॥ ४ ॥ प्रीतजली पं
खेरुआ, उडी जेह मिलंत ॥ माणस परवस बापडा,
दूर रह्या जूरंत ॥ ५ ॥ संपति सद्गु वेंचे मली, विप
त्ति न वेंचे कोय ॥ पण संगत उनकी कीजीयें, जांगा
जेरु होय ॥ ६ ॥ सर सूकें सूकें कमल, पंखी दह दिसा

जंत ॥ आपणा सोही आपणा, पर आपणा नहं
 त ॥ ३ ॥ सज्जन ऐसा कीजीये, जैसा ज्वारिकाखेत ॥
 थडेकटे टोचे लणे, तो धरा न मेले हेत ॥ ४ ॥ स
 ज्जन ऐसा कीजीये, जामे लखन बत्तीस ॥ चीड पडे
 नाजे नहीं, सूपे अपनो सीस ॥ ५ ॥ सो सज्जन
 लख मित्र कर, टाली मित्र अनेक ॥ सुख दुःख
 जासुं कीजीये, सो लाखुंमें एक ॥ ६ ॥ सज्जन ऐसा
 कीजीये, जैसी निसी और चंद ॥ चंद बिना निसी आं
 धली, निसि बिनुं चंदा अंध ॥ ७ ॥ कै बिध चतुरकूं
 धन दीयो, के चतुराईजे ढीन ॥ एक चतुर और निरध
 ना, दोनु दुःख क्या कीन ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ आत्महित स्वाध्याय ॥ वालिम ॥

॥ वेहेलेरा आवजो ॥ एदेशी ॥

॥ माहारुं माहारुं मकर जीवतुं, जगमां नहीं ता
 हरुं कोय रे ॥ आप सवारथें सहु मढ्या, रुदय वि
 चारीने जोय रे ॥ महारुं ० ॥ १ ॥ दिन दिन आयु
 घटे ताहारुं, जिम जल अंजली होय रे ॥ धर्मनी वे
 ला नावे ठूकडो, कवण गति ताहरी होय रे ॥
 महारुं ० ॥ २ ॥ रमणीयुं रंगें राचे रमे, कांई लोये
 बावज बाथ रे ॥ तन धन यौवन थिर नही परजव,

नावे तुज साथ रे ॥ महारुं० ॥ ३ ॥ एक घेर धवल
 मंगल दुवे, एक घेर रोवे बहु नार रे ॥ एक रामा र
 मे कंतसुं, एक ठोडे सकल सणगार रे ॥ महारुं० ॥ ४ ॥
 एक घर सहु मली बेसता, नित्य नित्य करता वि
 लास रे ॥ ते रे साजनीचं उठी गयो, थिर नरह्यो
 एक वास रे ॥ महारुं० ॥ ५ ॥ एहवुं सरूप संसारनुं,
 चेतो चेतो जीव गमार रे ॥ दश दृष्टांते दोहिलो, पा
 मवो मणुअ अवतार रे ॥ महारुं० ॥ ६ ॥ हर्षविजय
 कहे एहवुं, जे नजे जिनपद रंग रे ॥ ते नर नारी
 वेगें वरे, मुक्ति वधु केरो संग रे ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजीना बार मास प्रारंभः ॥

॥ स्नेही वीरजी जयकारी रे ॥ एदेशी ॥

॥ चैत्र मासेंते चतुरा चिंते रे, नेम जई वश्या ए
 कांत रे ॥ मननी किम जांगे चांत ॥ दयालु नेमजी
 दिल वसीयो रे, एतो शिवरमणीनो रसीयो ॥ दया०
 ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ वैशाखें विनता विलखे रे
 दुःख देखीने मनहुं कलखे रे, पीठं मलवाने तनहुं
 तलखे ॥ दयालु० ॥ २ ॥ जेठे यौवने युवती लाजें
 रे, तडका लुठना वाजे रे ॥ विरही दील नीतर दा
 जे ॥ दयालु० ॥ ३ ॥ अबला एकली आषाढें रे,

वेजडी वलगीढे वाडें रे ॥ कख्या पंखीयें माला जा
 डें ॥ दयालु० ॥ ४ ॥ श्रावण सुंदर सोजागी रे, व
 रसे जरमर जरमर जडजागी रे ॥ पीक मोर मधुर
 स्वर रागी ॥ दयालु० ॥ ५ ॥ जली जामिनी जाड्व
 मासे रे, पीयुने मलवानी आसे रे ॥ दीन रैन गमे
 वीस वासे ॥ दयालु० ॥ ६ ॥ आशुयेंतो अवनी उ
 पे रे, तरुणीनी शोना लोपे रे ॥ राणी राजुज रती
 य नकोपे ॥ दयालु० ॥ ७ ॥ कहे कार्तिक कामिनी
 काती रे, पीयु विरहें दाधी ठाती रे ॥ दीसे गुंजा त
 णी पेरें राती ॥ दयालु० ॥ ८ ॥ मागशिरें माननी
 मदमाती रे, कोकील सम कंठे गाती रे ॥ दीपे क
 नक लता तनु जाती ॥ दयालु० ॥ ९ ॥ पोषे प्रेम
 सवायो कीजें रे, अबलानो अंत न लीजें रे ॥ उपश
 म रस अमृत पीजें ॥ दयालु० ॥ १० ॥ माहा म
 हीने मनोहर नारी रे, उग्रसेन धूआ कनी सारी रे ॥
 वालम तमें जूठ विचारी ॥ दयालु० ॥ ११ ॥ फागु
 णे केशु वन फलीयारे, नेमजी राजुजने मलीया रे ॥
 जव जवना पातक टलीया ॥ दयालु० ॥ १२ ॥
 बार मास जली परें गाया रे, आज अधिकानंदमें पाया
 रे ॥ राज रतन रसुज पुर ठाया ॥ दयालु० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजीना साते वार ॥ देशी उपरनी ॥

॥ रवी वारें हो रढीयाला रे, आदीत्यनी आकरी
 जाला रे ॥ ईम राजीमती कहे बाजा ॥ प्रभुजी मा
 नीयें अरदास रे, वीसारो न मूको नीरास ॥ प्रभु०
 ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सोम शोल कलायेंढे पूरो रें,
 ससी चंद नहीं अधूरो रें ॥ ते माटे चिंता चूरो ॥
 प्रभु० ॥ २ ॥ जोम मंगल जाग्य निधान रे, जेणे
 दूर कछुं अनिमान रे ॥ नमीयें नेमजी नगवान ॥
 प्रभु० ॥ ३ ॥ बुद्धे प्रभु बोध वधाखो रे, जेणे संसा
 रनो नय वाखो रे ॥ नव्य जीवने पार उताखो ॥
 प्रभु० ॥ ४ ॥ गुरुथी बृहस्पति हाखो रे, जेणे मोह
 मढर मद माखो रे ॥ जीवने जम नयथी उगाखो ॥
 प्रभु० ॥ ५ ॥ नृगु शुक्र थकी नय जागा रे, जिम
 नाहर आगें ठागा रे ॥ निज थानक जोवा लागा ॥
 प्रभु० ॥ ६ ॥ सनीश्वर चीड कहीजें रे, थिर थानक
 वास लहीजें रे ॥ प्रभु गुण अवगुण परखीजें ॥
 प्रभु० ॥ ७ ॥ सात वार ए राजुज राणी रे, कहे रा
 जरतन इम वाणी रे ॥ प्रभु गुण गाये सुखीया
 प्राणी ॥ प्रभु० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ राज्ञजनी पंदर तिथि प्रारंभः ॥ देशी ठपरनी ॥

॥ पडवे पीयु प्रीतज पालो रे, प्रेमदागुं अबोला
 टालो रे ॥ नेह करीने नजरें जालो ॥ मनोहर मज
 वुं सुधारस तोलें रे, राणी राज्ञज ईणीपेरे बोले ॥
 मनोहर ० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ बीजें बीजो नेह
 नकीजें रे, ठोगाला ठेह नदीजें रे ॥ खोटी वातनो
 अंत नलीजें ॥ मनो ० ॥ २ ॥ त्रीजें ते तमने नमी
 यें रे, पीयुं परदेशें केम नमीयें रे, निज स्वामिनी
 संगे रमीयें ॥ मनो ० ॥ ३ ॥ चोथें चित्त चोखुं की
 धुं रे, जेणे दान अजय जग दीधुं रे ॥ तेणे जीवत
 नुं फल लीधुं ॥ मनो ० ॥ ४ ॥ पांचमें पंचम गति
 जोई रे, जाणे केशरनी कसबोई रे ॥ किम काढी न
 खाए धोई ॥ मनो ० ॥ ५ ॥ ठेठे पडविध जीवना त्रा
 ता रे, जिम आठे प्रवचन माता रे ॥ एतो साचो क
 रम विधाता ॥ मनो ० ॥ ६ ॥ गयो शोक सातम
 तिथि सारी रे, नेम निरंजन ब्रह्मचारी रे ॥ तेना ना
 मनी जावें बलिहारी ॥ मनो ० ॥ ७ ॥ आवी आठ
 म आनंद कारी रे, हुंतो आठ नवांतर नारी रे ॥
 वालिम मत मूको वीसारी ॥ मनो ० ॥ ८ ॥ नवमें
 नवमो नव सारो रे, नेम राज्ञजनो आधारो रे ॥ ने

ह निरवही पार उतारो ॥ मन० ॥ ए ॥ दशमें प्रछु
 दया धरीजें रे, अबलानी आशीश लीजें रे ॥ ते
 माटे दरिशन दीजें ॥ मनो० ॥ १० ॥ अगीआर
 सें एकली नारी रे, पीयुं मेली तमो निरधारी रे ॥ प्री
 तम तमे पर उपगारी ॥ मनो० ॥ ११ ॥ बारस
 ना बोल संनारो रे, आडो आव्यो वरसालो रे ॥ मो
 हन किम नरीयें उचालो ॥ मनो० ॥ १२ ॥ तेर
 सें तोरणथी फरिया रे, गिरनार नणी संचरीया रे ॥
 नेम राजीमती नही वरीया ॥ मनो० ॥ १३ ॥ चौ
 दशथी चिंता जांगी रे, सुत समुद्रविजय जय लागी
 रे ॥ प्रछु थई बेठा निरागी ॥ मनो० ॥ १४ ॥
 पुनमेंतो परम पद धारी रे, थया जनम मरण जय
 वारी रे ॥ प्रछुयें राछुलने तारी ॥ मनो० ॥ १५ ॥ प
 न्नर तिथि पूरी गाई रे, कहे राजरतन सुख दाई
 रे ॥ तेज खेटक पुरमां सवाई ॥ मनो० ॥ १६ ॥
 ॥ अथश्री शत्रुंजयनी गरबी ॥ जे कोई अंबिकाजी ॥
 ॥ मातने आराधजो रे लो ॥ एदेशी ॥

॥ जे कोई सिद्धगिरिराजने आराधजोरे लो, तेनी
 संपदा मनोरथ वाधजो रे लोल ॥ गिरिराज ठे नवो
 दधि तारणो रे लोल, माहा पीठ ठे सरव दुःख वार

एोरे लोल ॥ १ ॥ पुंनर गिरि ठे मनोरथ पूरणो रे
 लोल, सिद्धखेत्र ठे नवोदधि चूरणो रे लोल ॥ एना
 एकवीश नामठे सोहामणां रे लोल, हुंतो वंदना करी
 ने लहुं नामणां रे लोल ॥ २ ॥ एना साधनथी तप
 जप आकरे रे लोल, मुनिसीधा ठे कांकरे कांकरे रे
 लोल ॥ मुनिराजजी अनंत मुगतें गयां रे लोल, सिद्ध
 राज थइ अविनासि थयां रे लोल ॥ ३ ॥ तेहनां नाम
 कहुंने विनंती करुं रे लोल, एनां नामथी पाप सरवे
 हरुं रे लोल ॥ पांच पांनवने नारद मुनिवरारे लोल,
 सीलंग सूरि सुदर्शन मुनि तखा रे लोल ॥ ४ ॥ इविड
 वारीखेण देवकीना नंदजीरे लोल, महीपालजीने मही
 पति चंदजीरे लोल ॥ थावच्चा कुमरने मुनि विद्याधरा रे
 लोल, सिद्धि सांबने प्रद्युम्नजी जिहां वखारे लोल ॥
 ॥ ५ ॥ (वली जालि मयाली उवालीने रे लोल) ध्या
 न धरियां ठे चित्त एक आसने रे लोल, जोगी तखा
 ठे चंडप्रज शासने रे लोल ॥ नरत रामचंडजीने नं
 दीखेणजी रे लोल, सिद्ध चढया ठे रूपकश्रेणजी
 रे लोल ॥ ६ ॥ नमि विनमीने मुनि झुकराजजी रे
 लोल, झातासूत्रमां साख्याठे सर्व काजजी रे लोल ॥
 केता नाम कहुं ते मुनिराजनां रे लोल, जीन एकनें

अर्नंत नाम साजनारे लो ॥ ७ ॥ एवा अर्नंत अर्नंत
 मुनिजी तखा रे लोल, तेतो दर्शन ज्ञान थकी नखा
 रे लोल ॥ नमोद्युणु ते सात पदमें मढ्या रे लोल, ते
 तो चार अर्नंत सुखमां नढ्या रे लोल ॥ ८ ॥ जई व
 सीया ठे सिद्ध सिजा उपरि रे लोल, तेनी सादि अर्नंत
 स्थिति ठे खरी रे लोल ॥ हुंतो जाणुं हुं गणधर वाणी
 यें रे लोल, सहु सिद्धगिरि महातम जाणीयें रे लोल
 ॥ ९ ॥ वार पूरव नवाणुं आदिनाथजी रे लोल, समो
 सखा ठे पुंमरिक साथजी रे लोल ॥ गिरि फरस्यो त्रेवी
 श जिनराजजी रे लोल, अनशन कीथा अर्नंत मुनिरा
 जजी रे लोल ॥ १० ॥ सेवो सेवो ए गिरि सुख कंद
 ने रे लोल, सेवो सेवो मरुदेवी नंदने रे लोल ॥ वंदो
 वंदो ईदवाग कुल सूरने रे लोल, पूजो पूजो श्रीरूपन
 हजूरने रे लोल ॥ ११ ॥ (नाजी राजाना कुंजमां
 दिन करू रे लोल) रूपन नाथजीनो वंसठे गुणाकरू
 रे लोल, आदिनाथजीना पाटवी प्रजाकरू रे लोल ॥
 जेहना आठ पाट आरीसा जुवनमां रे लोल, पाम्यां
 केवल ग्यान जुन ध्यानमां रे लोल ॥ १२ ॥ जेहना
 पाटवी असंख्य मुगति गया रे लोल, तेतो सिद्ध मं
 निकामां सरवे कह्या रे लोल ॥ नरत रायथी उद्धार

शोलढे सडु रे लोल, विच अंतरें उकार थयाढे बडु
 रे लोल ॥ १३ ॥ जेकोई गिरिराज दरिशन जाविया रे
 लोल, इहां संघवी असंख्य संघ जाविया रे लोल ॥
 माता चक्रेसरीजी सुखदायिनी रे लोल, नूजा आठने
 गरुड सिंह वाहनी रे लोल ॥ १४ ॥ विक्रमराजथी
 अठारसें सतोत्तरे रे लोल, मार्गेशिर मासने त्रयोदशि
 वासरे रे लोल ॥ गरबीगाइढे कवीदीपराजजीरे लोल,
 जे सांजले तेहना सरसे काजजी रे लोल ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ चोवीशतीर्थकरनुं स्तवन ॥

॥ रिसह जिणेसर प्रणमी पाय, बीजा अजित
 जिणे सर राय ॥ संजव स्वामी सुख चंदार, अजि
 नंदन नामे जयकार ॥ १ ॥ सुमति पद्म प्रभु देव
 सुपास, चंडप्रज जिन पूरे आस ॥ सुविधि शीतल
 श्रेयांस जिणंद, वासुपूज्य दीठे आणंद ॥ २ ॥ विम
 ल अनंत धर्म जगदीश, शांति कुंथु अर नामुं शीश ॥
 मछिनाथ मुनिसुव्रत देव, नमि नेमीसर सारें सेव ॥
 ३ ॥ पास वीर नित्य प्रणमे जेह, रुद्रि सिद्धि नर
 पामे तेह ॥ चोवीशे गुण तणा निवास, जाव मुनि
 कहे पूरो आस ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवन ॥ धोलनी देशी ॥

॥ शांतिजिनेसर साहेब वंदो, अनुजव रसनो कं
 दो रे ॥ मुखने मटके लोचन लटके, मोहया सुर न
 र इंदो रे ॥ शांति० ॥ १ ॥ आंबे मंजरी कोयल
 टांके, मेघ घटा जिम मोरो रे ॥ तिम जिनवरने दे
 खी हरखुं, वली जिम चंद चकोरो रे ॥ शांति० ॥
 २ ॥ जिनप्रतिमा श्रीजिनवर नाखी, सूत्र घणाढे सा
 खी रे ॥ सुर नर मुनिवर वंदन पूजा, करतां शिव अ
 निलाखी रे ॥ शांति० ॥ ३ ॥ रायपसेणी प्रतिमा पू
 जी, सूरियाज समकेत धारी रे ॥ जीवानिगमे प्रति
 मा पूजी, विजयदेव अधिकारी रे ॥ शांति० ॥ ४ ॥
 जिनवर बिंब विना नवी वंडु, आणंदजी ईम बोले
 रे ॥ सातमें अंगें समकित मूलें, अवर नही तस तो
 ले रे ॥ शांति० ॥ ५ ॥ ज्ञाता सूत्रें दौपदी पूजा, क
 रति शिवसुख मागे रे ॥ राय सीधारथ प्रतिमा पू
 जी, कल्पसूत्र मांहे रागें रे ॥ शांति० ॥ ६ ॥ विद्याचा
 रण मुनिवर वंदी, प्रतिमा पांचमें अंगे रे ॥ जंघाचा
 रण मुनिवर वंदी, जिन पडिमा मन रंगें रे ॥ शांति० ॥
 ७ ॥ आर्यसुहस्ति सूरि उपदेशें, चावो संप्रतिराय
 रे ॥ सवा कोडी जिनबंब जराव्या, धन धन एहनी

माय रे ॥ शांति० ॥ ७ ॥ मोकली प्रतिमा अनयकु
 मारें, देखी आईकुमार रे ॥ जातिस्मरणे समकित
 पामी, वरियो शिववधु सार रे ॥ शांति० ॥ ८ ॥ ई
 त्यादिक बहु पाठ कल्यांते, सूत्र मांहे सुखकारी रे ॥
 सूत्रतणो एक वरण उढापे, ते कह्यो बहुल संसा
 री रे ॥ शांति० ॥ ९ ॥ तेमाटे जिन आणा धा
 री, कुमति कदाग्रह निवारी रे ॥ नक्ति तणा फल
 उत्तराध्ययने, बोध बीज सुखकारी रे ॥ शांति० ॥
 १० ॥ एक नवें दोय पदवी पाम्या, शोलमां श्रीजि
 राय रे ॥ मुजमन मंदिरीयें पथारावो, धवल मंगल
 गवराय रे ॥ शांति० ॥ ११ ॥ जिन उत्तमपद रूप अ
 नोपम, कीर्त्ति कमलानी शाला रे ॥ जिनविजय कहे
 प्रभुजीनी नक्ति, करतां मंगल माला रे ॥ शांति० ॥ १२ ॥

॥ अथ नेम जिन स्तवन राग कल्याण ॥

॥ घरें आवोतो पुढुं एक वातलडी रे ॥ घरे० ॥
 ताहारेने माहारे साहेबा प्रीत धणोरी, पडिय पटोले
 जांतडली रे ॥ घरे० ॥ १ ॥ तोरणथी रथ फेर चला
 यो, जाणी तुमारी जातडली रे ॥ घरे० ॥ २ ॥ म
 हेर करीने माहारे मंदिर पधारो, रहोने आजुनी रा
 तडली रे ॥ घरे० ॥ ३ ॥ नेम राजुज दोये सरग

सीधाए, मुके गया जलीनांतलडी रे ॥ घरे० ॥ ४ ॥
 रूपचंद कहे नाथ निरंजन, तुमसुं बांधी मारी प्रीत
 लडी रे ॥ घरे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिन स्तवन ॥

॥ तोरण आवी रथ पाठो केम फेरो रे ॥ वाला
 जी ॥ संयम द्यो तो सार्ये अमने तेडो ॥ मारा वा
 लाजी ॥ उजा उजा अरज करे सहु लोकरे ॥ वा
 लाजी ॥ बोल कोल किम करीने आसे फोक ॥ मारा
 वालाजी ॥ १ ॥ नेमजी तमेंतो जीलाना ठो साथी
 रे ॥ वालाजी ॥ कीडीनां रोकधा किम रेहेसो हा
 थी ॥ मारावालाजी ॥ नेमजी तमें तो धरी रह्या
 एक ध्यान रे ॥ वालाजी ॥ आवडलाने किहांथी आ
 व्युं ध्यान ॥ मारावालाजी ॥ २ ॥ नोधारा ते केने उ
 र्ये रेछुरे ॥ वालाजी ॥ हीयडलाना दुःखडा केने के
 छुं ॥ मारावालाजी ॥ उदयरतनना रसीया वालम
 नेम रे ॥ वालाजी ॥ राजीमतीना सीधा वंठित प्रेम
 मारावालाजी ॥ ३ ॥

॥ प्रस्ताविक ॥ डुहो ॥

सबे न सब युग सरसहे, ज्यां लग नपरत काम ॥
 हेम हुताशन परखीउ, पीतल निकसत शाम ॥ १ ॥

॥ अथ कर्मनी मूलोत्तर प्रकृतिना नाम ॥

॥ प्रथम मूलप्रकृति आठनां नाम ॥

| | |
|---------------------|----------------|
| १ ज्ञानावरणीय कर्म. | ५ आयुः कर्म. |
| २ दर्शनावरणीय कर्म. | ६ नाम कर्म. |
| ३ वेदनीय कर्म. | ७ गोत्र कर्म. |
| ४ मोहनीय कर्म. | ८ अंतराय कर्म. |

॥ पहेला ज्ञानावरणीयकर्मनी उत्तर प्रकृति पांच ॥

| | |
|---------------------|-----------------------|
| १ मतिज्ञानावरणीय. | ४ मनःपर्यवज्ञानावरणीय |
| २ श्रुतज्ञानावरणीय. | ५ केवलज्ञानावरणीय. |
| ३ अवधिज्ञानावरणीय. | |

॥ बीजा दर्शनावरणीयकर्मनी उत्तर प्रकृति नव ॥

| | |
|----------------------|-----------------|
| १ चक्षुदर्शनावरणीय. | ६ निदानिडा. |
| २ अचक्षुदर्शनावरणीय. | ७ प्रचला. |
| ३ अवधिदर्शनावरणीय. | ८ प्रचलाप्रचला. |
| ४ केवलदर्शनावरणीय. | ९ शीणक्षी. |
| ५ निडा. | |

॥ त्रीजा वेदनीय कर्मनी उत्तर प्रकृति बें ॥

| | |
|---------------|----------------|
| १ शातावेदनीय. | २ अशातावेदनीय. |
|---------------|----------------|

॥ चोथा मोहनीयकर्मनी उत्तर प्रकृति अष्टावोश ॥

- | | |
|------------------------|-----------------------|
| १ सम्यक्त्वमोहनीय. | १५ संज्वलनमाया. |
| २ मिश्रमोहनीय. | १६ अनंतानुबंधी लोच. |
| ३ मिथ्यात्वमोहनीय. | १७ अप्रत्याख्यान लोच. |
| ४ अनंतानुबंधीक्रोध. | १८ प्रत्याख्यान लोच. |
| ५ अप्रत्याख्यान क्रोध. | १९ संज्वलन लोच. |
| ६ प्रत्याख्यान क्रोध. | २० हास्यनोकषाय. |
| ७ संज्वलन क्रोध. | २१ रति नोकषाय. |
| ८ अनंतानुबंधीमान. | २२ अरति नोकषाय. |
| ९ अप्रत्याख्यानमान. | २३ शोक नोकषाय. |
| १० प्रत्याख्यानमान. | २४ जय नोकषाय. |
| ११ संज्वलनमान. | २५ जुगुप्सा नोकषाय. |
| १२ अनंतानुबंधीमाया. | २६ पुरुषवेद नोकषाय. |
| १३ अप्रत्याख्यानमाया. | २७ स्त्रीवेद नोकषाय. |
| १४ प्रत्याख्यानमाया. | २८ नपुंसकवेद नोकषाय. |

॥ पांचमां आयु.कर्मनी उत्तर प्रकृति चार ॥

- | | |
|--------------|--------------|
| १ देवायु. | २ तिर्यगायु. |
| ३ मनुष्यायु. | ४ नरकायु. |

॥ ठछा नामकर्मनी उत्तर प्रकृति १३० ॥

- | | |
|-----------------------|------------------------|
| १ नरकगति नामकर्म. | १९ औदारिकतैजसबंधन |
| २ तिर्यग्गति नामकर्म. | २० औदारिककर्मणबंधन |
| ३ मनुष्यगति नामकर्म. | २१ औदारिकतैजसकर्म |
| ४ देवगति नामकर्म. | ए बंधन. |
| ५ एकेंद्रिय जातिनाम. | २२ वैक्रियवैक्रियबंधन. |
| ६ बेंद्रिय जातिनाम. | २३ वैक्रियतैजसबंधन. |
| ७ तेंद्रिय जातिनाम. | २४ वैक्रियकर्मणबंधन. |
| ८ चतुरिंद्रियजातिनाम. | २५ वैक्रियतैजसकर्मण |
| ९ पंचेंद्रिय जातिनाम. | बंधन. |
| १० औदारिकशरीरनाम. | २६ आहारकआहारक |
| ११ वैक्रिय शरीरनाम. | बंधन. |
| १२ आहारक शरीरनाम. | २७ आहारकतैजसबंधन. |
| १३ तैजस शरीरनाम. | २८ आहारककर्मणबंधन |
| १४ कर्मण शरीरनाम. | २९ आहारक तैजस का |
| १५ औदारिक अंगोपांग. | र्मण बंधन. |
| १६ वैक्रिय अंगोपांग. | ३० तैजसतैजस बंधन. |
| १७ आहारक अंगोपांग. | ३१ तैजसकर्मण बंधन. |
| १८ औदारिक औदारिक | ३२ कर्मणकर्मण बंधन. |
| बंधन. | ३३ औदारिकसंघातन. |

- ३४ वैक्रियसंघातन.
 ३५ आहारकसंघातन.
 ३६ तैजससंघातन.
 ३७ कार्मेणसंघातन.
 ३८ वज्ररुषननाराच
 संघयण.
 ३९ रुषननाराचसंघयण.
 ४० नाराचसंघयण.
 ४१ अर्धनाराचसंघयण.
 ४२ कीलिकासंघयण.
 ४३ ढेवहुसंघयण.
 ४४ समचतुरस्रसंस्थान.
 ४५ न्यग्रोधसंस्थान.
 ४६ सादिसंस्थान.
 ४७ वामनसंस्थान.
 ४८ कुब्जसंस्थान.
 ४९ हुंससंस्थान.
 ५० कृष्णवर्णनाम.
 ५१ नीलवर्णनाम.
 ५२ लोहितवर्णनाम.
 ५३ हारिद्वर्णनाम.
 ५४ श्वेतवर्णनाम.
 ५५ सुरनिगंध.
 ५६ डुरनिगंध.
 ५७ तिक्तरसनामकर्म.
 ५८ कटुकरसनामकर्म.
 ५९ कषायलरसनामकर्म.
 ६० आम्लरसनामकर्म.
 ६१ मधुररसनामकर्म.
 ६२ कर्कशस्पर्शनामकर्म,
 ६३ मृदुस्पर्शनामकर्म.
 ६४ गुरुस्पर्शनामकर्म.
 ६५ लघुस्पर्शनामकर्म.
 ६६ शीतस्पर्शनामकर्म.
 ६७ उष्णस्पर्शनामकर्म.
 ६८ स्निग्धस्पर्शनामकर्म.
 ६९ रूक्षस्पर्शनामकर्म.
 ७० नरकानुपूर्वी,
 ७१ तिर्यगानुपूर्वी.
 ७२ मनुष्यानुपूर्वी.

| | |
|----------------------|-----------------------|
| ७३ देवानुपूर्वी. | ८९ शुननामकर्म. |
| ७४ शुनविहायोगति. | ९० सौजाग्यनामकर्म. |
| ७५ अशुनविहायोगति. | ९१ सुस्वरनामकर्म. |
| ७६ पराघातनामकर्म. | ९२ आदेयनामकर्म. |
| ७७ उद्धासनामकर्म. | ९३ यशःकीर्तिनामकर्म. |
| ७८ आतपनामकर्म. | ९४ स्थावरनामकर्म. |
| ७९ उद्योतनामकर्म. | ९५ सूक्ष्मनामकर्म. |
| ८० अगुरुलघुनामकर्म. | ९६ अपर्याप्तिनामकर्म. |
| ८१ तीर्थकरनामकर्म. | ९७ साधारणनामकर्म. |
| ८२ निर्माणनामकर्म. | ९८ अस्थिरनामकर्म. |
| ८३ उपघातनामकर्म. | ९९ अशुननामकर्म. |
| ८४ त्रसनामकर्म. | १०० दुर्नाग्यनामकर्म. |
| ८५ बादरनामकर्म. | १०१ दुःस्वरनामकर्म. |
| ८६ पर्याप्तिनामकर्म. | १०२ अनादेयनामकर्म. |
| ८७ प्रत्येकनामकर्म. | १०३ अयशःअकीर्ति |
| ८८ स्थिरनामकर्म. | नामकर्म. |

॥ सातमा गोत्रकर्मनी उत्तर प्रकृति बे ॥

१ उच्चैर्गोत्र.

२ नीचैर्गोत्र.

આત્મા અંતરાયકર્મની ઉત્તર પ્રકૃતિ પાંચ.

૧ દાનાંતરાય.

૪ ઉપજોગાંતરાય.

૨ લાજાંતરાય.

૫ વીર્યાંતરાય.

૩ જોગાંતરાય.

এবং આત્મ કર્મની એકશોઅઠાવન ઉત્તર પ્રકૃતિ જાણવી.

॥ અથ નવતત્ત્વના નામ ॥

૧ જીવતત્ત્વ— ૪ પાપતત્ત્વ— ૭ નિર્ક્લરાતત્ત્વ.

૨ અજીવતત્ત્વ—૫ આશ્રવતત્ત્વ—૮ બંધતત્ત્વ.

૩ પુણ્યતત્ત્વ— ૬ સંવરતત્ત્વ— ૯ મોહતત્ત્વ.

॥ હવે એ નવ તત્ત્વ માહેજા પ્રત્યેકે એકેકા તત્ત્વ ના જુદા જુદા જેદોની સંખ્યા વિવરીને લખીયેઠેયેં તિહાં પ્રથમ જીવ તત્ત્વના ચૌદ જેદઢે તે લખીયેઠેયેં

૧ સૂક્ષ્મ એકેંડીય પર્યાપ્તા:

૨ વાદર એકેંડીય પર્યાપ્તા:

૩ સંજ્ઞી પંચેંડીય પર્યાપ્તા:

૪ અસંજ્ઞી પંચેંડીય પર્યાપ્તા:

૫ બેંડેંડીય પર્યાપ્તા:

૬ તેંડેંડીય પર્યાપ્તા:

૭ ચત્તરિંડીય પર્યાપ્તા:

ए सात जेद पर्याप्ताना तेनी साथे एज सात जेद
अपर्याप्ताना जेजीयें तेवारें सर्व मजो जीवतत्त्वना च
उदजेद थाय ते अरूपी जाणवा.

॥ बीजा अजीवतत्त्वना चौदजेद कहेजे ॥

| | |
|------------------------|-------------------------|
| १ धर्मास्तिकायस्कंध. | ७ आकाशास्तिकायदेश. |
| २ धर्मास्तिकायदेश. | ८ आकाशास्तिकायप्रदेश |
| ३ धर्मास्तिकायप्रदेश. | १० कालवर्चनालक्षण. |
| ४ अधर्मास्तिकायस्कंध. | ११ पुञ्जास्तिकायस्कंध. |
| ५ अधर्मास्तिकायदेश. | १२ पुञ्जास्तिकायदेश. |
| ६ अधर्मास्तिकायप्रदेश. | १३ पुञ्जास्तिकायप्रदेश. |
| ७ आकाशास्तिकायस्कंध | १४ पुञ्जास्तिकायपरमाणु |

एमां धर्मास्तिकायादिकना दश जेद अरूपी अने पु
ञ्जास्तिकायना चार जेद रूपीजाणवा.

॥ त्रीजा पुण्यतत्त्वना बेंतालीश जेद कहेजे ॥

| | |
|--------------------|-----------------------|
| १ सातावेदनीय. | ५ देवगति. |
| २ उच्चैर्गोत्र. | ६ देवानुपूर्वी. |
| ३ मनुष्यगति. | ७ पंचेंडीयजातीनामकर्म |
| ४ मनुष्यानुपूर्वी. | ८ अथौदारिकशरीरनामकर्म |

| | |
|------------------------|----------------------|
| ७ वैक्रीयशरीरनामकर्म. | २६ उद्योतनामकर्म. |
| १० आहारकशरीरनाम. | २७ शुचविहायोगतिनाम |
| ११ तैजसशरीरनामकर्म. | कर्म. |
| १२ कर्मणशरीरनामकर्म | २८ निर्माणनामकर्म. |
| १३ औदारिकअंगोपांग. | २९ त्रसनामकर्म. |
| १४ वैक्रियअंगोपांगनाम. | ३० बादरनामकर्म. |
| १५ आहारकअंगोपांग. | ३१ पर्याप्तिनामकर्म. |
| १६ वज्रकसषन्ननाराचसं | ३२ प्रत्येकनामकर्म. |
| संघयण. | ३३ स्थिरनामकर्म. |
| १७ समचतुरस्त्रसंस्थान. | ३४ शुचनामकर्म. |
| १८ शुचवर्ण. | ३५ सौभाग्यनामकर्म. |
| १९ शुचगंध. | ३६ शुस्वरनामकर्म. |
| २० शुचरश. | ३७ आदेयनामकर्म. |
| २१ शुचस्पर्श. | ३८ यशःकीर्तिनामकर्म. |
| २२ अगुरुजघुनामकर्म. | ३९ देवायुः |
| २३ पराघातनामकर्म. | ४० मनुष्यायु. |
| २४ श्वासोश्वासनामकर्म | ४१ तीर्थचायु. |
| २५ आतपनामकर्म. | ४२ तीर्थकरनामकर्म. |

ए बेतालीश जेद रूपी जाणवा.

॥ चोथा पाप तत्त्वना व्याशी जेद कहेते ॥

- | | |
|-----------------------|-----------------------|
| १ मतिज्ञानावरणीय. | १ ए श्रीणक्षी. |
| २ श्रुतज्ञानावरणीय. | २० नीचैर्गोत्र. |
| ३ अवधिज्ञानावरणीय. | २१ अशातावेदनीय. |
| ४ मनःपर्यवज्ञानावरणीय | २२ मिथ्यात्वमोहनीय. |
| ५ केवलज्ञानावरणीय. | २३ स्थावरनामकर्म. |
| ६ दानांतराय. | २४ सूक्ष्मनामकर्म. |
| ७ लाजांतराय. | २५ अपर्याप्तिनामकर्म. |
| ८ जोगांतराय. | २६ साधारणनामकर्म. |
| ९ उपजोगांतराय. | २७ अस्थिरनामकर्म. |
| १० वीर्यांतराय. | २८ अशुचिनामकर्म. |
| ११ चक्षुदर्शनावरणीय. | २९ दुर्नाग्यनामकर्म. |
| १२ अचक्षुदर्शनावरणीय | ३० दुस्वरनामकर्म. |
| १३ अवधिदर्शनावरणीय | ३१ अनादेयनामकर्म. |
| १४ केवलदर्शनावरणीय. | ३२ अयशनामकर्म. |
| १५ निडा. | ३३ नरकगति. |
| १६ निडानिडा. | ३४ नरकायु. |
| १७ प्रचला. | ३५ नरकानुपूर्वी. |
| १८ प्रचलाप्रचला. | ३६ अनंतानुबंधी क्रोध. |

३७ अनंतानुबंधी मान.
 ३८ अनंतानुबंधी माया.
 ३९ अनंतानुबंधी लोच.
 ४० अप्रत्याख्यानी क्रोध.
 ४१ अप्रत्याख्यानी मान.
 ४२ अप्रत्याख्यानीमाया.
 ४३ अप्रत्याख्यानी लोच.
 ४४ प्रत्याख्यानी क्रोध.
 ४५ प्रत्याख्यानीमान.
 ४६ प्रत्याख्यानी माया.
 ४७ प्रत्याख्यानी लोच.
 ४८ संज्वलन क्रोध.
 ४९ संज्वलन मान.
 ५० संज्वलन माया.
 ५१ संज्वलन लोच.
 ५२ हाश्य.
 ५३ रति.
 ५४ अरति.
 ५५ शोक.
 ५६ जय.

५७ दुगिह्वा.
 ५८ पुरुषवेद.
 ५९ स्त्रीवेद.
 ६० नपुंसकवेद.
 ६१ तीर्थचगति.
 ६२ तीर्थचानुपूर्वी.
 ६३ एकेंद्रियजाति.
 ६४ द्वेन्द्रियजाति.
 ६५ त्रेन्द्रियजाति.
 ६६ चतुरिन्द्रियजाति.
 ६७ अशुचिविहायोगति.
 ६८ उपधात नामकर्म.
 ६९ अप्रशस्त वर्ण.
 ७० अप्रशस्त गंध.
 ७१ अप्रशस्त रस.
 ७२ अप्रशस्त स्पर्श.
 ७३ कृष्णनाराचसंधयण.
 ७४ नाराचसंधयण.
 ७५ अर्द्धनाराचसंधयण.
 ७६ कीलिकासंधयण.

३७ ठेवहुंसंघयण.

३८ न्यग्रोधपरिमंजसं०

३९ सादिसंस्थान.

८० वामनसंस्थान.

८१ कुब्जसंस्थान.

८२ हुंमकसंस्थान.

ए व्यासी जेद रूपी जाणवा.

॥ पांचमां आश्रव तत्त्वना बेतालीश जेद कहेने ॥

१ स्पर्शनेंडीय.

२ रसनेंडीय.

३ घ्राणेंडीय.

४ चक्षुंंडीय.

५ श्रोतेंडीय.

६ क्रोध कषाय.

७ मान कषाय.

८ माया कषाय.

९ लोभ कषाय.

१० प्राणातिपात अत्रत.

११ मृषावाद अत्रत.

१२ अदत्तादान अत्रत.

१३ मैथुन अत्रत.

१४ परिग्रह अत्रत.

१५ अशुनमनोयोग.

१६ अशुनवचनयोग.

१७ अशुनकाययोग.

१८ कायकी क्रिया.

१९ अधिकरणकी क्रिया.

२० प्रदेषकी क्रिया.

२१ पारितापनकी क्रिया.

२२ प्राणातिपातकीक्रिया

२३ आरंजनकी क्रिया.

२४ पारिग्रहिकी क्रिया.

२५ मायाप्रत्ययिकीक्रिया

२६ मिथ्यात्वदर्शनप्रत्ययि

कीक्रिया.

२७ अप्रत्याख्यानकीक्रिया

| | |
|-----------------------|--------------------------------|
| २८ दृष्टिकी क्रिया. | ३६ अनाजोगिकी क्रिया. |
| २९ दृष्टिकी क्रिया. | ३७ अनवकांक्षप्रत्ययिकी क्रिया. |
| ३० पादुचकी क्रिया. | ३८ प्रयोगिकी क्रिया. |
| ३१ सामंतोपनिपातिकी. | ३९ समुदायिकी क्रिया. |
| ३२ नैशस्त्रकी क्रिया. | ४० प्रेमकी क्रिया. |
| ३३ स्वहस्तकी क्रिया, | ४१ द्वेषिकी क्रिया. |
| ३४ अज्ञापनिकी क्रिया. | ४२ ईर्ष्यापथिकी क्रिया. |
| ३५ विदारणकी क्रिया. | |

ए बेताजीश जेदरूपी जाणवा.

॥ ठठा संवरतत्वना सत्तावन जेद कहेंछे. ॥

| | |
|-------------------------------|-----------------|
| १ ईर्ष्यासमिति. | ६ मनगुप्ति. |
| २ जाषासमिति. | ७ वचनगुप्ति. |
| ३ एषणासमिति. | ८ कायगुप्ति. |
| ४ आदानजंममतनिक्षेप णासमिति | ९ क्रुधापरिसह. |
| ५ उच्चारपासणखेलसिंघा | १० पिपासापरिसह. |
| णजलपारिष्टानिकासमिति | ११ शीतपरिसह. |
| | १२ उष्णपरिसह. |

| | |
|--------------------|---------------------|
| १३ मंशमंसापरिसह. | ३३ आर्यवधर्म. |
| १४ अचेलकपरिसह. | ३४ मुक्तिधर्म. |
| १५ अरतिपरिसह. | ३५ तपधर्म. |
| १६ स्त्रीपरिसह. | ३६ संयमधर्म. |
| १७ चर्यापरिसह. | ३७ सत्यधर्म. |
| १८ नैषेधिकीपरिसह. | ३८ सौचधर्म. |
| १९ शय्यापरिसह. | ३९ अकिंचनधर्म. |
| २० आक्रोशपरिसह. | ४० ब्रह्मचर्यधर्म. |
| २१ वधपरिसह. | ४१ अनित्यजावना. |
| २२ याचनापरिसह. | ४२ अशरणजावना. |
| २३ अलानपरिसह. | ४३ संसारजावना. |
| २४ रोगपरिसह. | ४४ एकत्वजावना. |
| २५ तृणफरसपरिसह. | ४५ अन्यत्वजावना. |
| २६ मलपरिसह. | ४६ अशुचिजावना. |
| २७ सत्कारपरिसह. | ४७ आश्रवजावना. |
| २८ प्रज्ञापरिसह. | ४८ संवरजावना. |
| २९ अज्ञानपरिसह. | ४९ निर्झराजावना. |
| ३० सम्यक्त्वपरिसह. | ५० लोकस्वरूपजावना. |
| ३१ ह्रमाधर्म. | ५१ बोधिदुर्लभजावना. |
| ३२ मार्दवधर्म. | ५२ धर्मजावना. |

५३ सामयिकचारित्र.

५४ ठेदोपस्थापनीयचारित्र.

५५ परिहारविशुद्धिचारित्र

५६ सूक्ष्मसंपरायचारित्र.

५७ यथाख्यातचारित्र.

ए सत्तावन्न जेद अरूपी जाणवा.

॥ सातमा निर्जरातत्त्वना बार जेद कहेढे ॥

तेमां प्रथम ठ प्रकारें
बाह्यतप कहे ढे.

१ अनशन तप.

२ उणोदरी तप.

३ व्रतिसंक्षेप तप.

४ रसत्याग तप.

५ कायकलेश तप.

६ संलीनता तप.

ठ प्रकारें अन्यंतर
तप कहेढे.

७ प्रायश्चित्त तप.

८ विनय तप.

ए वैयावच्च तप.

१० सज्जाय तप.

११ ध्यान तप.

१२ उपसर्ग तप.

ए बार जेद अरूपी जाणवा

॥ आठमां बंधतत्त्वना चार जेद कहेढे ॥

१ प्रकृतिबंध

२ स्थितिबंध

३ अनुजागबंध.

४ प्रदेशबंध.

ए चार जेद अरूपी जाणवा

॥ નવમા મોહતત્વના નવ જેદ કહેહે ॥

| | |
|-----------------------------|----------------------|
| ૧ ઠતાપદનીપ્રરૂપણા નોદાર. | ૫ કાલ દાર. |
| ૨ દ્વ્યપ્રમાણ દાર. | ૬ અંતર દાર. |
| ૩ ક્ષેત્ર દાર. | ૭ જાગ દાર. |
| ૪ સ્પર્શના દાર. | ૮ દ્વાયિકાદિકજાવ દાર |
| | ૯ અલ્પબહુત્વ દાર. |

એ નવ જેદ અરૂપી જાણવા.

અથ ચારગતિમાં રહેલા સમસ્ત સંસારીજીવ, ઘોવીશ દંમકોને વિષે પરિચ્છમણ કરેહે તે દંમકનાં નામ કહેહે. તિહાં પ્રથમ સાત નારકીનું એક દંમકહે તે સાતે નારકીના નામ તથા ગોત્ર નીચે પ્રમાણે

| | |
|---------------------|----------------------|
| નામ. ગોત્ર. | ૪ અંજણા. પંકપ્રજા. |
| ૧ ઘમા. રત્નપ્રજા. | ૫ રિષા. ધૂમપ્રજા. |
| ૨ વંસા. શર્કરપ્રજા. | ૬ મધા. તમપ્રજા. |
| ૩ સૈલા. વાલુકપ્રજા. | ૭ માધવતી. તમતમપ્રજા. |

હવે દશ જવનપતિના દશ દંમક તેનાં નામ કહેહે.

- ૧ અસુરકુમાર નિકાયનો દંમક.
- ૨ નાગકુમાર નિકાયનો દંમક.
- ૩ સુવર્ણકુમાર નિકાયનો દંમક.

- ४ विद्युत्कुमार निकायनो दंमक.
 ५ अग्निकुमार निकायनो दंमक.
 ६ क्षीपकुमार निकायनो दंमक.
 ७ उदधिकुमार निकायनो दंमक.
 ८ दिशिकुमार निकायनो दंमक
 ९ वायुकुमार निकायनो दंमक
 १० स्तनितकुमार निकायनो दंमक

चारमो पृथिवीकायनो दंमक,तेनां मूलनाम ष कहेबे

- १ सुना. २ सुधा. ३ वालुया.
 ४ मणशिल. ५ शर्करा. ६ खरपुढवी.

॥ हवे ए पृथ्वीकायना जेद कहेबे ॥

- १ स्फाटिकरत्न. २ मणिरत्न. ३ रत्ननीसर्वजाति
 ४ परवालां.— ५ हिंगलो.— ६ हरताल.
 ७ मणशिल.— ८ पारो.— ९ सोनुं.
 १० रूपुं.— ११ त्रांबुं.— १२ लोदुं.
 १३ जसंत.— १४ शीबुं.— १५ कथिर.
 १६ खडीमाटी. १७ हरमजीवानी. १८ अरणोटोपाषाण
 १९ पलेवोपाषाण. २० अजरख २१ तूरीमाटीनीजाति
 २२ खारीमाटीनीजाति. २३ माटीनीसर्वजाति.

१४ पाषाणनोसर्वजाति. १६ अंजननीजाति.

१५ सुरमातीजाति. १७ लूणनीजाति.

इत्यादिष्टयिवीकायना अनेक जेद जाणवा.
तेरमो अष्पकायनोदंमकळे, तेना जेद कहेळे.

१ जमीननुंपाणी.

५ रोयेडानुं पाणी.

२ आकाशनुंपाणी

६ नीलीवनस्पतिनुंपा०

३ ठारनुंपाणी.

७ मांकनुं पाणी.

४ हिमनुं पाणी.

८ घनोदधि.

चौदमोतेउकायनो दंमकळे, तेना जेद कहेळे.

१ अंगारानोअग्नि.

४ उल्कापातनोअग्नि.

२ ज्वालानोअग्नि.

५ कंणियानोअग्नि.

३ घ्रासडनोअग्नि.

६ बीजलीनोअग्नि.

पंदरमो वाउकायनो दंमकळे. तेना जेद कहेळे.

१ उद्भ्रामकवायु.

५ मुखशुद्धवायु.

२ मंदवायु.

६ गुंजवायु.

३ उत्कलिकवायु.

७ घनवात.

४ मंमलिकवायु.

८ तनवात.

सोलमो वनस्पतिकायनो दंमकळे. तेनी मूलजाति वे
ळे तिहां जे एकशरीरमां अनंता जीव होय, ते साथ

रण वनस्पति. अने जे एक शरीरमां एक जी बहोय,
ते प्रत्येक वनस्पति कहेवाय तेना चेद कहेवे.

१ गुह्या. २ वृद्ध. ३ गुल्म. ४ लता ५ वल्ली. ६ तृण.
७ जलरूह. ८ औषधि. ९ कुहन. १० पर्वग. ११ हरि.
इत्यादिक एना अनेक चेदवे.

शत्तरमो वैडियनो दंमक ठे, तेना चेद कहेवे.

१ शंख. २ कोमा. ३ गंमोला.

४ जलु. ५ अलसीया. ६ लारीया.

७ मेहरी. ८ कमिया. ९ पाणीना पूरा.

अठारमो तेंडियनो दंमक ठे, तेना चेद कहेवे.

१ कानखजुरा. २ ईज. ३ गोबरना कीडा.

४ मांकड. ५ घीमेल. ६ धनेरीया.

७ जू. ८ शावा. ९ कंथुआ.

१० कीडियो. ११ गोक्रीडा. १२ गोपालीक.

१३ उद्देही. १४ गद्देहीया. १५ इङ्गोप.

१६ मक्कोडा. १७ विष्टाना कीडा.

उगणीशमो चारेंडियनो दंमक ठे, तेना चेद कहेवे.

१ वींठी. २ च्रमरी. ३ मांस. ४ कंसारी.

५ ढंकण. ६ टीड. ७ मञ्जर. ८ खडमाकडी.

९ च्रमरा. १० माखी. ११ पतंगीआ.

वीसमो तिर्यचपंचेंद्रियनो दंमकळे. तेना त्रण चेद कहेळे.

१ जलचर. २ स्थलचर. ३ खेचर.

४ उरःपरिसर्प. ५ चुजपुरिसर्प एवे स्थलचर माहेजाळे.

एकवीशमो मनुष्यनो दंमकळे. तेना चेद कहेळे.

पंदर कर्मनूति क्षेत्रना मनुष्य.

त्रीश अकर्मनूति क्षेत्रना मनुष्य.

ठप्पन्न अंतरक्षीपना मनुष्य.

ए सर्वमली एकशोने एक चेदो यया.

बावीशमो वाणव्यंतरदेवनो दंमकळे. ते बें प्रकारेंळे.

एक व्यंतरनी निकायळे तेना आठ चेद कहेळे.

१ पिशाच. २ यक्ष. ५ किन्नर. ७ महोरग.

२ जूत. ४ राक्षस. ६ किंपुरुष. ८ गंधर्व.

बीजी वाणव्यंतरनी निकाय तेनापण आठ चेदळे.

१ अणपनि. ३ हसिवादि. ५ कंदी. ७ कोहंम.

२ पणपनि. ४ जूतवादि. ६ महाकंदी. ८ पतंग.

त्रेवीशमो ज्योतिषी देवनो दंमक पांच प्रकारेंळे.

१ चंद्र २ सूर्य ३ ग्रह ४ नक्षत्र ५ तारा.

चोवीशमो वैमानिकदेवनो दंमक. तेनामूल बे चेदळे.

एक कल्प एटले आचारवाला देवो ते वार देव

लोकना जेदें करी बार प्रकारे ठे. ते नाम कहेते.

- | | |
|---------------------|--------------------|
| १ शोधर्म देवलोक. | ७ महाशुक्र देवलोक. |
| २ ईशान देवलोक. | ८ सहस्रार देवलोक. |
| ३ सनत्कुमार देवलोक. | ९ आनत देवलोक. |
| ४ माहेन् देवलोक. | १० प्राणत देवलोक. |
| ५ ब्रह्म देवलोक. | ११ आरण देवलोक. |
| ६ जांतक देवलोक. | १२ अच्युत देवलोक. |

बीजा कल्पातीत एटले जेने विषे स्वामि सेवक संबंध नथी एवा देवो तेना मूल बे प्रकारे. एक न वयैवेयक वासी, बीजा पांच अनुत्तरविमान वासी तेमां प्रथम नवयैवेयकनां नाम कहेते.

- | | |
|----------------|------------------------|
| १ सुदर्शन. | ४ सर्वतोन् ७ सौमनस्य. |
| २ सुप्रतिबद्ध. | ५ सुविशाल. ८ प्रीतिकर. |
| ३ मनोरम. | ६ सुमनस. ९ आदित्य. |

हवे पांच अनुत्तरविमाननां नाम कहेते.

- | | | |
|-----------|------------|-------------------|
| १ विजय. | ३ जयंत. | ५ सर्वार्थसिद्धि. |
| २ विजयंत. | ४ अपराजित. | |

ए रीतें ए चोवीश दंभकनां जेद सहित नाम कह्या.

हवे प्रत्येक दंढकें चौबीस द्वार कहेवाय तेना नाम
पहेलुं शरीर द्वार पांच प्रकारेंढे.

१ औदारिकशरीर. ३ आहारकशरीर ५ कर्मणशरीर.

२ वेक्रीय शरीर. ४ तैजस शरीर.

बीजुं अवगाहना द्वार. ते प्रत्येक दंढकें जवन्य तथा
उत्कृष्ट एवा बे जेदें शरीरनु प्रमाण कहेवुं.

त्रीजुं संघयण द्वार ठ प्रकारेंढे.

१ वज्ररूपननाराच संघयण. ४ अर्धनाराचसंघ०

२ रूपननाराचसंघयण. ५ कीजिका संघयण.

३ नाराच संघयण. ६ ठेवहुं संघयण.

एवे ए संघयणवाला जीवो उर्ध्वगतिगमन करे, तो
कया संघयणवाला कयां सुधी जाय? ते कहेढे.

१ वज्र रूपन नाराच संघयणवालामोक्षपर्यंत जाय.

२ रूपननाराचसंघयणवाला, चारमादेवलोकपर्यंत जाय

३ नाराच संघयणवाला, दशमादेवलोक पर्यंत जाय.

४ अर्धनाराचसंघयणवाला, आठमादेवलोकपर्यंत जाय

५ कीजिका संघयणवाला, ठछा देवलोकपर्यंत जाय.

६ ठेवछा संघयणवाला, चौथा देवलोक पर्यंत जाय.

हवे अधोगति गमन करे, तो कया संघयणवाला
जीव कयां सुधी जाय? ते कहेढे.

१ वज्र रूपन नाराच संघयणवाला सातमी नरक
पृथिवी पर्यंत जाय.

२ रूपननाराच संघयणवाला, ठी नरक पृथिवी
पर्यंत जाय.

३ नाराचसंघयणवाला, पांचमीनरकपृथिवीपर्यंतजाय

४ अर्धनाराचसंघयणवाला, चौथीनरकपृथिवीपर्यंत०

५ कीलिकासंघयणवाला त्रीजीनरकपृथिवीपर्यंतजाय.

६ ठेवठा संघयणवाला बीजीनरकपृथिवीपर्यंतजाय.

चोथुं संज्ञा द्वार, दश प्रकारेंठे. तेनां नाम कहेठे.

१ आहारसंज्ञा. ५ क्रोधसंज्ञा. ७ लोभ संज्ञा.

२ जयसंज्ञा. ६ मानसंज्ञा. ८ लोकसंज्ञा.

३ मैथुनसंज्ञा. ७ मायासंज्ञा. १० उगसंज्ञा.

४ परिग्रहसंज्ञा. तथा नीचें लखेली ठ संज्ञा साथें

मेलवतां शोल प्रकार पण थायठे.

१ सुख संज्ञा. २ दुःख संज्ञा. ३ मोहसंज्ञा.

४ दुर्गंठा संज्ञा. ५ शोक संज्ञा. ६ धर्म संज्ञा.

पांचमुं संस्थान द्वार ठ प्रकारेंठे तेना नाम कहेठे.

१ समचतुरस्र संस्थान. ४ कुब्ज संस्थान.

२ निग्गोहपरिमंजल संस्थान. ५ वामन संस्थान.

३ सादि संस्थान. ६ दुंदुक संस्थान.

અહીં પાંચઈંદ્રિયોના સંસ્થાન કહેલે.

૧ સ્પર્શેંદ્રિયનું નાના પ્રકારનું સંસ્થાન હોયલે.

૨ રસેંદ્રિયનું સુરુષા સરસું સંસ્થાન હોયલે.

૩ ઘાણેંદ્રિયનું તિલના ફૂલ સરસું સંસ્થાન હોયલે.

૪ ચક્ષુરેંદ્રિયનું મસૂરની ઢાલ સરસું અર્ધચંડાકારેં સંસ્થા

૫ શ્રોતેંદ્રિયનું કલ્પવૃક્ષના ફૂલ સરસું સંસ્થાનલે.

ઠંડું કપાય ઢાર, ચાર પ્રકારેં લે. તેના નામ કહેલે.

૧ ક્રોધ. ૨ માન. ૩ માયા. ૪ લોભ.

સાતમું લેશ્યા ઢાર ઠ પ્રકારેંલે.

૧ કૃષ્ણલેશ્યા. ૨ કાષોતલેશ્યા. ૫ પદ્મલેશ્યા.

૨ નીલલેશ્યા. ૪ તેજોલેશ્યા. ૬ શુક્લલેશ્યા.

આઠમું ઈંદ્રિય ઢાર પાંચ પ્રકારેંલે.

૧ સ્પર્શનેંદ્રિય. ૨ રસેંદ્રિય. ૩ ઘ્રાણેંદ્રિય.

૪ ચક્ષુરેંદ્રિય. ૫ શ્રોતેંદ્રિય.

નવમું સમુદ્યાત ઢાર સાત પ્રકારેંલે.

૧ વેદના સમુદ્યાત. ૪ વૈક્રીય સમુદ્યાત. ૭ કેવલી સમુ

૨ કષાય સમુદ્યાત. ૫ તેજશ સમુદ્યાત.

૩ મરણ સમુદ્યાત. ૬ આહારક સમુદ્યાત.

દશમું દૃષ્ટિ ઢાર ત્રણ પ્રકારેંલે.

૧ સમ્યક્દૃષ્ટિ. ૨ મિથ્યાદૃષ્ટિ. ૩ મિશ્રદૃષ્ટિ.

अगीआरमुं दर्शन ढार, चार प्रकारें ठे.

१ चक्षुदर्शन. २ अचक्षुदर्शन.

३ अवधिदर्शन. ४ केवलदर्शन.

बारमुंज्ञानतथातेरमुं अज्ञान ढार मली आठ प्रकारें ठे.

१ मतिज्ञान. २ श्रुतज्ञान. ३ अवधिज्ञान.

४ मनःपर्यवज्ञान. ५ केवलज्ञान. ६ मतिअज्ञान.

७ श्रुतअज्ञान. ८ विजंगज्ञान.

ए रीतें पांच ज्ञान ने त्रण अज्ञाननो ढार कह्यो.
तेरमुं योग ढार पंदर प्रकारें ठे.

१ सत्यमनोयोग. २ औदारिक काययोग.

३ असत्यमनोयोग. ४ औदारिकमिश्रकाययोग

५ सत्यमृषामनोयोग. ६ वेक्रियकाययोग.

७ असत्यामृषामनोयोग. ८ वेक्रियमिश्रकाययोग.

९ सत्यवचननायोग. १० आहारककाययोग.

११ असत्यवचनयोग. १२ आहारकमिश्रकययोग.

१३ सत्यमृषावचनयोग. १४ कारमणकाययोग.

१५ असत्यामृषावचनयोग.

चोदमुं उपयोग ढार बार प्रकारें ठे.

१ मतिज्ञान. २ श्रुतज्ञान. ३ अवधिज्ञान.

४ मनःपर्यवज्ञान. ५ केवलज्ञान. ६ मतिअज्ञान.

७ श्रुतअज्ञान. ८ विजंगज्ञान. ९ चक्रुदर्शन.
 १० अचक्रुदर्शन. ११ अवधिदर्शन. १२ केवलदर्शन.
 पन्नरमुं उपपात दार ते प्रत्येक दंमकने विषे एक स
 मयमां केटला जीव आवी उपजे तेनी जघन्य
 तथा उत्कृष्टथी संख्या कहवानुं दार.

सोलमुं चवनदार ते प्रत्येक दंमकने विषे एक सम
 यमां केटला जीव चवे तेनी जघन्य तथा उत्कृ
 ष्ठी संख्या कहेवानुं दार.

सत्तरमुं आयुष्य दार ते चारगति आश्री चार प्रकारें
 ठे तेमां कया कया दंमकें केटलुं केटलुं आयुष्य
 ठे ? तेनुं प्रमाण कहेवानुं दार.

अठारमुं पर्याप्तिनुं दार. ठ प्रकारें ठे.

- | | |
|---------------------|-------------------------|
| १ आहारपर्याप्ति. | २ शरीरपर्याप्ति. |
| ३ इंद्रियपर्याप्ति. | ४ श्वासोश्वासपर्याप्ति. |
| ५ जाषापर्याप्ति. | ६ मनपर्याप्ति. |

उगणीशमुं दिग् आहार दार ठ प्रकारें ठे.

- | | |
|--------------------|--------------------|
| १ अधोदिशि आहार. | ४ पश्चिमदिशि आहार. |
| २ उर्ध्वदिशि आहार. | ५ दक्षिणदिशि आहार. |
| ३ पूर्वदिशि आहार. | ६ उत्तरदिशि आहार. |

बीशमुं संज्ञा द्वार त्रण प्रकारें ठे.

१ दीर्घकालकी संज्ञा. २ हीतोपदेशकी संज्ञा.

३ दृष्टिवादोपदेशकी संज्ञा.

एकवीशमुं गति द्वार. तेकया दंमकनो जीव मरीने

कया कयादंमकमां जाय ? ते केवानुं द्वार.

बावीशमुं आगति द्वार तें प्रत्येक दंमकनें विपे केटजा

दंमकना जीव, आवी उपजे ? ते केवानुं द्वार.

त्रेवीशमुं वेद द्वार त्रण प्रकारें ठे.

१ पुरुषवेद. २ स्त्रीवेद. ३ नपुंसकवेद.

चोवीशमुं अल्पबहुत्वनो द्वार अछाणु प्रकारेठे. ।

अथ चौद मार्गणाना नाम उत्तर जेद सहीत.

पहेली गति मार्गणा चार प्रकारे ठे.

१ देवगति. २ मनुष्यगति. ३ तिर्य्यचगति. ४ नरकगति.

बीजी इन्द्रियमार्गणापांच प्रकारे ठे.

१ एकेंडी. २ बेंडी. ३ तेंडी. ४ चौरेंडी. ५ पंचेंडी.

त्रीजी काय मार्गणा ठ प्रकारे ठे.

१ पृथिवीकाय. २ अपकाय. ३ तेजकाय.

४ वायुकाय. ५ वनस्पतिकाय. ६ त्रसकाय.

चोथी योग मार्गणा त्रण प्रकारें ठे.

१ मनोयोग. २ वचनयोग. ३ काययोग.

पांचमी वेद मार्गणा त्रण प्रकारें ठे.

१ पुरुषवेद. २ स्त्रीवेद. ३ नपुंसकवेद.

ठळी कथाय मार्गणा चार प्रकारे ठे.

१ क्रोध. २ मान. ३ माया. ४ लोभ.

सातमी ज्ञान मार्गणा आठ प्रकारें ठे.

१ मतिज्ञान. २ श्रुतज्ञान. ३ अवधिज्ञान.

४ मनःपर्यवज्ञान. ५ केवलज्ञान. ६ मतिअज्ञान.

७ श्रुतअज्ञान. ८ विजंगज्ञान.

आठमी संयम मार्गणा सात प्रकारें ठे.

१ सामायिक चारित्र. २ ठेदोपस्थापनीय.

३ परिहारविशुद्धि. ४ सूक्ष्मसंपराय चारित्र.

५ यथाख्यात चारित्र. ६ देशविरति चारित्र.

७ असंयमअविरति.

नवमी दर्शन मार्गणा चार प्रकारें ठे.

१ चक्षुदर्शन. २ अचक्षुदर्शन.

३ अवधिदर्शन. ४ केवलदर्शन.

दशमी ज्ञेया मार्गणा ठ प्रकारे ठे.

१ कृष्ण. २ नील. ३ कापोत.

४ तेजो. ५ पद्म. ६ शुक्ल.

अगीअरमी नव्य मार्गणा वे प्रकारे ठे.

१ नव्य.

२ अन्नव्य.

बारमी सम्यकत्व मार्गणा ठ प्रकारे ठे.

१ उपशम.

२ द्वायोपशम.

३ द्वायक.

४ मिश्र.

५ शाश्वादन.

६ मिथ्यात्व.

तेरमी सन्नी मार्गणा वे प्रकारे ठे.

१ सन्नी.

२ असन्नी.

चौदमी आहार मार्गणा वे प्रकारे ठे.

१ आहारक.

२ अणाहारक.

बत्रीश अनंतकायना नाम.

१ सर्व कंदनीजाति.

ए कुंआरि.

२ सूरणकंद.

१० थोहरिकंद.

३ वज्रकंद.

११ गलोइ.

४ नीलीहलिइ.

१२ लसण कली.

५ नीलो आडु.

१३ वांसना कारेलां.

६ नीलोकचूरो.

१४ गाजर.

७ सत्तावरीवेलि.

१५ लूणो साजी वृद्ध.

८ विरालीवेलि.

१६ लोढो पद्मनी कंद.

- | | |
|----------------------|-----------------------|
| १७ गिरिकर्णिका एटले | २४ मूलानीपाड. |
| सर्व वनस्पतिना नवा | २५ जूमिफोडाजे वर्षाका |
| उगतां कंपलपान. | ले ठत्राकारें उगेंते. |
| १८ खरसुआंकंद. | २६ विरुहाअंकूखाधान. |
| १९ थेगकंद. | २७ टंक वल्लुलशाकते व |
| २० नीलीमोथ. | नस्पति पहेलुं उगिं |
| २१ लूणवृद्धनी ठाली अ | तेहज बीजो नहीं. |
| नंतकाय जाणवी प | २८ सूअरवेलि. |
| रंतु एना बीजा अव | २९ पल्लंकशाक विशेष. |
| यव अनंतकाय नहीं. | ३० कुअलीआंबिली. |
| २२ खीलुडा कंद विशेष. | ३१ आलुकंद. |
| २३ अमृतवेलि. | ३२ पिंमालुकंद. |

वावीश अजदयना नाम.

- | | |
|----------------------|---------------------|
| १ वडनी पींपु अजद. | ७ मद्य एमां तेवाज व |
| २ पींपलनी पींपु. | एना जीव उपजे ठे. |
| ३ उंबरनां फल. | ८ मांस एमां त्रसजीव |
| ४ पीपरीनी पींपु. | नी उत्पत्ति थाय. |
| ५ कतुंबरना फल. | एमाखणएमहासावद्यठे |
| ६ मधुएमां त्रस जीवनी | १० हीम बहु अपकाय |
| उत्पत्ति थाय. | मयी ठे. |

- ११ विष ते सोमलप्रमुख
एथी उदर गत जीवो
नो विनाश थायने.
१२ करहाबहुजीवमयीने
१३ सर्व माटीनी जाति.
१४ रात्रीनोजनअनदयने
१५ बहुबीजतेपंपोटादिक
१६ बत्रीश अनंतकाय.
१७ वोडानुं अथाणुं.
१८ घोलवडांजे काचा गो
रसमांहेकखा होयते.
- १९ वडंगण रिंगणा.
२० जेने उजखीयें नहीं
एवा अजाण्या फूज
फल पान प्रमुख.
२१ तुळ फल ते कुअली
वस्तु अतिकाचा फल
महुडा जांबू प्रमुख.
२२ चलित रस थयेली
वस्तु ते सडेळुं अ
न्नादिक जाणवुं.

अथ आयुर्जावि ज्ञिख्यते.

| | | | |
|------------|------------|----------|-----|
| जीवजाति | आयुर्वर्ष- | ठालीआयु | १६ |
| हस्तिआयु | १२० | श्वानआयु | १२ |
| मनुष्यायु | १२० | शीयालआयु | २४ |
| अश्वआयु | २२-४८ | हरणआयु | २४ |
| व्याघ्रआयु | ६४ | हंसआयु | १०० |
| कागआयु | १०० | मंजारआयु | १२ |
| गर्दनायु | ६४ | सूडलाआयु | १२ |

(५५९)

| | | | |
|---|---------|----------------|------|
| गेंदाआयु | २० | बपैयाआयु | ३० |
| सारसआयु | ५० | सिंहआयु | १००० |
| कौंचआयु | ६० | माठलाआयु | १००० |
| बगला आयु | ६० | उंटआयु | २५ |
| सर्पायु | १००-१२० | नैसआयु | २५ |
| कोडीआयु | १ | गायआयु | २५ |
| उंदरआयु | २-२० | पेटाआयुवर्ष | १६ |
| ससलाआयु | १०-१४ | जूआयु मास | ३ |
| देवीआयु | ५० | कंसारीआयु-मास | ३ |
| सूवरआयु | ५० | वींठीआयु मास | ६ |
| वागोलआयु | ५० | चौरिंदिआयु मास | ६ |
| समूर्द्धिम गर्भज जलचरनु उत्कृष्टायु पूर्वकोडी वर्षनुं | | | |

अथश्रीजिननुवनने विषे चोराशी आशातना न करवी तेना नाम लखीयें ठेयें.

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १ बलखो न नाखवुं. | ६ तंबोलादिक नखावा. |
| २ हिंचोलादि क्रीडा न० | ७ तंबोल थुकवा नही. |
| ३ कलहप्रमुखनकरवो. | ८ मुखथी गालो नदेवी. |
| ४ धनुरकलादि नकरवी | ९ मुत्र विष्टा न नाखवी. |
| ५ पाणीना कोगला न० | १० शरीर न धोवुं. |

- ११ बाल न उतराववा.
 १२ नख न उतराववा.
 १३ रुधिर न नाखवो.
 १४ सुखडी न खावी.
 १५ चामडी न नाखवी.
 १६ पित्त वमन न करवो.
 १७ वमन न करवो.
 १८ दांत नाखवा अथवा
 समारवा नही.
 १९ विश्रामण न करवो.
 २० गाय प्रमुखन बांधवी.
 २१ दांतनो मेलन नाखवो
 २२ आंखनो मेलन नाखवो
 २३ नखनो मेलन नाखवो.
 २४ गंदस्थलनुं मेल न०
 २५ नाकनो मेलन नाखवो
 २६ माथानुं मेलन नाखवो
 २७ काननो मेलन नाखवो
 २८ शरीरनी चामडीनो
 मेलन न नाखवो.
- २९ मित्रसाथेम सलतन०
 ३० विवादाथें एकठान थवुं
 ३१ नामु न लखवो.
 ३२ कोइची जवें चवी नही.
 ३३ थापण न मूकवी.
 ३४ माठे आशने न बेसवुं.
 ३५ ठाणा थापवा नही.
 ३६ कपडा सूकाववानही.
 ३७ धान सूकववो नही.
 ३८ पापड सूकववानही.
 ३९ वडीउ करवी नही.
 ४० राजनयादिकें बूषवुं न०
 ४१ रुदन करवो नही.
 ४२ विकथा करवी नही.
 ४३ शस्त्र घडवा नही.
 ४४ तिर्यच बांधवा नही.
 ४५ तापणी करवी नही.
 ४६ अन्नादिकरांधवुं नही.
 ४७ नाणु परखवुं नही.
 ४८ निसिही जांगवी नही.

४९ ठत्रधरवो नहो.
 ५० खासडा मूकवानहो.
 ५१ शस्त्रमूकवा नही.
 ५२ चामरधराववो नही.
 ५३ मन एकाग्रकरवो.
 ५४ तेलालिकनचोपडवा.
 ५५ सचित्तजोग त्यजवो.
 ५६ अयोग्यअचेतत्यजवो
 ५७ जिनदीतेहाथजोडवा
 ५८ एकसाडीउत्रासनक०
 ५९ मुकुटधारणन करवो.
 ६० पाघडी नो अविवेक.
 ६१ तोरादिक न घालवा.
 ६२ होड नकरवी.
 ६३ गेडीदडे रमवो नही.
 ६४ जुहारसलामनकरवी
 ६५ नांम चेष्टा नकरवी.
 ६६ तुंकार रेकार नकरवो.

६७ धरणो बेसवुं नही.
 ६८ जुंज करवो नही.
 ६९ चोटलादिसमारवान०
 ७० पलांठीयें बेसवुं नही.
 ७१ चाखडीपेहेरवीनही.
 ७२ लांबे पगें बेसवुं नही.
 ७३ पुडपुडीवगाडवीनही.
 ७४ कादव नकरवो.
 ७५ अंगनीरजउडाडवीन.
 ७६ मैथुन सेववुं नही.
 ७७ जुगुटुं रमवुं नही.
 ७८ नोजन करवो नही.
 ७९ मल्लयुद्ध करवोनही.
 ८० वैद्यकर्म करवो नही.
 ८१ व्यापार करवोनही.
 ८२ सय्यापाथरवीनही.
 ८३ आहार राखवो नही.
 ८४ स्नान करवो नही.

एचोरासी आशातना ते जिनपूजादिक कार्यविना
 शरीर सुश्रुपादिकने अर्थें करे तो आशातना जाणवी

माटे तेनो त्याग करी आझा रुची यह आशातना र
हीत थका जिनमंदिरने विषे प्रवर्त्तवुं

सातनयना नाम,

- १ नैगम नय. २ संग्रह नय. ३ व्यवहार यन.
- ४ रुजुसूत्र नय. ५ शब्द नय. ६ समनिरूढनय.
- ७ एवंभूत नय.

चार निक्षेपना नाम.

- | | |
|--------------------|-----------------|
| १ नाम निक्षेप. | ३ इव्य निक्षेप. |
| २ स्थापना निक्षेप. | ४ नाव निक्षेप. |

चार कारणना नाम.

- | | |
|-----------------|-----------------|
| १ उपादान कारण. | ३ असाधारण कारण. |
| २ निमित्त कारण. | ४ अपेक्षा कारण. |

आठमदना नाम.

- | | | |
|-----------|--------------|---------|
| १ जातिमद. | २ कुलमद. | ३ बलमद. |
| ४ रूपमद. | ५ श्रुतमद. | ६ तपमद. |
| ७ लाजमद. | ८ ऐश्वर्यमद. | |

अष्ट मांगलिकना नाम.

- | | | |
|----------|----------|--------------|
| १ आरीसो. | २ जडाशन. | ३ वर्द्धमान. |
|----------|----------|--------------|

- ४ श्रीवत्स. ५ मत्स्युग्म. ६ प्रधानकुंज.
७ सायीउ. ८ नंदावर्त्त.

श्रावकना बारव्रतना नाम.

- | | |
|------------------------|----------------------|
| १ स्थूलप्रणातिपातवि० | ७ जोगोपजोगपरिमाण. |
| २ स्थूलमृपावादविर० | ८ अनर्थदंमविरमणव्रत |
| ३ स्थूलअदत्तादानवि० | ९ सामायिक व्रत. |
| ४ मैथुन विरमण व्रत. | १० देशावगाशिकव्रत. |
| ५ परिग्रह परिमाण व्रत. | ११ पौषधोपवास व्रत. |
| ६ दिग् परिमाण व्रत. | १२ अतिथिसंविजागव्रत. |

चौदगुण ठाणाना नाम.

- | | |
|-----------------------|-----------------------|
| १ मिथ्यात्व गुणठाणु. | ८ निवृत्तिवादर ॥ |
| २ सास्वादन गुणठाणु. | ९ अनिवृत्तिवादर गु०॥ |
| ३ मिश्र गुणठाणु. | १० सूक्ष्मसंपराय गु०॥ |
| ४ अविरतिसम्यक्दृष्टी. | ११ उपशांतमोह गु०॥ |
| ५ देशविरति गुणठाणु. | १२ क्षीणमोह गु०॥ |
| ६ प्रमत्त गुणठाणु. | १३ सयोगीकेवली गु०॥ |
| ७ अप्रमत्त गुणठाणु. | १४ अयोगीकेवली गु०॥ |

समूर्द्धिम मनुष्यने उपजवाना चौद स्थानक.

- १ वडिनीतिमाहें. २ लघुनीतिमाहें.

| | |
|--------------------|--------------------------|
| ३ श्लेष्ममाहें. | ९ सुक्रपुञ्जमाहें. |
| ४ नाशिकानामलमाहें. | १० साडेसुवा वीर्यमाहे. |
| ५ वमन माहें. | ११ मृतकलेवर माहे. |
| ६ पित्त माहें. | १२ स्त्रीपुरुषनेसंयोगें. |
| ७ पिरू माहें. | १३ नगरनाखालेमाहें. |
| ८ रक्त माहें. | १४ सर्वशुचीस्थानमां. |

साधुना सत्तावीश गुणनां नाम.

- ५ प्रणतिपात विरमणादिक पांच महाव्रत.
 ६ रात्री नोजन विरमण व्रत.
 १२ ठक्कायना जीवोनी रक्का करे ते ठगुण.
 १७ पांच इंझीयनो निग्रह करे ते पांच गुण.
 १८ लोचनुं जय.
 १९ कृमा राखे.
 २० नाव विशुद्धि एटले चित्त निर्मलता.
 २१ पडिलेहण प्रमार्जन करवाथी विशुद्धि थाय.
 २२ संयम योग्य युक्तता.
 २५ अकुशल मन वचन अनें कायानुं रुंधवुं ए व्रण.
 २६ शीतादिक वेदनानुं सहन करवुं.
 २७ मरणांत उपशर्ग सहन करवा.

(५६५)

त्रीश अकर्मजुमी क्षेत्रनां नाम.

५ हेमवंत क्षेत्र. ५ हरिवर्ष क्षेत्र. ५ देवकुरु क्षेत्र.
५ उत्तरकुरु क्षेत्र. ५ रम्यक् क्षेत्र. ५ ऐरण्यवत क्षेत्र.

पंदर कर्मजुमि क्षेत्रनां नाम.

५ जरत. ५ ऐरवत. ५ माहाविदेह.

सिद्धनां एकत्रीश गुणनां नाम.

| | |
|---------------------|------------------|
| ५ पांचसंस्थान रहीत. | ३ त्रण वेद रहीत. |
| ५ पांचवर्ण रहीत. | १ शरीर रहीत. |
| २ बेगंध रहीत. | १ संग रहीत. |
| ५ पांचरस रहीत. | १ जन्म रहीत. |
| ७ आठफरस रहीत. | |

प्रकारांतरे वली सिद्धनां एकत्रीश गुण कहेंगे.

५ पांच प्रकारनां ज्ञानावरणीय कर्मथी रहीत.
६ नव प्रकारनां दर्शनावरणीय कर्मथी रहीत.
२ बे प्रकारना वेदनीय कर्मथी रहीत.
२ बे प्रकारना मोहनीय कर्मथी रहीत.
४ चार प्रकारना आयु कर्मथी रहीत.
२ बे प्रकारना नाम कर्मथी रहीत.

(५६६)

२ वे प्रकारनां गोत्र कर्मथी रहीत.

५ पांच प्रकारना अंतराय कर्मथी रहीत.

सात जयना नाम.

१ हस्तिनो जय.

५ जलनो जय.

२ सिंहनो जय.

६ राजानो जय.

३ सर्पनो जय.

७ चोरनो जय.

४ अग्नीनो जय.

संसारी जीवने सात महोटा सुख कह्याठे तेना नाम.

१ रोगरहीत शरीर होय.

२ कोनो छेणदार नहोय.

३ यात्रादिकसिवायआजीविकानेअर्थेपरदेशनजाय.

४ घरमां स्त्री सुपात्र होय.

५ पुत्र पोत्रादिकनो सुख होय.

६ सगा कुटुंबादिक चारें पक्षे करी सहीत होय.

७ पंच महाजनमां प्रतिष्ठावान होय.

ठ दरीननां नाम.

१ जैनदर्शन. २ मीमांशकदर्शन. ३ बौद्धदर्शन.

४ नैयायिकदर्शन. ५ वैशेषिकदर्शन. ६ शांख्यदर्शन.

सात जयनां नाम.

- १ इहलोक जय. २ परलोक जय. ३ आदान जय.
- ४ अकस्मात् जय. ५ वेदना जय. ६ मरण जय.
- ७ अपजश अपकीर्त्तिनो जय.

ठ जापानां नाम.

- १ संस्कृत. २ प्राकृत. ३ सौरसेनी.
- ४ मागधी. ५ पेशाचिकी. ६ अपभ्रंसी.

चक्रवर्तिना चौदरत्नमां सात एकेंडी रत्नछे तेना नाम.

- १ चक्र रत्न. २ ठत्र रत्न. ३ चर्म रत्न. ४ दंढ रत्न.
- ५ असी रत्न. ६ मणि रत्न. ७ कांगणी रत्न.

सात पचेंडी रत्ननां नाम.

- | | |
|------------------|----------------|
| १ सेनापति रत्न. | ५ स्त्री रत्न. |
| २ गाथापति रत्न. | ६ अश्व रत्न. |
| ३ सूत्रधार रत्न. | ७ गज रत्न. |
| ४ पुरोहित रत्न. | |

॥ हवे जीवना प्रकार कहेछे. ॥

१ चेतना लक्षणे करी सर्व जीव एक प्रकारेंछे
केमके कीडी कुंजर सर्वमां चैतन्य पणु सरखोछे माटे.

हवे सर्वजीवना बे बे प्रकार कहेले.

१ सिद्धनाजीव.

२ संसारीजीव.

१ इंडिसहित ते संसारी.

२ इंडियरहित तेसिद्धना

१ सशरीरीजीवसंसारी.

२ अशरीरी जीवसिद्धना.

१ सवेदीजीवसंसारी.

२ अवेदीतेसिद्धनाजीव.

१ सकपाइजीव.

२ अकपाइजीवसिद्धना.

१ सयोगीजीव.

२ अयोगीतेसिद्धनाजीव

१ आहारीजीव.

२ अणाहारीजीवसिद्ध०

१ नासगाजीव.

२ अनासगाजीव.

हवे संसारी जीवना बे बे प्रकार अनेक रीते कहेले.

१ त्रस बेडियादिकजीव.

२ स्थावर एकेंडियजीव.

१ सूक्ष्मजीव.

२ बादरजीव.

१ पर्याप्ताजीव.

२ अपर्याप्ताजीव.

१ नवसिद्धियाजीव.

२ अजवसिद्धिया जीव.

१ जेस्वयोग्यपर्याप्तिनहीज

लीयेतेलब्धिअपर्याप्ताजीव

२ जेस्वयोग्यपर्याप्तिहजी
लीधीनथीपण लेशे ते
करण अपर्याप्ता जीव.

१ जेस्वयोग्यपर्याप्ति सर्व
लीधीनथी पणलेशेते
लब्धि पर्याप्ताजीव.

२ जे स्वयोग्य पर्याप्ति
पूरणपाम्यो ते करण
पर्याप्ताजीव.

(५६९)

हवे संसारी जीवना त्रण त्रण प्रकार कहेढे.

- | | | |
|-----------------|-----------------|----------------|
| १ पुरुषवेदी. | २ स्त्रीवेदी. | ३ नपुंसकवेदी. |
| १ मन योगी. | २ वचन योगी. | ३ काय योगी. |
| १ संयति. | २ असंयति. | ३ संयतासंयति. |
| १ सम्यक्दृष्टि. | २ मिथ्यादृष्टि. | ३ मिश्रदृष्टि. |
| १ रुजुजड. | २ रुजुप्राज्ञ. | ३ वक्रजड. |
| १ नव्यजीव. | २ अनव्यजीव. | ३ जातिनव्य. |

सर्वजीवना त्रण प्रकार.

- | | | |
|------------------------------------|----------------|-----------------|
| १ नवसिद्धिया. | २ अनवसिद्धिया. | ३ नोनव सिद्धिया |
| ने नो अनव सिद्धिया ते सिद्धना जीव. | | |
| १ पर्याप्ता. | २ अपर्याप्ता. | ३ नोपर्याप्तानो |
| अपर्याप्ता ते सिद्धना जीव. | | |
| १ सूक्ष्मजीव. | २ बादरजीव. | ३ नोसूक्ष्म नो |
| बादर ते सिद्धनाजीव. | | |

॥ गतिआश्री सर्व जीव चार प्रकारेढे. ॥

- १ देवगति २ मनुष्यगति ३ तिर्यचगति ४ नरकगति

॥ इंडीय आश्री सर्व जीव पांच प्रकारेढे. ॥

- १ एकेंडी २ बेडी ३ तेंडी ४ चौडीरिं ५ पंचेंडी:

॥ કાયઆશ્રી સર્વ જીવ ઠ પ્રકારેંહે. ॥

૧ પૃથિવીકાય. ૨ અપકાય. ૩ તેતકાય.
૪ વાતકાય. ૫ વનસ્પતિકાય. ૬ ત્રસકાય.

॥ હવે પૂર્વોક્ત આવર જીવના પાંચ પ્રકાર કહેહે. ॥
૧ પૃથિવી. ૨ અપ. ૩ તેત. ૪ વાત. ૫ વનસ્પતિ.

॥ ત્રસ જીવ ચાર પ્રકારનાંહે. ॥

૧ બેંડીય. ૨ તેંડીય. ૩ ચૌરિંડીય. ૪ પચેંડીય.

તિહાં બેંડીય તેંડીય અને ચૌરિંડીયના જેદો સંદે પથી આગલ દંમકના બોલોમાં લખાઈ ગયાહે તથા પચેંડીય જીવ નારકી તિર્યંચ, મનુષ્ય અને દેવતા મલી ચાર પ્રકારનાંહે તેના જેદ પણ સંદેપેં આગલ દંમકના બોલમાં લખાઈ ગયાહે અહીંઆં તેનો દેહ માન તથા આયુ કહેહે. તેમાં પ્રથમ ચાર પ્રકારના દેવોનુ ઉત્કૃષ્ટ દેમાન તથા આયુ કહેહે. ॥

પ્રથમ દશ જવનપતિની નિકાયમાં પહેલી અસુરકુમાર નિકાયનાં દક્ષણશ્રેણી તથા ઉત્તરશ્રેણીના મલી બે ઈંડોહે તેમાં ઉત્તરશ્રેણીનો અધિપતિ બલિંડહે તેનો આયુ એકસાગરોપમ જાજેરુંહે અને દક્ષણશ્રેણીનો અધિપતિ ચમરેંડહે તેનો આયુ એક સાગરોપમહે

बाकी नवेनिकायनां उत्तर श्रेणीना इंशोनो आयायु वे पढ्योपम कांश्क उठेरो जाणवो अने दक्षणश्रेणीना नवनिकायनां इंशोनो आयायु दोढ पढ्योपम जाणवुं तथा ए सर्व दशोनिकायनां देवोनो देह मान सात हाथ प्रमाण जाणवो रत्नप्रज्ञा पृथिवीनो पिंम (१०००००) योजन जाडोठे तेमांथी हजार योजन नीचें अने हजार योजन उपर मूकी बाकीना (१७००००) योजनमां ए दश निकायनां देवोठे.

बीजा व्यंतर निकायना देवो वे प्रकारनां ठे ए सर्व देवोनो देहमान सात हाथनुंठे तथा जघन्यायु दश हजार वर्षनुं अने उत्कृष्टायु एक पढ्योपमनुंठे ए रत्न प्रज्ञापृथिवीना उपरला हजार योजनमांथी शो योजन नीचे तथा शो योजन उपर मूकी बाकीना आठशो योजनमां व्यंतरदेवो वसेठे तथा उपरना मू केला शो योजन मांथी वली दश योजन नीचे तथा दश योजन उपर मूकीयें तेवारे बाकीना एंसी योजनमां वाणव्यंतर देवो वसेठे.

त्रीजी ज्योतपी देवोनी निकाय पांच प्रकारे ठे ते संजुतल पृथिवीथकी उपर (७९०) योजनथो मां मीने नवसो योजन पर्यंतना एकशोने दश योजनमां

एमना विमानढे ते सर्वनु देहमान सातहाथ प्रमाणढे. अने उत्कृष्टायु नीचे प्रमाणढे.

१ चंद्रमानुं एक पट्योपम उपर एक लाख वर्षायुढे.

२ सूर्यनुं एक पट्योपम उपर एक हजार वर्षायुढे.

३ ग्रहमंगलादिकनुं एक पट्योपमायुढे.

४ नक्षत्रश्वन्यादिकनुं अर्ध पट्योपमायुढे.

५ तारानुं एक पट्योपमनुं चोथो जाग आयुढे.

चोथी वैमानिक देवोनी निकाय बे प्रकारेढे तेमां प्रथम कल्पवाला देवोनो उत्कृष्ट देह मान अने आयु कहेढे.

देवलोकनांनाम देहमान आयु

१ सौधर्म. सातहाथ. बेसागरोपम.

२ इशान. सातहाथ. बेसागरोपमजाजेरा.

३ सनत्कुमार. षहाथ. सातसागरोपम.

४ माहेंड. षहाथ. सातसागरोपमजाजेरा.

५ ब्रह्म पांचहाथ. दशसागरोपम.

६ लांतक. पांचहाथ. चौदसागरोपम.

७ शुक्र. चारहाथ. सत्तरसागरोपम.

८ सहस्रार. चारहाथ. अठारसागरोपम.

९ आणत. त्रणहाथ. उंगणीससागरोपम.

१० प्राणत. त्रणहाथ. वीससागरोपम.

११ आरण. त्रणहाथ. एकवीशसागरोपम.

१२ अच्युत. त्रणहाथ. बावीशसागरोपम.

ए बारमां देवलोक सुधी चोशठ इंशे ते आबोरीते

२० दशचुवनपतिनी दश निकाय माहेली एकेकी
निकायने विपे दहण तथा उत्तर श्रेणीनो प्रत्ये
के एकेक इंश गणता बीश इंशे चुवनपतिनांते.

२१ व्यंतर तथा वाणव्यंतरनी शोलनिकाय माहेली
एकेकी निकायने विपे दहण तथा उत्तर श्रेणीनो
प्रत्येकें एकेक इंश गणता बत्रीश व्यंतर देवोनांते.

२ पांच ज्योतपीना चंड अने सूर्य ए बे इंशे.

१० बार देवलोक मध्ये आठमां देवलोक सुधीनो
एकेका देवलोकनो एकेक इंशे तेवार पढी न
वमां तथा दशमां देवलोकनुं मली एकज इंश
अने अगीआरमा तथा बारमा देवलोकनुं मली
एकज इंशे एरीतें दश इंश वैमानिक देवोनांते.
ए सर्वमली चोशठ इंश थया.

हवे उपर ग्रैवेयक तथा अनुत्तरविमानने विपे स्वामी
सेवकपणुं नथी तेथी तिहां इंश पण नथी ए कढपातीत
देवोते. ग्रैवेयकना देवोनां देहमान तथा आयु कहेते.

पहेला कोठामां ग्रैवेयकनुं नाम बीजा कोठामां जे

आंक मांमयोढे तेटला सागरोपमनुं आयु जाणवुं
अने शरीरतो सर्व ग्रैवेयकें बे हाथ प्रमाण जाणी जेवुं.

| प्रथम त्रिक | बीजी त्रिक | त्रीजी त्रिक |
|----------------|-------------|--------------|
| सुदर्शन २३ | सर्वतोन् २६ | सौमनस्य २९ |
| सुप्रतिबद्ध २४ | विशाल २७ | प्रीतिकर ३० |
| मनोरम २५ | सुमनस २८ | आदित्य ३१ |

हवे पांचे अनुत्तर विमाने एक हाथनुं शरीर त
था जघन्य एकत्रीश अने उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमनुं
आयु चार विमानो ने विषे जाणवुं अने पांचमां स
र्वार्थ सिद्धिने विषे जघन्योत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमायु.

हवे तिर्यचनां उत्कृष्ट देहमान तथा आयु कहेढे.

जीवजाति देहमान आयु.

पृथिवीकाय अंगुलनुंअसंख्यनाग २२०००) वर्ष.

अपकायपाणी अंगुलनुंअसंख्यनाग ७०००) वर्ष.

अग्नीकाय अंगुलअसंख्यनाग त्रण दिवसनुंआयु.

वायुकाय अंगुलअसंख्यनाग ३०००) वर्षायु.

साधारणवनस्पति अंगुलासंख्यनाग अंतरमुहूर्त.

प्रत्येकवनस्पति हजारयोजनजाजेरा १००००) वर्ष.

बेंडीजीव बारयोजन बारवर्ष.

तेंडीजीव त्रणगात्र ४९ दिवस.

| | | |
|------------------|--------------|-------------------|
| चौरिंद्गीजीव | चारगात्र | ठ महिना. |
| संमुर्द्धिममहादि | हजारयोजन | कोडपूर्व. |
| सं०चतुष्पदादि | बेथीनवगात्र | ८४०००) वर्ष. |
| सं०खेचरनुं | बेथीनवधनुष | ७२०००) वर्ष. |
| सं०उरपरीसर्प | बेथीनवयोजन | ५३०००) वर्ष. |
| सं०जुजपरीसर्प | बेथीनवधनुष | ४२०००) वर्ष. |
| गर्नजमहादिक | हजारयोजन | कोडपूर्व. |
| गर्नजथलचर | ठगात्र | त्रणपट्योपम. |
| गर्नजखेचरपंखी | बेथीनवधनुष | पट्योपमासंख्यानाग |
| गर्नजउरपरिसर्प | हजारयोजन | कोडपूर्व. |
| गर्नजजुजपरीसर्प | बेथी नवगात्र | कोडपूर्व. |

नारकीनां उत्कृष्ट देहमान तथा आयु.

नाम देहमान आयु.

| | | |
|--------------|----------------------|-----------------|
| १ रत्नप्रजा | ७॥॥ धनुषने ६ अंगुल | एकसागरोपम. |
| २ शर्करप्रजा | १५॥॥ धनुषने १२ अंगुल | त्रणसागरोपम |
| ३ बालुप्रजा | ३१॥ धनुष | सातसागरोपम. |
| ४ पंकप्रजा | ६२॥ धनुष | दशसागरोपम. |
| ५ धूमप्रजा | १२५ धनुष | सत्तरसागरोपम. |
| ६ तमप्रजा | २५० धनुष | बावीशसागरोपम. |
| ७ तमतमप्रजा | ५०० धनुष | तेत्रीशसागरोपम. |

मनुष्यनो उत्कृष्ट देहमान त्रण गात्रं तथा उ
त्कृष्टायु त्रण पव्योपमं जाणुं मनुष्य कर्मनूमि,
अकर्मनूमि तथा अंतरदीपना मलीने त्रण प्रकारना
ढे ते विषे किंचित विस्तारे वात लखीयें ठैयें.

तीर्त्तलोकने विषे अढीसागरोपम कालना जेटला
समय थाय ते प्रमाणे असंख्याता दीप अने समु
द्र ते सर्व दीप समुद्रनी वज्रें आपणे जेमां वसी
येठैयें तेनु नाम जंबु दीप ते एकलाख योजननुं ठे
तेने फरतो लवण समुद्र बे लाख योजननुं ठे तेने
फरतो चार लाख योजन प्रमाण धातकी खंढनामां
दीप चुडीने आकारेठे तेने फरतो आठ लाख यो
जन प्रमाण कालोद समुद्र तेने फरतो शोल लाख
योजन प्रमाण पुष्करवर दीप ते दीपना अर्धा
जागना आठ लाख योजनमां मनुष्यनी वस्तिठे एव
ढा अढीदीपना बेहु बाजुना मली पीस्तालीश लाख
योजनमां मनुष्य वसेठे उपरांत बीजा सर्व दीप स
मुद्रोने विषे तिर्यचगतिना जीवोनो निवासठे ते जंबू
दीपनो तथा अढीदीपनुं जूदोजूदो नकाशो आ पुस्त
कनी आद्यमांठे ते जोवाथी तरत समजाइ आवशे.

हवे ए अढीदीपने विषे जे खेत्रमां मनुष्यो रहे
 ठे तेनां नाम प्रत्येक दीप आश्रयी लखीयें ठैयें.

तिहां जंबुदीपमां एक जरत बीजो माहाविदेह
 अने त्रीजो ऐरवत ए त्रण खेत्र तेमज धातकी खंम
 मां बे जरत बे माहाविदेह अने बे ऐरवत मलीने ठ
 खेत्र तथा तेंवाज नामे ठ खेत्र पुष्करार्द्धमां ठे सर्व
 मलीने पंदर खेत्रमां कर्मनूनि मनुष्य वसे ठे ए हे
 त्रोने विषे चोवीश तीर्थकरादिक त्रिषष्टशिलका पुरुषो
 उत्पन्न थाय ठे. तेमनां नाम, आयु तथा देहमानादि
 कनो यंत्र आ पुस्तकना अंतमां दाखल कस्युं ठे.

वली जंबुदीपमां १ हिमवंत २ ऐरन्यवत ३ हरि
 वर्ष ४ रम्यक् ५ देवकुरु ६ उत्तरकुरु ए ठ क्षेत्र तथा
 वली एवाज नामे बे बे क्षेत्र धातकी खंमने विषे त
 था बे बे खेत्र पुष्करार्द्धने विषे ठे तेथी बार क्षेत्र
 धातकीखंमना तथा बार क्षेत्र पुष्करार्द्धना तेनी साथे
 जंबुदीपना ठ मलवीयें तेवारें त्रीश खेत्र अकर्म नूमी
 युगलीया मनुष्योने वसवाना ठे जेमां असी मसी अने
 रुष्टी ए त्रण प्रकारना उद्यम नथी. ए मनुष्योनी स्थि
 ति विषे हालमां अढीदीपनो नकशो ठापेलो ठे तेनी

साथे तेनी हकीगतनो पण एक पुस्तक ठाप्युंठे तेमां स विस्तर अधिकार ठे तेथी अहींआ स्वल्पवात लखीठे.

वली आ जंबु दीपना दक्षिण बाजुना हिमवत पर्वत अने उत्तर तरफना शीखरी पर्वत ए बे पर्वतनी हाथीना दांतना जेवी चार चार दाढाउं लवण समुद्रमां गईठे ते एकेकी दाढा उपरें सात सात अंतर दीपठे तेवारे बेहु पर्वतनी आठ दाढाउं उपर ठपन्न अंतरदीपठे तेमां पण पूर्वोक्त असी मसी अने कृषी ए त्रण प्रकारना उद्यम रहीत युगलीक मनुष्यो वसे ठे एरीते सर्वमली (१०१) प्रकारनां मनुष्योठे.

॥ हवे बीजा सिद्धनां जीव पंदर जेदेंठे तेनां नाम.

- १ जिनसिद्धतेरुषजादि तीर्थकर पोते जाणवा.
- २ अजिनसिद्धते पुंमुरिकादि गणधर जाणवा.
- ३ तीर्थसिद्धते प्रसन्नचंदादिक तथा गणधरादि.
- ४ अतीर्थसिद्धते मरुदेव्यादिक जाणवा.
- ५ ग्रहस्थलिंगसिद्धते नरतचक्रवर्त्यादि.
- ६ अन्यलिंगसिद्धते तापसादिवेशें वल्कलचीरी.
- ७ स्वलिंगसिद्धते साधुवेशें जंबुस्वामी प्रमुख.
- ८ स्त्रीलिंगसिद्धते स्त्रीलिंगे राजीमत्यादि.

- ए पुरुषलिंगसिद्धते पुण्याढ्यराजादिक.
 १० नपुंसकलिंगसिद्धते कृतिमनपुसकगांगेयादिक.
 ११ प्रत्येकबुद्धसिद्धते करकंदू राजायादिक जाणवा.
 १२ स्वयंबुद्धसिद्धते कपिलादिक.
 १३ बोधबोधितसिद्धते पंदरशें त्रण तापसादिक.
 १४ एकसिद्धते गजसुकुमालादिक.
 १५ अनेकसिद्धते नरतपुत्रादिक घणासिद्ध.

॥ अथ काल प्रमाण ॥

- १ प्रथम अति सूक्ष्मकालने एक समय कहीयें.
 २ तेवा असंख्याता समयें एक आवलिका थाय.
 ३ तेवी (१६७७७२१६) आवलीयें एक मूढुर्त्तथाय.
 ४ त्रीस मूढूतें दिवस एटले एक अहोरात्र थाय.
 ५ पंदर अहोरात्रें एक पखवाड्युं थाय.
 ६ बे पखवाडीयें एक महीनो थाय.
 ७ बार महीनें एक वर्ष थाय.
 ८ तेवा (७०५६००००००००००००) वर्षे एकपूर्वथाय.
 ९ तेवा असंख्याता पूर्वे एक पद्योपम थाय ते आ
 वीरीतें चार गाउ उंमो अनेचार गाउ पाहोलो वाट
 लाकारे त्रण योजन जाजेरी परिधी वालो एक पद्य

कल्पवो तेमां उत्तर कुंरु खेत्रना युंगलियाना रोम ए
 वा सुक्ष्मठेके ते ४०९६ रोम एकठा करीयें तेवारें क
 र्मनुमी मनुष्यनो एक वाल थाय एवा ते युगलीयाना
 सूक्ष्म रोमठे ते रोम लंबाश्यें एक तसुनो लइने तेनां
 सात वखत आठ आठ कटका करीयें तेवारें
 (१०९७१५१) कटका थाय तेवा कटके करी पूर्वोक्त
 पालो जरीने पढी ते एकेक कटको शोशो वर्षने आंतरें
 काढतां जेवारे तेपल्य खाली थाय तेवारे संख्याता
 वर्ष थाय तेने बादर पल्योपम कहीयें अने ते पूर्वोक्त
 एकेका रोम खंमनां असंख्याता खंम करीने तेवा खं
 मे ते पूर्वोक्त कूप एवीरीतें ठासीने जरवो के तेना उ
 परथी चक्रवर्त्तिनी सेन्या चाली जाय तोपण ते दबा
 य नहीं पढी ते एकेको सूक्ष्म खंम शो शो वर्षे का
 हाढतां असंख्याता पूरव व्यतिक्रमे ठते ते पल्य खा
 ली थाय तेवारे एक पल्योपम थाय.

- १० दश कोडाकोडी पल्योपमें एक सागरोपम थाय.
- ११ दशकोडाकोडी सागरोपमे एक अवसर्पिणी थाय.
- १२ दशकोडाकोडी सागरोपमे एक उत्सर्पिणी थाय.
- १३ उत्सर्पिणीअवसर्पिणीमलीएक कालचक्र थाय.
- १४ अनन्ता कालचक्रे एक पुञ्जपरावर्त्त थाय.

एवा अचनंता पुञ्जपरावर्त्ते संसारमां परित्रमण
करतां जीवने व्यतिक्रम्या ॥

श्रावकने नित्यप्रत्ये चौद नियम धारवा तेनां नाम.

- | | |
|--------------------|-----------------------|
| १ सचेत परिमाण. | ७ वाहन परिमाण. |
| २ इव्य परिमाण. | ८ सद्य्या परिमाण. |
| ३ विंगय परिमाण. | १० विलेपन परिमाण. |
| ४ उपानह परिमाण. | ११ ब्रह्मचर्य परिमाण. |
| ५ तंबोज परिमाण. | १२ दिसि परिमाण. |
| ६ वस्त्र परिमाण. | १३ स्नान परिमाण. |
| ७ पुष्पजोग परिमाण. | १४ जातपाणीनोपरिमाण |

दश पञ्चस्काणनां नाम तथा ते पञ्चस्काण कख्या
थी केटजो नरकायु त्रूटे ते कहेने.

- | | |
|-------------------|--------------------------|
| पञ्चस्काणनां नाम. | नरकायुत्रूटवानीसंख्या. |
| १ नवकारसीथी. | एकशोवर्षनरकायुत्रूटे. |
| २ पोरिसीथी. | एकहजारवर्षनरकायुत्रूटे. |
| ३ साढपोरिसीथी. | दशहजारवर्षनरकायुत्रूटे. |
| ४ पुरिमिद्धथी. | एकलाखवर्षनरकायुत्रूटे. |
| ५ एकासनथी. | दशलाखवर्षनरकायुत्रूटे. |
| ६ नीवीथी. | एकक्रोडवर्षनरकायुत्रूटे. |

- ४ एकलताणायी. दशक्रोडवर्षनरकायुत्रूटे.
 ८ एकलदत्तिथी. शोक्रोडवर्षनरकायुत्रूटे.
 ९ आर्यंबीजथी. हजारक्रोडवर्षनरकायुत्रूटे.
 १० उपवासथी. दशसहसक्रोडवर्षनरकायुत्रूटे.

अथ समवसरण मध्येनी बार परखदानां नाम.

- ३ एक गणधरनी बीजी विमानवासी देवांगनानी
 त्रीजी साध्वीनी ए त्रण परखदा अग्नीकूणे बेसे.
 ३ एक ज्योतीषीनी देवोनी बीजी व्यंतरनी देवोनी त्री
 जी ज्वनपतिनी देवीनी ए त्रण परखदा नैरुत०
 ३ एक ज्योतषी देवोनी बीजी व्यंतर देवोनी त्रीजी
 नवनपति देवोनी ए त्रण परखदा वाव्य कूणे बेसे.
 ३ एक वैमानिक देवतानी बीजी मनुष्यनी त्रीजी म
 नुष्यनी स्त्रीउनी ए त्रण परखदा इशान कूणे बेसे.

अथ ठ तथा पांच सम्यकत्वनां नाम.

- १ इयसम्यक्त्व. २ नावसम्यक्त्व.
 ३ निश्चयसम्यक्त्व. ४ व्यवहारसम्यक्त्व.
 ५ निसर्गसम्यक्त्व. ६ उपदेशसम्यक्त्व.
 १ द्वायोपशमिक. २ उपशमिक. ३ द्वायक.
 ४ सास्वादन. ५ वेदक.

चारविकथानां नाम.

१ स्त्रीकथा. २ नोजनकथा. ३ देसकथा. ४ राजकथा.

पांच समवायनां नाम.

१ कालवादी. २ स्वनाववादी. ३ नियतवादी.

४ पूर्वकृततेकर्मवादी. ५ पुरुषाकारतेउद्यमवादी.

॥ दश श्रावकनां तथा तेमनां ग्रामादिकनां नाम.

श्रावकनाम. गामनां नाम. धनसंख्या गोकुल.

१ आनंद वाणीज्यगाम. १२ कोड ४

२ कामदेव चंपानगरी. १८ कोड ६

३ चुलणिपित्ता वाणारसी. २४ कोड ८

४ सुरादेव वाणारसी. १८ कोड ६

५ चूलसतक आलंजिका. १८ कोड ६

६ कुंमकोलियो कंजिलपुर. १८ कोड ६

७ सदाजपुत्र पोलासपुर. ३ कोड १

८ महाशतक राजगृही. २४ कोड ८

९ निंदनीपिता सावढी. १२ कोड ४

१० तेतलीपिता सावढी. १२ कोड ४

धर्ममां अंतराय करनारा तेर काठीग्रामां नाम.

१ आलस. २ मोह. ३ अवरणवादबो

- ૪ અહંકારઆણવું. ૫ ક્રોધકરવો. ૬ પ્રમાદ કરવો.
 ૭ ક્રપણતા. ૮ ગુરુનય. ૯ શોકરાખવો.
 ૧૦ અજ્ઞાન. ૧૧ અચિરતા. ૧૨ કુતુહલજોવા.
 ૧૩ તીવ્રવિષયાનિલાસ.

પાંચ પ્રકારે મિથ્યાત્વનાં નામ.

- ૧ અનિગ્રહિક તે જે પોતાની મતિમાં આવ્યું તેસાચું.
- ૨ અનનિગ્રહિક તે સર્વ ધર્મ સારાઢે એવી બુદ્ધિ.
- ૩ આનિનિવેશ તે જાણી બૂજીને જીતું બોલવું.
- ૪ સંશયિક તે સિદ્ધાંત વિચાર વિષે સંદેહ રાખવો.
- ૫ અનાજોગિકતે અજાણપણે કાંઈ સમજે નહીં.
 અથવા એકેંડિયાદિક સર્વ જીવને એ મિથ્યાત્વઢે.

સ્વાધ્યાયનાં પાંચ પ્રકાર કહેઢે.

- ૧ જે ગુરુ સમિપે શિષ્યે વાંચિયે તેવાંચના.
- ૨ જે જીનજાવેસૂત્રનાં વિચાર પૂઢિયે તે ટૂઢના.
- ૩ જે જણેજા સૂત્રનું ગુણવું તે પરિચટ્ટણા.
- ૪ જે રૂઢયમાંઢે સૂત્રના વિચાર ચિંતવવાતે અનુપ્રેક્ષા
- ૫ જે પરને ધર્મકથા સંજનાવીયે તે ધર્મ કથા.

પાંચ પ્રકારના દેવ કહ્યાઢે તેનાં નામ.

- ૧ પંચેંડિય તિર્યંચ અથવા મનુષ્ય જેણે દેવાયું વાંધ્યું

होय ते देवतापणो उपजसो तेने इव्य देव कहियें.

१ जे चक्रवर्त्ति होय तेने नर देव कहियें.

२ श्री अणगार साधुने धर्म देव कहियें.

४ श्री अरिहंत देव ने देवाधिदेव कहियें.

५ जवनपत्यादिक चार निःकायनां देवते जाव देव

ए पूर्वोक्त पांच प्रकारना देवोनुं आयुष्य लखेते.

१ इव्य देवनुं जघन्य अंतरमुदूर्त्त उत्कृष्ट त्रणपत्योपम

२ नरदेवनुं जघन्यसातसैंवर्ष उत्कृष्टचोरासीलाख पूर्व.

३ धर्मदेवनुं जघन्य अंतरमुदूर्त्त उत्कृष्टदेशे उणी पूर्वकोडी

४ देवाधिदेवनुं जघन्य बहोत्तिरवर्ष उत्कृष्टचोरासीलाख पूर्व

५ जाव देवनुं जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्रीश

सागरोपम.

प्रण प्रकारें जीव अद्वपायुकरे ते कहेंते.

१ जीवाहिंसाकरतोथको. २ जूहुं बोलतोथको.

३ श्रीसाधुने अनेपणीय अफासुआहारादिकदेतोथ ०

पांच प्रमादनां नाम.

१ मद्यपान २ विषय ३ कषाय ४ निद्रा ५ विकथा.

पांच आश्रवनां नाम.

१ मिथ्यात्व २ अविरत ३ प्रमाद ४ कषाय ५ योग.

पांच संवरनां नाम.

- १ सम्यक्त्व. २ विरति. ३ अप्रमत्त. ४ अकषाय.
- ५ अयोग.

पांच अजिगमनां नाम.

- १ सचित्त इव्य जे शरीर नोग संबंधि होय ते ठामे.
- २ अचित्तमुद्रादिकठामे. ३ मनएकत्रस्थानकेंराखे.
- ४ एक साडिउ उत्तरासंघकरे.
- ५ जिन दीठे मस्तकें करपंजलीकरे.

पांच राज चिन्ह प्रासादें जतांमूकियें तेनां नाम.

- १ खडग. २ ठत्र. ३ बाणही. ४ मुकुट. ५ चामर.

पांच स्थानकथी जीव नीकलेगे ते कहेगे.

- १ पगथकी नीकले ते जीव नरकगतियें जाय.
- २ जंघाथकी निकले ते जीव तिर्येचगतियें जाय.
- ३ पेट थकी निकले ते जीव मनुष्य थाय.
- ४ मस्तक थकी निकले ते जीव देवता थाय.
- ५ सर्वअंग थकी निकले ते जीव मोहें जाय.

पांच स्थानकें जीव दूर्लेज बोधि पणुकरे तेनां नाम.

- १ श्री अरिहंतनुं अवर्ण वाद बोलतो थको.
- २ श्रीअरिहंत नापित धर्मनुं अवर्णवाद बोलतो थको

- ૩ આચાર્યાદિકનું અવર્ણવાદ બોલતો થકો.
 ૪ શ્રીચતુર્વિધ સંઘનું અવર્ણ વાદ બોલતો થકો.
 ૫ જે તપ અને બ્રહ્મચર્ય પાળીને દેવ થયાઢે તે દે
 વોનો અવર્ણ વાદ બોલતો થકો.

એજ શ્રી અરિહંતાદિક પાંચની સ્તવના કરતો થ
 કો જીવ સુજન બોધી પણ પણ ઉપાર્જન કરે.

ત્રણ મુહાનાં નામ.

- ૧ યોગમુહા. ૨ જિનમુહા. ૩ મુક્તાશુક્તિમુહા.
 સંસારી જીવને આહાર ત્રણ પ્રકારે ઢે.
 ૧ ડંજાહાર. ૨ લોમાહાર. ૩ પ્રદ્ધેપાહાર.
 સંસારી જીવની યોનીના ત્રણપ્રકાર.
 ૧ સચિત્તયોની. ૨ અચિત્તયોની. ૩ મિશ્રયોની.

॥ અથ શાઢા પચ્ચીશ આર્યદેસનાં નામ ॥

| દેસનામ. | મુખ્યનગર. | ગ્રામની સંખ્યા. |
|------------|----------------|-----------------|
| ૧ મગધદેસ | રાગૃહનગર | ૬૬૦૦૦૦૦ |
| ૨ અંગદેસ | ચંપાનગરી | ૫૦૦૦૦૦૦ |
| ૩ વંગદેસ | તામ્રજિત્તિનગર | ૫૦૦૦૦૦ |
| ૪ કલિંગદેસ | કાંચનપુરનગર | ૧૦૦૦૦૦૦ |

(५८८)

| | | |
|-----------------|-----------------|---------|
| ५ कासीदेस | वाणारसीनगरी | १९२००० |
| ६ कौशव्यदेस | शांकेतपुरनगर | ९९००० |
| ७ कुरुदेस | गजपुरनगर | ८७३२५ |
| ८ कुशावर्त्तदेस | सौरीपुरनगर | १४०८३ |
| ९ पांचालदेस | कांपिलपुरनगर | ३८३००० |
| १० जंगलदेस | अहिठतानगरी | १४५००० |
| ११ सोराष्ट्रदेस | द्वारावतीनगरी | ६८०५००० |
| १२ विदेहदेस | मथिलानगरी | ८००० |
| १३ वज्रदेस | कोसंबीनगरी | २८००० |
| १४ शांमिव्यदेस | नंदीपुरनगर | १०००० |
| १५ मलयदेस | जदिलपुरनगर | ७००००० |
| १६ वज्रादेस | वैराटनगरी | ८०००० |
| १७ वरुणदेस | सुक्तिकावतिनगरी | २४००० |
| १८ दशार्णदेस | मृत्तिकावतिनगरी | १८९२००० |
| १९ चेदिदेस | अज्जापुरीनगरी | ६८०० |
| २० सिंधुदेस | वीतनयनगर | ६८५०० |
| २१ सौवीरदेश | मथुरानगरी | ६८००० |
| २२ सूरसेनदेस | अपापानगरी | ३६००० |
| २३ जृंगदेस | मासपुरीनगर | १४२५ |

२४ कुणालदेस सावडीनगरी ६३०५३
 २५ लाटदेस बाणपुरनगर २१०३०००
 २५॥ केकडेदेस श्वेतंबिकानगरी एदेसनुंअर्धआर्यडे.

ए साडीपच्चीस आर्यदेस ते आ जरत क्षेत्रना द
 कृणार्ध नागना मध्य खंमने विषे जाणवा एमां ती
 थंकरादिक त्रेशठ उत्तम पुरुषोनुं उपजवुं थायडे ते
 मज शक अने यवनादिक ३१९७४॥ अनार्य देश
 डे तेमां बऱ्हा अनार्य लोको वसेडे.

दश दृष्टांते मनुष्य जन्म पामवो दूर्लेज तेनां नाम.

१ नोजननोदृष्टांत.

६ स्वप्ननो दृष्टांत.

२ पासानोदृष्टांत.

७ राधावेधनो दृष्टांत.

३ धान्यनोदृष्टांत.

८ इहसेवालनो दृष्टांत.

४ जुवटानोदृष्टांत.

९ धोंसरानो दृष्टांत.

५ रत्ननो दृष्टांत.

१० परमाणुनो दृष्टांत.

आ नीचे लखेला बारवाना पामवा दूर्लेज.

१ मनुष्यजव. २ आर्यक्षेत्र. ३ मातापितानोपदृष्टुं.

४ मार्गानुसारी ५ रूपवंतपणुं. ६ निरोग्यता.

७ पूरणआयु. ८ जलीबुद्धि ९ धर्मसांजलवुं.

१० धर्मनीरुची. ११ सद्वहणा १२ धर्मनेविषेवध्यम.

अथ बूटक शिखामण.

- १ अकार्यने विषे आलस्य थवुं.
- २ प्राणवधने विषे सदैव पांगला थवुं.
- ३ पारकी तांतने विषे बहिराथवुं.
- ४ परस्त्री निरखणने विषे जातिअंध थवुं.
- ५ कीर्त्ति, कुल, सुपुत्र, कला, मित्र, गुण अने सुशील ए सातवाना वधारवाथी धर्म वृद्धि आय.
- ६ माननु त्याग, गुरुजक्ति, सुशीलता, दयाधर्म, सत्य, विनय अने तप ए सात वाना न मूकवा.
- ७ खल माणसनी संगति, कुस्त्री, सात व्यशन, कुमार्गेधनागम, असमाधि, रागद्वेष अने कषाय ए सात वाना त्यागवा.
- ८ उपगार, गुरुवचन, स्वजनता, जलिविद्या, नियम, वीतराग अने नवकार ए सात वाना रुदये धरवा.
- ९ व्यशनाशक्त, सर्प, मूर्ख, युवति, जल, अग्नी अने पूर्वविरुद्ध ए सातनो विश्वास न करवो.
- १० विनय, जिनजक्ति, सुपात्रदान, सुसंयमने विषे राग, माहापणपणुं, निस्पृहीता अने परोपकार पणु ए सातगुण महोटा जाणवा.

॥ अथ अजितजिन स्तवन ॥ सुरती महीना नीदेसी ॥

॥ सरसति सामणी वीनबुं, मागुं अविरलवाण ॥ बी
जा जिनवर गायेसुं, हरख घणो मन आण ॥ १ ॥
कौशल्य देस सोहामणु, नयरी अयोध्यारे ठाम ॥
राज करे तिहां राजवी, जितशत्रु एतुं नाम ॥ २ ॥
विजयारे राणी तेहनी, शीयलवती अनिराम ॥ तेह
नी कूखे अवतखा, अजित जिनेसर स्वाम ॥ ३ ॥
साढारे चारसैं धनुष्यनी, कंचन वरणी काय ॥ बहों
तेर लाख पूरव, श्रीजिनवरनी आय ॥ ४ ॥ गज लं
ठन सोहामणु, सेवेठे नित्य पाय ॥ सुर नर मली
सेवा करे, आनंद अंग नमाय ॥ ५ ॥ पुण्य संयोगें दुं
पामेयो, तुमने श्रीजिनराज ॥ पाप गया सरवे माह
रा, फलेया मनोरथ आज ॥ ६ ॥ दीन दयाल
दया करी, दीजें अविचल राज ॥ नित्यलाज कहे प्र
भु माहारा, सारजो वंछित काज ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ रहनेमीनी सिखाय प्रारंभः ॥

॥ निंदा मकर सो कोइनी पारकी रे ॥ ए देशी ॥
॥ संजम लइ ध्याने रह्यारे, ताणे रहनेमि घढ गि
रनाररे ॥ चीर नीचोवतां महासती रे, देखी व्याकु
ल थया मुनि राय रे ॥ १ ॥ रेरे रहनेमीने राजकुल

बूजवेरे ॥ अहोरे उत्तम अणगारने रे, चारित्रिं लागे
 अतिचार रे ॥ रेरे० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ हुं नारी
 नेमजी तणी रे, ताणे तुमेठो देवर मुनिराज रे ॥ एरे
 वात युगति नहीं रे, ताणे एवो किम कीजे अकाज
 रे ॥ रेरे० ॥ ३ ॥ इम सुणी रहनेमी बोलिया रे,
 ताणे तुं नारी हुं जरतार रे ॥ राज करीयें जुना घढ
 तणुरे, ताणे सुख विजसो सही सार रे ॥ रेरे० ॥ ४ ॥
 हांहांरे एणुं मूरख बोलीया रे, ताणे जादव कुल ला
 गे लाज रे ॥ तुंरे बंधव हुं हुं बेनडीरे, ताणे जुगमां हां
 सी थायरे ॥ रेरे० ॥ ५ ॥ नारीनो संग नवी कीजी
 यें रे, ताणे नारी ठे मोहनो पास रे ॥ नारी थकी ड
 रगति लहेरे, ताणे नीच पामो नरकावासरे ॥ रेरे०
 ॥ ६ ॥ रत्न चिंतामणि पामीने रे, ताणे ककर ग्रहे
 कुण हाथ रे ॥ गज ठोडी खर नवी चढे रे, ताणे पय
 मूकीने पीये कुण आठ रे ॥ रेरे० ॥ ७ ॥ विषयमां
 मराचो मुनिवरु रे, ताणे विष सम विषय विकार
 रे ॥ विष खावाथी मरीयें एकदा रे, ताणे विषय
 अनंति वार रे ॥ रेरे० ॥ ८ ॥ अतिचारें आलोव
 तां रे, ताणे मनथकी मुनिराज रे ॥ निरअतिचार
 पणे करीरे, मुनि ध्यान चढया सजी साजरे ॥

॥ रेरे० ॥ ए ॥ रहनेमि हृदय विचारीने रे, में
तो कीथो महा अपराध रे ॥ ए नारी बंधव तणी
रे, ताणे धिग धिग ए हुं तो साध रे ॥ रेरे० ॥ १० ॥
एही वखत खमावतां रे, ताणे राजीमतीने तेणी वार
रे ॥ नरकें पडतो मुजने राखीयो रे, तुंतो सर्व सतीमां
शिरदार रे ॥ रेरे० ॥ ११ ॥ इति ॥ आमां ठेह्नी गा
आमां कर्तानुं नाम नथी तेथी अधूरी जणाय ठे.

॥ अथ श्रीआयंबिल तपनी उज्जीनो विधि ॥

॥ ए तप प्रथम आशोद्युदि सातमना दिवसथी मां
मीने आशोद्युदि पूर्णिमा पर्यंत नव दिवस सुधी, तेम
ज चैत्रद्युदि सातमथी मांमी पूर्णिमा पर्यंत नव दि
वस लगे नव नव आयंबिल करवां, एवी रीतें साडा
चार वर्ष पर्यंतमां एक्याशी आयंबिल करे थके ए तप पू
र्ण थाय ठे. हवे आयंबिल करवाना नव दिवस पर्यंत ब्र
ह्मचर्य पालवुं, प्रतिदिन सांऊ, सवार मली बे वार पडि
क्रमणां करवां, तथा एकेका दिवसें अनुक्रमें एकेका
पदनी क्रिया करवी, तिहां जे पदना जेटला गुण होय,
ते पदना तेटला साथीया काढवा अने तेटलाज ते
पदना उँ झी पद सहित खमासमण देवां तथा तेट
लाज लोगस्सनो काउस्सग पण करवो अने एकेक

પદનાં નામની વીશ વીશ નોકરવાલી ગણવી તથા તે તે પદના ગુણની સ્તુતિ, જાવના પૂર્વક જાવવી જોઈયે, માટે તે નવ પદનાં નામ તથા ગુણ અને ગણણું ગણવાની સંખ્યા લખીયેં ઠેયેં.

નવ પદનાં નામ. ગુણની સંખ્યા. ગણણું ગણવું.

| | | |
|------------------------|----|------|
| ૐ ક્ષી નમોઞ્ચરિહંતાણં. | ૧૨ | ૧૨૦૦ |
| ૐ ક્ષી નમોસિદ્ધાણં. | ૮ | ૮૦૦ |
| ૐ ક્ષી નમોઆયરિયાણં. | ૩૬ | ૩૬૦૦ |
| ૐ ક્ષી નમોઝવચાયાણં. | ૨૫ | ૨૫૦૦ |
| ૐ ક્ષી નમોલોએસવસાદૂણં. | ૨૭ | ૨૭૦૦ |
| ૐ ક્ષી નમોનાણસ્સ. | ૫૧ | ૫૦૦ |
| ૐ ક્ષી નમોદંસણસ્સ. | ૬૭ | ૧૦૦૦ |
| ૐ ક્ષી નમોચારિત્તસ્સ. | ૧૭ | ૫૦૦ |
| ૐ ક્ષી નમોતવસ્સ. | ૧૨ | ૨૦૦ |

॥ હવે નવ પદનાં સ્વમાસમણ દેવાનો પાઠ કહે છે ॥

૧ ઇહામિ સ્વમાસમણો વંદીતં જાવણિક્કાએ નિસી
 દિથ્થાએ મહ્ધાણ વંદામિ ॥ ૐ ક્ષી નમો ઞ્ચરિહં
 તાણં એ પ્રથમ પદેં શ્રીઞ્ચરિહંતજી બાર ગુણેં શોજિત,
 મધ્યજાગેં બિરાજમાન, ઝહ્ઝલ વર્ણ સહિત, એવા
 શ્રીઞ્ચરિહંત જગવંતને મહારી ત્રિકાલ વંદના હોજો.

- २ इहामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं, ए बीजे पदें श्रीसिद्धपरमात्मा आठ गुणें शोणित, पूर्वदिशें बिराजमान, रक्तवर्ण सहित, एवा श्रीसिद्ध जगवंतने महारी त्रिकाल वंदना होजो.
- ३ इहामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं ए त्रीजे पदें श्रीआचार्यजी ठत्रीश गुणें शोणित, दक्षिणदिशें बिराजमान, पीतवर्ण सहित, एवा श्रीआचार्य जगवानूने महारी त्रिकाल वंदना होजो.
- ४ इहामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो उवद्यायाणं ए चोथे पदें श्री उपाध्यायजी पच्चीश गुणें शोणित, पश्चिमदिशें बिराजमान, नीलवर्ण सहित, एवा श्री उपाध्यायजीने महारी त्रिकाल वंदना होजो.
- ५ इहामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो लोए सबसादूणं ए पांचमे पदें श्रीसाधुजी सत्तावीश गुणें शोणित, उत्तरदिशें बिराजमान, कृष्ण वर्ण सहित, एवा सर्व साधुने महारी त्रिकाल वंदना होजो.
- ६ इहामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो नाणस्स ए ठठे पदें श्रीसम्यक्ज्ञान एकावन जेदें शोणित, अग्निकूणे बिराजमान, श्वेत वर्ण सहित, एवा श्री ज्ञान पदने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

७ इहामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो दंसणस्स ए सातमे पदे श्रीसम्यक् दर्शन शडशठ बोलें शोजित, नै कृतकूणे बिराजमान, श्वेतवर्ण सहित, एवा श्री दर्शन पदने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

८ इहामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्स ए आठमे पदे श्रीचारित्र सत्तर जेदें शोजित, वाव्यकूणे बिराजमान, श्वेतवर्णसहित, एवा श्री चारित्र पदने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

९ इहामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो तवस्स ए नवमे पदे श्रीतप बार जेदें शोजित, ईशानकूणे बिराजमान, श्वेत वर्ण सहित, एवा श्रीतप पदने महारी त्रिकाल वंदना होजो. एरीतें नव दिवस पर्यंत विधि करवो, ते अहींअं संक्षेपें कह्यो. विस्तारें गुर्वादिकथकी जाणवो॥इतिउलिनोविधिःसमाप्तः॥

॥ अथ सूतकविचार प्रारंजः ॥

॥ प्रथम कोइना घरे जन्म थाय तेविषे ॥

१ पुत्रजन्मे दिन दशनुं सूतक तथा पुत्रीजन्मे दिन अगीअर अने रात्रें जन्मे तो दिन बारनुं सूतक.

२ बार दिवस घरनां माणस देवपूजा करे नहिं:

३ न्यारा जमता होय, ते बीजाना घरना पाणीथी

(५९७)

जिनपूजा करे अने सूवावड करनारी तथा क रावनारीने तो नवकार गणवो पण सूजे नहीं.

४ तथा प्रसववाजी स्त्री, मास एक सुधि जिनप्रतिमा नां दर्शन करे नहीं. तथा दिन (४०) सुधि जिन प्रतिमानी पूजा न करे अने साधुने पण वोहोरावे नहीं, एम विचारसार प्रकरण मध्ये कहुं ठे.

५ घरना गोत्रीने दिन पांचनुं सूतक जाणवुं.

६ व्यवहारजाण्यनी मलयगिरिष्ठ टीका मध्ये जन्मनुं सूतक दिन दशनुं कहुं ठे.

७ गाय, घोड़ी, उंटणी, जैष, घरमां प्रसवे, तो दिन वे नुं सूतक अने वनमां प्रसवे, तो दिन एकनुं सूतक.

८ जैष प्रसवे, तो दिन पंदर पढी तेनुं दूध कल्पे.

९ गाय प्रसवे, तो दिन दश पढी तेनुं दूध कल्पें.

१० ठाली प्रसवे, तो दिन आठ पढी तेनुं दूध कल्पे.

११ उंटणी प्रसवे, तो दिन दश पढी तेनुं दूध कल्पे.

१२ दास दासीके जेनो आपणोज आश्रयें जन्म था य अने आपणीज नजर आगल रह्यां होय, तो तेनुं चौवीश पढोर सुधी सूतक जाणवुं.

॥ ऋतुवंती स्त्री संबंधि सूतक निर्णय ॥

१ दिन त्रण सुधी जाम्नादिकनेठिवे नहीं. दिन चार

लगें पडिक्रमणादिक करे नहीं पण तपस्या करे, ते लेखे लागे. दिन पांच पढी जिनपूजा करे. रोगादिक कारणें त्रण दिवस वील्या पढी पण जो रुधिर दीगमां आवे, तो तेनो दोष नथी. विवेकें करी पवित्र थई जिन प्रतिमादिक जिनदर्शन अग्रपूजादिक करे तथा साधुने पडिलाजे पण जिनप्रतिमानी अंगपूजा न करे. एम चर्चरी ग्रंथमां कहुं ठे.

॥ मृत्यु संबंधी सूतकनो विचार ॥

- १ मृत्युघरनुं सूतक दिन बारनुं. तेने घरे साधु आहार लिये नहिं, तेना घरना अग्नि तथा जलथी जिनपूजा आय नहिं एम निशीथ चूर्णीमां कहुं ठे. निशीथ सूत्रना शोलमा उद्देशामां जन्म तथा मरणनुं घर दुगंतनिक कहुं ठे.
- २ मृत्युवाला पासें सुए तो दिन त्रण पूजा न करे.
- ३ कांधिया देवदर्शन, पडिक्रमणादिक त्रणदिनन करे परंतु नवकारनुं ध्यान मनमां करे, तेनो बाध नथी.
- ४ मृत्युने अडक्या न होय तो स्नान कीधे शुद्ध आय.
- ५ अन्य पुरुष जो मृत्युने अडक्या होय तो ते शोलपहोर पर्यंत पडिक्रमणादि न करे.

(५९९)

- ६ जेने घरे जन्म तथा मरणनुं सूतक थाय, तेने घरे जमनारा दिन बार सुधी जिनपूजा करे नहीं.
- ७ वेपना पालटनारा आठ पहर सूरतक पाले.
- ८ जन्मे ते दिवसें मृत्यु थाय अथवा देशांतरें मरण पामे अथवा संन्यासी मरे तो दिन एक सूतक.
- ९ आठ वर्षी नानुं बालक मरण पामे, तो दिन आठनुं सूतक, विचारसार प्रकरणें कह्युं ठे.
- १० गाय प्रमुखनुं मृत्यु थाय तो, कलेवर घरथी बाहेर लहि गया पठी दिन एक जगें सूतक अने अन्य तिर्थचनुं कलेवर पड्युं होय, तेने तो घरथी बाहेर लइ जाय, तिहां सुधी सूतक. पठी नहीं.
- ११ दास दासी जे आपणी निष्ठायें घरमां रह्यां होय तेनुं मृत्यु थाय, तो त्रण दिवस सूतक लागे.
- १२ जेटला महीनानो गर्ज पडे, तेटला दिवस सूतक.
- १३ परदेश गयेलानुं मरण थयुं सांजजे तो एक तथा वे दिवसनुं सूतक कल्पनाप्यमां कह्युं ठे.
- १ गोमूत्रमां चोवीस पहर पठी, जेपना मूत्रमां शोल पहर पठी, गामर, गधेडी तथा घोडीना मूत्रमां आठ पहर पठी अने नर नारीना मूत्रमां चार पहर पठी समूर्द्धिम जीव उपजे ठे.

॥ अथ प्रस्ताविक दोहा ॥

दोहा ॥ जीवदया गुणवेलडी, रोपी रूपनजिणं
 द ॥ श्रावककुल मारग चढी, सींची नरत नरिंद ॥
 १ ॥ क्रोध मान माया करी, लोच लग्यो महिलारा ॥
 वीतराग वाणी विना, किम पामे जव पार ॥ २ ॥
 ॥ ठप्पो ॥ मधुमाखी महुआल, रातदिन जतने राखे ॥
 सदा करे संजाल, चांच नरी कदीय न चाखे ॥ जम
 तो आच्यो निह्न, अग्रि करी माख उमाडी ॥ सघजो
 जीउं सहेत, मीण कज माजो पाडी ॥ ३ ॥ पस्तावो
 करती पठें, घणुं हाथ माखी घसे ॥ कवि गंग कहे हो
 गुणीयजो, रूपण तिम माया कसे ॥ ३ ॥

